

श्रीगणरायनेभ्यः श्रीपरमात्मनेनमः श्रीसर्वस्वमिनामः नार्तिकनिराकलित्यने अथमिति सकहे सोप्रीकेदेनवारोदोह कोपरायकेसेहपुराणि
 जिनकेतेजत्रसारगुच्छंगमंभाबानीविएजमानहे के सोहेभवानी जिनकोनिगतमलसुखमयकवीचंद्रिकाकहेचोदनीप्रकाशकरिरहिहे क
 भिवकाकीनार्जितोसेहिमकहेपाताअदिकहेपर्वनहिमात्रिविधें महाश्रीधधीं संजीवन्यादिज्यलितकहे प्रकाशिनहोहिरहीहे यद्वअयोगीअनु
 पमस्वत्पनिकारनिर्विकास्त्रायाधारसराशिवपलेखने अनादित्वनादिएकत्वलोपकारिब्रनेकत्वप्रकाशकरनरच्छासमय अदृश्यअ
 कृतिपुरुषसंयुक्तदृश्यमानअंभीगीस्वतृयधारणकियाहे इसस्वतृयकीउपमा वेदशास्त्रपराएकान्यादिनहीकहिरांके चाहेसकिएकही
 रूपहे इसस्वतृयकीउपमाविनाहेतृयसंयुक्त कियेनहीहोयती ओकेउपमासेदेनभासितहोनाहे इसलियेपरमेस्वरकीउपमाहिमात्रि
 परमेधरेकीउपमामहोवधिकातमये फिरहिमात्रिगणशीतलगा भगवतीकेमुलचंडकी चंद्रिकामेंघटितकरे ओरओषधिनको प्रज्व

श्री० त्रियंसदद्याद्भगवतासुरारियंदंगतेजःप्रसरेभवानी विराजतेनिर्मलचंद्रिकायामहोबधीप्रज्वलितालिआओ २ ॥

लिताभगवानकेतेनमेंघटितकरि अथवा तेजचंद्रिकाएकनैरहोनाअसंगितहे पलरहांदोनोसमानअकाशकारनहे कौकिभगवती
 कीशीतलचंद्रिकाकरिके सवशांतिमूर्तिसनोगुणोम्भेतकर्मस्वरणविश्वनाथशोभितहेरहेहैं ओरश्रीभगवानकेतेजकरिके त्रैलो कजननी
 श्रीपार्वतीजीकाचनवरणदोपमानहेरहेहैं अथवा दोनोउपमाअधर्वागीसचित्तभरे क्वाकिप्रकृतिकीउपमाकेगुणपुरुषमेंपाएगएयरुषकउपमा
 केगुणप्रकृतिमेंपाएगए उनार्थः अथमकविलोगअपनेछदेवसः मंगलाचरणमेंयाचमानहो रंअथकोप्रकृतिकरनेहे किमहादेवजीकानेनप्रकृतिनाथपति
 पार्वतीजीकेचंद्रिकाशीतलसमाधिपतिचोनसाएणधर्मवायालभूयएकरिकेवायाधिपति एतीनोदोषाधिपति जैसोरोशकलोशोभादयोगासहितसेरहेतेस
 ग्राह्यपदेतावेधोंकीसंयामें श्रीअशकेदेनवारोदोश केसोदोशः धजैसिहिमात्रिहोअधनीनकरिबलिनकरहेअकाशितहोइरहाहेतेसेपार्थप्रसन्नोअधियुक्तहे २

धार्तिकतिलक शार्ङ्गधरप्रवृत्ततह किमेने सृजनमनुपपन्नकोमनं सनकोनमित्तसंश्रुतिचलवद्विमुनिभैत्रेष्ठप्रत्नो नवैद्योकेनिष्प्रितकिथेप्रसिद्धयोगया शाराम्य
 भैसमर्कंरिग्रथितकारहे २ नथमवेद्यरूपप्रकारेणवित्यन्येदेर हेतुप्रवृत्तिय आद्याति यावत्प्रजातिभेद ३ तवयोदितरैगौकोनितानध्ववक्तव्येणदृष्ट
 रिचिकित्साकोर कर्षणकारहे धरावना दृष्टाणवबना चानादिदोषनकोधयवेवववे हेतुद्विलक्षणा हेतुकारहे नितानध्वद्विगारणैतिस्यैरागकोउत्पत्तिहे १
 करे प्रथमरोगोकीहेतुद्वयना जंभास्त्रावना २ आद्यनिर्गहे चेषामलिनहोना तस्यासृष्टसम्बन्धसहनिशनाश ३ सात्यकहे रोगोकोप्रपेक्षाजिसवर्णुकोमनच
 हे ययागरसौतरोयोन प्यामेमयानी वाहितकारकजेसेजाइलगेवुल हितकोर ४ जातिकहे इरीपरिज्ञान अयनेप्रगमंसावयान वाविकलना ५ जेसेव
 दावकहेदेवतनमं बहुतधेष्टगुणविस्फुरतिवाहेधकाशिमहे तेसेहीदिव्यकहे ज्जमश्रयधिनमेभीभासितहे सोरात्यकहेजानिके धीरवैद्यसदेहछोइ
 प्रसिद्धयोगासुनिभिः प्रयुक्ताचिकित्सि कैर्येवहशालुभूताः विधीयतेशार्ङ्गधरेणतेषासुसंभहससज्जनज्ञनाय ३ हेतुद्वि
 पाद्यमिसाल्यजातिभेदेस्समीक्षातसर्वरोगान् चिकित्सितंकर्षणद्वंद्वहणस्यंकवीतवैद्योविधिवत्सुयोगे ३ दिव्योषधोनांवत्सवः
 प्रभेदुद्वंदास्काणमिवविस्फुरंति चात्वेतिसंदेहमपास्यर्थैस्संभावयोगाविविधप्रभावः ४ स्वभावेकागंतवकायिकांतरारोगाः
 भवेयुष्किलकर्मदोषजाः तर्छेदनार्थेदुरितापहरिणः अयोमयान्योगवर्णनियोजयेत् ५ प्रयोगानागमात्तिष्ठान्मृत्युश्चदत्तमा
 नताः सर्वलोकहितार्थोयवक्ष्याम्यनतिविलसरात् ६ ॥

स्वाभाविक आगतक कायिक अंतस्कि ४ इन्द्रचारैसेवातीनोदोषनते वाप्राव्यकर्मसंरागहोइ ताकेनाशिकत्विकोदुरितकहे पातकप्रता
 र्कारनवारयेणयोगवैद्यकोर स्वभावादिलक्षणा स्वाभाविक निहारहार विषमता यथा विनक्षुधा गतक्षुधा एमयरीन विधरीतभोजन वानिभोज
 हीतया औसुजमंतमरणपर्यंतअवस्थासेविपरीतकर्महीना १ आगतक राखापघात पतनचहार विषमदसुपे यसवीडितादि
 अधिक व्यायामअममेषुनादिभातन्मनाधिकत्वतेदोषत्वकणितहीना ३ अंतर मनस्वेद कोप्र चिन्ता शोकमृच्छा सन्पास स्वास निग्रध
 दि ४ ५ अत्यक्षसे औ अजममसे शलसे जेवसिषयागसो लोककोहिताद्य सक्षेपकारिकहमाह ६ ॥

याशांगधारेतो न खंडे तर्क प्रथम खंड में पहिले परिभाषा कहें औषधिको नोल कहै फिरि भेषज्याख्यान कह्योषधिभक्षणविधि फिरि नाडी
परीक्षा खन शकन विचार अरु दोष न अग्नि ज्वलिन कारण पांचन जो भल को भस करिय चावे ताको पीछे औषधिभक्षण समय फिरि आहार
अंतर प्रवेशन कह्यो औषधों को संख्या कह्यो इतनी वाजे प्रथम खंड में है अथ मध्य खंड अत्रु क्रमणिका इव्यनका संकाटा एति की नि
जो औषधि चान जल से द्रुसे हिम कहिये कल्क कह्यो ती चरणों ली अवलेहने ल मद्रवकार धातु शुद्धि रस क्रिया ये मध्य खंड में कह्यो

प्रथम परिभाषा स्यान्नेषज्याख्यान कंतया नाडी परीक्षा दिविधिस्ततो दीपनपाचनं ततः कालादिकाख्याना मन्त्रादि
गतिस्तथा रोगाणामाणाना चैव पूर्वखंडो यमीरितः स्वस्वः कायपादौ च हिमं कल्कं च दूर्णकं तथैव गुल्फिका लेहो हने हं संधा
नमेव च धातु शुद्धि रसं च खंडो यम मस्तरः स्नेहयानं स्नेहविधिर्वमनं च विरेचनं ततस्तु स्नेहवस्तिः स्यात्ततश्चापि निहहणं
ततश्चाप्युत्तरो वस्तिस्ततो न स्य विधिर्मतः ११ धूमयान विधिश्चैव गंड्वादि विधिस्तथा लेपादीनां विधिख्यातस्तथा शोणित विधुति
नेत्रकर्म प्रकाश्रखंडस्यादत्तस्त्वयं १२ का विंशति ता धार्यैयुक्तैर्ये संहिता स्मृता यद्विंशति शतान्यत्र श्लोकानां गणिका निच १६ नमा
नेन विनाशुक्ति ईव्याण जायते कचित् अतः प्रयोग कायार्थे मानमात्रोच्यते मया १७ जलांतर गते भानौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः ॥

अथोत्तर खंड अत्रु क्रमणिका घृतने लयोना सेवनावमन विरेचन १८ स्नेहवस्ति कहें गुग्मार्ग से पिचकारी देना निहहण कहें काढा मूथ
पिचकारी देना उत्तर वस्ति कहें पिचकारी का विधान नास विधि १९ धुवापीने की विधि गंडुष विधि जिसे यवन कुला कहते हैं लेपात्तनिका ल
न एस वडतर खंड में कह्यो १२ वदवति स अर्थाय मे कहा इस्में दो सहस्र छसे श्लोक है १३ विनतुली औषधि अर्थे गंध है इस्सलिये
रिभाषा कहता हों १४ जो छिद्र में मूर्य को आभासे रजण कण उडने देख पडते हैं इस्के तीसरे भाग को परिमाण कहते हैं ॥ ॥

छहवंशीकी एकमरीची छहमरीचीकी एकराई तो नराईकी एकराई आठसहस्रोंका एकजो आठसहस्रोंका एकजो छहहत्तींका ए समासा
 ईहेमओधोनक कहते हैं १७ बारिमासेका एकशाणयही धराणओरेंक कहना है कोटकका एकोल उसोको छुईक वट इक्षतक कहते हैं १८
 लकांकार्थे होना है उसे पाणिमाणिका अक्षपिच पणितल किं चित्पाणि तिंडक विजयपटका पोइशीकरसभ्य हंसपट सुवर्ण कवलभय २६

तस्यविंशतमोभागः परिसाणः स उच्यते १३ त्रसरेण द्विधैः प्रोक्तास्त्रिंशता परमाणिभिः त्रसरेण तु पर्यायेनाम्ना वंशी
 निगद्यते १६ षड्वंशीभिर्मरीचीस्यानाभिः षड्विंशत एजिकाः तिस्रमरीजिकाभिश्च सर्वेषः प्राच्यते बुधैः २७ यवोष्ट
 सर्वपैः प्रोक्तो गुंजा स्यात्तत्र त्वष्टयं षड्विंशत्कारकाभिस्यान्माषको हेमधान्यको माषेश्चतुर्भिः शणसाधारणः स
 निगद्यते टंकः स एव कथित सावयको लुच्यते शुक्रः कोलवटश्चैव इक्षणसु निगद्यते २८ कोलद्वयं च कर्षेः स्या
 त्स प्रोक्ता पाणिमाणिका अक्षपिचः पाणितलं किं चित्पाणिश्च तिंडकः १६ विजालपटकं चैव तथा बोडशिकाम
 ता कारसंधो हंसपटं सुवर्णं कवलग्रहः २० उदंवरश्च पर्यायेः कार्य एव निगद्यते स्यात्कार्षाभ्यामर्द्धयत्नं अन्ति
 रष्टमिकास्तथा २१ अन्तिभांचपलं ज्ञेयमुष्टिरान्नचतुर्थिकाः प्रकुचः षोडशी विल्वं यलमेवान्नकीर्तते २२ पलाभां प्रस
 तिर्शेयां प्रसृतान्श्च निगद्यते प्रसृतिगामंजलिभ्यात्काडवोदं स एव कः २३ अष्टमानं च संज्ञेयः कुंडवाभांचमानिकाः २४

० ओउदंवर कहते हैं ए सव वर्ष के पर्याय है उई कर्षको अर्थ यलसुक्ति अष्टमिका कहते हैं २० उदंवर सुक्ति को एक यल ओष्टि प्राम्ना चतुर्थि
 कुच षोडशी विल्व कहते हैं ए सव यल की पर्याय कहिये २१ ओउई पंतकी एक प्रसृति ओउ प्रसृत कहते हैं उई प्रसृत को अंजुली कुंडव
 अर्थ स एव कहते हैं २२ ओ अष्टमान भी कहते हैं उई कुंडव को मानिका स एव अष्टयल कहते हैं जो सदवेद्य है २४ ॥

जिस रोग पर जो औषधि कहेंगे तिसमें जिस रस्य का प्रथम नाम धावै उसी को योग निश्चिन करने हैं जे से रसना दिक्का थइ से प्रथम नाम रस नहै
इति नागध परिभाषा ३४ अथ कलिंग परिभाषा भावका कुष्ठ प्रमाण नही स्थितिकर समय अवस्था अग्नि वल प्रकृति रोग देश देखि के वेद्य
मात्रा का प्रमाण करै ३५ कथों कि कलिसुगमें मज्ज्य मंद अग्नि लघु शरीर बलहीन होइगे इस्से सदैवों का मत है कि मात्रा रोगी को यथा योग्य
देना ३६ वारह गौरस रसों का एक नौ दैजों की एक गुंजा नीन गुंजा का एक वल्ल ३७ आठ गुंजा तथा सांत गुंजा का मासा चारि मासे का राग

यदौषधं तत्प्रथमं यस्य योगस्य कथ्यते तन्नाम्नेव सयोगो हि कथ्यते त्रिविनिश्चयः ३४ स्थितिना स्येव मात्रा
याः कालमग्निं वयो वलं प्रकृतिं दोषदेशो च दृष्ट्वा मात्रां प्रकल्पयेत् ३५ यतो मंदग्नयो हृत्वाहीन सत्त्वानराः कलो
अतस्तु मात्रा नद्योगा प्रोच्यते सुक्ष्म समता ३६ यवो वा दशाभिर्गौरैः सर्पैः चोच्यते बुधैः यवद्वयेन गुंजा स्यात्त्रि
गुंजो वल्ल उच्यते ३७ माषो गुंजा भिरष्टाभिः सप्तभिर्वा भवेत्कचित् स्याच्चतुर्माषकैः राणः सति घष्टं कएव च ३८ रा
धानो माषकैः षड्भिः कर्षैः स्याद्दशमाषकः चतुः कर्षैः पलं त्रयोक्तं दशराणामितं बुधैः ३९ यतः पलैश्च कुरुवः
प्रस्थाद्याः पूर्ववन्मताः कालिंगं मागधं चेति द्विविधं मानमुच्यते कालिंगां मागधं अष्टमिति मानविदो विदुः
४० नवान्ये वह्नियोज्या निरुव्यान्यखिल कर्मसु विना विडंग कृत्वा भ्यां गुडधान्याज्यमाक्षिकैः ४१ ॥

ए उसी को निक औठं कभी कहते हैं ३८ छह मासे का गयान दश मासे का कर्षे चारि कर्ष का पल उसे दश राण भी कहिये चारि पल
का कुडव औषध्यादिक की प्रथम कहो रीति से जानो ३९ कलिंग प्रमाण से मागध प्रमाण सदैव उगम मानते हैं ४० सर्व कर्म निमें
सब औषधिन वीन लेना विना पीपरि विडंग धनिया घी सहन के ४१ ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४२ ॥ ४२ ॥ ४२ ॥ ४२ ॥ ४२ ॥

एतच्च करेण नृणां कलत्रासेन सतावरि च्छसंगंध पीतकटसरैया कक्षकटसरैया सौक्य मंधनसारणी एवमगोरोदूनी नलेना औ
 १. एतवीद्वय सुकलत्रयोगभेननीनदेना औ औदोद्वयसूचीसेदूनीदेना ४२ जिसऔषधीके खानपानकालनहीकहा उसका प्रातकाल
 जानना औ एजिसऔषधिके अंगकाना मनही लिखा तहां भूललेना जहांकई औषधिहैं औ रोगभेदनहीहैं तहांममभागालेना
 जहांऔषधिवनानेके पात्रकौजातिहो लिखी तहां भावीका पात्रलेना जहांऔषधिको मीलोंकरना होय औ रसवापानी वा इधवा

गुडची कुटतो वा साहू आइश्च शतावरी अश्वगंधा सहचरो शातपुष्प सारिणी प्रयोक्तव्यास्स देवा शीघ्रिणं
 मेव कारयेत् ४२ कालेनुक्ते प्रभातं स्यादंगेनुक्ते जव भवेत् भागेनुक्ते च साभ्यं स्यात्प्रातः त्रैजैके च सुप्रमय ४३ एकमप्यौ
 प्रधयो मेयस्मिन्पुनरुच्यते मानतो विगुणं प्रोक्तं तद्व्यंत त्वदशीभिः ४४ तूणे स्नेहसुखालेहाः त्रायशश्चंदनानि
 ताः कषायलेपयोः त्रायोयुज्यते रक्तचंदनं ४५ गुणहीनं भवेद्वर्षादूर्ध्वत इय औषधं मासदद्यात्तथा दूर्णे हो नवी
 र्यत्वमाप्नुयात् ४६ हीनत्वं गुटिकाले हो लेभते वत्सरात्परं हीना सुयुज्यते लाघाश्च तर्मासाधिका नद्या ४७ औषधो
 लघुपाकाः सुनिर्वीर्या वत्सरात्परं पुणः ४८ स्फुर्यं ऐयं क्ताश्चासवाधानवोरसाः ४८

सिरका वामूचक छनही लिखा तहां जल
 ४३ जिसत्रयोगभेयं प्रकार एक औषधिको दोस्वार लिखे तहां वद औषधिरो भगलेना या प्रकार तत्त्वदशी वैधकहते है ४४ औ र दूर्णे तेल
 घृत हिम अरक अवलेह आदिकनमंके वलचंदन लिखा हो तहां स्वेतलेना काटे औ र लेय भेला लचंदन लेना ४५ वर्षभर औषधिमें
 गुण रहता है कि एकम हो जाता है दोमास वीते दूर्णे का घी नमा होता है ४६ वर्षवीने गोली अवलेह का गुण हीन होना है सो न ह मास वी
 ते घीने लघु गुण रहित होते है ४७ वर्षवीने लघुपाक निगेण होते है जैसे मेयी मोरक औसरुधात रसपुर्णे गुण प्रद होते है ४८ "

जो औषधिरोगको अवगुण न दहो ति से ग्रंथ को लिखी भी न्याग देरे और जो रोग को हित करै सो अनलिखी भी ग्रंथ करे ४६ दक्षिण के विष्णु चला दिये वर्तक प्रकृती है उन पर उग्र न्न औषधी भी उपग्र प्रकृती होती है उत्तर के हिमाचला दिये वर्तन सीतल है उन पर को उत्पन्न औषधी भी ठंडी होती है और वन उपवन में जो इव्य होत है सो जै सो उग्र सृष्टी का स्वभाव होत है वैसा ही उसकी उत्पन्न इव्य का भी स्वभाव होत है ४७ मनुष्य प्राण समय पवित्र हो भुभुदिन भौन हो कै हर्य में शिव का ध्यान करि हर्य के समुख हो औषधिला वै साधारण जगह की इव्य उग्र मुख हो कै लेना ४८ और

व्याधे रसुक्तं यद्भुगं गणोक्तं मयि नंत्यजेत् अजुक्तं मयि युक्तं हियोजयेत् तत्र तदुधः ४६ आग्नेया विंश शैलाद्याः सोम्यो हिम गिरि मेतः अतस्तदौषधानि सुखं तृपाणि हेतुभिः ४७ अन्येष्वपि प्ररोहंति वनेषु पवनेषु च गल्ली याता नि सुमनाः शुचिः प्रातः सुवासरे आदित्य सन्मुखो नीनमस्त्रात्य शिव हृदि साधारण धरा इव्यं गल्ली यादत्तरात्रि तं ४९ बाल्मीकि कुत्सितान् पूषणानो खर मार्गजाः जंतुवन्ति हिमाव्यान् नानोषधः कार्यसाधिकाः ४९ शरद्य खिल कार्थीर्धे ग्राह्यं सरस्समौषधं विरेकवमनार्थं च वसंतांते समाहरेत् ४९ अतिस्थूल जलया सुता सां आस्था त्वचोदधेः गल्ली यात्सुक्ष्म मूलानि सकलान्यपि बुद्धिमान् ४९ न्यग्रोधा देस्त्वचो ग्राह्याः सारस्या बीजका दितः ॥

रतनी जगह को इव्य न लेना सर्ये को वावी कुत्सिन भूमि जहो रण भया हो मशान की ऊसर जहो रे हट्टना निकलता है खर मार्ग की जगह दे लोग तेहें औ मार्ग को दल दल को नमि स्थान की दग्ध भूमि की घाला भारी दुई इत्यादि भूमी की इव्य कार्य साधक नहीं ४९ सर्व कार्य के अर्थ शरद ऋतु में औ दो औषधिला वै ओवमन विरेकन के अर्थ वसंत के अंग में आरी व गुलावे ४९ और अतिस्थूल दृश की जड की स्थाल स देय लेने है औ छोटे दृश की जड या सहें ४९ और यगदादि दृशन को स्थाल या सहें विजै सरादि दृश को हो र लो जै ताली सादि दृश की घानी ली जै ॥

त्रिफलादिककाफललीजै धवआदिककेपुष्पसीजैसेहुंशदिककादूधलीजैयहरीतिजहंकेवलछुशकानामहेंभंगनहीहैं ॥ इतिशार्ङ्ग
व्याख्यायंपरिभाषायायःअथमः १ वैद्यलीगञ्जोषधि सवरेषवावै श्री कषायादिविशेषघातसमय फाट हिम त्वस्त काल्वावश्य
ओरजोओषधिदेनेकासमयहै सोआगीकरताहो २ ओषधिलानेकेपांचसमयहै तथमकालसूर्योदयहुआभोजनसमय तीसरासंध्याको
औथानिशिमेंभोजनसमय पांचवांसोनेकेसमय ५ ॥ २ जिसमनुष्योपित ओकफकावेगहोउसेरेचनवाचमनवालेखनक्रियाघातः

तालीसादेश्यपत्राणिफलंस्याद्विफलादितः घातक्यादेश्यपुण्याणिसुसादेः क्षीरमाहरेत् ॥ इतिशार्ङ्गधारेषुपरिभाषाया
यः १ भेषज्यमभ्यवहरेत्सभातेत्रायशोबुधः कषायाश्चविशेषेणतत्रभेदस्तदृशीतः २ ज्ञेयः पंचविधः कालोभेषज्यग्रहणेनृ
णां किंचित्सूर्योदयेजातेतयादिवसभोजने सायंतनेभोजनेचमुहुश्चापितयानिशि ३ प्रायः पित्तकफोद्रेकोविरेकवम
नार्थयोः लेखनार्थेचभेषज्यंभ्रातेतत्समाधरेत् एवंस्यात्प्रथमः कालोभेषज्यग्रहणेनृणां ३ भेषज्यंविणुणैर्यानिभो
जनात्रेवशस्यते अरुचौचिन्नभोज्येश्चासिञ्जरुत्तिरमाहरेत् ४ समान्भातेविणुणैर्मदाग्यावन्दिदीपनं दद्याभोजन
मध्येचभेषज्यंकुशलोभिषक् ५ व्यानकोपेचभेषज्यंभोजनांतिसमाहरे हिक्काक्षेपककपेषुपूर्वमेतेचभोजनात्
एवंद्वितीयः कालश्चत्रोक्तोभेषज्यकर्मणि ६ ॥ लेखनकहं चमडेकीपड़ीमाथेपरवांधिकेओबधिभरेपित्तकैअधिकारमेवमन

कफकेअधिकारमेरेचन ओलेखनयहूओषधिकारनेकाअथमकालवाधाः १ अघानवायुकेविगरेभोजनवोअथमओषधिदेइ अरुचि
मेंविचित्रभोजनकेसंगरुचिकारकओषदत्ववावै ४ सर्वेद्यसमानवायुओमराग्निमें अग्निज्वलितकारकइवभोजनकेमध्यमेंदेइ ५
व्यानवायुकेकोपमें भोजनकेअंतमेंत्ववावै हिचकी आयेक्षक कपवायुमेंभोजनकेआदिअंतमेंदेइ यहइसराकालहै ६ ॥

गुणभूतजलचिकित्सकः अग्नितैजस्य रसंगकः लेवाली उदानवायुके कोपने आसत्रासके अंतर्मे औषधि देयं संध्यासमय ७ प्राण
वायुके कोपने सूर्यको भोजनके अंतर्मे देयं ग्रहतीयकालवांथा ८ और्वाचार्यास धर्मे हिवनी आसमे औषधियी उतको अन्नके संग
औषधि देयं ग्रहतीयकालवांथा ९ गलेके रुग्ण एरणे नेत्रमुख नासिकाके रोगने लेखनके नमित एतिको विनाशना पाचन सम्प
न औषधि देयं यदपंचमकालजानना १० औषधिके पांच अधिकार है रस १ गुण २ वीर्य ३ विपाक ४ शक्ति ५ ११ सव इव निमेषः

उदाने कुपिते वाते स्वरभंगारिणी चासे आसांतरे देवं मेघजं संध भोजनं ७ प्राणे पदुष्टे संध भोजनं ७ प्राणे पदुष्टे संध भोजनं ७ प्राणे पदुष्टे संध भोजनं
च दीयते औषधं प्रायशो धीरेः कालो यस्य तनीयकः ८ मुहुर्मुहुश्च तदुच्छर्दि हिक्का आसंगरेषु च सान्नेच भेष
जं घादितिकालश्चतुर्थकः ९ ऊर्ध्वजंतु विकारेषु लेखने दृष्टे तया पाचनं समनं देयं मननं भेषजं निशि
इति पंचकालः साधोक्तो भेषज्यहेतवे १० इव्ये रसो गुणो वीर्यं विपाकशक्तिरेव च संवेदनक्रमादेताः पंचावस्था प्रकीर्ति
ताः ११ मधुरोत्तः पदुश्चैव तितः कटुकाषायकः इत्येते षट् साख्यातानां इव्यसमाश्रिताः १२ धरां चक्ष्या
नलजलज्वलनाशमारुते वाय्वग्निस्मानि लैर्भूतद्वयै रसभवः क्रमात् १३ गुरुस्तिग्धश्च तीक्ष्णश्च दू
ष्यो लघु रितिक्रमात् धरां ववन्ति पवनव्योम्ना प्रायोगाः स्मृताः एषैवांतर्भवत्यन्ये गुणेषु गुणसंख्याः १४ ॥

खाद हैः मधुर १ खट्वा २ लवण ३ तीक्ष्ण ४ कंडूवा ५ कषाय ६ १२ एव्यौ औजलसे मधुर रस होता है १ एव्यौ पवनसे खट्वा होता है २
जल औष्यग्निसे लवण होता है ३ औवास औवायुसे तीक्ष्ण होता है ४ वायु औष्यग्निसे कंडूवा होता है ५ एव्यौ औष्यग्निसे कसेला होता
है ६ यों दो तत्व मिलके एक रस होता है इति रस उच्यते १३ अथ गुण एव्यौ का गुण भाग है जल का चिकना अग्निका तेज वायु का द्रव्य ॥

आकाशकागुणहलका एवाद्योमत्वके पांचगुण हैं जो जो गुणादि भी इनके मेलसे हो गे हैं सो अनुमान से जानना इति गुण १४ अथ वीर्ये सवद्व
 व्यक्ता स्वभाव गाम्वातडा होना है सो सूर्ये ओचं हि माकरिके उल्लखीत है इत्सी दोनो से तो मधुरादि स्वाद रस के अंत उना न होता है इति वीर्ये १५
 अथ विपाक भीरे वृनसोरे सिमधुरस होना है सदा विपाक परभी सदा होता है कषाय कटु तिक्त एतौ को विपाक परक इवे सो ते है १६ म
 सेक फल होना है अस्स से पिज होना है कटु रस वाय होना है रसों के पाक से तो नो दो अ हो ते है इति विपाकः १७ अथ प्रभाव गुण आवरेका रस
 गुण वीर्ये विपाक अधिका ले समान गुण है यद्यपि हलका है तो भी नी नो दोयना शक है काही लव च स एसा पाठ है आवरेका गुण वीर्ये वि

वीर्ये सुखं न वाशीतं प्रायशो इव्य संश्रयं वात्सवे समिधो मीयं दृश्यते भुवनत्रये अन्ने बांत भे विष्यंति वीर्यो एष
 न्यानि आन्यापि १५ मिष्टः पटुश्च मधुरमल्लोऽस्त्यपच्यते रसः कषायकटु तिक्तानां पाकः स्यान्नायशः कटुः १६
 मधुरायां जायते श्लेष्मापित्तमग्न्या च जायते कटुकाज्जायते वायुः कर्मो एते तानि याकतः १७ प्रभावस्तु यथा धाल
 दुश्चायी रसादिभिः समापिकरुते रोगनि तयस्य विनाशनं १८ क्वचित्त्वैवलं इयं कर्मवर्गोऽप्यभावगः ज्वरं हंति शिरोवधास
 हृद्वीजदायक्या १९ क्वचिद्विसे गुणो वीर्ये विपाकः शक्तिरेव च कर्मस्वयं प्रकुर्वेति इव्यमाश्रित्य ये स्थिताः २०

विपाक विदोयना सक है औवर हलका गुण वीर्ये विपाक निदोयना सक है जो दोनो मिलो इके दोर तो भी औवर अ पने पभाव से विदोयना
 शक रता है यहराजनि थंठ कामत है २० कोर को ई इव्य के केवल प्रभाव से रोग दूर होना ता है जे से सहदे ई की ज उ मधि परवांध ने से
 रघट जाना है इति प्रभाव २१ कि सी औषाधिकारस्य कि सी का वीर्य कि सी का विपाक कि सी की शक्ति एस व इव्य के प्रा
 है अ पनी अ पनी प्रकृति के अनुसार गुण कर्त्ती है गुण स्वकारसक उ आ औषा ग ल है तो भी पि न नाशक रता है इति रसज दाहरण गुण २२ मल्ली

कडुई देतो भी कफ कारती है दीर्य उ० बड़े पंचर० लका का थक है तो भी वात सधन कर्ता है क्योंकि उस बीर्य है विपाक उ० सो छिती स्थण है तो भी वात समन है क्योंकि किमधुर विपाक है शक्ति उ० जे से सुश्रुति में कहा है कि छिछुछ को नाश कर्ता है २० वात पित्त कफ के वटा ने वाली ओ कपित्त कले वाली समक ले वाली अतः का प्रमाण संक्रांति से है २१ भेष की संक्रांति ईश्री बा अरु है मिथुन तै कर्क का वट है सिंह तै कन्या ता ई वर्षा है तृण तै वृश्चिक ता ई शरद है धनु तै मकर ता ई हेमंत है कुंभ तै मीन पर्यंत वसंत है ओं यों दो नो दो दो मास भा एक एक अरु हो नो हैं २२ ग्रीष्म में वायु संचित कहें स्वादी हो प्राविट भेष को पकाली है वर्षा में पित्त वट के शरद में कोय क रता है २३

ययकोपसमायसिन्दोषाणं संभवंति हि त्र्यनुषङ्गतत्वाख्यातं रवेराशिषु संक्रमात् २१ ग्रीष्मे मेघ छवौ प्रो
क्तौ प्राविदमिद्युनवर्कयोः सिंहकं न्येस्मत्ता वर्षी तु लाहृश्चिकयो शरत् २२ धनुर्ग्रीहो च हेमन्तौ वसन्तः कुं
भमीनयोः २३ ग्रीष्मे संचयते वायुः प्राहृत्काले प्रकुप्यति वर्षीयां चीयते पितृंशरत्काले प्रकुप्यति २४
हेमन्ते चीयते लेपावसन्ते च प्रकुप्यति प्रायेण प्रसमयाति स्वयमेव समीरितः २५ शरत्काले वसन्ते च पितृंशराहृ
त्काले कातिकस्यादिना न्यष्टावन्नरुणस्य च यमदृष्टा समाख्याता अल्पाहारी स जीवति २६ ॥

है मंत कहें शिशिर में कथा इक दाहो वसंत में कोप कहा है औ बाहु इन महीन को चितै आहु से आप यंच वै महीने में समान हो जानी है २४ आदकर च औ वसंत रित में धित सुम हो जाना है औ आ विट् कर गुण इ कै कफ समवनी होता है औ कार्तिक सुक्त पक्ष की अष्ट मीसे मार्गक सत्र समीता ई सोलह दिन पर्यंत इन दिनों की धम दंडा संज्ञा है इस यम दंडा भर सुक्ष्म आहार करने वाला मज्जा सुखी रहता है औ कि इन दिनों में धित के कोप से विषेय भ्रमि ॥ " ॥ " ॥

दीप हो रुचि बढ़ाती है तो भोजन विशेष करना है विशेष भोजन अग्नि संतत होकर देता है तिसके आगे की अतुल्य कफ संचय ॥१६॥ ७॥ स्त्री ॥
मंड होती है तब अग्निके परिष्ठाकन होने से गण्ड गन्ध होने है और जो यम दद्यात् कद्विनां अग्नि संतुष्ट न होतो वर्षे पर्यंत अग्नि दीप्त रहे ॥ जेम
नृणां आहार विहार के समय का संजम रखने है उनके बोध सम रहने है आत्मा समम से विपरीत करने है उनके दोष द्यं वने वढते को मकारने
सम होने रहने है ॥ ओहल के रूखे थोडे उडे आहार से अम से संधा के मैथुन से शोक भय विंता एतिका जागने से ॥ चोह से घेरने से

ययकोपशमान्योवाबिहाराहारसेवनैः समानैर्वात्यबालिपिविपिशेतेर्विषयेयं २६ लघुत्तरमिताहारादति
शीताच्छमानया प्रदोषेकोमशोकाभोगीचिंताएन्निजागरेः २७ अभियातादयागाल्ज्जीर्णेनैधातुसंस्थान् वासः न
कोपोयां त्यमिः प्रत्यनीकेश्च शाम्पतिः २८ विदालिक्कट्कस्तोसभोत्प्रेरत्पुष्टसेवनान् मध्यान्देसु इत्यवारोधाज्जीयेत्य
नैर्धरात्रके पितृपकोपंजात्येभिः प्रत्यनीकेश्च शाम्पति २९ मधुरएस्विग्धशीतादिभोज्यैदिवसनिद्रया मन्देनोच्चप्रभा
नेचशुक्तमानेनयाश्चमात्रक्षेष्ठात्रकोपंजात्येभिः प्रत्यनीकेश्च शाम्पति ३० श्लिषैर्मन्त्राद्यानकादिनीयोधमायः
३१ कृष्णं रात्रमलेयाधमनीनीवसाक्षिणी नंचैष्टयासुखदुःखंचेयकायस्यपंडितैः २ ॥ ॥ ॥

वासी भोजनसे धानश्चयसे वातकोपक एताहं जो रतनेवचे तो वायुसमूह इति वायुः २० औं फारवाली वल्कलक्ष्मी गमस्य निगम
वल्कलक्ष्मी दो पदरेको भूषण्यस रो कनाच्चाधी एतिके भोजन इनसे पित्तक पित्त होना है इनसे सावधान रहे सम होना है इति पित्त २६
मीठी खट मिट्टी दंडा दिन निश भये रूखा अनश्रम इनसे कफका पित्त होना है इति कफ ३० इति भेषज्या स्थान दितो यो ध्यायः २ अथ नाडी प
रीक्षाः हाथके अंगुल दो जड़मे जो नाडी चलना है सो जीनको साक्षी है वैदुसकी चेध गति देविकै सुखदुख पहिचान ले २

बाणप्रधाननाडी जोकसर्वकोनाई चलातीहे पित्तप्रधाननाडी गोग्गकौब्रीमेदककीचालचलतीहे कफप्रधाननाडीहंसश्रीकपूर,

१ सावित्र्या तर्कान्तर्वर्त्तकी चाल चलती है दोषे षणाष्टिका की नाडी कन्धो धीरी कहो जल दी चलता है ओजो नाडी अपनस्था को त्याग दे तो बाए की हृन्ने वाली है २ जो नाडी दृष्ट पांचवे रचल के वंद हो हो चले वा अति धीरी चले ओ अति डंडी हो तो रोगी न जिये गा ४ स्वर की नाडी गरम है जल चलती है कामात्त की ओ को थकी नाडी जल दी चलती है बिना ओ भय की नाडी छो ए होती है ५ मंदा निओ

नाडीधत्तेमरुत्वोपेजलौकासर्पयोगीति कलिंगकाकमंडूकगतिं पिमस्यकोपतः ३ लवातितत्त्वतीनांगवन्नंस्त्र
निपाततः कदाचिन्मंदगमनाकवाचिवेगवाहिनी धिरोषकोपतो ज्ञेयाहंतिचस्थानविद्युता ३ स्थित्वास्थित्वाचलति
यासास्मृताप्राणनाशि ॥ अतिक्षीणचशीताचजीवितंदंत्यसंशयं ४ ज्वरकोपेनधमनीसोसावेगवतीभ
वेत् कामक्रोधावेगवद्वाक्षीणाचिंताभयाद्भुता ५ मंदगनेक्षीणधातोश्चनाडीमंदतगभवेत् असृक्गुणैर्भ
वेत्कोष्ठागुर्वीमागारीयसी ६ लब्धीवद्वहतिदीप्तानेसथावेगवतीमत्ता सुखितस्यस्थिराज्ञेयानथायत्न
वतीस्मृता ७ इतास्वजातियोऽप्यंगाः पटवो निर्मलावराः सुखिनोश्चदृष्टादृढाः सुखेऽप्यफलैर्युताः ८ ॥

पातुक्षीणमयेनाडी अतिधीरी चलती है रक्त विकार की कुछ घण्टा रुक हो पत्थर सी भागे चलती है और संसृक्त लटे महिष की गति होती है । इसकी अग्नि दीप्त है उसकी नाड़ी दल की ओर चली चलती है आरोग्य को अस्थिर और चलवाने होती है भूय को बधूल अध्या की अस्थिर चलती है । इति नाडी परीक्षा अध्वद्वग्लक्षण अच्छी जानिवाचपनी जानि अंगच्छ सेंगांवर धारी चतुर सुखी छोडेपर सवार खेत फूलफल युक्त इनहो सो अष्ट हृत जानिये ८ " " " " " " " " " " " "

अपनीजातिहोय सुदरहो ओदेद्यकीचसगस्वासाकीओरवैठे वैद्यकेपाससुभस नथजा रोगागुलाहाव न ११
 नेजातेराहमेंशुभशकनतेअशुभशकनतेशुभजानो ६११० जववैद्यरोगीकेचहंआजावारे नवक्षोम्यशकनहोयनोशुभहे १२ बिकिसायोग्य
 जोरोगीको प्रकृतिओन एजिसेकानेसेहो ओसत्वसंयुक्तहो ओरोगीकोवैद्यमेंभक्तिहोय अर्थान् वैद्यकेवाक्यमें निश्चय होय ओति
 नैदिहोय अर्थान् कपथीनहोद रंइयनकेसंयमनेंसावधानहो ऐसारेगीचिकित्सायोग्यहे १२ रोगीस्वप्नमेंनंगा शिरमुअल

सुजातयसुवेष्टाअसजीवदिशिसंश्रिताः भिषजंसमयेप्राप्तारोगिएसुखहेतवे ६ वैद्याब्दानाग्रदूतस्यग
 च्छत्तोरोगिएः कृते नसुभंसौम्यशकनंघदीभंचसुखावहं १० चिकित्सारोगिएः कर्तैगच्छन्तेभिव
 जःशुभम् यान्नेयंसौम्यशकनंघोक्तंदीनंनशोभनं ११ निजप्रकृतिवर्णोभ्यांयुक्तस्सत्वेनसंयुतःचिकि
 त्सोभिषजःरोगीवैद्यभक्तोत्तिर्तेंद्रियः १२ स्वनेशुनगनान्मुंडाअरक्तकृष्णवरावतान् व्यगोश्चविक्रतान्क
 शांसपासान्सायुधानपि १३ विप्रतोनिघ्नतश्चापिदक्षिणंदिशिमाश्रितान् महियोष्ट्रखरामृदान्खीपंसो
 र्येषुयशति १४ सस्वस्थोलभतेव्याधिरोगीयत्पेवपंचताम् १४ अधोयोनिपतत्युच्चाज्जले नोवावि
 लीयते श्वापदेहेन्यतेयोपिमत्स्याद्येर्गिलितोभवेत् १५ ॥

कश्च नस्वपहिरैभयंकर अंगभंगकालाफासीओशस्त्रधरे १३ बांधना भारता किसीकोदक्षिणलियेजानाआउनादेखे बाहर कूट
 नैसेधरसवारनारीपुरुषको ईदेवेतो अरोगकीरोगहोद ओरोगीहोनोगुजाद १४ ओरुक्चेसेनीचेगिरा जचमेंपड़ा अग्निमेंज
 लता विपतिमेंपगामित्रबांधव वामकरादिकेमुखमेंलीलताहुआदेखे १५ ॥

नेनें अंधभयदीपे दीपकवृग्तादेव तेलचुरागिधौ स्वप्नें तिलवालीहापावै १६ पक्कानखाते कुआर्मं गिरे वारसागलजार ऐसे स्वप्नदेवनेवा
लाअच्छहोतीरोगीहो रोगीहोतोअरे १७ ऐसेऐसेस्वप्नदेवकै किस्सेनकहे सवरेनहाकेसोनातिललोहदानकरे १८ तीनिदिनसोजादि
पाठकरे औरानिकोदेवस्थानमें रहैतौदुःस्वप्नकाफलनाशहोइ १९ अथसुखअ स्वप्नेमेंदेवता औराजा औजीवतसित्रजालएतऊम
सतीयोदि ऐसास्वप्नदेवतोसुखकोनाप्रहोय २० औमलिनलयैरत शत्रुकीसेनजीने अघरीयरचढावैलपस्वढाचापवैतपर शमीप

यसुनेत्रेविलीयंतैनिर्वाणदीपोतांत्रजेत तैलंसुरापिवेवापिलोहवालभतेतिलान् १६ पकानंलभतेभ्रातिविशे
पुक्रुअधमातरसखस्थोलभतेबाधिरोगीयातेवपचता १७ दुःस्वप्नान्येवमादीनिदृश्माष्ट्रयाववास्यचित् त्वानंकुयोडलसेवस्था
इमनितानयः १८ पठेतस्तेनानिदेवानांरोगीदेवालयेवसेत कालैवनिदिनंमथौदुःस्वप्नात्यरिमुच्यते १९ स्वप्नप्रयःसु
एनृत्याजीवंतःसुहृदोद्विजान्नगोसमिधाग्नितोयो नियशपसुखमवाप्नुयात् २० तीर्त्वाकतुषनीराणिजित्वाशत्रुगणान्
पि आरुह्यलोधगोशैलकारवाहान्तुखीभवेत् २१ अन्नप्रवाणिवार्सोसिमांसमत्स्यफलानिच दृष्ट्वातुःसखीरयात्सख्यो
धनमवाप्नुयात् २२ अगम्यागमनलेयो विष्टयारुहितंमृतिःअममासाशनंस्वप्नेनारोग्यान्नयेविदुः २३ जलौकान्न
मरिच्यौमद्विकाचपियंरशेत् रोगीसभूयारोगयःसस्थोधनमवाप्नुयात् २४ इतिनाडीपरीक्षादितृतीयोऽध्यायः ३

८ घोडापर इनसर्वनिपरचढावैनेसुखहोय २१ स्वेतफूलस्तस्मवस्त्र मांसमच्छरोवाफलरोगीस्वप्नेमेंदेवनेरोगसिनिमुक्तहोइ जोआरोग्यहो
देवनेोधनप्राप्तहोइ २२ अगम्यागमनकहे जिनखीनेंभावनआरोग्यहैनिनकागवनकरे मखलयेहेरोगामगता कत्वामांसखातादेव वागवानेकरेलो
सियनेआरोग्यहोइ अच्छकोइयभिले २३ औजीक भोऐसरेमावी इह्रस्सनेदेवनेरोगीअरोग्यहोइस्वपावै २४ इतिनष्टिमरिषा स्वप्नपरीक्षाअनेश्वोऽध्यायः ३

अथ दीपनपाचन आवनेपचवे अग्निज्वलितकारे निसेदीपन कहते है यथा सौंफं औ औं व को पचावे अग्नि न व दाने पसे पाचन कहते है
यथानाग को सर औ बिना दीपन पाचन दो नो है १ जो इव्य को ठे को सुफ को मचन बांधे औ बडे दोष को समन करे उसे समन कहते है यथा गु
रुच २ औ जे ये इव्य मल को पचावे भेदन करे गिरावे तिस को अल सो मन कहते है यथा हर ३ जो वज्रु पकने योग्य अनपची हो रे को ठे मल परि
के रहिग रहे तिसे अथो मार्गे से गिरावे उसे अंस न कहते है यथा अंस मल तास ४ जो मल वातादिक दोष ते बंधा होय वानव था होय वा

पचनानं च निरुच्य दीपनं तद्यथा मिसः पचत्वा मंनव न्निच कर्षा घृत्य छिपाचनं नाग के सर त्रिंघा चिन्नी दीपन पा
चनः १ न शोधयति न क्षुष्टि समान् दोषान् लथो यतान् सप्तो करेति विषमान् समनं तद्यथा मृत्ता २ कृत्वा पाक मलाना यन्नि
त्वा वंधमधोनयेत् तच्च सुलोमनं ज्ञेयं यथा प्रोक्ता हरीतकी ३ पक्त्वा वंधपक्षे वक्षिष्ट कोष्ठे मलार्दिकं तथत्यथः अंस न तद्य
था स्यात्कृतमालकं ४ मलार्दिकं मव च च कं ववा यिं डितं मलेः मित्वा धः पातयति तजे दनं कटकी यथा ५ विपकं यरु
द्वं वामलादि द्रवतानयेत् रेचयत्यपि तज्जेयं रेचनं दृष्टुं नायथा ६ अप्रपक्षयितश्चेत् भाणं बलाद्धं नयेत् पुनरु वसनं तत्र वि
जेयं मदनस्य फलं यथा ७ स्थानाच्छिर्नयेत् दूर्ध्वमधो वामलसंचयं देहे संशोधनं यत्स्या देवदाली फलं यथा ८ " "

गोटे पड गये हो उसे फो रिके अथो मार्गे से गिरावे तिस इव्य को भेदन कहते है यथा कुच को ५ जो मल वातादि दोष ते विशेष मकगया होय अ
पक्ष हो उसे पतला करिव हावे उसे रेचन कहते है यथा विशेष ६ जो इव्य कच्चा पित्र कचा कफ उर्ध्व मार्गे से निकले उसे वसन कहते है
यथा भेन फल ७ जो इम उष्ट मल वापित कफ स्थान छु वर के ऊर्ध्व मार्गे या अथो मार्गे से गिरावे उसे शरीर शोधन कहते है ए
ती शरीर शोधनी को न इव्य है यथा बंधाली कहै वनन रोरे " "

जीवधैरु एकपादिकदोषनको सुशक्तिकरि नकारे उसे छेदन कहते हैं यथा यवा वा रादि ओ शैल्लिखि एव पीपरि शिलाजीन रति छेदन ६
रस्मादिशानु ओ शरीरको मल निहै सुख को देहको दुर्बल करे उसे लेखन कहते हैं यथा सहन उभजल वच वाव १० जो दीपन करे ओपांच
नकरे ओगरमी नारिकै कफधानुमल इनके रसको सुखावै निसे ग्राही कहते हैं यथा सौं दि श्वेतजीरा गजपीपरि ११ जो इव वृक्ष हो
औं दंड हो कमाय हो ओपांच नशक्ति क्षीण हो सो वानछात इव्यको संभन कहते हैं यथा ऊं रेया ओर सोहनयनी १२ जो इव जग

द्विष्टान्कफादिका लोषानुभूलयति युवसात् छेदनं यथा धारमरिचानि शिलाजितः ६ धारमलान्वादेह
स्य विशेषो लोखये च यत् लेखनेन यथा ओं ई नीर सुसेव चायवा १० दीपनं पाचनं यत्पादुसत्वा इव शेषक
ग्राही तच्च यथा शंखी कंकज पिप्ली ११ रोक्ष्याच्छेत्पात्वा वाये त्वाल्मुखाका च यन्न वेत्वा तद्वा तस्मिन् तस्या
यथा वात्सकादुदको १२ रसायनं च गज्जेयं यज्जरा बाधिना शतं यथा मृता रुदं नीव गजुलुश्च हरीतकी १३ य
स्मा इव्यान्न वेत्स्वी शुद्धसौ बाजी कार्पुतत् यथानाग बलाद्याः सुवीजं च कपिकछुज १४ यस्माच्छुक्कस्पृष्ट
प्तिस्माच्छुक्कं च गदुर्बले यथा श्वगधा मुशली शर्करा च शनां वरी १५ दुग्धमावा श्वभल्लोत फलमज्जा
मला त्विच प्रवर्तका भिकथं ते जनकानि चरेत सः १६ ॥

वस्था के रोगन को इरि करे उसे रसायन कहते हैं यथा गुर्व रुद्वंती गणुच १३ जिस इव चे भें छुन में विशेष सुख होति सेवाजी कर एका
हते हैं यथा वरियार किमाचमिगी १४ जो धातु को चढावे उसे पुक्क कहते हैं यथा अ संगंध मुशली शर्करा चना वरि १५ और धातु को

मुक्तकोपगच्छे नवाली स्त्री की धात को रेचन करने वाली वशी भव के बा का फल है ३० अथ एतन्ना जा नय २० नानाम्
 अक्रकोपगच्छे नवाली स्त्री की धात को रेचन करने वाली वशी भव के बा का फल है ३० अथ एतन्ना जा नय २० नानाम्
 जो वल्कले मभाग से शरीर में पैठे उसे स्वस्व कहिये यथा संधव सवत धोनी मन्ना रेडीनेल १८ वयमशरीर एवा पितरो किरपचे उसे वा
 वार कहिये यथा भाग अफीम १८ देह के वंधन दोले करे रसादिक धात ओशु क्र को क्षीण करे तिसे विकासी कहते हैं यथा सुपाणि ओ
 को देव २० जो वल्कल वषिकी संभ्रम करे ओमद को रेडन सोत मो गुणी है यथा सुरारिनसा २१ यवा ई ओविकाशी स्तश्म छेदन

प्रवर्तनी स्त्री शुक्रास्य रेचनं दृहती फलं जानी फलं स्तं भनं च शोषणी च दूरीत को १९ देहस्य स्तश्म छिद्रेषु विशेषे
 द्यस्तश्म उच्यते तद्यथा संधव शोशं निर्वनैलं गुब्जवं १८ पूर्व व्याप्या खिलं कार्यततः प्राकं च गच्छति व्यवहार
 तद्यथा भंगा फेनं चाहिस्सुभवं १६ संधिवंधो कृशधिलान्यत्करोति विकाशितम् विश्वे व्योजन्य धातु
 भ्यो यथा नमुक को देवः २० बुद्धिं लुपति यद्रव्यं मदकारितुं च्यते तमेव एव प्रधानं च यथा इव्य सुरादिक २१
 व्यथा यि च विकाराणि स्यात्तश्मं घेदिमहावहं आग्नेयं जीवित हरं योगवाहि स्मृतं विषं २२ निजवीर्येण
 यं इव्यं ओतो भ्यो दोष संचयम् निरसति प्रमाथि स्यात्तद्यथा मरिचं वचा २३ चेच्छित्वा औरवा इव्यं रु
 ध्वा सवल्हा शिराः धनेय औरवं तस्यादभि व्यं दियथा दधि २४ इति चतुर्थो ध्यायः ४ ॥ ॥

कृत मदकृत अग्निवर्द्धन मृत्युकारक एसव इव्य जिस ओषधिका संग पावे उसी के सगुण करे ऐसा विष होना है २२ जो इव्य
 ने पराक्रम से सचित दोषो को निकासारे उसे प्रमाथी कहते हैं यथा मरिच जीवच २३ जो पदार्थ ज्ञाप सस्तिभ्य स्यता गुणकारिक
 नी शिरा निको निरोध करे और शरीर को जड करे उसे अभिघाती कहते हैं यथा दही २४ इति दीप पाचन विधि चतुर्थो ध्यायः ४

अथशरीरके शरीरमें कला ७ स्थान ७ भात ७ भातमल ७ उयधातु ७ त्वचा ७ १२ दोष ३ स्तम्भमनस ६०० जोड २१० हड्डी ३०० मर्मस्थान १०७ मध्यमनस ७०० १२ मूलनाडी २४ वरुवकेमोंसंघंधी ५०० ३ स्त्रीकेमोंसकीगोंदि ५३० पृष्ठनसैफैलनेसमिदनेचाली ६८ पुरुषकेशरीर मेंछेद १० स्त्रीके १३ यहसंक्षेपकहाज्यागेविलारसेकहेगे ४ अथशरीरकीसातकलायहिलेकहतेहैं मांसकीधारणकरनेवालीमांसय रायहिलीकला १ रक्तकीधारणकरनेवालीरक्तधरीदृजीकला २ मेदकीधारणमेदधरातीसरी ३ कफकीधारणकफलेवालीबोधीयकल

कलास्तन्नाश्यास्तन्नाथातवस्तन्नात्वचस्तन्नाप्रकीर्तिताः १ त्रयोशेषानवशतंस्नायू नांसंययत्तथा दशाधिकं च विशतं मनं सन्नोत्तरमर्मेयं शिरासु न्नशतं तथा २ चत्वारिंशति राख्यानाध मन्योरसवाहिकाः मांसयेस्यासमाख्याता नृणां पंचशतं बुधः ३ स्त्रीणां च विंशत्यधिकः कंडुरश्चेव षोडशः नृदेहे दश रक्षाणि नारी देहे त्रयोदशः एतत्समासतः प्रोक्तं क्लिष्टं रेणुना च्यते ४ मांसासृग्मेदसांतिस्त्रियोयहत्तुलीसो अतुर्थिकाः पंच नोचतयां त्राणां षष्ठीचाग्निधरा मता रेणोभ्यास्तन्मीत्यादिनिस्तन्ना कलाः स्मृताः १ श्वेत्तन्नाश्याः स्यादुत्तितस्मादमाशयस्त्वधः ऊर्ध्वं भक्त्याशयोनामिर्वातभागे च वसितः २ तत्सोपरी विचित्रं त्रैयं तद्वधः पवनशयः मलाशयस्त्वधः सप्तस्य वलि मूत्राशयः स्मृतः ३

स्त्रीसु ४ अंनिधारणेवालीपातवीषीषधरा ५ अग्निधारणीष्णकलापितधरा ६ सकथादीशतर्कलारेतधरा ७ एसामौकलाहै ५ एतानिभेक फस्थानहै निसरेकुछनीचेज्यामस्थानहै नाभिकेऊपरचाईओरअग्निस्थानहै ६ निसअग्निस्थानकेऊपरगिलहैउसेलोभकहतेहैव सौप्यासस्थानकहै ओअग्निस्थानकेनरेपवनाशयहै उसेवायुस्थानकहैउसीकेनीचेवामभागमेंमलस्थानहै निसयक्षाशयकहतेहैऔउ सोपवनाशयकेनीचेदक्षिणभागमेंमूत्रकीबोधीरहतीहै ओररक्तजोजीबतुलाहैउसकास्थानहैदयमेंहै इसप्रकारसातआशयजनना ७

पुरुषके सात आशय हैं स्त्रीकी तीन विधियाँ हैं एकागर्भाशय द्वयस्त्रय आशय ८ अथयमधातु एस एक भांसमेरु हाउ भज्जाधातु एसानेपित्त
 को जमेधे चिकित्सकमसे एक एकासे सेती है उवाहरण एसने एक एकतेमांस मांसमेरु मेरुसे अस्थि चाउते भज्जा मज्जाने अक्र इसातधातु के सा
 तयल जीभ अनेन ओकापोल रत्न मेजोजल है सोरुधातु का मल है एक पित्त एक का मल है ज्ञान का मेल मांस का भय है जीभ यंत्र वगलिंग
 का मेल मेरु का मल है १० नख कोश रेम अस्थि का मल अस्थि की कीच ओरुख की चिकन ई मज्जा का मल है ओरुख में मिडि की होती है जीभ

जीनरत्नाशय मुरे से यास साशय स्वमी ७ पुरुषे भयो धिक्ता अन्ये नारीणा माशय त्रयः धरागर्भाशयः प्रोक्तः स्त
 नो रत्नपाशयो मतो ८ रसा स्तुमांस मेदो स्त्रिमज्जा अक्राणि धातवः जायते न्योन्यतः सुवधाचिताः पित्तो जसा ई
 जिह्मनेन कापोलानां जले पित्तं च त्रैलोक्यं कणो विट्सनाद न कदा भेद्रा ह्निमलं १० नखानेन मलं वने त्रैलोक्यं
 डिक्ता तथा जायते सप्तधात्वानां मलान्येनान्यगुत्रमात्र ११ काफ पित्त मलः विषमस्वेदो नखे अभवने त्रैविट्चक्षुच
 स्नेहो धात्वानां नाम शो मलाः १२ स्तन्यं नश्च नारीणां काले भवति गच्छति शुद्धमांसमवत्स्नेहो सावसायिको
 तिक्ताः १३ स्वेतोदंतास्तथा केशास्तथेवोजश्च सप्तम इति धातु भवा ज्ञेया एते सप्तोपधातवः १४ ॥

दातवगललिंग का मेल मेरु का मल है १० सो अक्र का मल है एसानो धातु के कम से सानो मल होते हैं १२ सानो धातु के क्रम लक्रम से जानना
 कक पित्त २ स्वे स्थल कर्ण मल ३ स्वेद ४ नख रेम ५ अस्थि की कीच एई अक्र धातु में मल नही है १० अक्र उपधातु एसधातु की उपधातु इय
 रक्त धातु की उपधातु रजो स्त्री के काल पाहो काल पाजानी रदती है अक्र मांस की उपधातु वसा मेद की उपधातु पसीना अस्थि की उपधा
 तयत्त मज्जा की उपधातु के श अक्र धातु की उपधातु वल पुरुषार्थ एसे ही सानो धातु निने सानो उपधातु होती है १४ ॥ १४ ॥

अथ सद्यताग पद्वितीश्रवभासिनी उपकीर्त्तित तिसमे सेंदुगे पहन कामरहे १ इजीलोहिता तिसमे तिसकटकरोम होतहे २ नी
 जोपेनोमंदाद होतहे ३ चोयातामा तिसमें कृतसेनक होतहे ४ १६ पवनीमे दिनी सर्वकष्ट भूमिहे ५ घटां सोहिनामगडमाला अधिक
 पची ६ १७ सतइस्थलामें जहर तातजा स्तुर्गंगदर दिहोतहे १८ सामो मिल कैदा जव समान मुदा श्यामी हे यरुचरक कहतेहे जहां मास
 विरेषभोग होतहे जहां शतनीमोरी होतहे १९ अथ नी नो दोष बात पिन कफ एअथे कंद ह्दयारे के प्रसिद्धहे सोरसादिक धातूनको
 देवावभासिनी पूर्वे सिध्द स्थानं च सामता विनीयालोहिता सेया तिलकालक जन्मभूः १० ध्वेतातनी धासखा
 तास्थानं चर्म एतस्य च ताम्रावली विज्ञेया कित्तासश्चिन्न भूसिका १६ पंचमी वेदिनी ख्याता सर्वे कष्टे जव सततः वि
 ख्याता लोहिता यथी ग्रंथी गंडायची स्थितिः १७ स्थूलात्वक सप्तमी ख्याता विद्रव्यादेः स्थितिश्च सा इति सप्तत्वचः ३०
 स्थूलात्री हि विमानया १८ बाधुपितं कायो दोषा धातवश्च मलामताः तत्रापि यच धार ख्याताः ३१ तथैकं देहधारणम्
 १९ पवनसंखवलवा न्वितार्गकारणात्मनः २० जोगुणमयः स्तब्धः शीतो रुक्षो लघुश्चलः २१ माला प्रायेच लो
 एव हि स्थाने तथा दृढि वाचं सर्वो गदशेषवायुः पंचप्रकारतः २२ अमानः स्यात्समानश्चाणोदानोतथेव च
 व्यानश्चेति समीरसानामिच्छुत्तगन्धजु नभान् २३ ॥

मलीनकरतेहे इस्से रत्नकानाममलभी हे सोपाच पांचपंकारको सुत्र
 तिमें लिखेहे संस्कृत तत्र प्रस्यं र्गो धहन धर्माण विवेकधरण लक्षणावायुः १६ वायु सर्ववस्तुको निज निज स्थानमें पहुचा देतीहे इसकार
 णाती नो दोषमें वायु प्रवर्तहे ओर ओरणी स्तब्ध ठडी दृषी हलकी ओर रहे २० पांच प्रकारको बाधहे मल प्राय अन्धा प्राय हृदयको ठ ओर सब शरी

[illegible]

पित्तमुष्णद्वंद्वपीतनीलं सत्वगुणोत्तरं कटुतिक्तसंश्लेषं विदग्धं चान्तातां प्रजेत् २३ अग्न्याश्रये भवेत्पित्तमग्नि
द्वयं तिलोन्मिषं त्वचिकोत्तिकं श्लेष्मं लेपाभ्यंगादिपाचकं २४ दृश्यं बलनियमितं तद्दृशं शोणितं नयेत् यत्पित्तं
नेत्रयुगले दृश्यदर्शनकारित्वम् यत्पित्तं हृदये तिष्ठेन्मेधाप्रज्ञाकरं च तत् २५ पाचकं भ्राजकं चैव रंजका लोच
के तथा साधकं चेति पंचैव पित्तनामाननुक्रमात् २६ कफः स्निग्धो गुरुः श्वेतः पिच्छलः शीतलस्तथा तमोऽण
णधिकः स्वादुर्विदग्धो लवणो भवेत् २७ कफश्चाभाशये मूर्ध्नि कंठे हृदि च संधिषु तिष्ठन्करोति देहेषु स्थैर्यं सर्वो
गप्राटवं २८ ह्रीं हनन्नेह नश्चैव रसनश्चात्मलं वलं श्लेष्मानश्चेति नामानि कफस्योक्ताननुक्रमात् २९

धक ५ यथापांचवज्रस्थानहे रसत्रकार २६ अथकफ कफचिकना भारी स्वेन तसंलसांडंदा तभोगुणी विशेषहे औमधुरहे दग्ध
भयेनुनवर होजाताहे अन्यमातवाले हलकाकहतेहे क्पानीपरतिराहे लोकगणायहहे किस्त्रिभगाजकेपानीमें जनेगएनीही २४
करता वासवगृहीहें २७ औआमस्थानमें माथेमें कंठमें हृदयमें संधिमें ऐसदेहमेंस्थितहोयष्टरखताहे २८ तिसकेनाम कोदन
१ स्नेहन २ रसन ३ अवलंबन ४ स्नेषण ५ एनामस्थानक्रमसेजानना यथाध्यामस्थानेकोदन २६ अथकारले २९ ॥ ॥

नो से सजा बारी नवे मांस हाइ चहवी कोल गरी रती हैं औ देह में अंग अंग प्रति संधिके हे जो उ सो का फ से स पटे हैं सो संधि दो प्रकार की है पर औ अचर (चर) नो वोठी कनर साखा कोठ की है औ अंगानि की अचर साहने हैं जे से तेल के संयोग से शिरो के पट्टिया आपने दो ऐं फि ले हैं तै से का फ से संयोग से हर विगम्य मफिरा करती है औ बुध जन कहते हैं कि औ अस्थि न के आधार देह तो ताते देह का सार हैं ३० आम मे स्थान मुनि जी वाधार कहते हैं सो यंत्र प्रकार हैं नांस मर्म ११ सिर मर्म ४१ त्वायु मर्म २० अस्थि मर्म ८ संधि मर्म २० सव मर्म १०७ हैं संधि वंधनी सिर दोष औ आधार वाहक हैं सो २४ हैं ति न मे दराना भि स्थान होनी चे जाती हैं नात मूत्र मल शुक्र अन्न पान रस नीचे पड़वाना उन का कर्म है औ दश उर्वगन हैं सो शब्द संगंध ह्या स जं भुवा ई औ क्षुधा यान्ति त्वया यान्ति उकार इल सवन को अपने स्थान में दीयन करती हैं औ रचार निन ति धी गति हैं सो अंग निन गण

त्वाय वी वंधन प्रोक्ता है हे नां सा अस्थि मे दसां संधय आंगां सुधानां हे हे प्रोक्ताः कफान्वितः आधारश्च तवासारुका ये स्यान्निबुधा बिडः ३० मर्माण जी वाधारणि प्रायेण शुन योजणः संधि वंधनं कारिणो दोष या तु यत्साः शिरः ३१ धमन्यो रसवाहि न्यो धमेति पवनं तनो मांसपेषो बलाय सुखं भूभाग न देहिनां ३३ च सार एण्डि खनयो रणा नां कंडर मताः नाशनयन कर्णो नां देवं ध्रुव कीर्तिते ३३

ता से सर्वांग में जाले को नारी मरो म प्रति धरित हैं उन्ही को अस्त्रो से खिद देर को बाहर रो मो हो के आगना है औ उ सो मार्ग हो ले यन मरना दिगर ध्रुव वेश करत है ३१ ओर ए सवाहिनी धमनी को नारी कहते हैं उन्हे वायु अयन ने वेग से शरीर में पहुंचानी है सो शिरा दो प्रकार की हैं स्तम्भ औ स्थूल तिन की जड़ना भिधें हैं उन्हां के तले उपर दहिने बायें आगे मो छे सवत्र फलती है एवा लि सहे ४० बाल वाहिनी १० यिन वाहिनी १० कफ वाहिनी १० रक्त वाहिनी १० सव ४० बाल वाहिनी शिरा के समीय दूरी बान नारी १०४ न से है ए से दश चारो के पास उन नी उतनी है रसत रसत से १०० जे को बरु में धे ली है सो पल के औ रो को ने के लि है ३२ अंग के फैलाने से मरने को दूर है औ दो छिड़ना कर्म दो ने नर्म दो कान म ३३ " " "

एकमुखा एकगुण एकलिंग एकल साको के ऊपर एवमस्ति ३४ स्त्रीकोतिनष्टिविशेष है देवयोपर एकगर्भस्थान ओन्नतिस
 द्मस्थिद्वचर्भेन्नगनिर्गते ३५ हृदयको वासभगमिं प्रकृतसंज्ञोसी ह है दक्षिणभारगंयकति है फफुस उदानवायु के आश्रितवे य
 तोराकहते है ३६ ओरुधिरनाक्षीधिरानमयिज उब्धो सीत्यकहते है ओकतिके सदवेयंजकपिगकास्थान कहें औरक्तका आधार है ३७
 शोणितकी कीटसे उपबद्ध आ दक्षिणभारगंति य है यकतिके पास उसे ह्योभकहिने खोजलवाहि धिरा कीज डभें रहिके पा सवदा

मेरुनाथानवत्राणमेवौकारं असु च्यते वसाममृत्तको चोक्तं रंद्रा एणिनिदृष्टां निदुष्टां निदुष्टां ३४ स्त्रीणं चो एपधिका
 निःसुः सनयोर्गर्भवर्त्मनः सस्मश्चिद्य एिचाज्या निभनानि त्वचिन्नानमगी ३५ तदामेकप्रससो ह्यद
 क्षिणंगेव कनमतं उदानवायो रंधारः फफुसं यो च्यते सुधै ३६ रक्तवाहि शिरा मूलं लीहा व्यातोमह
 धिभिः यच्छ इज कपितस्य स्थानं रक्तस्य संध्यं ३७ जलवाहि शिरा मूलं लट्टा छाद्या हन कंति लं चको
 पष्टिकरो प्रोक्तो जटरास्य मेरुसः ३८ बीजवाहि शिरा धारे दृषणो यो ह वा न हो गर्भो धान करं लिंगं
 यनं बीज मूत्रयोः हृदयं चेतना स्थान भोजनं मृग्या अर्थं मतम् ३९ शिरा भयमन्यो नाभि स्थो स्सर्व
 व्याप्य स्थिता सत्तुं यच्छति चानि रंवा गो र्स्म रं पो ना त्सर्वे धातुभिः ४० ॥

ओजदं रंभं जो मेरु चो रक्त है खंड

कनुषकारकोलाकार दो नौ कुक्ष है ३८ योजनवाहो शिरा के आध्या पुरुषार्थ करने वाले चक्षु ए है ओगर्भधार ए कराने वाला लिंग
 ज ओ मूत्र चका मार्ग है सो क्षिण हृदय गने की आसु मव रिक्त ए कान रो ह है ओचेतना का स्थान हृदय नल का आध्याप है ३९ ओना
 भर्ग स्थित चो वि शिरा एना भयमनी सो सव च री रंभं व्याप्त हो के बाह्य के संयोगने रसा दिधातु नि को ले वि के सदा धार को पष्टिकारी है ४

ताभिवासी प्राणवायु हरय कमलकोपरसि विद्युत्पारणपीनेको कंबजेवाहिरलो शिरयेजारकैत्रलोडसे गिरनाइआ ध्वमन
पीके फिलसीभागेसेआइको तवशरीरको संगुष्ठकरतीसुई अग्निकोपावनशक्तिदेतीहैं ४२ पूर्वभाषित शरीरकाओप्राण
कासंयोग रहिनेका आयु कहतेहैं ओ शरीर प्राणके बियोग होनेको बाल कहतेहैं ४३ पृथ्वीमें कोर शरीर अमर नहोहैं इसीसे
मरणकी ओषधि नहीहै रोगनिवारणोषधोषधिहै ४४ जोमनुष्य ओषधिनहीकारने सोसुखसाध्य रोगकोकष्टसाध्यकरतेहैं
नामिस्थः प्राणपवनः सुष्माहृत्कमलांतरं कंठावह्निविनिर्योतिषासुं विद्युत्पदामृतं ४५ पीतांवांवरणी
द्युं प्रपन्नरातिवेगतः प्रोणयन्नेहमखिलं जीवं च जठरानलं ४६ शरीरप्राणयोरेवं संयोगादायुरु
च्यते बालेन तद्धियोगाच्च पंचातं कथ्यते बुधैः ४७ नर्जसः कश्चिदमरः पृथिव्यां जायते काचित् अतो
मृत्युरवार्थः स्या किं तरेगा निवारयेत् ४८ जाप्यं त्वया तिसाध्यं जायो गच्छत्यसाध्यतां जीवितं हंत्य
साध्यं त्कनरस्या प्रतिकाशितः ४९ अतो रुत्यस्तुं रक्षेन्नरः कर्मविधाकवित् ४९ साध्यवत्तन्मलादोषाना
शयंत्यसमातुं ४६ रामावस्वायविज्ञेयाः बलायोपचयाय च ४७ जगद्योनिरविच्छस्य चिदानैवेकदृषि
णः पंसोतित्रकृतिर्नित्याप्रतिष्ठायेवभासत ४८ ॥

अर्थकाम मोक्ष स्नके साधनहेतु शरीरहैं ऐसेप्राणभूतताको शरीरको रक्षाकरना अवश्यहै ४१ धर्म
पुमल वावातपितकफदेहकेहताहैं नवएसमरहनेहैं तवसुखदेतेहैं देहबलदेतेहैं आयुबुद्धिकारतेहैं ४२ जगतयोनि ५
अहरहितज्ञानधर्मकारकोद्वेषहै ऐसेविद्युकीयहृत्तियत्रकृतिहैं तर्ककी ध्यायाकीनाई ४८ ॥

शोचन्तस्मिन्नेतन्निहितं चेतत्पश्यन्नालकोनादे मरुताम्नाकोपगिकारिकं आनिष्य सुसारच्यतामइ ४८ एसावच्छजननी चहाति नै यान् लैलुभा
 कोजस्यनाकिया सोरच्यामयीमहद्दयाकोहेस्तस्मदपाउसीठक्सिसेचहंकारहोमाभया अहंकारसेराज समतमोराण हपीनो निविधिअइ
 काह्मण ५० इमनीनो अहंकारसहितं पूर्वअहंकारसेदशांसीयोमनमया सोरसीसेधकाकाह्मणो अवए त्वया नेन ११ जीभनाक भवा
 नी हाथ पाय लिंगगुद १५ यस्मिन्नेकहोहोहोसानंसीजानो यो ह्येकहोपांचकभैरीशैह ५२ समग्रोमर्म सेउत्कृष्टरोगोणी अहंकारभया

अचेतनादि चेतन्ययोगेन परमात्मनः चकरो विष्णुमखिलनित्यं गढ्वाकृतिः ४८ प्रकृतिविद्यजननी पूर्वबुद्धि
 मजीजनन इक्षामयीमहद्दयामहंकारसूतकनोभवत् ५० त्रिविधः सोपि संजातो राजससत्त्वतमोराणैः तस्मात्सत्त्वराजो
 बुक्ता श्रियाणिदृशाभवत् मनश्च जातजान्याहुः श्रोत्रत्वगनयनंतथा ५१ जिह्वा घ्राणवचोहस्तपादोपस्थागुबा
 निच पंचबुद्धीदिया एपाहुः प्राक्तनानीतराणि च कर्मेदियाणि पंचैव कथं ते सुक्ष्मबुद्धिभिः ५२ तमः सत्त्वगुणोत्क
 ष्ठादहंकारादृथाभवत् तन्मात्रायैव कृतस्य नामा उत्तानिस्तरिभिः ५३ शब्दतन्मात्रकस्पर्शतन्मात्रं रूपमात्रकं रस
 तन्मात्रकं गंधतन्मात्रं चैतितत्किदुः ५४ तन्मात्रयंचकातस्मात्संज्ञां भूतयंचकं योमानि जगलजलेक्षोणी
 रूपंचतन्मनं ५५ शब्दस्पर्शश्चरयश्चरसंगं भावजन्मभारतन्मात्राणि विशेषासुः स्थूलभावमुपागताः ५६

जिससे ये चेतनावा भाई उन काना मयं उत्तजन कहते हैं ५३ शब्दतन्मात्रक १ स्पर्श २ दृश्य ३ रस ४ गंध ५ एयंचतन्मात्रा हैं सोयंचो
 द्राग इक्षिन के लहराए हैं तथैव वरु कि जिसकी जोतनमात्रा है उसका उस इंद्रिको ज्ञान है ५४ तिनतन्मात्रासे यंच भूत भए अत्राकाश १
 वायु २ अग्नि ३ जल ४ पृथ्वी ५ ५५ इनको त्रभसे जानना सो शब्दादिक मसे स्थूलभावको जान होव है ५६ ॥

पंचरानाइयनकशब्दादिकायाचविवयहे सोईकर्मोईकोयांचविवयहे वचन १ गहिलेना २ चलना ३ डखो ४ मलत्याग ५ पंडितकहेत
हे ५७ प्रधान १ प्रकृति २ शक्ति ३ नित्या ४ अविकृत ५ एप्रकृतिकेनामहे इसीऐतिसे जानना परब्रह्मकाप्राप्त्यकरिस्थितहे ५ महा
नृअस्कारश्चोत्तमात्रा ओ प्रकृतिविकृति स्नसोतीकोयंडितप्रकृतिकहे ५६ ओ दशइंद्री एकाचिनपंचमहाभूत एसो ह्रविकार
जानना सोसवजगनमेव्याप्तहोतिहे ६० इत्यौ विसतत्त्वनि साहिनेहमेजीवात्मा स्थितहे आपचोअपनाइतहे ६१ उसोका

बुद्धीद्वियाणांपेवशब्दाद्याविषयाभ्यादानविहारिताः श्रानंदोत्सर्गिकावैव
कथितस्तत्त्वदर्शिभिः ५७ प्रधानं प्रकृतिः शक्तिर्नित्याचाविकृतिसत्तया एतानि तस्यामा निशिवमाश्रित्य षड्विधाः
५८ महानहकृतिः पंचगत्यावृणिएथक् एथक् प्रकृतिर्विकृतिश्चैव सत्तेना निबुध्नयः ५९ वशोद्वियाणितंचमहभूतानि
पंचय विकारः योऽश्मिन्नेयाः सर्वव्याप्यमस्थिताः ६० एवं चतुर्विंशतिभिरुत्तरेः सिद्धेव पुत्रहे जीवात्मानियतो नित्यं
वसति स्वागतइतवान् ६१ सहस्रोक्तव्यतेपापप्रापडः स्वसत्त्वादिभिः व्याप्तोक्त्वश्च मनसा शक्तिर्मेकमेव धनेः ६२ काम
क्रोधलोभसोहृदहकारश्च पंचमं दशोद्वियाणितुद्विध्यतस्य बंधाय देहिनः ६३ आत्मातिबंधमज्ञानादात्मराना
बलुच्यते तंडः स्वयोगशुद्ध्या धिरा योगमतस्तु स्वावहं ६४ इति श्रीशार्ङ्गधरेकलादिकाख्याने भवमो व्यासः ३ ॥

देहीवाहनेहे यापुपुण्ड्रसुखकरिकेव्याप्तहे सोमर्नकरेकर्मनसगवधाहे ह्र कामक्रोधलोभसोहृदहकार ३ इंद्री १० बुद्धि १ एसो ह
देहकेवधनेकेहेतुहे ६२ जीवात्माअज्ञानकरिइनमेवंधारहताहे ओज्ञानकरिकेवंधनमुक्तहोनाताहे अज्ञाननेह्रवकेयागमंडव
पानाहे ओज्ञानकरिको मुखपाताहे ६४ इति श्रीशार्ङ्गधरेकलादिकाख्याने पंचमो व्यासः ३ ॥

अथाहारं लोकप्रभोजनं किं वा सोऽप्राणायामायुकात्रेति अथ मन्त्राभाशयार्थं जानाहं घट्टरसर्भं कोऽहं सोऽहो मधुरं औकेनासा हो जाता है
अन्यथा यो भो हो वहं किं कफासं भो हो स्वाभाशयार्थं जानाहं इति सोऽहो स्वाभावो याचकपित्तसेदग्धभयस्वद्वा हो जाता है तव
समानवायुकात्रेति हृणो भो परमाहं २ फि रग्रहणी से अग्नि को हृणो यच्चि केनाहं जानाहं जो अग्निनाशयार्थं भो च्छेत्त हृणो चोऽहो ससुआ अस्मो अ
पकाहो चोऽहो गथा ३ तो नरसज्जग्नि केवल से यच्चि के भधुणो चिकना हो जानाहं सोऽहो ससुआ ससुआ मृतकी गुह्य अखिल

१ आत्मा माशयमाहारः पूर्वं प्राणानि वै रिंगाः आधुन्यै केन भावं च यद्वा सोऽपिलसुभेनसुः १ अथ याचकपित्तेन
चिदग्धश्चास्तनां प्रजेन तमः स्वमानभरुणा भृष्टं णो भग्निनीमते २ अदि एषा पच्यते कोऽहवन्दिना जायते कटः
स्वोभवति संयक्ता दयक्ता दामसंभवः ३ बन्धेर्वेलेन माधुन्यै स्त्रियथां याति नद्रसः प्रसाभिधा तु नखिलान्समक
को मृतोपमः ४ मंदवन्ति विदग्धश्च कट्वाह्लो भवेद्द्रसः विषभासं प्रजो वापि कर्वा कारोगा संकरं ५ आसार
स्वप्नः सारः सारहो नो मलद्रवः शिरसाभिस्त्रज्जले नीतं वासो मृत्तत्त्वमात्रायात् इतन्किं च मलं सेयं तिष्ठेत्
काशये च तत् ६ वल्लिजितयमार्गेण चाप्यथा येन नोदितं अवाहिनी सज्जो च अवाहिनीति दल्लिचयं ७ रससु
हृदयं यानि समानभरुते रिंगाः रंजिताः पचितस्तत्राग्निर्नो नापति रक्तमां ८

धातुनिको यो धनाहं ७ जो मंशग्नि चरि अथ कस्तवकः वा

वद्वानिषयमानव्यस्तनेषां अम्यक्तकारताहं ८ सोऽहो स्वाहास्त्रकाशरत्नेन च आहारे सेरसभिन्नाया सोऽहो ह्रीं अश्वत्थो नलत्तगा प्रसजनको मूयव
स्त्रिोद्योगनेले केवली जो मूत्रको धोली फोड्यो मूत्रहं रसीको कीन मलरोपकशयार्थं हृणोहं ९ सोमलाप्रपानवायु मे रितत्त्वली हो नि कलता से विवले रं
मलमार्गे निसे भो नवल रालवको नारैहं निसे केनाम प्रवासिनी सज्जो नो प्रादित्वा १० सोऽहो समानवायु मे रितत्वे भंजा रंजितपित्ते पचि कस्तव जाहं

वह एक उजमजीवाधारसर्वशरीरमें स्थित है ओचिकना है गुरु है चर है स्वाद है जवविषय होता है तवपिगसमकाह होजाता है ६ पीतकी ओ चिसेपचिके मासभर्मिंसादिकाधातकमसेमुत्राहोता है लोकेशरीरमें उसीक्रमसे जहोता है यतिरीतसे एकदिनमें भोजनकारस किरसयचिकेपाचदिनमें रुचिर अस्त्रेतिधातपाचदिनमें पचियचिके महीनाभर्मिं मुत्राहोता है ९ जवस्त्री पुरुषकी कामनासे संयोगद्वारा शुभरतनीर्ये मिश्रित होता है तवस्त्रीके गर्भस्थित होता है जवगर्भसे बाहर आया तव बालकहोता १० जो रजविशेष बवाव लोहलेकान्याहुई छत्र अधिक बवाव लोहलेकान्यो उच भवान् जो रजसुक्र समान भए नोनउंस

॥ त्वं सर्वेशरीरस्थं जीवसाधारसुनमं स्निग्धं गुरुचलं स्वादु विदग्धं पित्तवक्रवेत् ६ पाचित्तापितता येन रसाद्याधातुवः कृतात् शुक्रत्वययातिमासेन तथा स्त्रीणां रजो भवेत् १० कामान्निधुन संयोगे शुद्धशोणितशुक्रजः गर्भसंजायते नार्योः संजातो बाल उच्यते ११ अधिको रजसः कंठ्यायुचशुक्राधिके भवेत् मंउंसकंसमत्वेन यथेच्छापारमेस्वरै १२ बालस्य प्रथमे मासि देया भेषज रक्तिका अवसेहीकृते केवक्षीरक्षो इसिता भूतेः १३ वर्द्धयेत्ता वदेकैकां यावन्नवतिवत्सरः माषैर्वेदिसुदूर्ध्वस्था यावन्धोऽष्टावत्सरः १४ ततः स्थिरा भवेत्ता वद्यावद्वर्षाणि सप्तति ततो बालकवन्मात्रात्तास नोयाशनेऽशनैः मान्नेयं कल्कदूर्णेनां कषायाणां च तर्गुणं १५ ॥

कह्यथा आगे जो ईश्वरको इच्छा इस इच्छाशब्दसे यह युक्त है कि दोनो की समानासे दो भी होजाते है वारजनीर्ये मिश्रित होते स्वासकी रोगना भोशयके मध्यपरजाने सेवानुत्त होए न मेधुनमे १२ बालकको मास पर्यंत स्त्रीओषधिदूधसत्तन बिअग्नीवीके अवसे लेने देना १३ फिर वर्षे पर्यंत जीवहीनेका होने न देना फिर सोहल वर्षे ताई जीवर्षका होतै मासे ओषधि देना १४ फिर सोहल हवर्षसे सत्तरवर्षतक सोलही मासे देना फिर सत्तरसे ऊपर वालकको तत्तक मध्येषधि देना अंशे सत्तरसे महीना वयातो रक्तीकमसे लक्ष्मणसे देना बहत्तर होती सोहल मासे यह हूए न ओषधिका क्रम है ओकोटिक क्रम इसीरीतसे चैणन जानना

अचनेनालकउत्पन्नसोनवतेपेकमेउचितहैं काजल लेपह्लानउवदन तेसभर्वेन वमन मायेकानमेजेसदेना १६ कवचकहैं ओषधिको
 दुह्रीमेंसमेरस्वनापंचवर्गकेभीष्टे गाशविधिजादवर्षभीष्टे रेवनजोलहवर्षउपरगत बीसमेंमेथुन १७ अथावस्थादशवर्षगाह्वालावी
 सतादेवाढ तीसताइशरीर चाखियनकथाएनशक्ति गचाशनकत्वचा सावमकरुष्टि सतारलोवीर्ष अस्सीतकवला नवेलोउष्टि सोतकक
 मीदियचलनशक्ति एकसेरशानकचेरा एकसेवीसतकजीवत्व दशदशवर्षेप्रतिवह्कमजानुना १८ वातप्रकृतिलाक्षण सस्मकेशरु

अंसनंचतथालोपः स्नानामभ्यासाधर्मच वमनं प्रणिमशे अजनम अभृतिप्रसृते १६ कवलः पंचमाकषीदुष्टमान्न
 प्रपकर्मच विरेचः षोडशाकषीमिश्रते ध्वेवमेथुन १७ बालपहृदयपुर्मेधात्वादृष्टिः अक्र विक्रमो दुष्टिकर्मैद्रिय
 चेतोसीवितं वरातोहसेत् १८ अल्पकोशः कणिहृत्तोवाचालस्य सभानसः आकाशचारोल्लेखवातत्रकृति को
 नरः १९ अकालेपलितेर्थासोधीमान्वेदीचरोपणः स्वप्नेषु ज्योतिषां इष्टापितप्रकृतिकोनरः २० गंभीरदुष्टिः
 स्थूलांगः स्निग्धकेशोमहाबलः स्वप्नेजलाशयालोकीक्षेयप्रकृतिकोनरः २१ सानव्यामिश्रचित्तेऽध्वमिनिशे
 षोत्वणानरः तमः ककाम्पाणिग्रहणान्मूर्च्छपित्ततमोभवा साः पिप्पानिलेर्भृतिरसंशम्योभमभोनिलेः २२ ॥

वैलङ्गनावकनारीमनास्थिरनहो आकाशचारोस्वप्नेक्षे एवातप्रकृतिनरकेलक्षणहै १६ पिनाप्रकृतीयः सखचेशमेकेरायकेल
 ध्वितीजलेदचरुतनिकरै क्रोधी अग्निनसनादिलजर्गेहंक्षे एपिनाप्रकृतिमनुष्यकेनक्षणहै १७ काफप्रकृतिलाक्षणगंभीरदुष्टि
 धूलशरीरचिकनेकेश अधिकवलाजलादित्वनक्षे एकफप्रकृतिपुरुषकेलक्षणहै २१ अध्वमिनिरोषप्रकृतिलाक्षणजारी
 दोषकेलक्षणहोमोदोषजप्रकृतिजानो मोनोकेलक्षणहोयतोत्रिदोषजप्रकृतिजानिधे आशः वस्थाचिन्ह ॥ २२ ॥

तमोगुणप्रोक्तमित्येकैनीदृशातीहै। इसेसुखावस्था कहतेहैं। पित्तमेंतमोगुणमिलेसेअचेत होताहै। तिसेसृष्टिकहेतेहैं। खोगुणपित्तवातमिलेसेसंभ्रमहोताहै। तमोगुणकाकयातसंयुक्तहोनेसेसंभ्रमहोतीहै। तंशुकाहेनिशस्थितनहोय २२ वलहानिसेइससेजगीणसेगलानिहोतीहै। सामर्थ्यरखकोकानकरेउत्ते२२ आतसकहतेहैं २३ चैतन्यस्थानकीशिलिमासेएकत्वासकोखेविकैसुखीसाइकेखोडेउसेजभारिकहतेहैं २४ उदावओत्राएनायुकेऊपरचरनेसेशिर्काकगिरताहै। उसकेशब्दकोषीककहतेहैं २५

तलानिरेजक्षयाहुःखादजीर्णोच्चक्षमाभिर्वेत्तयःसामर्थीभ्यतत्साहस्तदालस्यमुदीर्यते २३ चैतन्यश्लिथिलत्वाद्यत्पीत्वेकंश्वासमुदमेत् विदीर्णंनदनःश्वासज्जभासाकथ्यतेवुधैः २४ उदानत्राणयोर्लब्धयोगान्मौलिकफप्रवात्शब्दस्सजायतेतेनक्षुतंतत्कथ्यतेवुधैः २५ उदानकोपादाहारस्वस्थित्वाच्चयन्नवेत्तपवनंसौर्ध्वगमनतमुद्गारप्रचक्षते २६ इतिश्रीशार्ङ्गधरेआहारकथनंषष्ठोध्यायः ६ रोगाणांराणानाहर्वसुनिभियोप्रकीर्तिताःसमात्रप्रोच्यतेसैवतन्मेदाबहुवोमता १ पंचविंशतिरुद्दिष्टाज्वरास्तन्नेहउच्यते २ पृथग्दोषेसिधावंधभेदेनत्रिविधःस्मृतः २ एकश्चसन्निपातेनतन्मेदावहवःस्मृतः प्रयाशःसन्निपातेनपंचसुविधमज्वराः ३ ॥

आहारचयनेस्थानमेंगयाउत्सकीभरोहैउदानवायुकोपकारिऊपरनिकलतीहैउसेउकारकहतेहैं २६ इतिशार्ङ्गधरेआहारकायमषष्ठोध्यायः ६ त्रयमसुनिधौकीकहीहुईरोगोंकीगणना सोइसग्रंथमेंमैकहताहैरोगोंकेवहुतभेदहैं १ पचीसभेदकाज्वरकाभेदहै २ तीनप्रकारकेभिन्नभिन्नहैंवातज्वरपित्तज्वरकफज्वरओदेदेदोषतैनीनिप्रकारकेहैंवातपित्तज्वरवातकफज्वरकफपित्तज्वरहोतेहैं २ औरएकसन्निपातज्वरहै तिसकेवहुतभेदकहेहैं बहुतासन्निपातसेपांचप्रकारकेविधमज्वरउत्पन्नहोतेहैं ३

गगततद्दिग्दशकं हि त्रैलोक्यं उद्भासति पिरिकी प्रसिद्धा तदागकलेखजोरे गंगकानपकपेठगुलदोषवहुत दिनपाक दोषवढैयावकदोषलक्षण सन्नि
 निशाककालिअसाधलक्षण सकलकष्टसाधजोघाट धीरेक्षणासाध्यजो लघु स रितायार इति सन्निपात सातकिदशदशदिवस घटेन सनेन
 नाय सततवढै केवार नितकहत वैद्यनिप्याय इति संज्ञा सततज्वर वदेधने पूवार ह्मकटिकेयदीउनचास अंतरया दिनवीच देति जरी देत नित्रास
 बापुर्थेक दिन वैविभेकहत सकलजुजहारि भूतधैत विपरीत जप ह्मो मजनित्र भिचार इति चालार्थिक मभिचार एह सादिपीडा जनिन कहि ज्वरग्रह अवेश
 व्यसिद्धिगुरु अथ पितकहत शपज्वरदेश है अथाति सारदोष सन्प्रकार प्रतिदोष दोषत्रिकार पुनि शोक आवडराय अहणी खपंचक होय
 प्रतिदोष सन्तोत्राम रहि जान जो भुगत्वाम अथाति सारोण अनी सार सात प्रकार के है वाताति सार पित्ताती सार कफाती सार चिदोषाति सार
 शंकाती सार आमाती सार मयाती सार लक्षण जिसके मक्केमें औववा फेना सिवापतला गिरे लातरंग ह्मवावा ह्मका होइ वारवार वेग हो भटभ
 पहरसे हो शूलसे हो एवाती सार लक्षण है पीत वनीला वाताम्र रंगमल गिरे मूर्च्छा हो उद्यम जवन औगुदायक जाय प्यास होय एपिमाती सार
 एवम्

एवम् त्रिदोषै सर्वे दोषाकाहमाभ्यादपि अतीसारसमभाषाग्रहणीपंचधागता एवम् दोषै सुन्निपातान्थाचाभेनयंचमो ७

क्षण त्वेतरंगादाकफसहित विसैर्दोषं धमलवृद्धा देहमें ऐगहर्ष होय इति कफाति सार ह्मकार मेदागयामां सधोवन सामल गिरे औवाताति
 दोषाती सार नकेलक्षण मिलै उसे त्रिदोषाति सार जानिये वहुत कठिन साध्य है इति जो धनपुत्रा दिवा प्रनिध्यादि हानिके शोकसे औजनकमकरे
 उसको शोक को उसना आरुदी मे हो अग्नि को विकल करती है उसको ने जसे धिखफनता मंगस्येय मल के साथ गिरे वा केवल रुधिर गिरे औआमंग
 भहोवा अति दुर्गंध हो उस शोकाती सार कहते है सोभी अति हो कष्टसाध्य है अति दुष्मन् बीज औपित कजीन खाने से वा जत से गरमी हो के गिर रुधिर का
 डाहोला है उसे स्नाती सार कहते है और मूलव्याधि अर्धशोकसे भी निरास्त गिरता है इति कफाती सार और खल्वर सय रिया कनहोने से आवहोती है सोम
 के संग अने कर हो गिरती है औशूल करती है उसे आमाती सार कहते है भयसे नीनो दोष को पकरते है जिस दोष कलक्षण मिलै उ
 दोषका को यजानना इति अती सार लक्षण अथग्रहणी रोगायाचन रह की ग्रहणी होती है वातग्रहणी पित्तग्रहणी कफग्रहणी विसेय ग्रहणी आमग्रह
 णी ५ ग्रहणी लक्षण जब अग्न्याशय में वातादि दोष स्थित हो के को पकरने है उसे उतपन्न संग्रहणी रोग होना है उसे औवा गिरती है दुर्गंध सभेन वा

अग्नि के देववासी ६ धृष्ट प्रकाश की है नानागरी यितागरी कफागरी सविप्रतागरी संसर्गागरी ६ इनके दो भेद हैं एक शरीर से सोना है जिससे शुक्र कहने है दूसरा चार विपरीताक्षर विद्या से सोना है जो शंखाकार त्वकमल मार्ग में हैं सादे पांति अंगुल को उसमे वातादिक के कोयसे मांस का अंकुश भू आना है तत्स ए मायें भूख कटिपीठा मंदानि एवातागरी है ज्वरदाह स्वदूर्ध्वा एपितागरी है स्वास भेद प्रसूचि माया भारी अथं वा एतुल्य के पीठा करे बैठने में जोश ए कफागरी लक्षण हैं ऐसे ही सन्निपातागरी हैं ओअ निगामी कर्किक गिरि है सूपीली वक्षी ए यद्वा स्नागरी है मल के वेग से अंशुरक्त देई कांटे से पड़े एस खगाशी लक्षण है ११ चर्म की लती निर्भाति होनी है वाजज पित्तज कफज १२ रस मे रंजी शत रत्न मि है नीति उर्धवा सीजुवा वा हर किलनी एके शख ख

खगरी सिषडि धान्याहुवो न पित्त कफा सततः सन्नपाता वसंसगति यां भेदो पिधामतः ११ सहजो मस्त्रना भां तथा अष्टाभि र्दमः त्रिधेव चर्म की सानिवातापिता कफादपि ए एक विंशति भेदेन रुमयः सुर्धोच्यते तस्या तथेभ्यः सुते दसूक्य वसि अगः १२ लिखा आनये मस्त्राः कफा ते हस्या द्वाः ग्रन्था रदरा विष्टाश्च द्वावम स एहाः १४ सुगधाद भव सुमाप्ता यद्वा स्नाच मानः सौरया लो म विभंश लो म दोया उद्वराः केशादाश्च तथेवान्पे स रुक्मा गाम्बो लकाः लेली हाश्च सल्लनाश्च सोसुरादाः कर्कोष्काः तथान्य कफा स्नाभां संजाना स्मायु कः स्मृतः १५

कीमलिताने होने है १३ ओअ ग रत्नं तखासी संसाम भेद है लोका से होने है हृद्यादक १ अंतर्गदा २ उदरा विष्टा ३ चखः ४ महागदा ५ सुगंधा ६ रसं जनुमा ७ कफा शय से आमाशय पर्ये होने है कपित्त हो के उर्धवा अथो भाग हो निकलते हैं स्वेत वर्ण मानवर्ण मोटे लवे तथा धान समान लक्षण भयं जि उवाकी ज्वर नाभिलाल १४ ओअ रक्त से होने है मातंग १ सौरा २ लोभ विलंसा ३ लोभ बीपा ४ उद्वरा ५ एरक्त वा हो शिरा के स्थान में होने है लक्षण लाल ग्रनि रुक्षणी देवनयरी वह कछु उम न कर ने है १५ पांच प्रकार की बिल मे होने है कचे मल भ रत्न है १६ कमीत दीर्घ छंद कमी मुख से कमी मल के संग गिरने है अग्नि मंद पांडना शिख पर बसने है कफ ओर एक से उत्पन्न होने है उसे लाय कहने है नाह रक्त कहने है ॥ १६ ॥

अथ पांडु पांडुरेगापाचभोग्निचेताहि दानज पितृज कफज त्रिषोषज भावीभयनसे ५ लक्षण सुखेवर्धनि हीनकोवर कंपस्त्रजन वेदद्वजाना आत्मास्य ए
पांडुस्वरूपेहे भोरकमलपांडु कुम्भकपांडु हस्तीमगांडु इलकेलक्षणा पीतचमराहलदीपा मन्त्रलाव मलउद्य कल हीन एकात्मलपांडु रेहकास वा पीत
कभीहरीत साभयहानि अग्निमंद स्तम्भज्वर नपुसकता वासी एकभक पांडु ऐसे सीलक्षण हस्तीमगांडुकेहे ७ रक्तपीतकेतीन भेदजाना निदानपस
कायह परिग्रामसोक धार्गगवन भेयुन इत्यादिअनिकानेसेरुधिषुफनायमुल्लब्धोदिसिगिरे उसेर कपितकहेतेहे जपचहउया रुधिरनिदान
उसकायहहे कफकोप याता हेतोमुखसेगिरताहे जोवायुकाकोपताहे तोमलमार्गसेगिरताहे अन्विकोयसेनाकसेगिरताहे ओकफवात
मेवोत्समुखओदिरासंगिरताहे ८ कफसकहे एवासीपाचचकारकीहे वातसे कफसे कलेजेकोविकारसे आत्तक्षोणसे ५ घट कोष

पांडुरेगाश्रयंचासुवातपितृकफस्त्रियः त्रिदोषैभृतिवामिभ्रतयेका कामलास्रताः साकुंभकमलाश्रोकानथेकंचहलीगकं १०
रक्तपितृत्रिधाप्रोक्तमृद्गंकफसंगतं अथोगंमारुताश्रयंरुधेनविभागं ९ कावाःपंचसमुद्दिष्टास्तत्रयसुस्त्रिभिर्मलेऽ
रक्षतात्रतुर्थस्यास्तयाश्रतोश्रयंचमः ९ क्षयापंचैवविशेषास्त्रिभिर्दोषैस्त्रयश्चते चतुर्थे सन्निपातेनपंचमः स्यादुरक्षताम् २०
इयं मन्त्रगपीडा स्तृवीघांसखोखी एवातकासलक्षण ओवातसेकरेजेमेघावपरना स्तृवीघापीकेपीछेरक्तभाता पसरपीडा यहक्ष
नकासलक्षणहे धातक्षय हाकदेहकरो ज्वर मस्तकसहृधुभेर पीतकफनिकलना एपितकसलक्षण अरुचि त्वग्रोकफसेवेह्लक
उना एककफकासलक्षण सर्वसंधिपीडककैलासोऽत्यन्तहोतीहे यस्यातुक्षयकासक्षणहे ९ क्षयपंचप्रकारक्षुरकहेतेहे वानक्षय
क्षय कफक्षय सन्निपातक्षय उरुक्षय रसकाचरक्तकमल सनिदान कस्ताह भुजा कोषे जलना हाथ पावजलना ज्वरव्यथा
कंठस्वरविपरीत हाथपावपिरना खासी एवातजक्षयलक्षणहे दाहहोना ज्वरहना अतीसार रक्तसहित मलगिरना यहपि
तक्षणहे कोष्ठमेंयोगहोरे कफगिरे ज्वरगिरे खासी यहकफक्षयलक्षणहे ज्वरहे खासीहे जंगरदाहहोरे यहसन्निपातक्ष
लक्षणहे कंठ धारधरना ज्वरहोना खासी जाना अग्निमंद दुर्गोधिसहित कफकीगाहिगिरे यहउरुक्षतसयलक्षणहे २०

शुक्ररेण कृद्वाकार् अनिमैद्युनसे णोचसे छलसे अनिबलनेचे अनिययिश्चमसे अतिबलायसे अघरसादिबलातयात्तशरीरकोसुखानी
हैं २१ स्वासकहें दसापावनकारकाहें शुद्धस्वास तमकाचोस पर्व्वलोस छिद्रस्वास महास्वास वायुकोयसः ऊर्ध्वस्वास चटनीहें देहमेंमंदयोग
एशुस्वास साध्यलक्षणहें कंदधर्यराणा पत्तरीपीर अतिदुलसेकफविकले बसचट्टें एतमस्वासहें बहुतऊंचोस्वासविचे उसेकदस्वासको
हें धर्यराकेजोगसे स्वासआवै विद्वत्तलोस्वासनेकीशक्तिनरहें सोमहास्वासकहें हृदयमेंजाड़ा पूर्ण प्रताप अतिवक स्वासहृदना ए
ऊर्ध्वस्वासअसाध्यहें २२ हिक्काकहें हिचकोपाच प्रकीहें शुद्ध अन्नजागभीरायमला मदती जोवारवारवायुगंदवेगसेऊर्ध्वगसनकरे
ऊसेशुद्धिक्काकहें बिंभेयखानेयोगेपानीसेअचक्षाहिकाबोगीहें भारीशुद्धसे हिचकीआवे उसेगंभीराकहें रदिरहिक्केअवे उसेयमलाकहेंतेहें

शोषाः सुः बहुकारेणस्वीप्रसंगा तुनोन्नयान् अध्वश्रमाश्च व्यायामाकार्धक्यादयिजायते २१ आसाश्च यंचविशेषा
शुद्धः स्यात्तमकस्तथा ऊर्ध्वस्वासो महास्वासाश्चिन्नस्वासश्चपंचमः २२ कथिनाः पंचहिक्कास्तुनासुशुश्चननास्तथा
गंभीरायमनश्चैवमहतीपंचमीतथा २३ चत्वारोऽग्निविकाराः सुविषमो वातसंभवः तीक्ष्णः पित्तात्कफान्संदो
भस्मको वातपित्तयोः २४ पंचेधारेचकानेधावातपित्तकफैस्त्रिधा सन्निपातुनसालायाच्छर्दयः सप्तधामनाः २५

देहकांपिकैर्निर्गलरहिचकीआवे तिहकोमहाहिक्काकहें २२ जगएनिदेचरिविधिविकारहें वातकोयसेहो उसेविषमकहें पित्तसेहोउ
सेतीक्ष्णकहें कफसेहो उसेमंदग्निकहें वातपित्तहो उसेभस्मकानिकहतेहें अथलक्षण जोअन्नकभीपचेकभोनपचे यल्लविषमगिहें
भोजनपरभोजनकरे उसेमीहणग्निकहतेहें ओजभोजनकरनेसेभीनपचेउसेमंदग्निकहतेहें जोवारवारभोजनकरेअन्नपचे ओश
रीलेनलगो प्रसेधसुकाग्निकहतेहें २४ अरुचिकेपंचमहें वातसे घित्तसे कफसे सन्नसे संगापसे लक्षण होतखड्डे मुहफीका हृदय
पीण यद्वानारेचकहें अहकदस्वास्वहीनवेधित्तअरुचिउरकीवा वाविक्काय वेकफअरुचिहें तीनोलक्षणहोतौ सन्निपातअरुचि
हें मनसनापसेहो तिसमेंजोबोबअधिकहो वहीलक्षणजानो छर्दकेस्वभन सोरानप्रकारकोहें २५ ॥

धर्मेकहेनास्वार्थकान्तघटिपित्तघटि संचर्यदिष्टिबछर्दिस्त्रीगर्भाणसमग्र अर्थलक्षण इत्यस्यसत्ताकापीडा सुखसत्त्वे नाभिभ्रूलक्षणाकै
 त्ताडकारदेसुपीन एवान्तछर्दिउधकाई पीतरुगिन दाह्युक्ति एपित्तघर्दिकफसंलुक्तउवकारहेनोकाफछर्दि जोउवकारखहीनीलीबाल दाह्युक्तहेतो
 सान्निछर्दि जोनिरतजीमिचलारविशेषधुकेनोचपिछर्दि जोकछंदेउवाकै कछर्दभरहेनोछणछर्दिकहे अनाग्रंथकारकामनहे किस्त्रीकीजेतीपित्तप्र
 कृतिहेउत्तनीछर्दिहो २१ स्वभेदछट्टप्रकारकोहेवातभेद पित्तस्वर कफस्वरगलेमें विशेषभेदसेधाउक्षयसे २२ तृषाछट्टप्रकारकोहे वातज पि
 त्तज कफज त्रिवेद्यज घावबगनेसे धातुक्षयसे २३ मूर्च्छाचारप्रकारकोहेवातमूर्च्छा पित्तमूर्च्छा कफमूर्च्छा सन्निपातमूर्च्छा तत्पलक्षण संगकहेचेष्टाकीवहा

त्रिभिर्दोषैश्च ग्रय कति स्रः कमिभिः सन्निपाति तः घृणयाचनमास्त्रीणंगर्भाधानाच्च जायते २ स्वभेदाग्नेयसुवोतपित्तकफेस्त्वयः
 भेदसासन्निपातेनक्षयात्यष्टमर्कीति तः २२ तस्माच्च धिधा प्रोक्तोवातपित्ताक्तफादपि त्रिदोषैर्बुधसर्गेण दाश्यान्नातो
 व्यषष्टिका २४ मूर्च्छावतविधानेयावातपित्तकफेऽध्यकचतुर्थी सन्निपातेन तथैकत्र्यध्वमः स्मृतः निशतंश्च सन्या
 सोऽस्ता निवैकोकशः स्मृतः २५ भद्रास्तमसमाख्योवातापित्ताक्तफाचयः

नेवालीजोनागीसोवात्तादिकसेरुधिरसोंकै अक्कसामन्
 एकोआमहोनगोगणकहेदुसुखकाएकारकेवालाकासवतभूमिपगिरेस्ताहेंउसेमूर्च्छावेरतेहे अमरकप्रकारनिसकालक्षण सदेहसंविम
 दुमेराना निशएकप्रकारकोहे लक्षण कुछजगी कुछसोवैसंन्यासरकप्रकृत्वालक्षण हाथयाहत्तलेनही मरुकसमानपगहैउसिसत्रासकहतेहे रमा
 सरेगमेंबलुतनलदीप्रयुक्तकरैलोमनुष्यजितमलार इस्सेसायपयकीकचर्दिमेंस्त्रीपीछेदुरुविरनिकाले मस्तकमेंफस्तंदेरुधिरनिकांचेतौजि
 ग्लानिकसकप्रकारकोहे २६ भद्रागसानजकारकोहे वातमद पित्तमद कफमद सन्निपातमद रक्तकोपसेलसा खनिसे कबीसुपारीस
 नेसे कोदवसानेसे भद्रासवानेसे नैसेमदसोताहे ऐसेही बालारि ॥

कङ्कपितहोमनको विभ्रमकर्तारहे उने भद्रकार्त्तरे ३० वा भस्मयरेमकर्हे अतिमरतेत्वारि विभिरागहे वातसे कर्त्तसे त्रिषेपसे एकपलमर्क
हे मनुष्यको उमिन्नमहोर्धने कर्माणि विन्देकरे प्राणविकलहे उसेषदत्ययकार्त्तरे ३१ पानाजीण एकप्रकार एकपात्रमिन्नम एकप्रकारानामय दारुसातव
कार्त्तरे ३२ रक्तपित्तसे प्याससे धातुक्षयसे मर्मवागसे भारवागसे रुच्यमरुधिरसं चिन्नेतेष ३३ उन्मादरोगध्वजकार्त्तरे बातोन्माद पित्तोन्मा
द कोफोन्माद विषसेवनसे शोकसे तत्पलक्षणं जववातादिदोषवटिको स्वमार्गधेदिनागमिजाको वित्तको विभ्रमकर् उसे उन्मादकर्हे तबहसे राने

त्रिशोषेरस्तजामघादिवारपि च सप्तमः ३० मदात्ययश्चतुर्थोऽस्या वातापिना कफादपि त्रिशोषेरपि विज्ञेया एकः प
रसदस्तथा ३१ पानाजीणितये वैकं तथैकः पानविभ्रमः पानात्ययनथा चैकः दाहास्त त भनालम्बा ३२ रक्तपित्तान
भारक्ताट्ठभाभाः पित्ततस्तथा धातुक्षयान्मै मघाता इत्तद्वर्णो दूरदपि ३३ उन्मादाः पयस्समात्पानास्त्रिभिर्दोषैस्तय
श्चर्ये सन्निपाता विषाक्षेष्वाः षष्ठोदुःस्वेन चेतसः ३४ भूतोत्तादपिंशतिः स्य लेखे वादानवादपि गंधर्वकिन्नराश्च
क्षामितभ्योगुरुशायनः ३५ जैताचंगुसकाट्टधात्सिष्वाद्भूतान्पिशचनः जलाधिदेवतायाश्च जागाञ्च ब्रह्म
पक्षसात् ३६ एक्षसादपि कृष्णाऽऽत्कात्पयैतालसोरपि ३७ अथस्मारश्चतुर्धा स्यात्समीराप्यिततस्तथा ॥

नचै कासासोऽरश्च जीर्णवस्त्रमाग उषिस्त्रिनाश भोजनमं अरुचि ३८ भूतोन्मादरोगवीसनरहक्रेहे देवसेदाननसे गंधर्वसे किन्नरसे यक्ष
से पित्तसे गुल्माधसे ३९ जेतसे गुसकसे रुच्यत्रायसे सिधत्रायसे भूतसे पिशाचसे जतदेवतासे सर्पसे ब्रह्मणस्त्रयसे एक्षससे कृष्णांसे कर्त्तव्यसे हे
लक्षणाः सगुहपवित्रगा सुगंधमालाधारण संस्क्रानभाषा एवौन्मादवासाणगुरदेवगकीनिदनिर्भय एगंधर्वोन्माद किन्नरगंधर्व आपकोजानै स्वातथ्यलि
मलीनरक्तवस्त्रपियं रक्षपिठक्रियारस्त्रिजं मांसतिल गुडपरविशेष इच्छाकरे एपिठ उन्माद गुरुआयोन्माद ॥

चक्रसिद्धयश्चतुर्भुजमेतत्सुखदुःखिच्छन्तुमानसेनानो जोऊर्ध्वमाह सोम वअवअयअवअयलभाभेदुर्गंधयक्त रहे सोपिशांनोन्नादेनानो जल
 देवतासमानदेववत तो आवायाननभेदमांसीभिसेचावेनोस्योत्तमाह देवगर्भदेवशास्त्रिदास एवोनिदेतोमसपश्चसोन्नादेनो मरमांसविषयातु रनिते
 राक्षसोन्नादे जो स्वयंमानस्मानना ३८ आपस्याकहे भिरयोकोचारिभेदहे वातज पिगज कफज निदोयज लक्षण तनकय सातकइकाउना फेनउगल
 ना स्वास्यपाता मृद्वानाधस्मा रहे जोमुखसेफेनपीलाउगलिनोप्रसारहे स्वयंपावअरावा देहस्येद औदोसोकोकयासा रहे तीनोदेय
 लक्षणमिलेतो सन्निपाता प्रसारअसाधमानना ३९ आसवातचारप्रकारको हे वातज पिगज कफज निदोयज बावादिशेषकोपकारिउर
 निमंस्करेनोभोजनअपकाहे सोचांदहाजय निस्सेदेस्मेपीरज्वअसविगानअकडे सहे एसामान्यलक्षणहे जिसमेंदेहर्गडाविरोबहोनावा

दोषणोपित्वनोयः सान्नचतुर्थः सन्निपानितः ४० चत्वारश्चाभवाताः स्ववातयित्तककेलिधा चतुर्थेसन्निपा
 तेनभ्रूलान्वाद्यौवधाजगुः ३८ पृथग्दोषेस्त्रिधादभेदेन निविधान्यपि आमेनसमभंयोक्तसन्निपातेनचाष्टमं ३८ परिणा
 समंभ्रूलंमधुधापस्कीर्तितं मलैर्धैः ३८ संप्रसायातेरेवंपरिणामजं अन्नाद्रवभ्रुलंजरत्पित्तभवंतया ४० ॥

तजरेनाह्रोतोयिजच्चाभवातहे देहअकाउगायखजरीहोतोकफधामवानहे गीनीलसएहोतोसन्निपातामवातहे ३८ मूलकेष्वाभेदहे वातसे
 पित्तसे वातपित्तसे पित्तकफसे कफवातसे आंवसे सन्निपातसे स्ताउखकार एवाहहे सोसुखीरूपसेयनेकपित्तहे दसपसुरिबंधिनभेये
 किम्लउपनातोदे शीतकासभेशीतयवार्थसेधधिकहोतोहे जोपैसीनानिकथेसे तेकमरेनसे उमभोजनसेकमहोतो वातभ्रुलजानो जोदंडीसीधि
 वक्तसे दसेनोपित्तभ्रुलहे जोशिश्नरमेंप्रातबौवसंतमें भोजनकरेयीछेपीडाहोतोकफभ्रुलहे जोसहज्यहोयनोवातपित्तहे नाभिमेंपोरहोतोपित्त
 कफपेइककहूदथमें भ्रुलहोतोकफवातहे जोओफरीमेंगुडगुडाहूदहोतोआव भ्रुलहे गीनीलसएहोतौदोषभ्रुलजानो ३८ पश्चिनामप्रलेभोजन
 तमेंआवअकारोताहे वातज पिगज कफज कफज ३ आमवातसे निदोयसे जोएकाजवस्वभ्रुलहे जमधनपचनाआंशोतवदोनाहे उसेभ्रुल
 सवकसंतहे जोजव मनशेषपचनाहे तवभ्रुलसे उपेपरिणामभ्रुलकहूतहे औरअसपित्तसे जो भ्रुलहोउसेगएतपिनाम्ललकहे ४०

उदावर्तरीगतैरुदधकारकेहोतेहेधुधा १ तृधा २ ४१ निश ३ स्वास ४ उवाको ५ धीक ६ ४२ जंभार ७ उकार ८ ओंस् ९ वीर्य १० ४३ मूत्र ११ म
ल १२ वायु १३ इनसर्भोकोनिरोधहोनेसेउदावर्तचोताहे इनमेंमीन विशेषउपडवीहे मलमूत्र वायुका निरोध एजाणतउपडवकरतेहे ४४ इन
कोरुकेवासक पित्तहोउपलभनागर्भोतिकेइवउत्पन्नकरतीहेउसेउदावर्तकहनेहेधुधातेदेरुधधुगुना रोडना अरुवि १ तृधासे कंठसूखना
कममुनना २ निशसे जंभो मलकभारी आलस रक्तलोचन ३ स्वाससेहृदयरगगुल्म ४ उवाकोसिकडपाइअरुचि ५ छोकरोधसे मलक
फल आधासीसौ ६ जंभासे नासिकारोगउ उकारसे आमाराय अव्यक्तभाजण ७ ओंस्से मुखरेग र्वीलेसे अतमरी पुजावप्रमेह
एतेरोगहो १० मूत्रनिरोधसे मूत्रकषू अंडकीसंधिमेंपीडा अंडव ११ मलनिरोधसेइकारविशेष मरोरखोजायेदफलना १२ वायुनिरोधसेमान

एकैकं भाषितं सन्नैर्उराचरणैस्त्रयोदशः शुक्वित्रहोत्तोत्तरध्वारोगा विधीयकः ४१ निश्चयात्तादनीयस्याचनुर्यः श्वास
निग्रहान् षडिरेधात्पंचमस्यात्प षः क्षवयु निग्रहान् ४२ जंभारेधात्सप्तमः स्याद्दुर्गारग्रहत्तोष्टमः नवमः स्या
दशुगेधादशमः शुक्कधारणान् ४३ मूर्च्छरोभान्मलस्यापिरेधायात विनिग्रहत्तत्त उदवत्तोह्वयचेतेधोरोपइव
कारकाः ४४ श्वानाहोदिविधेजेया एकः पक्काशयोभवः ग्रामाघयोन्नव श्वान्यः प्रत्यानाह श्वकथ्यते
४५ उरोग्रहस्तथा चैकोद्दोगाः पंचकीर्तिताः वान्तादिभिस्त्रयः प्रोक्ताश्चनुर्यः सन्निपाततः ४६ ॥

नकारकेउदरोग १४ ॥ अपनादरोगबोतरहकाहोगाहै एकजोपक्षाशयसेहोकेयेदकुलानाहैउसेअनाहककाहतेहैं एकअमाशयसेहो
हैउसेअनाहककाहतेहैं तस्यसक्षरं कटिमेंपीडाभलेहोभचालंसुयेदकुल ॥ १५ ॥ अनाहकलक्षणहैअमाशयमेंझलउत्पत्तिएरइभ
यत्नत्पानहै ॥ १६ ॥ असेग्रहस्कभफारकाहैरकनांसदीह्यबोपकतभलसबोवेवदनेसेअहहोगाहैददिरोगयांचपकारकहैवानजपिक्ताकफजसकनकमि
ज ॥ १७ ॥ असेसेसीअभनादसेयत्ननाकल्पीफारनाप्यारीसेचीरनाऐसाददितोवानजहैहृदयभलानिकर्कोधुवोसीइकारएपिनजहैदेहभारीखोसीअरु
चि एकफजहैजातीनोरायकेलाक्षणहैतोरहृदयमेंनिशयपीडाहोतौविरोधजहैअवकारझलउत्पत्तिएरएकमिजलक्षण ॥ १८ ॥

उदरोगां विभक्तिं केहे वातोदरं पित्तोदरं कफोदरं त्रिदोषादरं जलोदरं हीदोदरं धातोदरं रुक्मोदरं अस्थिषणं नाभि कोखसोपं च
विषोषा पेटशूल पेटगुरुगुदाना एवातोदरहे ज्वरसर्षी दाहखणुरी अतीसारं शरीरपीतं घाताम्र एवितोदरहे शरीरगुला नि निराहलुगुलं खासी
असुवि खास पेटकफोदरहे विवेकभूय दुर्बुद्धि नखकेश मूत्रमल हीलोयवशहे गुरुकफको खिबायेतीति सेत्रोदोषकृपित होतोहे मूत्रो मोह पाइव
ने शरीरसुर्बेला लसातुरय रुक्मोदरहे पेटविकना नसेदीये पालनवधिक देहकृश मस्जलोदरहे पेटवग कोषकृश मंस्वर पेटयथरसरश पाउवणे एसी
होदरहे पेटओना भिकेसभमेपीशअतिदेहकृश मलापीयपावीखाभिलागिरे वात्सरदिशजाय यहक्षतोदरहे जोमूलसखादुआअतिकषसेधोशरको

पंचमः कृमिसंज्ञातसधाष्टावुदराणि च वाताग्निनात्कफात्रीणि त्रिदोषे भोजलादपि स्तीहः क्षतादृग्गुदरं पृथमं परिकी
र्तितं ४७ गुल्मात्वघोसमाख्यानावातपित्तकफेस्त्रियः दंढयेदेस्त्रयः ज्ञाताः सतमभसंनिपाततः ४८ रक्षादृष्टमकः खातोमूत्रायातास्र
योदरः वातकुंडलिकापूर्ववातघोलानतः गराः ४९ वातवलिशरीरतीयः खान्मन्त्रानीतश्चतुर्थकः पंचमं मूत्रजदरं एष्टोमूत्रक्षयः सरतः
मूत्रोत्संगः सतमस्या मूत्रचंथिस्त्रयाष्टमः मूत्रभुक्तं च नव्यं विद्यातोदेशमः सरतः ५१ मूत्रासादृष्टो मूत्रवातोवलि कुंडलि
कातया त्रयोविधिमूत्रधाताः एवमकरोशः त्रयोर्निताः ५२ केतिरेयहृद्भगुदरं लक्षणं हे ४७ गुल्मम्यावप्रकाकाति वातगुल्म पित्त
गुल्म कफगुल्म पित्तकफगुल्म त्रिदोषगुल्म एकगुल्म याता विद्वेषकरिधेयमेंगो बिसागुल्म वाचनरखेउत्पन्न कमाहे रोदोनोपाश्वं मे
एकनभिमे एकहृदये एकपेटुमें होमाहे कभीचलके ओरहो पीडाकरे कभीकंशे अंकेपीडाकरे मूत्रधात ते रल्लज्जा होलाहे वातकुंडलि
का वातघोला ४८ ५१ वातवली मूत्रवातीन मूत्रजदर ५० मूत्रोत्संग मूत्रचंथि मूत्रप्रक विद्यात ५२ मूत्रासादृष्ट उभयान वलिकुंडलिका सेसेतीन
मादरसतमना वलिकुंडलिका एवासावतुयवकानेहे ५२ लक्षणं चिनगहेके थोएथोए मूत्रजानवलेनो पागकुंडलिकारे च निपीडा हो मला

चंदर है तो वात ही लाजानो पेड़ को छेमे अधिक पीर हो ओमल मूत्र बंद रहने तो वात बली है जो मूत्र शंका वनी रहने उत्तरे नही तो मूत्र नी गहे ये
 इकल पीडा को मूत्र न देवे तो मूत्र जट रहने छल सट रहने मूत्र न गिरे तो मूत्र क्षय है विमग हो को खने से रक्त सम धारा मूत्र शव हो तो मूत्रोत्संग है
 मूत्राशय के उपर गठि पिरि पीडा को तो मूत्र यंत्रि है जो मूत्र त्याग के आदि वाचन मूत्र एषधो वन सा गिरे तो मूत्र शुक्ल जानो मूत्र में मल की रंग
 ध हो तो विटया न जानो जो दाह युक्त गोरोचन शंख दूरे के रंग मूत्र हो को स्वर्ण पुरजि सदो बकी रगत हो जगने डसी दोष का मूत्र सा रजानो जो
 मूत्र पीला था शुद्ध या कृत्वा वा कष्ट से थो गिरे तो उत्त वात जानो जो मूत्र की धेली के सुख पर लजन हो धीरे धीरे पीला या लाल मूत्र गिरे एव स्निग्ध
 इलिकालक्षण है ५२ मूत्र कष्ट के आठ भेद है वात मूत्र कष्ट पित्त कष्ट कफ कष्ट ५३ सन्निपात कष्ट शुक्ल कष्ट विटल कष्ट श्मरी कष्ट एधाठ है ५४
 अयस क्षण पेड़ नाभि पीर अधिक को ख को ख थो रा मूत्र हो तो वात कष्ट है दाह चिनग हो लाल मूत्र देवे तो पित्त कष्ट है पेड़ भारी मूत्र खेद

मूत्र कष्ट निग्रथे सुवाता पिता कफा चिथा ५३ सन्निपाता चतुर्थे स्था चतुन कष्ट चं यंत्रं विटल कष्ट प्रसृभा व्याप्तं घात कष्ट चं सभं ५४
 सष्टमं चाश्वरी कष्ट चतुर्थे चाश्वरी भग वाता पिता कफा चतुर्था श्मरी अविधाति ५५ श्मृमे ह सुगमे ह पिष्टु मे ह दृश्य सांस्कः ५६

चिकना हो तो कफ कष्ट है तो नो के लक्षण हो तो सन्निपात सन्निपात कष्ट हैं स्वीच सा धजानो मूत्र धातु मिश्रित के ससे उगरे तो शुक्ल कष्ट है
 जो को खने से मूत्र देवे तो विटल कष्ट है घात की न रं चतनि अत्रे हो ओ छर छराय के मूत्र शव के मूत्र शव हो यनो घात कष्ट है पेड़ या डंजी में पीर
 ओ भर हो तो श्मरी कहिये ५५ श्मरी के पथरी सी स्थिर कर ते हैं वात श्मरी पित्त श्मरी कफ श्मरी शुक्ल श्मरी ५५ अस्पलक्षण वात पित्त को
 पकरि मूत्र नो धेली के सुह पर स की सुषाय पथरी सी स्थिर कर ते हैं वही पथरी हैं पेड़ और उंडी को फारने लगनी है मूत्र न ही उत्तरता जव
 को खने से पथरी कष्ट हटनी है तब दशावी शब्द मूत्र गिरना है तो वात पथरी हैं जो उष्ण मल सा वागले हाइ के कन के से वाकाली पथरी हो
 तो पित्त श्मरी है पेड़ भारी मूत्र से न दंडा कट से खे तो कफ श्मरी जानो जव धातु सब के पथरी परती है तब पेड़ में पीर अंड को सभं सृजन एषु
 कर मरी लक्षण है ५५ श्मरी हवी सप्रकार के दे श्मृमे ह सुगमे ह पिष्टु मे ह सांस्क ॥

शुक्रमेरु उदकमेह लाहामेह शनिमेह एवमभेदकफसंभवहे ५७ मंजिष्ठमेह हरिद्रा नील रक्त काल क्षारमेह एधस्यमितसं
भवहे हस्तिमे वसामे वसामे गयमेह एवावानसंभवहे सव मिलकेषोसप्रकारकोहे ५८ असंख्यदणं जोसूचभार्गसेकषरसुसाशुक्रगिरे
नोरशुभहजानो जिस्मेमद्वयगंधधवैवहसुरामेहजानो पीठीसागिरितोपिष्टमेहजोष्टजानो गिरनेयजभजाशोसोदमेहहे नलसीधगु
गिरितोउदकमेह लासीधावगिरितोलाहामेहजानो जोथाष्ट अधिक गिरिजोदोहोसो धीमंभदजानो जोधगुवाल्लसीगिरितोसिक्तमेहहेजो
धातुधीरेधीरगिरितोशनिमेहजानो २० मंजीष्टरगंधाजुहोयनोमंजिष्ठमेहहे पीनरुगहोयतोहरिद्रामेहजानो राजमदकोत एवसदावहेनो
सिक्तमेहहे नोलधातुहोतोमेलमेहरक्तशुक्रगिरितो रक्तमेह कालीधातुगिरितो कालमेह एवारयानोसो गिरितोक्षारमेहजानोमज्जासीधातु
सिक्तमेहहे

शुक्रमेहोदकास्येचलालामेहध्रुवीतकः सितोतुः शनिमेहोदशेतेकफसंभवाः ५९ मंजिष्ठस्योहरिद्रास्योनील
मेहश्चरक्तकः कृष्णमेहः क्षारमेहः षडेतेपित्तसंभवः हस्तिमेहोवसामेहोमज्जामेहोमधुप्रभः चत्वारोवात
जामेहाशतिमेहाचविंशतिः ५८ सोमरोगस्तथाचेकः त्रमेहपिटिकादश सराविकाकछपिकापुत्रिणीविन
तालजी मस्तरिकासर्षपिकाजालिनीचविदारिका विद्रधिश्चशैनाः सुःपिटिकामेहसंभवाः ५६ ॥

तोमज्जामेहसहस्रीधातुगिरियासहस्रगंधहोमोमधुमेहहे ५८ सोमरोग एकत्रकारहे सर्वदेहकाजल भूतदेवहितोदेउसे सोमकहनेहे प्रमेह
संवंधीकोबादशभकास्केहे सरविका कच्छपिकापुत्रिणी विनता अचजीमस्तरिका सर्वपिकाजालिकीविदारिका विद्रधो ५६ अथबक्षणं जोफोरा
दिचेचलेतेगुलाशोतोसरविकारहे जोकषुराकीतरहोदाहकारेनोवच्छपिकाजानो जिसकोडेयतुहीनही फंसीनिकारोतोपुत्रिणीहे जोफोरा
वदवातयेइपर्यायस्कोरापरहोओजार्किंइशीकीजः केपासदीसेनो विनताहे जोफोरापुन्यरसाहोउसकेचास यासकालीमा
लालफसिभाहोओज्वरदाहधधिकहोनीअलजीकहिंये जोमसरसाहोमोमस्तरिकाहे जोसरसोसेफोरेहोमोसर्वपिकाजानो जोबगो
शराहससहितोओज्वरीनीचस्तजनहोनीजातिगीजानो कंवासालोनीविदारिजानो कीविद्रधोराहोउसेविद्रधीजानो ५६ ॥

भेदो गण एक का एक है लक्षण का फल उत्पत्ति का एक अक्षर मधुर अस द्युत गैल भैरा चावल पून इल से केवल भेद वद तीरे परं तु ओ
र सवधातु निको क्षीण का अनेक उपपन्न उपजाता है अनायास का तादिक पित्त हो के भेद के योग देह मोरी कर जे दे लन निमंत्र वेठ भारी हो जाता है
भगदर ज्वर उत्पत्ति सार पीला पांव अशरीर तथा दिकारे गउत्पन्न हो ते है सो धनवच को रको है दान सोय पित्त सोय कफ शोथ वात पित्त शोथ पित्त कफ
शोथ कफ वात शोथ त्रिवेध शोथ अभिधात शोथ विष शोथ एनव भेद है ६० असलक्षण जोधनायास स्तन आवे फिरे च्छा हो पिराय रुल रुलाय एवात
शोथ है स्तन नत रमजा दीया स्या मता लि ये नेत्र लाल राह स्तन मे हो पकि जाय ए पित्त शोथ जो स्तन न भारी हो पीला हो अरु चि अग्नि मंद एत मे पि
राय एक शोथ है वात पित्त वभ्राण होय मो वात पित्त पित्त कफ लक्षण हो तो पित्त कफ है जो कफ बात ल हो तो कफ वात शोथ जो त्रिवेध शोथ
हो मो से चि मात शोथ कि सो भानि क्षत लगे स्तन हो मो अ भिधान शोथ जानो विषय रजीव के दांत रंका छय यवानय रंछि से क्षत हो स्तने नी विष शोथ

भेदो दोष सथा चैकः शोथ रोगानव स्मृताः दोषैः पृथक् पृथक् सर्वे रभिधानादिषादपि ६१ दृश्य स्तमग
दिता वातापिता कफेन च रक्तेन भेदसा मूत्राद्विदृष्टिश्च सप्तमः ६२ ॥ ॥

जानी ६० अइ दृष्टि बुध ए फल नउ से दृक् कहते है तिस के सात भेद है वात दृक् पित्त दृक् कफ दृक् एत दृक् आति दृक् एसा नव कार के है अ सल
क्षण जन्मा युचंड को शोभे भि के पीडा उत्पन्न करती है ओ स्रा इथ्याय लेती है नी बात दृक् है जो पक्षे गूल के रंग राह तुक्त पक्षे को डकी नारु छ हो
तो पित्त दृष्टि जानो ठंडा भारी चिकना कठोर पुजलाय का छ पीडा हो तो कफ अइ दृक् जानो जो काले रंग की छिया सस्ति पित्त लक्षण हो तो
रक्तो दृक् है जो नाच फले से नी लगे ल हो मो भेद दृक् जानो ओर सुकच न्योक्त अइ दृक् को मांस दृक् ते है उसका निदान यह है कि मूत्र के गके
एक से दो गो ओर की गो लो फूल जाना है जब मूत्र रुकता है तस दृधे रंधी दो नो को री न मे हुला रहला उपचता है फिवा यु को प से उत्तम कि
पीडा करता है फलता है उसे मूत्र दृक् कहते है जीवा यु के को प से न स अइ की सुमे लड कि आती है जब वत्तन स फि रिवा यु को प या ड की
फूलती है उस मे आति उत्तरि खाती है उसे अ विदृक् कहते है बह दवाने से फि रिउ पर च डि आती है ६२ ॥ ॥

अंशवचिकलें गत्तांगलेकी संधि नर्मि अंशे भीगांटे फूलके कडी हो रहे पीउसे अंशवृक्ष एक प्रकारको है गंशाला एक ही प्रकारको है गले भंगाला की नारी फोड़े होकर
 को फूटे उंसे गंशाला का हते है गलांग एक प्रकारको है जिसे यथा कहेते है अपची एक प्रकारको है गंशाला की नारी गांटे यके पके फूटे वहे एक अंश होने न
 पावे दूसरा अंश हो उंसे अपची होने है और चक्रक में गले के छती सतरु के रोग के ओर कहते है हर अंधिक हं गंठिकी तरह नो भानि होति है जिसे वतोर
 कहते है वात अंधि यिन अंधि रक्त अंधि शिर मंथी अण अंधि अस्थि अंधि एन व प्रकारको प्रथि रोग है ६३ अस्य लक्षण जोगा डिप्पला को अकार होति
 कि निखिक उठै छूने से कठोर पिराय अंतरम हो खल के चकार हो रक्त वहे तो वात अंधि जानो जो अंधि दाह करे जरे फफोले की नारी रक्त वाय अंधि पके न हो
 काला लव है तो पित्त अंधि जानो जोगा डिउं हो दाह पीडा करे जुगरी होय कठोर वहुत होय दिन में वंटे पके से पीव दे इ लोक फयं धि जानो जिस में पित्त अ
 अधिक लक्षण हो रक्त वर्ण विशेष हो वारक्त अंधि जानो बढिया सी हो तो शिराज अंधि जानो दवाने से रथ स्रग्धर हो रक्त वी हो अंधि मर्म स्थान में हो नो असाध्य मे

अंशवृक्ष ताये कातये कांगं उमा लिका गंधापची तिचै कासा अंधयोन बधा मतां ६२ त्रिभिर्दोषै लवयो रक्त्यच्छिराभिमेदसो व्रणात् अस्थि
 नां से नन वमः प्रद्विधं स्यात्तथा बुदं ६३ वात तपितात् कफा उक्ता न्मां सादपि च मेदसः ६४ क्षीपदृष्ट्यत्रिधा त्रिकोवा तात्पिता कफा दयः ६५

अंधि जानो जो सांशव के स्रग्धर में स्रजि जाय अंधि नि स रिच्छावे पत्थर पीडा सा अंधि जानो सो भी असाध्य है जो हाड काटे नो अंधि असाध्य मेद रं धि जानो
 जिस से सोती है उंसे वां सयं धि करुते है जो पाव मरी के ऊपर रक्त वढि के गा डिउं भरे उंसे व्रण अंधि कहते है को र्मा सट्ट कहते है ६३ अंशवरो
 गच्छ अकारको है वात बुदं विता बुदं कफा बुदं मास बुदं मेद बुदं अस्थि लक्षण जो अथ मय अंधि के लक्षण लिख आ रहे है वे से रहे रक्त बुदं औ
 मांसा बुदं एक दिन है इनके लक्षण भिन्न भिन्न कहता है जो मास पिउं सा हो लाल रंगय कफ के अति उल्टे ना है उंसे रक्त बुदं कहते है मास
 उल्टे के मास भी कुआ र के एद की नारी हो विकला लाल अस्थि क दिन ता से पके फूल के हूमे सा वसा करे जले दो अंश छास हो
 न मे हो तो असाध्य है और जगह साध्य है यद मांसा बुदं है ६४ क्षीपद कहते फील को उंसी तो नी भौ गिके है वात से पित्त से कफ से ६५
 अस्य लक्षण जाय के जो रक्ती सं धि में प्रथम को दी उंभर के पीडा करे ती है फिर उछादि नो में सच जो इकी म से मन जानी है चलने में स
 १ उमा है फिर भी रेधी रे रुधिर सहित पीडा जन रिके र्मा से रोग विन क फूल ता है उंसे फील पा उकहते है जो हाथ मे छो छो रंजं ग में
 भी होता है तर्ग र्मा की भू धि में अधिक होता है वात जं मे पीरा पित्त जं मे दा क फज में विकनी को थ मं र पीर ६५ " "

विश्वीषद्वयकाकाहै वातज पित्तज कफज रक्तज क्षतज विशेषज एध्वविश्वीहैं ६६ अस्यलक्षणं जोलासवापीत नुकीली अतिपीडित
 युक्त नोवातविश्वीहैं जोबाहसुक्तलाल होतोपित्तविश्वी जोदीपकसीपाइवस्यणपकके कालीय राजायनौकफविश्वीरक्तविश्वीकेपित्त
 समलक्षणहैं जोकिस्त्रभांतिधावसंबंधीहैं नोधातविश्वीहैं जिसमें दाहज्वर खजरी औरविविधउपद्रवहोतौत्रिदोषविश्वीजानौ ६६ त्रणवह
 पित्तिकोफोगसोयइहप्रकारहैं तिसमेंभीचारिहैं आंगुनक देहज शुभदुष्टतिस्कीसंख्या वातज पित्तज कफज रक्तज ६७ वातपित्तज वातकफ
 अ पित्तकफज सन्निपातज वातरक्तज रक्तपित्तज ६८ कफरक्तज वातपित्तज कफरक्तज पित्तकफरक्तज सन्निपातरक्तज ६९ अस्यलक्षणोचोद

विश्वीषद्विधाख्यातोवातोपिनेषफैस्त्रयः रक्ताश्चतान्निशेषेऽथत्रणः पंचदशोद्विताः ६६ तेषांचतुर्बोभेदाः स्युरा
 गंतुर्देहजस्तथा शुभोदुष्टश्चविज्ञेयस्तत्संख्याकथ्यतेष्टयकवातद्वयः पित्तजश्चकफजोरक्तपित्ततः ६७ वातापित्तभव
 आन्योवातक्षेपमभवस्तथा तथापित्तकफाभ्यांचसन्निपातेनचाष्टमः नवमोवातरक्तेनदशमोरक्तपित्ततः ६८ क्षेपारक्त
 भवश्चान्योवातपित्तासृग्भवः वातक्षेपासृगत्पन्नः पित्तक्षेपासृगत्पन्नः सन्निपातासृगश्चतुर्दशत्रयः
 ६६ सद्यत्रणस्त्वष्टधास्यादवक्लिप्तविलंबिनौ छिन्नछिन्नप्रचलिताद्यष्टविधनियान्तिताः ७० ॥ ७० ॥

चपेटलंगनेसेपकेफूटेउसेआंगुनकप्रणकहतेहैं वामादिकेकोपसेहोउसेदेहजकहतेहैंजोजीभकेरंगहो छोट्ययावडा चिकना पीडन
 कौर नपकैफूटे तकगसो वहुप्रकरणहैं जोडुर्गंधयुक्त हमेशामीवदेईऊपरकोरभीतरयुलपुलाउसेदुष्टत्रणकहतेहैं ६६ सद्योत्रणक
 हैं आंगंतकप्रणसोआवप्रकाकाहैं अवलिप्त विलंबिन छिन्न प्रचलित द्यष्टविध नियान्ति ७० सामान्यलक्षण नानाप्रकारकेजोत्र
 हैं तिनकीधारसेकटें गामुदगारादिकीचोटसे धानहो योचुटहलरक्तजमकेपकेफूटेउसेआंगुनकप्रणकहतेहैं ७० ॥ ७० ॥

कोष्ठमेदकं उदरक्षतलगानादौ भौतिहं एकाष्टिचोत्रकः दूस्तरं तिरुनां च कापेटं भक्षतलगनिसे औतकटिबोवाहृजनिबरे सोष्टिचवि
कहं औज्ज्वलानिकारिरे वाविनाट्टेवादनिकरे तिसैतिसुगंनकवहे अस्थिभंगकोहं सादृटना सोबाढभौतिहं विदारित भग्नपिष्ट विवर्तित
विक्षिष्ट तिर्यक अधोभात उर्ध्वाभात सधिभंग अस्यलक्षणं जोहाउसेहाडगडवाय सधिपरस्तनहोपीडाकरे तौभग्निपिष्टहं ओसंधिचमोफटि
हाडनिकरे तौविद्युतिहं जोहाडवेदतेम्यथास्थाननवेठे अपनीचे होजाय उसे विवर्तितकहं तहं जोहाडहृटनेसे संधिदीलोपस्तुजनपरिकैपीडाकरे
श्वाष्टुजानौ हाडसलकनाकहं हाडकौबोएलटजानो उसे तिर्यककहं तहं जोजाडअपनेथिरसे नौचेको सलकजाइतौ अधोगतक ह्येउ
ऊपरकासिलकेगाऊध्वगतहं जोहाडहृटजाइउसे संधिभंगकहं ७१ वन्दिदग्धचारअकारहं सुष्ट अतिदग्ध उदोथ समग्ध ४ अस्य

कोष्ठभेदोधिधापोक्तः छिन्नांनो निसृतांनकः अस्थिभंगोष्ठधापोक्तोभानपिष्टविदारिताः विवर्तिश्चविक्षिष्टश्चतिर्यकश्चिन्न
स्त्वधोगतः ऊर्ध्वगोसंधिभनश्चवन्दिदग्धश्चतुर्विधः ७१ सुष्टेतिदग्धोउदग्धः समादग्धः प्रकोर्तितः ७२ नास्त्वभंगस
माख्यातवातपित्तकफैश्चिथा त्रिदोषैरपिशल्येनतघ्राष्टासुभंगदग्धः शतयोतनुपक्वाउष्टुग्रीवश्चपित्ततः परिआर्वाक
फाक्षेयमजुर्वीतकफोजवः ७४ परिक्षेपोमरुत्पितादर्शोज्ञः कफपित्ततः आगांतजानतचोन्मार्गीयंस्वावर्ते खिदोवजः ७५ ॥

भागं जोअग्निसर्गसित्वचाकांगपलटजाइउसे सुष्टकहं तहं जोचर्मजखिकेमांसनसत्ताउदधिपरतोअतिदग्धहं जोहृजगिरिवातउचस्त्राः
दाहयुक्तपीडाकरेतोउदग्धहं जोसर्वदहजगिरिक्तआटसुमानोर्जाइउसेसमाग्धकहं ७२ नाडीत्रणयचप्रकारहं वाननाडी पित्तन
कफनाडी त्रिदोषनाडी शल्यनाडी ७३ अस्यलक्षणं क्षतसंवधीस्तुजनपक्वीताकच्चीकोधोवे ओसुन्नहोइ वाधतकेअततकावातीनजारती
वह्नतपीडाकरे ओविलसमानचमउपरबोखे औभीतरनाडीकहं पुमलीसासीधायाट्टायालंयासो औपीवेदेताहं उसेनाडीत्रणनासक
हतेहं शल्यएकप्रकारकहं शल्यकहं शालजोकोलकाटाकांचतभिकेरहिजाइतोमांसपक्वनासडानाहं उसेसुल्यनाडीत्रणकहं ७३
भगदर आस्यकारकोहं वायुसेसतपीत पित्तसेउष्टुग्रीवकफसेपरिआवी वातकफसेचक्रनु ७४ वानपित्तसेपक्षिणी कफपित्तसेअशेजि आगांत

उत्तमोतीविशेषसेसंवावर्त ७ अस्यलक्षणं गुदकेचारे आरौच्यं गुलतकजोफोद्यवयाधोमसो पकिश्रुटिकेभीतरताश्चिद्रूपजाइसे भगद एकहतेहै
 एकतरहकानाहूहै उसरासुभीमलंघ्रातहै भांगदएकभातिहो अनेकभातिपकिश्रुटिकेवहाकारतहै ७१ वा. इंशीमेपंचत्रकारउयंइंशहीताहै छिसे
 गरमीकहै वातसे पित्तसे कफसे विशेषसे रक्तसे ७२ अस्यलक्षणं इंशीगोक्षतलगे यावडेहाथसे योरोमट्टनेसे याजस्वलाप्रसंगसेहोताहै यहनिदा
 नकामतहै बुविसेयहंसपुत्रिपरताहै किरोसेपावकेविचारदिनमेंइहोताहै यहगोइष्टयोनिकेसंयोगसे प्रथमउंडोमेंधावपरिकेधोरोसुवशरीर
 मेधावयज्जातेहै ७३ इंशीमेंशूकजरोगचोविसर्भातिक्कहोताहै यहअतिविधयाकाक्षीसरुवंस्थलवरनेकोविषास्तिप्रथोयधिलगतहै तोवालसमान
 हूहैसमानसपेदकिरोनासाहोताहै उसेशूकाकहतेहै इसीकेचोचोवीसंभेदेहै लिंगास्ये अथितं निघ्नत २ अवमंथ ४ मृदित ५ शनयोन्कः ६। ७७ ॥

मंडेपंचोपदंशासुर्वोतपित्तकाफोस्त्रिधासन्निपातेनक्ताश्वमेदेशूकामयस्तथा ७८ चतुर्विंशतिसंभातालिंगाशोयधिततया
 विघ्नतमवमंथश्चमृदितं शतयोनकः ७९ अष्टीलिकासर्वपिकात्वकाकआव पाटिकः मांसपाकः स्यर्शस्तनिविरुषमणिरुन्नतः ८० मंसा
 बुदं पुष्कारिकासंमृदेणिकालजी रक्तार्वदं विदग्धिश्चकं भिक्वातिचकालुः विरुषः प्रशकः पोक्तस्तथैवपरिवर्तिकाः ८१ ॥

अष्टीलिका ७ सर्वयीकाट ८ त्वकाक ९ अवपाटिका १० मांसपाक ११ स्यर्शस्तनि १२ विरुषमनि १३ ७८ मांसावृद्ध १४ पुष्कारिका १५ संमृदपिटिका १६
 अलजी १७ रक्तार्वद १८ विदग्धि १९ कंभिका २० तिलकालका २१ विरुषा २२ प्रशक्त २३ परिवर्तिका २४ ७९ अस्यलक्षणं एवंगोइंशपरहोतेहै सोइंशरोग
 गिनेजातेहै औरनिदानमेंकहतेहै किरोएंगंइंशकेमुखपरहोतेहै मांसवटिकेकंडूकोतरहोजाताहै उसमेंकंसोभीहोतीहै औरओअनेकप्रकावे
 उपश्वसंयुक्तहोतेहै ७९ कष्टरोगअठारप्रकाकाहै प्रथमवातजन्यकायालिकलक्षणं कसरंगवाक्तरंग माटीकेलपरकोनाई इहाव
 रखराचंभशपतलाहो तोकायालिककहिये इसराउदंवरगुलरत्नलयाहपीडाखजुरेयुक्तहोवहंरुखकहिये जोकुष्ठसपेदविक्रानाविक्राना हो

होतीसराकापजनपमंडलकुष्टहै जोप्योउमंकासीसोपीटकीसोकोफरफरकोवहै खजुरीकोरेवहचोथीविचविकहै ८० जोलासहोवीचमेंगलापीडायुक्त
रोधकोसीजीभसोवातपित्तनयनक्षेत्रजिह्वाछाष्टपांचमाहै जोगोडकेचंद्रभेयकिकेयात्रपैयाहाथकीहूथेलीमेंहोवहविद्यादिकाछुडवोडहै जोसपे
दलालाईलियेहोचमडापतलाहोओउसमेंकुरसाकेयससोतवांसिभंक्रुष्टहैयहछातीमेंहोताहैउसेसिंहवाभीकहतेहैं काफपित्तसेउत्पन्नहै जोघावसेको
लापुजाइवदकाफवागजन्यआठवाकितमंक्रुष्टहै जोलाललालपिठिकोहोकोतुजलायबलधूलसक्रुष्टहैनवमाहैं ८१ जोस्यामचमडाहोकेविक
नाअ्यानन्सीपिठिकोसंयुक्तहोओखजुलायवहवशासावुंक्रुष्टहैउसेदादभीकहतेहैं जोदेहमेंछोदीवगीपिठिकोयहिकेक्रुष्टखजुआयएकअ
होओरनिकलेवहग्याखोपामाक्रुष्टहैओखजुरीभीकहैदहमेंहोतोदेदीकोरेकाफपित्तकोनोसेसुवदेहलालहोकेछोवोछोदीपिठिकोसुवदेहहोतो

कषानछादशोक्तानिवातात्कालिकंभवेत् पित्तोनोडुवरंघोक्तंकाफान्मंडलचर्चिकं ८० मसृपितादृष्यजिह्वंक्षेया
वातौहिकातथा सिधेककुष्ठचकिटिभंचालभंतथा ८१ कफपित्तात्पुनर्देडुपामाविस्फोटकंतथा मसृकष्टचम
दलंपुंडरीकंशतात्रकं ८२ त्रिदोषैर्कोकणशेयंतथान्यचित्रसंज्ञकं तच्चवातेनपित्तेनक्षेया एचत्रिधाभवेत्
८३ क्षुद्ररोगाषष्टिसंख्यास्तेध्वादोशर्करावुंदं इंद्रुद्रापयतसिकाविद्युतांम्रालजीतथा ॥ ८४ ॥

कोछालेकीनानिबालैउसेविस्फोटकवारमांक्रुष्टकहैउसीकोशीतलामीकहतेहैं जोक्रुष्टशरीरकोतुवाकोछापीकीखालसमानकरद्वयोपीसीनान
निकैखसतेसामंक्रुष्टहैउसेचर्मकष्टओगजचर्मभीकहैजोक्रुष्टलाचहोकोपिरायखजुवायकैपिठिकोसाहोजारवहचोदसोक्रुष्टचर्मदलकहतेहैं जोक्रुष्ट
कमलपत्रसमजचाशरीरपरदेविपरवहपुंडरीकपंजक्रुष्टहैजोक्रुष्टेराफोशोकेवलतछेदपुंजारवहशतारुकोसोल्हवाक्रुष्टहै ८२ जोयकि
कोघावकासाहोजाइअतिपीडाकरेउसेकाकणक्रुष्टकहतेहैंयातसतरहवात्रिदोयजनितअसाध्यहैआठगवांश्चिचक्रुष्ट सोक्रुष्टयके
नफूटैसोत्रिवेधसेतोनिघकार्काश्चित्रक्रुष्टहोताहै जिसकोहोउसेकोदीकहतेहैं वायुसेतथाओलालचकनासाहोताहै पित्तसेनामवरण
यहसंहितरेमरहितचिकनाहोताहै कफसेसंयदेचकतासघनसघनकदीरहोताहै यसंयतक्रुष्टहै ८३ ॥

खजुआरेवह्वराहं हं जेपिडिकीछल्लासीहोकेबोचमेंखालीहोकिनाएतुहकारिकेबह्वेबहुवल्कीबह्वेजोपिडिकीबलतकीकधेरीकीपेदीसमानहै
 इसपीडिकीकोकच्छपकाकहैजोदेहमेंनिलसमानहोदेहसेजानहोपीडनकरेअसेतिलकालकवहैतेलहैजोवटियासमरुचीहोतलंगउसमेंऔरगोपिकी
 निकलेपीडाकरेवह्वराहं हं जेकलकेपकेफूटनेहोखुजरोहोबह्वराहं हं जेबवसमानहोतोयवत्राहैजोकोखपाछातीयाऔरउसंधिमंतालकेकोडा
 सोदावह्विरिक्कहैजोसोयपायमेंकोदालगिकेउसोकोरगोटियाहं जेउसकेदकोहंउप्रहैजोदेहमेंउदसदृष्टनिकलिकेहंजोइयोडानकरेउसेमसकक
 स्थिमस्साहैजोदेहमेंअनायासखालकातोपजाइअनहीऔरकोइविकारनकरेउसनीलिकाकहतेहैतच्छुनहैजोदेहमेंछनहोकेदेकोवेडोबंबीसयोक्का
 हंकिंकोमसजालपरिजाइऔरखज्जणहोअगियाइउसेजालगर्भकहतेहैजोवटियासोहोतेहैंअतीगउत्पन्नकरेउसेवल्तिककहैजोदेहमेंदेहकेरंगकवा
 होपीडनकरेऔरजन्ममेंहोउसेजंतमणिकहतेहैऔरआचार्यचिन्हकहतेहैंजिसकोमूलत्यागसमयकोचनिकलआवेउसेगुदमेंएकहतेहैंकोखकहेंवग
 लेमेंभासमेजालासमानहोकेफोडाहोताहैधनगदाहोकेज्वराहैसोदृष्टपात्रहिनमेंभुज्यकोमारिखलाताहैवहअनिरिहोहैजिसरोगमेंमलमार्ग
 कोमारनसारक्तकोयकारिकेमोटिपलेमसमार्गकोसकीएकैतोगाडाऔरमोचायइतलोसमेंगिरिवह्वसनिहृत्पुहं कफपित्तऔरक्तकेकोरिक्करिकेतल
 तालचकताशरीरमेंपुणैहैवहुनखुरीकारतहैक्षणमेंहोइक्षणमेंभिटेइसेरक्तपितीकहतेहैनखलगिकेदेहमेंनकोबोजाइउसेकनहैकहजोपाय
 मेंछोधीपिडिकीहोकेपकैइदेहूनहोसोअवयाहैजोपीलीवटियाहोखज्जुआरेउसेकाटाकायासुमानहोबह्वपिनीकंरकहैजोअग्निनायके
 कलकापरैअर्थनखधातफैफूठेउसकेचपलगीसेउत्पन्नहोयाआघ्रादिककीचेपलगेपकजायउसेविष्पकहतेहैंजोपरमाहायकेगवाहंपानी
 याखएवकीजइयाकोइविषयाकोइविषमिद्विजमायेयाविषधरकीजंतुकेस्थानकीमायेयाभल्लातादिवृक्षतरकीमायेसडिकेस्पशसेसडिजाय
 औरवहुतखजुरीकरेउसेअलसकहेंखराहैंऔरखोजनीमेंगुलपरकाटेकोदेसेवहुतहोजातेहैंदोवनेसेखरखएतेहैंऔरउनेहैंवहंमुल
 इयकाहैंलीगइहसासहाकहतेहैंजोबगलछोधीछोधीफुत्सियापरिजातीहैंउसेकच्छाकहतेहैंजोगंडकोशजइपरछोरीछोटीपिडिकीहोवह
 वृषणकच्छहैंपित्तकोपकेसएफोडाहोताहैवहकच्छपिडिकाहैंकोरोधनाकहतेहैंजोछोटीकेदीरसूनअधोचिकनरेऔरपीडाअधिककोवहपाया
 एगदेभहैजोशरीरमेंगंडकेसमानफंसियांपरिजायउसेगविकाकहतेहैंकदेयाकहतेहैंवागुपित्तकेपिनहोमुहयजाइवमडाकासाकरेऔरपनलागरे
 उसेअगकहेंगाहैंऔरआंरविस्फोटकसीतलाकेभेठमेंहैंसोलुंगरीगकीगनगीमेहैधोचोदेहमसंगेएभीसीतलाकेभेठहैंअुइरनीहै ६२

विसर्धिरोगकेनवत्रकाकेहैं बातविसर्धि पित्तवि कफवि वातपित्तवि कफवि सन्निपातवि अग्निरथवि ताउनविसर्धि ६३ अस
लक्षणं निसेनागज्वरकेलक्षण कंपविषमवेगदिकहोके सज्जनस्य औचभकशूलकोचनहोफूटसोवातविसर्धिहै ॥५ निस्तेपित्तज्वरकेलक्षण
हो औतुजनसदयुक्तालरणस्य वह्निपित्तविसर्धिहै जिस्सेकफज्वरकेलक्षणहो औचिनीहोखजुआय सोकफविसर्धिहै औचदजमेंजिन
दुईदोषकेलक्षणमिले सोअंजुजविसर्धिजानो निस्सेनीनोदोषकेलक्षणहोयह्मन्निपातविसर्धिहो जौविसर्पीआगिलेजलनेसेस्यउसेकेपि
तविसर्धिकेलक्षणहोनेहैं वह्निवन्दिदाहविसर्धिहै जोयावलगेसेस्यवह्निभिधानविसर्धिहै ६३ स्वेष्वावायुकारिकेउदरोगस्योहाहै औवातपित्त
कारिकेभीतपित्तोगहोताहै कफवायुकेकोपकारिकेभीतपित्तवन्दिवालेलालछोटिवैचकतेपरतेहै औखुगतखजुआनेहै उम्हउदरकहनेहै जो

विसर्धिरोगेनवधावातपित्तकफेस्त्रिधा त्रिधाबंधसुभेदेनसन्निपातेनसत्तमः अष्टमोवन्दिदाहेननवनश्चाभियान्तकः
६२ तथेकक्षेपपित्ताभासुदईपस्त्रितीतः वातपित्तनैवखुशीतपित्तमयः स्तनः ६३ अन्तपित्तं त्रिधाभोक्तवानेनश्चाणनया ततोयंश्चे
अधाताभ्यावातरक्तनयाएव ६४ वाताधिकेनपित्तत्त्वकफादेषत्रयेणच रक्ताधिकेनदोषाणां बंधेनदिविचयंमतम् ६६

वातविसर्धिकोपकारिकेहोनातोयोश अधिकवाजकमकरताहैउसेशीतपित्तकरुनेहैजोज्वरखवकारिऔदाहआदिलक्षणयुक्तहोतेहै
एदोनोएकहोभेदहै ६४ अन्तपित्त रोगकेतीनभेदहै वातअन्तपित्त कफवातअन्तपित्त एविरुफभोजन औदुष्टभोजन करनेसेहोतेहै
यावासी औजलेअन्नकेभोजनकरनेसे पित्तकुपित्तहोकेरखीइकारलानाहै औआहारकापरिपाकअच्छोतरहनेहीहोताउसेअन्तपित्तका
हैतेहै ६४ औवातरक्तभीषकारकाहै जिसवानरुमेंवासुविशेषहैंवह्नुवातजवातरक्तहै जिस्मेंपित्तअधिकहैं वह्निपित्तजवातरक्तहै ॥
औ जिस्मेंकफअधिकहैं वह्कफजवातरक्तहै जोतीनोदोषकेलक्षणहोतीविशेषजवातरक्तहै जिसमेंरक्तअधिकहै वह्रक्तजवातरक्त

अथ

२८ जो वशरीसं पीगकरे नो अंगमेव है २८ सुवशरीको शोखे सो अंग शोखे है जो भिन्न
परे वह अंग तंतव है २९ जो वशरीसं पीगकरे नो अंगमेव है २९ सुवशरीको शोखे सो अंग शोखे है जो भिन्न
१ जिसमें कंडसे अस्पष्ट गहन कटवह सना है ३० जो नाभिके नीचे चचाप मृत्पथर साकर देखो भल मूत्र निरोध करि प
वह अथो लिका है ३१ जो अथोलिका को नार्शो छिटे दी स्तुधी लंबी स्निग्ध भिक्का पोमदे वह अमृष्टो लिका जानी बि
लिका है ३२ जो बायुगर्भाशय में प्रवेश करि भिक्का संछवि तवरे तो बालका छोटा अमृत्त हो न हवा प
कन है जिसमें सुव अंग में पीडा हो वह अंग पीडा है ३३ जिसमें शरीर विषै सुजा साय उवह अंग म
३४ देह को क्षीण करे वह स्तव धरे ३५ जो देह में रुखाई करे वह स्तव है ३६ जिसमें शरीर विषै सुजा साय उवह अंग म
जो देह को काए जो देह को काए जल अचनेत कारे वह स्तव जल व धे है अंग विभ्रम है ३७ जो नाशु शब्द निरोध करे वह भुक्का है गुण है ३८
यि मे जान सखे है औ भिन्न भिन्न विधि से करे वह पद विवकता है ३९ जो नाशु शब्द निरोध करे वह भुक्का है गुण है ३८ जो अंग नि
जंभ है ४० जिसमें अधिक डकारे आवे वह अस्थि आर है जो वायु औ नभे प्रवेश करि बोले वह अंग न कूज न है ४१ जो अंग नि
अधिक निकरे वह वात प्रवृत्त है ४२ जो शरीर जल न रूपा रके वह पारण है ४३ जो जलान सैन सौ को फलावे वह शि एष्ट ४४
वृद्धे ४५ शरीर को जो डर्वे लकरे वह का र्य है ४६ जो शरीर का स करे वह पारण है ४७ जिसमें सुतु मृत्पथर भव वाते वृत्त
त्रवार वार आलु रसा से हो सो क्षिन्न मूत्र है ४८ जिसमें नीध्न अत्रा वेव है निशना शब्द ४९ जो मसीनान निकरे वह ले रूपा शब्द ५० जो शरीर को
वृद्धे ५० जो
अथ जो विजित
५१ जो लोहा वलमि
५२ जो वज्र ध्यान है
५३ जो रूमा चही कर
जिसे न अंग दिकर सखा दन
मेले वह रखा चान है ५४ जिसे कान स सुनन परे वह शब्द सान है ५५ जिसमें त्वचा पर हाथ ए स मु क न परे
मेले वह रखा चान है ५४ जिसे कान स सुनन परे वह शब्द सान है ५५ जिसमें त्वचा पर हाथ ए स मु क न परे
मेले वह रखा चान है ५४ जिसे कान स सुनन परे वह शब्द सान है ५५ जिसमें त्वचा पर हाथ ए स मु क न परे

वातरोग अस्सीप्रकारैश्चतुर्विधाकहिगणहे आधेपक ह्यसंभ शिरोग्रहः ६७ वाद्यायाम अंतरागाम पार्श्वधूल कटिग्रह दंडापतानक
खल्ली जिह्वासंभ आदिन ६८ यक्षायात कोष्ठशिरोस पंगुता कलाप खंजना तनी चति तनी खंजना ६९ पादहर्ष गृधसी विश्वाची अ
पवाहमा अपतान व्रणायाम वातकठ अपतंत्र १०० अंगभेद अंगलोष मिच्छिउकसमा त्रयधीला अधीलिका वामनत्व

अश्रीतिर्वोतजारोगाकथ्यते सुनिभाविता आधेपको ह्यसंभ उहसंभः शिरोग्रहः ६७ वाद्यायामोतरा
यामः पार्श्वधूलकदीग्रहः दंडापतानकः खल्ली जिह्वासंभ सथादिनः ६८ यक्षायातः काष्ठशीर्षे मन्या
संभश्चपंगुताः कलाप खंजना तनी चति तनी च खंजना ६९ पादहर्षो गृधसी च विश्वासी दी चापवाहकः आ
पतानो व्रणायामो वातकठो पतंत्रकः १०० अंगभेदो गणेशो यश्च मिनिनत्वं च कक्षता त्रयधीला अधीलिका च
वामनत्वं च कुजताः १ अंगपीडांगमूलं च संकोचसंभ दक्षता अंगभोगाविभ्रशो विभ्रलोहो हृदयद्विहता २
मूकात्वमतिजंभासादत्यगारं च कुजनं वातप्रवृत्तिः सुगरणं शिराणं पूरणं तथा ३ कंपः काशश्च धूलान् च
त्रलापः शिप्रमूत्रताः निशनाशः स्वेदनाशो दुर्वलत्वं वलक्षयः ४ अतिप्रवृत्तिः शुक्रस्य काशश्चैना शश्चैना स
अनवस्थितचित्तत्वं काटिन्यं विरसास्पता कषायवक्रता ध्यानं च तथा ध्यानं च शीतता १०१ ॥

कुवड १ अंगपीडा अंगमूल संकोचसंभ दक्षता अंगसंभ अंगविसंभ विग्रह वक्षविदक्षता २ मूकत्व अतिजंभा अ
त्यजार अत्र कुजन वातप्रवृत्त सुगरण शिरा पूरण ३ कंप काशश्च धूलान् च त्रलाप निशनाश स्वेदनाश दुर्वलत्वं च
लक्षय सुक्राति प्रवृत्ति शुक्रकाशश्च अकनाश अनवस्थि ४ तचित्त काटिन्यं विरसास्पता कषायवक्रता अध्यान त्रयध्यान शीतता १०२

वा. रोमहर्षभिरुत्थ गोदकांड ॥ साक्षात्ता शब्दात्तत्ता प्रसुति गंधाक्षत दृशस्तुय १०६ अस्पलक्षण जिसवायुमें हाथीको सवार की नाई वा वार १
नह आक्षेप कहै २ जिसे दोही अकड के मुख बलार है वह हनु लिंग है २ जिसमें हाथे की न सेल कड के निर्वल हो च लन श केवल रुस्त भई ३
वेकी शिरा कहै न से निस्लेज हो के मतक मे पीडा है वह शिरोग्रह है म साध्य है ४ धौठ उभर के जो मनुष्य भव्य कार हो न स्य वह वास्यायाम है ५ जो
छाती ऊपर हो के धवा कार हो जाय वह अतुय याम है ६ जो पसरी मे पीग करे वह गार्थ भूल है ७ जो कमर अक जाय वह कटिग्रह है ८ जो देह दंश कर हो
जाय वह दंड पतान कहै ८ जिस वायु में पांड ग जाय दुटना निगंव से ओक मे क्रम से शिर में पीडा हो ओक मे क्रम से शिर में पीडा हो वह लुल्लू है १० जो
बायु जीभ को न सतान ले भोजन सुहमे कठिनता लिये जाइ वह जिह्वा स्तंभ है ११ जो वायु आधा गुस्के फेर दे माथा के पे जीभ से वो लन जाइ
इ छितिर छो हो जाइ वह अदि ते है १२ जो आथा अंग निर्वल हो नाय वह यसा धात कहै मधी गह १३ जो गोड को हिडुनी सूज जाइ सार के सांभू हो वह को

रोमहर्षभिरुत्थ गोदकांड ॥ साक्षात्ता शब्दात्तत्ता प्रसुति गंधाक्षत दृशस्तुय १०६ अस्पलक्षण ॥

गोश के है सिवा मुंड है १४ जिसमें धीचतन नार मलक रतन न डले वह मन्पा स्तंभ है १५ जो वायु हले की मोदी न से कांता निले घाउ की फे ल ने
न देख हंपगु है जो वायु अंग के शरीर की चाल खंजरी रकी नार के रें दे चलने में कौपे पाइ इ धर धर परे वह कलाय एवं ये जे है १६ जो वायु गह
ओ इही में वि किल डाय न करे वह तूणी है १७ जो शर लिंग में वि किल डाय न करे मूत्र मलाशय नार खंभे सो प्रतूणी है १८ जिसमें य गुवाय के
लक्षण हो पर ए के पांड लंग ग के वह खंज है २० ओपर से उंडुनी को वह ह्या द ह्य है २१ जिसमें पीठ कमर हूला चूतर जाय ये र स्तंभ उठने वैठ
ने में को श दो तोत्र सी है २२ जो वायु हाथ ओली न की न सेतानी के हाथ ऊपर ने उठने दे वह विखा बी है २३ जिसमें वह वाहन निजाइ वह हवाइ
कहै अस्थि चितन है वह अय पतान कहै जो वायु चोट लगि के धाव भी पीग करे व स्रण याम है २४ जिसमें चबने के प्रम से खाऊ चे नीचे ये र परे
दापने से वायु दुनो मे उत्तरि के स्तन ओ पीग डाय न करे वह वात कंठ्य है २५ जो वायु अर्ध गति हो के हस्य मलक कंध बरि हे म पीडा करे ओ धनु वा कारि
२६ जिस वायु हृदय में धवे श क रित्तान को न छ करे इ छिरे के कंठ शब्द वि तक्षण करे क भी सावधान क भी अचेत रहे

कोहृदिकोरेकेकधतरकीनाईबोलेमोहमेंपूरेवहअपतंतवहै २८ जोसवगारीसेपीगकोरेलौअंगमेरहैं २९ स्वधारीकोशोबेसोअंगप्रोषहैं जोमिन
 मनाकिबोलेवहमिनिनातवहै ३१ जिसमेंकबसेअथष्टशब्दनकेदेवहसनाहै ३२ जोनाभिकेनीचेरचायुपुत्ररसाकरदेखोभलभूतनिरपेधकरिसे
 दमेगोद्विगोद्विपीपत्तिकेमंदमंदयोडाकरै वहअष्टौलिकाहै ३३ जोअष्टौलिकाकीनार्डगोछिदेदीसुयीलंबीसेअधिकयोगदे वहअमष्टौलिकानानीरि
 भंगगोद्विगोद्विसोपत्तिकेमंदमंदपीगकोरेवहअष्टौलिकाहै ३४ जोबायुगभोग्यमेंअवशकारिगर्भकोसंक्रुधितकरै तोबालकछोदाउत्पन्नहोवहबाव
 नहै ३५ जोवायुदष्टहोछातीयीवकीसंक्रुधितकरै वहकनहै जिसमेंसवअंगमेंपीडाहो वहअंगपीडाहै ३६ जिसमेंगारीरविधेसुजासायउवहअंगभ
 सहे ३७ जोसर्वगकोशंकविनकरै वहसंकोचहै जोदेहकोक्षोगकरैवहसुखधरै ४० जोदेहमेंएखादेकरैवहदक्षहै ४१ जिसेकभीकोईअंगमि
 थितहोकीभीकोरे वहअंगभंगहै जोदेहकोकाष्टवतअचेतकरैवहसंजवधहैअंगविभक्तहै ४२ जोगलनिरेशकएिअच्छोतरहनगि
 नेदेवहविद्वहहै ४४ जोपकाशयमेंजामसखंडेओभित्तिभित्तिपिंसिकोरै वहवक्षविदकताहै ४५ जोबायुगबर्निरेशकरै वहभूकहैगुहहै ४६
 जोअतिजथुआईलायेवहअतिजंभहै ४७ जिसमेंअधिकइकारैआवे वहअत्यज्ञारहै जोवायुऔतमेंअवशकारिबोलेवहअंनकूजतहै ४८ जोअधि
 जसर्गकरैअथथौतथुदासेअधिकनिकरैवहवातप्रचलहै ४९ जोशरीरजहांजसांफरकेवहफरणहै ५० जोजहांतंतुगसोकोफलोवे वहशिराए ५१
 जोसर्वहृत्कपाने वहकंपनायुहै ५३ शरीरकोजोडवेषुकरै वसूकाएपहै ५४ जोशरीरछासकरै वहरपावताहै ५५ जिसेगोसंलुभअसभवबोलेवह
 जलायहै ५६ जोमन्त्रवारवारआतुरतासेहोमोक्षिजमृच्छहै ५७ जिसमेंनीलआवेवहनिद्रागशहै ५८ जोपसीनानिकरैवहखे रनाशहै ५९ जोशरीकोड
 बेलकरैवहदर्वहाहै ६० जोबायुअंगसंप्रवेशकरिफारिकेवहवैबसुअना निप्रवृत्तिहै ६१ जोमहकोद्यदवैवहवलक्षयहै ६२ जोधासकोकिजितभीए
 कवहसुचकनगशहै जोविजकोखस्थानरखे वहअनवस्थितचिंतवहै ६३ जोधागुकोअनिक्षीणकरैतोअुचकनामहै ६४ जोदेहकोकवरकरैवहकाहिनहै
 ६५ जिसमेंजीभकोखादनमिलैवहचिरकासहै ६६ जिसमेंगदजायजीमन्चननकहिसके वसवायुकायायवक्तताहै ६७ जोवांधुपुकाशयमेनायपेटकु
 लायगुडगुडकरैवहअभानहै ६८ जोनायुआशयमेंनायकफसेभिनेयैरुफलायपिडाकरैवहअल्पधामहै ६९ जोशरीरकोठंढाकरैवहशीतताहै ७०
 जिसमेंवारवारारोमाचहीकरोमरुप्यहै ७१ जोभमपश्यतिकरैवहभीरुहै ७२ जोदेहमेंसुईसीचभैवहभेदहै ७३ जोरवाजउत्पन्नकरैवहकईहै
 ७४ जिसेमधुरादिकरसखादनमिलैवहरसाचागहै ७५ जिसेकानसमुननपरैवहशब्दाज्ञानहै ७६ जिसमेंत्वचापरसाथधरसमुकनपरै
 लोपसुप्तिहै ७७ जिसेगंधज्ञाननहोवहगंधाज्ञानहै ७८ जिसेदृष्टिसेसूकेनही वहदशधयहै ८० " "

पित्तजनि तवालिशरोगहं धूमोजार १ विराह २ दुःसांग मतिभ्रम ३ कांतिहानि कंठसोथ अल्पशुक्रत्व ८ निक्तास्य अम्लचक्रा ९ स्निग्धत्व
अंगवाकाव कम हरितवर्णत्व अट्टभि पीतकाय ६ रक्तइव अंगदण लोहगंधास्य रोगेध पीतमत्रता अरति पीतविबिहता १० पीतावला
क पीतनेत्रता पीतवंगा शीतेच्छा पीतनखता नेजोबेष अल्पनिद्रता ११ कोपमात्रसाह भिन्नविहता अंधता उस्मोच्छासता उक्षमत्रता १२
हममला १२ तमोदर्शन पीहमंडलदर्शन निसरत्वेति एवालिसरोगापित्तसंभवहं १३ अस्यलक्षणं जित्तेपित्तकोपसेधुआसी डकार
आवेवह धूमोजारहं १ जोअतिराहकरवह विराह २ जोदेहगरमरहं वरुण सांगहं ३ जोवक्षिधिरनरहं कभी कछसमर्गेका

अथ पित्तभवारोगाश्चत्वारिंशदिहोदिताः धूमो आरोगे विराहः स्यादुःसांगत्वमतिभ्रमं १०० कांतिहानि छंदशेषोपुष
शोकोल्पशुक्रता ८ तिक्तास्यता म्लवचात्वं खेदश्चावोगयाकताः क्लमोहरितवर्णत्वं मट्टभिः पीतगात्रता १०६ रक्ताड्वो
गदरणलोहगंधास्पृता तथा रोगेधपीतमूत्रत्वमुरतिः पीतविहताः ११ पीतावलो कनपीतनेत्रता दंतपात
ता छीतेच्छा पीतनखता तेजोबेषो ह्यनिद्रता ११ कोपश्रगात्रसादश्च भिन्नवेक्त्वगंधता उक्षोच्छासत्वमु
क्षत्वमूत्रस्य च मलस्पृच १२ तमोदर्शनं पीतमंडलानां च दर्शनं निसरत्वं च पित्तस्य च त्वा रिंशदुजः स्मृताः १२३

वहमतिभ्रमहं ४ जोचेष्टामतिनकरवहकांतिहानिहं ५ जोकंदसुषावैवहकंठशोथहं ६ जोशुक्रक्षीणकौस्त्रीप्रसंगमें विनाशुक्रपा
तशिथिल होजायवह अल्पशुक्रहं ७ जोअम्लक दुष्पारहं वरुह निक्तास्यहं ८ जोसुखखटारहं नौअम्लचक्रत्वहं ९ जोपसीनाअधिक
आवेवहस्वेदश्चावहं १० पांचक पित्तदुष्टहो अंगभकानाहं वरुणगयाकहं ११ जोमला निसेअनेकपदार्थयह एकरनेरुकीवहकामहं १२ जिसमेंदेह
हरितहोवह हरितवर्णत्वहं १३ देहपीलीयाजायवह पीतकायताहं १४ जिसपीतकेकोपसेमोजनकरनेसेटुतिनहो इवह अट्टभिहं १५ जिसमें ॥

संयोगकसंज्ञा ३० ॥

नमो गलाघोत्रे रागनीपत्रे

रक्तविकारसंशयभूतिरोगहे गोखलुक्तमांगलक्तनेत्रत्व रक्तमूत्रता १९० रक्तबीवन रक्तपिटिकादर्शनउष्मतेहृष्टनिगंधत्व पीप्तापाकरादशरीरा
रक्तजनयहे १९८ रक्तकोनामसीरादशलक्षणहे असुखकेजोचोहृत्तरोगहे लोकहताहं निसमेंगारहृष्टोष्ठरोगपर्यधिकहृत्तेहे वातसे पित्तसेकफसेत्रि
दोषसे रक्तसे १९६ क्षतसेभांसार्विदत्वडोष्ठजलार्विद भेदावृद्ध एग्यारहृष्टोष्ठरोगहे १९० जोओष्ठकहोरोक्तकालापुजार् गोष्ठिपरपीडाकर तनेहृदे
फटेवाखालउखंडेनोवानजहे जोछोटीकुंसीयापर पोषादाहृत्तो पीलापर एकजायनोयित्तजहे जोओष्ठसेनकाष्ठकपीडाशुक्तपिटिकीत्यवृद्धहेजो
कफजहे जोआठपीडीकीपीडासहिनहो कभीसेतकभीकालापीलाहृत्तो निदोषजहे जोओष्ठसज्जफलकेरंगहो ऊर्लीउक्तवहेभांसकोगन्धी

रक्तस्यवदशोक्तबोधयसेसुगौरवं रक्तमांगलतारक्तनेत्रत्व रक्तमूत्रता १९० रक्तनिष्ठीवनंरक्तपिटिकानांचदर्शनं औस्मांचप्रति
गंधित्वपीगयाकअजायते १९८ चतुरस्रस्रनिसंख्यातामुखरोगास्तथोदिताः नेधोष्ठरोगागणिता एवमश्रमितावुर्थैः वातपित्तकफैस्त्वेषानि
दोषैरुह्नातथा १९६ स्तंभांसार्विदेवखंडोष्ठश्चगलावृद्धं मंदोर्वेद्वार्वेद्वचरोगाएकादशस्मृताः १९० दंतरोगादशायतादोलनः कृमिदंता
कः दंतहर्षकालश्चदंतचालश्चशर्कराः १९० अधिदंतः प्रयावदंतो दंतभेदं कपालिकाः तथात्रयोदशमिता दंतमूला मयास्मृताः १९१

निकसेओठमेंकमिउत्पचहोयक्तजओष्ठहेजवओठमेंक्षतसंगीसेखजुआथपकैधावपरैवहृक्षनहे भांसडुष्टहोकेओठमोचहोभांसपिउसहो
सोभांसार्विदहे त्रिमेओठकट्ठकेवहृखंडोष्ठहे जोमांसपिः सोमेदाहोपानीसार्वहेसेजलावृद्धहे जोओष्ठसेनरहे सेनपानीवहेसोमे राखिहृदे
ओठमेंफक्तनगोष्ठिपरिजायवहृअवृद्धहे १९० दशदंतरोगकहृत्तेहें दालनश्चमिदंतकरतहृर्व करालदंतचालशर्करा १९१ अधिदंत शवदंतदंतमे
दकपालिका एदशदंतरोगहे असुखक्षणं जोदंतदोषेंसोदालनहे जोदंतकृमिपरनेसेकालेहोजायपीडाकरैसोकृमिदंतहे जोठगायनीदांतमेंक
सोदंतहृर्वहे जोदंतमेंडोबकोहोजायनोकरावहेजोदंष्टहृलेतोदंतचावनहे जोदंतमेंमैलजमकेस्वस्वराग्न्यहृत्तोसोशर्कराहे जोदंतकेत ॥

रूपकाय दीनजन्मकेपीयाकोरकर अनिराह भक्तभोग्यसे योगका लीला सोमाय बहुरावदगह जो दात दत्तके पीडाकोर औबोह्दकोया रू
 पलीय बहुरावदह जो दातसे यात उरवद वत्तकाया विकाह रत्नमूलरोगदागंभीज भोतेरह सोताह ॥२१॥ तिनके गहुरे नाम शोताह्द उयकाशदत
 रधिपुष्ट अधिमास विरले भस सोसिर ॥२२॥ इसमें वातादि दोख से रत्ननाये रोग यों चत्रका कहै वातनाडी पित्तनाडी कफनाडी सन्निपातनाडी तेलनाडी
 ॥२३॥ अस्य लक्षणं जामसु
 ॥२४॥ अस्य लक्षणं जामसु
 ॥२५॥ अस्य लक्षणं जामसु

इगेधया

गारवाभीतर

श्रीताबोयकशीबीगुदंतविग्रधियसुदो अधिभांसाविग्रभश्चामसुखिरसोनिगे ॥२६॥ तेधेवगतयः पंचयातापिता
 कफादपि सन्निपातगतिश्चाचारक्तनाडीचपंचमी ॥२७॥ तथाजिह्वाभयाषट्सुर्वोतपित्तकफैस्त्रिधा अलसश्चचतुर्थः
 स्यादधिजिह्वाचपंचमी यदीधिवोपजिह्वा स्यात्तथाष्टोतालुजागरा ॥२८॥ रातहिलावेवहविग्रभेह जिसमसुदामें दातहिले ओनाल्य
 टिजाय ओमसुदागलिजायवहूमसोखिहै जोगसुदापिरयकि स्रजे लाखहवैतहसोखिहै ओमसुदामें कोशसोके पको फुटे ओयोनापरदुर्गेधत्र
 वलौमोनाशोरावनेसे समुग्रपैवचनाडीह यचनाडीमिसुधका अधिका रूना निरै नहवहोनाडीचा निरै ॥२९॥ जिह्वा रोग जीभमें छत्तमकारा
 ॥३०॥ पित्तज कफज अलस अधिजिह्वा उयजिह्वा एछवनामवै ॥३१॥ अस्य लक्षणं जोजीभफटिके मधुररिषट्सुखिरसोस्वादपरितान
 ओलैसेमाताइदुर्गभेजिह्वासुसुखरखैतीहै तेसे खरखरयतीवानजहै जोजीमलाल बापी लोपरजाय सहकर कंदयरे सोरि
 है जोजीभमें कोरि कंदसे रवे औभोटिहो औधेतजीभहो तो कफजहै जोओभलाल बापीली परजाय दाहकर अपनीज इको ओरहि
 तजाहै औसुजन अधिकहो ओजइय किजाय तीअलसहै जोजीभको नोक समसुजन जीभसेय पकि केवहै तो अधिजिह्वाहै असाबा
 जोजीभको नोकसी सुजननरेखे ओलाखहो खलुं आर्यवहवपनिहाजानो ॥३२॥

त्रिदोष धामिदसिसका विशेष लक्षण मिले वही ऐरिली जाली धांनरो हिली ने रहस्यो रहे सो कहत भोगिले के भीतर क्षतगों हि सखन होके
कंदरो पिकरि पीडा करगे हे और ली निगंड पर होत हे जिसे घे पा करगे हे सो नी नी दोष से होत हे जिसका लक्षण मिले वही प्रधान जानो
अथ गोरु होने कारण इस ग्रंथ में नही लिखा १२६ मुख के अंत में आठ प्रकार रोग हैं एसवमि सिके मुख के भीतर औ हन भोजि रो
ग है नात मुख पाक पित्त मुख पाक कफ मुख पाक १२७ सन्न मुख पाक रक्त मुख पाक दुर्गंध ऊर्ध्व शुद्ध अर्धद एआठ मुख से रोग
हैं १२८ अस्पल क्षण मुख के नीतर चारो ओर फंसी होय पीडा करे उन में जिस दोष के लक्षण पाये जाय वही मुख पाक जानो मुख में
फीडा हो के दुर्गंध आवै सो दुर्गंधास्प है मुख के भीतर कोण होके विधर जाइ वह ऊर्ध्व ॥ ॥ ॥ ॥

गुह्ये मांसकी गोलिदन्तवदेकैपी शक्येव ह्यवयवहे ३२ कर्णेपेगाधवारहप्रकारहे वानज पित्तज कफज रक्तज विप्रधि ३३ कर्णसोथ प्रवेष्ट
 तिकर्ण कर्णशो कर्णहल्लिका वाधिर्ये तन्निवा कंङ् शृङ्खलि कर्मिकर्णिक कर्णेनाद एअवारहनाभकानरेगकहे ३३ अस्यलक्षण कानमेश
 न्येअथोपीडसो ओमलरपि केषानीवहेतोवातहे जोनालस्त्रनहोको फटेदुर्गेधआवेतोवहे यद्वपित्तजकर्णेगेहं जोस्त्रजनसेउ
 मेरुचिकनासावहे कमसुनेपीडको रेसो कफजकर्णेगेहं निसे कछपित्तबोलक्षण मिलेव हूरकजकर्णेहं जोनीनोदोषकेलक्षणपयेजाग
 बस्सन्निपातकर्णेहे कानमेधावयाविप्रधिहे कैवाफोगश्चैके पीपवारक्तवहेसोकर्णेविप्रधिहे जोकानमे स्त्रजनहोलेकर्णेसोथहे जोकानगिलधसी

रक्तजसन्निपाताच श्रुत्यासोर्धगुरवपि अर्बुदंचेति मुखजाश्रुगुस्समन्तिगसमाः ३२ कर्णेपेगास्समाख्याताश्रुष्टादशमितावधेः
 वातापित्ताक्वाफास्त्रासन्निपाताच्चविश्वे शोथोर्बुदः प्रतिकर्णेः कर्णशोः कर्णेहल्लिकावाधिर्ये तन्निवा कंङ् शृङ्खलोल्लसिकर्णिकः
 कर्णेनाहः चतिगाहृष्टगुष्टादशकर्णेजाः ३३ कर्णेपालीसमुद्भूतारेगाः सप्तस्त्रोदिताः उत्पातयातिशोथश्च निदारीदुस्त्ववर्धनः परि
 स्फोट्यश्चलेद्दोचपि पत्नीचेतिसंस्त्रमाः ३४ ॥ होपि एयमो कर्णेर्बुदहे जोदुर्गेधितपीववहेतोद्यतिकर्णेहं जोधनेकीधदसोखेखजुआस्त्रे

सोकर्णेगेहं जोकानमेकोर्जतप्रवेष्टकोस्त्रसुकेवलमेसविकलत्वेतोहेधिगहृनेसेसास्थिरहृतोहे स्सेहल्लिकाकहृतेहे जोसुनिमपरेतोवाधिर्य
 जोकानमेपीनशब्दसाभनभनहृदत्वेतो जोकानखजुआयओकर्णे मलस्त्रयजास्त्रोपगुण्यहे पित्तकोत्तोवदेसासु कलीहे प्रयोतरमेकएश्रावक
 जोकानमेकीडपलास्त्रासो कर्मिकर्णेहं जोभिरुमृद्यादिके सागवृष्टिरितहेतोवर्णेनादहे जोकर्णेमलगल्लिकेवहेतोच निमाहहे उस्सेआधा
 सोसीभोहोमहे ३३ कर्णेपालीरेगसातप्रकारकोहे उत्पातपाली शोथपाली निदारीदुः खवर्धन परिपोटलेहो पिप्यली ३४ अस्यलक्षण
 कर्णे ३५ केकरूपजोस्त्रयोकारपद्यहे उस्सेपालीकहृतेहे उस्सेभारीआभ्रवणपहिरनेसे वाखाजुआनेसे जादवगानेसे कालापपकेराह

पीडाकारे फारसुशकेलावहोनाईसोउत्पातहेजोपालीसूषिकेछोदीपरिजाततोसोप्रपालीहेजोपालीफटिकेखजुग्राईसोबिदारीहेजोकानकी
नसच्छिस्त्रास्त्राविपरीतछेसोतोछिइवदनमेंसूरजलनसोपकेसोडुवकनहेजोगहिनापहिलेउगालेसेस्तजेकालापरयेकेसोपरिगेदहे
जोपालीमेंनहीनकीफूसीसोखजुआखजलनसोसोलेहीहेजोपालीमेंवेदनाहितसज्जनहेस्तथसोसोपिपलीहेजंयांगमेंउन्मथनामहे॥४८॥
कारणमूलप्रचक्रकोहेवातजपित्तजकफजत्रिदोषजरक्तजअस्यसक्षणकानकीजडकेनीचेसज्जनहेकारणमूलकहतेहेवातसेपीडा
पित्तसेदाहकफसेवाजत्रिदोषसेतोतोलुमएकसेलालदाहस्यक्त॥४९॥नाकमेंअथवाप्रकारकोरोगहेतिसोयांचप्रतिशयहेवालप्रतिशयप
पित्तप्रक्तप्रसन्निपातप्रअपीनसप्रतिनासा नासाशेअंशथुश्चवनामाहप्रतिरक्तचर्वेददृष्टपीनसनासाशोधघ्राणयाकपदध्यापदीनक
कारणमूलाभयांगंचवनात्पिताकाकादपिसवियाताचरक्ताचतथागमासभवागदाः॥५०॥अष्टादशेवसंख्यातास्यतिशयायुनुतेषपि
वातापिताकाकाइक्तासविपातेनयंचमःअपीनसप्रतिनासोनासाशेअंशयुःक्षवःनासानाहप्रतिरक्तमर्वदृष्टपीनसनासाशेषोघ्रा
णयाकपदकथावदीनकाः॥५१॥तथादशशिरोगावातेनार्धवर्भेदकाःशिरस्तायश्चवातेनपिताम्यीशतृतीयका॥५२॥

एअठारप्रकारहे३६अस्यलक्षणप्रतिशयायकहेनाकवहना नाकवंदसोकेफिटिकुछपागीवहेकंठनाल्लोठसूखिजाइकनपदीमेंपीरहोसेवात
प्रतिशयायहेजोकालापीलापानीवहेसोपिनप्रतिशयायहेजोकाफसासेनपानीवहेमाथाजनकागरहेसोकाफप्रतिशयायहेजोरक्तवहेनेत्रलाल
सोतोचादूपद्वोरक्तप्रतिशयायहेजोतीनोदोषमितोतोलसन्निप्रतिशयायहेजोनाकिसूषिकेचेसोअवरेसुगंधुगंधतत्तानिपरिस्वासधूसोआ
वेतोअर्थमनसहेजोनाकवागुलसेदुर्गेथआधेनोदगिनासहेजोनासकीफुटकीउडिआवेतोनासाशेनाकशभीकहतेहेजोपथमकफस्यो
सेधावायासगिरतोवशाथुहेजोधीकप्रधिकआवेतोक्षवहेजोवासावहोथतोतोनप्रतिनाहहेजोअभियातसेरुकापीववहेतोप्रतिरक्तहे
जोनाककेभीतखडियासोपरिजोयुताचर्वेदहेजोअपनससेअधिककष्टरहेतोदृष्टपीनसहेइसेपीनसभीकहतेहेजोकाष्ठपरिखीचने॥५॥

॥वेनायतोनासास्वासे जोनाकाकृदिकैकयस्वेपीपवसेतोधाएपाकहे जोनाकसे पीवनाफेनकफसावहे सोएदत्तावहे जोवाकमेरा
रहेकैदेहसंतमकरे तोमवाहे ३६ माथेकेदराचकारेणहे अर्धवभेदवानज शिरोभिनायपित्तजशिरोभिनाप १५७ कफजशि-रक्तजशि-मन्निजशि
सुर्योवर्तेशिरपाक कृमिजशि-शरत्क १६२ शरोगहे १६३ जीवायुनिजकोपवाकफकीसहायसे अर्धमलकमेंनिरोधकरे तोचितककुदाकेप्रहार
समउत्पन्नहोतीहे उरीकनपर्वीमेकाननेच तालमेंअधिकपीडाकरतीहे तोचहीज्याविभीकभीलातहोतीहे साअर्धवभेदकीहे उसेआ
सीभीकहतेहे जोरीतिकोव्याथावदेवत्त्वानजशिरोभिनापहे जोमलकाआएसविरे नासकत्वासधुआसीकटे एनिकोढटकरहे सोपित्तज
जोमाभाभरीहोहजायमुहपरमभएहटहोसोकफजहे जोयित्तलक्षणायुक्तमाथाअनिउछारहे हाथसेछुआनजाय सोरक्तजशिरोभिना
पहे जोतीनोदोषपायेजायसोसन्निशिसे किनापहे जोसूर्योदयसेभौह्ओविभंभीपीरवदगीजायओइपहसेदिनउतनेउतनीजायसोसूर्योवर्तहे

चतुर्थीकफजापीडारक्तजासन्निपातजासूर्योवर्तौच्छिरःपाकात्कृमिभिःशंखकेनच १३८ तथाकपालरोगाःसुर्न
वतोपूयशीर्षकं अरुंधिकाविग्रधिश्रसरुणंपीडकावर्दं रंशुभंचखलितिः पलितंचेतनेनवा १३९ जोमाथेकासुधिरुजजर

शिक्षयहोजायतो छरीकाबहुनआने पीडाके सोशिरपाकहे जबमलकमेंकृमियरे तोभालासाकोदे माथेकीमज्जाचलेनीहे जोकनयरीभेअनेपीअसोसुगनहो
जोपित्तबाधुरक्तकायसेशंखकोगाहे सोविषसदशमाथागलाविरोधकरतीनिदिनभंजाणहलेताहे रसेमेंवैद्यनोनिनीनवीनजानिपरविचिकित्साकतेहे १४०
अथकपालरोगनव प्रकारकेहै उयशीर्षक अरुंधिका विग्रही सरुण विडिका अर्बुद रंशुभ चखलित्य पलित एतवरोगहे १४१ अस्पलक्षण वानारिखेब
कोपकारिक्मपालमेंस्नानउप्यक्तोरें जोदोषअधिकसेउसीनाउपरीरूपहे जोकृमिकरिक्मवहुतछिरहोवहे सोअरुसिकाहे जोमलकमेंअथिययलेकिपर
सोबिश्यहे जोमायाह्वाहोभसीजमें जोसुजघायसोसरुणहे ररोरुसीभीकहतेहे जोमाथेमेंवदियासदशऊचीहोयवहपीटिकाहे पीडासंयुक्तहो
कमेंगांढिसीहोके पीडाकरें तोअर्बुदहे कफरक्तकोपकरिरोमकेछेसेकोदंधके गिएवरेनेहे सोरंशुभहे ओरनोभीहोनाहे उसेवादवोरभीकहतेहे
जोमाथेके नागिके विक्रमहोजार सोखलित्यकहे चंडवाहे जोकालमा अकालमेकेश्वेतहोजारसोपलितहे १४६ ॥

अथनेत्रेणमं प्रथममभिरण नेत्रेणचौराणमेवकारहे निसंखौदीसरेगपलकमहे १४० कथोमील पक्षघात कपोक्षिष्ट लोहित अरुक्निमेष रक्तो
क्षिष्टकृण एक पक्षार्शे पक्षरोध पितोक्षिष्ट पीयकी १४१ क्षिष्टवर्त्मो वहल पक्षोत्संग अर्धेद्वंभिका सिकगावर्त्म अलगण अजननाभिका १४२ कर्दम श्याव
वर्मा विरावर्मा अंजली उक्षिष्टवर्मा एवोविश पलकरोहे १४३ अस्यलक्षणं जोपलककीडेहलीकृष्णमेगीहोजा शौयल कवलनेमेंकछत्ते चांदनेमेंविशेषकए
बहुसे सोकसोमीलन यथांतरंमुंवनकत्तेहे निसंखरुनीगिस्तिताश्चोपलककीकोरोमेंखजहोसोपक्षघातहे वलनीभीकहे जोपलककीकोर फलिकेपिर
ककोकयोक्षिष्टयंयानमेंक्षिष्टवर्त्मोवहे एकविकासेभांस्काअंखणपलककीभीनहोलाखत्रैकोमलउसकेकाएसेऊपरस्तज्ञकेगलकलायएकवहेसो
लेखितहे उल्लगभीकदे यंयांतरमेंएकाशोकहतेहे पलकजलदीखोलिसहेद्वरुक्निमेषअसाथहे निसंभांस्काअंखणआखिकेपोटेमेंहो लंवाखबिराकअग्नेकि

अथनेत्रभवान्ख्याताश्चतुर्नैवतिरामया नेत्रवर्त्मगदाप्रोक्ताश्चतुर्विंशतिसंज्ञिताः १४१ कृच्छोमीलः पक्षमयानंकफोक्षिष्टश्च लोहितः अ
रुक्निमेषः कर्मेक्षितो क्षिष्टकृणकः पक्षार्शः पक्षरोधश्च पितोक्षिष्टश्चयोयकाः १४२ क्षिष्टवर्त्मोचवहवः पक्षमात्सर्गेलयावर्दं कं
भिकासिकावर्त्मो लंगणोजननाभिकाः १४३ कर्दमः श्याववर्त्मोयविशवर्त्मो तथाजली उक्षिष्टवर्त्मोतिगराः प्रोक्तावर्तमे समुद्रवाः १४४

षट्पथविकासेवालकोफीआखिकेपोटेयजुआयवहेसोक्कृणकहे आबकीडेहरीपरजेखिकसकिसर्पेणसमानऊसीनिकैसेखखरापीएकमहोसोयक्षमाप्रोहे आ
सिकीदेरापरखजुआय ओथोरीथोरीपिरायकछफूलोखोलनेमूंदनेमेंखेदरैसोपक्षमगेधहे जोपलककोपसेसयेदीवासाखीगम्यथीचिकेगडे
नोपितोक्षिष्टहेउसेपक्षकोयभीकहतेहे पक्षारभीकहेनेनकेपोटेपरसोपीऊसीलोयाडहेकारेवहसोयोथकहेजोपलकखोलनेमूंदनेमेंउलजायसोक्षिष्टव
र्तमेहे जोआखिकेपोटेपरपोटेकंगंऊसीनिकैसेसोपद्वलहे जोयदिकेऊपरलालऊसीबोसोपक्षोत्संगहेजोपेठकेतरैनिशंडीसोपिरायनची सोमेवीवर्दहे ॥
सन्निपातसेपोटेमें विनोस्सोहोकेपकोफूदेवहेसोऊंभिकाहे जोपोटेपिरकीहोखरखणयओउसकेआसयाअच्छरेनेऊसीहोसोसि ॥ ॥ ॥

कतावर्तते न संसाराभीकृतं है जो पदे मे कनयी हो पकेन ही कवोर मो दी पीडा युक्त खजु आरि चिकनी करवरी के वे राख सो अलागा है जो पदे मे
 लालयो डिकी सो राहू लच्छा पीडा कन होय सो कंजन ना सिका है जो पल कंडी रहै जो चिकटे सो क ईग है जो पल कजरी सी लगे तो भयावद भई जो प
 लकजरी सी लगे तो जो पेटि पर स्वचनेव है जे मे कमल नाला त में छेद हो भभ के न है सो बिस्व मर्त है जो भां स प की लाल हो पि राय सो अलजी है जो दो
 नो पल कसि कु ड के लोल ने मे मृदु ने मे न ने ओ वरा वल बेटे सो उत ली छवती है ५३ अथ ने न सं धि का ले दो नो को पों के मथ मं न व म का ले रोग है जो व
 चव का क साव रक्त साव पवती ५४ पूय स्वाव का फ न धि उपना ल अलजी ह्या ल स ५५ न व रोग ने न सं धि ले सो ते है ५६ अस्प ल ह्या जो को यो की
 सपेदी मे क छपी र हो को क म से लाली व दती जाई फिर यो डी अ धि के सो उ से धि रो म्मा त क र्ग है जो लाल हो के र्क व है दृष्टि दो न हो सो धि रो ह भ है जो स

नेत्र सं धि स मु रू तान व रोगाः प्र कीर्तिताः जल स्वाव का पस्ती बो रक्त स्वाव अ प वर्णो ५४ पूय स्वाव का फ न धि ट प ना ह ल थाल
 जी ह्या ल स र ति बो क रोग न य न सं धि जाः ५९ तथा प्रलागा त रोगा व र्थे प्रो म्मा स्त यो दृशाः शिर म्मा त शिर ह र्थे शिरा जाल अथ शक्ति
 क अक्ता त्मो चा पि मांश मो य स्तार्थे मो च पिष्ठकः ५६ शिरा या पि टिका चे व क फ न धि त को र्जु नः स्वा घ र्मा च धि मां स स्था दि नि शु ल
 ग र ग र ५७ तथा क स स मु रू ताः पंच रोग अ कीर्तिताः प्र फ मु रू कं शिरा मु रू कं क्षा त मु रू क त था जका शिरा सं ग म्मा र्थ सं धि रो म्मा क म्

की न सपेदी की न स मो दी लाल हो के जाला छां श्ले र्क्तो शिरा जाल है जो ये डी सपेदी मे मां स कां सा वं ड प न हो सो सु छि है जो सपेदी मे सपेदी मां ज
 र भये सो मु क्त भो है जो सपेदी मे चि य दाला ल मां स रा व डे र अ धि मां स है जो सपेदी मे मे ली वाला ल को सी की सी व दू त फे ल है सो च ला र्ग भो है जो
 सपेदी मे मां स ऊ चा पी डी सा हो तो पिष्ठक है जो सपेदी की न सं गे म्मा न पि डी हो सो शिरा पि टिका है जो सपेदी मे को स व र्ण बिंदु सो हो अ नु ६
 जो सपेदी मे मां स न हो अ नु न हो ओ मां म ऊं चा हो कवोर हो व द न हो व र्त्ता घ र्मा है जो सपेदी मे मां म उ को मे ल स द श्या ली हो ओ नो म ल हो सो मां स वं ड
 सो अ धि मां स है ५८ औ लिकी म्मा ली मे यो च व का रोग है प्र फ मु रू क शिरा मु रू क अजक शिरा सं ग ए च न म है ५९ औ लिके तिल के पा सका ले डे ले भ ॥

औ विउठने से सयेरुं फूल की पसुरे भा सदा धालाये वहु अशुभ कहै उसे फूलों भी कहते हैं नव काले डले में अथ त फूल साय धरिके पटजा ३३ स्मे वां सकी ३
 ल्यो निकल आवे वा आता तदा आदृष्ट कि जा र सो गिरा सु कहै ऐसी फल्लि असा प्यंहे जो काले डले में छेरे देखये सस्म सुंदरे केना को समान सो दात अकहे
 जो कातर ले मव करी को मरान के सद पाले लाल हो पोषा के रवान करे औ विकटापन हो के सब रसा मता छाये लेर मोचन काहे जो वाता दिक सो पस सय दीपर सयेर
 छरवट के रणा ही को आरत र सो गिरा सु गहे १४८ अथ काच विदु छत्र का के हैं वात ज विदु पित्त ज कफ ज सन्निधान ज रक्त ज संसर्ग ज एष इ विदु है
 १४९ इष्टिक हे अस्विको रया ही को चयं तिल की पुतली हैं उ से त्वचा मधुशकर परत है वही इष्टिकारण है तिल के पतिले या इ सरे यो तो सर पर दे मे वाता
 दिक ये यध के शक्तिाना वणे हो के छा इले नै है उस में जो एग व दिखार इव ही विदु कहला ना है निस के पहिले सो पर दे प्र ति हल का भारी क्रम से होला है
 पहले पर दल मे सा फन ही देख परता इ सरे मे मावी मसा वाल जाला सो देख परता है नौ से से व दी व ल सा फन ही इष्टि आती और इर की व ल ने ने ने

काचं गुण विधं संयं वातपि न का फार पि सन्निपाता अरु ल्हा च णं धं खात्स न्निपातं संसर्ग संभवः १४६ ति भिराणि
 बडे व लु वात पित्त का फलिधा संसर्ग न च रक्तेन व धं खात्स न्निपाततः १४७ ॥

बीर देख परती है नव चौ घे पर दे में ति मिर प डं चता है तव सव प्र कार इष्टि को रो किके अं धा कर देता है क छन हो दिख परता है जिस विं ड
 में सव व ल धूम ती डटी लाल देख परे वह वात ज है जिस में सूर्य की रण वा इधु जल सा देख परे वह पित्त ज विं ड है जिस में जल न रंग
 सा फल मलाता देख परता है अथ वा जल सा परता देख परे वाते ज रंग में सये दी देख परे वा ज्यो तिमय व ल देखने से इष्टि को उ सता न माल
 स हो सो कफ ज है जिस में नाव एका स्त स प्र विपरीत देख परे औ विना ना क कान देख परे और ना ना च का र के ज ल से उ र ने देख परे सो सन्नि
 पात ज है जिस में व दूत भां तिका लाल वर्ण देख परे सो रक्त ज है जिस में अने क च का र का बीज वर्ण वा सर्व ज पीला देख परे औ क चे पर देखने
 से च म च मो ह देख परे सो संसर्ग ज विं ड है १४६ अथ ति मिर रोग छह प्र कार के हैं वात ज कफ ज रक्त ज संसर्ग ज छठवां सन्निपात ज ति मिर
 सो रोग भी सव पर लो भे हा ना है जैसे विं ड सव ल च प्र सव य हलो में हो ता है सो री ति र स ति मिर की भी है छह प्र कार विं ड की ज इ छह प्र कार
 ति मिर है १४७

P

三

पुनर्विषयं च तथैवास्मिन् विद्यकं ॥ २ ॥ न कुलाभाय न सुगन्धे ॥ ३ ॥ अक्षय्यवदनं ॥ ४ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

तो वरीवीनसनको र्गदिविपरेरातिकोपथाघतदेवपरै सो ह स्वराष्टिहे जो वाद्यसे दृष्टि पित दोति सेज हो जाय अलोबनेमै विरोध पीडा करै सो गोभी राष्टि
हे ॥ १९ ॥ अथ भिषक रस र्गनेत्र रोग का कारण हत अ भिष्यं र्वापि कार है रक्त प्र भिषं द वात प्र पि न अ कफ भिष्यं द ए चारि हे अस्पल शरीर जेनेत्र से की वर पानी
बहि कोरी से लस हो वर कारय सो अ भिष्यं द है रस मे जो वि कार अ भिष्यं द जानौ यो ही अ भि मं य भो त्वा रि प्र का र्क है वात ज पि त्त ज क फ ज
स्त्र म च रि प्र भिष्यं द है अ म्रि त च रौ अ धि मं य दो क है अ भिष्यं द को ल धा रणे से विशेष य द कि मों खि र खो ल ने गु र ने मं उ से भो व डो पी ड हो तो है अ स्त्र म रु प रू ता
दे कि मों खि र को पी क उ प र ने है दो नि भ हो उ ध को म अ ने म्र ति पी ग हो ना है रस जे से व अ धि क हो न हि प्र भि मं य द रस्से वि प रौ र य न्न कार है दृष्टि नाश हो तो
हे वि प रौ र ज उ या य त्क य क य च भि मं य बाल को दृष्टि मा त रि न मे जा तो है रक्त जे की पो च दि न मे वात ज को त त क च हो ॥ १५४ ॥ अ
थ सर्वा शि रोग सर्वा शि रोग ने च भ र मे हो ना है सो अष्ट प्र का र है वात विषय प्र अल्प शरीर अ न्य तो वात या क्त न्य य ॥ १५५ ॥ अ क शि या क शो फ अथ

अ भिष्यं द अ च न्ना रो र्क्ता दो र्गै त्वि भि स्त्रि या च न्ना शि र धि मं य ॥ सु वात पि त्त क फा द पि ॥ १५६ ॥ सर्वा शि रोग वाद्ये सु स्तेषु वात विषय यः अ
ल्प रोगे न्य तो वात स्तथा पा का न्य यः स्मृतः ॥ १५७ ॥ अ क शि पा क द्य त था शो फो बु धि त ए व च ह्ना धि मं य र न्य ते रोगा सर्वा शि सं भवाः ॥ १५८ ॥

चित्त अ भि मं य ए वा द सर्वा शि रोग है ॥ र्वात स्व न्ना रौ श्रो णि व भौ ह्ने मं प्र व श क र्त्तौ त्र पी ड करै उ से वात विषय है कह ने है जो अा भि व ज्ञ प्राय शो अा
वि भ र य रि धि को दो र्गै चो र्क्ता व र्णै र ल र सो र अल्प सो य हो उ से अल्प शरीर फ कह ने है जो वा लु या दो र्गै कान मे मा र्ग मे न्दो र्ग मे स्थि र हो पी ड करै कि रि
यो र्गै जा पी न को दो र्गो ना री न रौ भ पी ड करै अथ वा अ र्थो हो र मे य भि कौ पी ड करै सो अ न्य तो वा यु है जो स न स्या ही स पे दो र्गै छा इ ले ओ पी ड करै
सो पा का न्य य है जो प ल क र्गो हो के वा खि मि न मि ला र्ज न हो खो ल ने मू द ने से अ ति पी ड करै व ह सु क शि या क है जो अा खि स र्ज कौ प क ने य
र सो वा च ग र्ग को प ल स मा न हो के ए च रौ ओ र ह हो उ से सो फ कह ने है य ह वि कार ने च रोग या क भे द मे है ज व ख व र्क्ता वि शो य से व न करै तो पि
त क पि त्त हो के ने च मे तिल सी प य री उ भ र के ब ह न लाल हो के द ह स्त्र ज न हो के द क ले वा प र दा ग ल जा इ सो अथ बु धि त है अ धि मं य हो के पी ड
अ धि क हो फि र्वा खि स्त्रि के नि जे ज हो जा य व ह अ सा ध है इ से ह्ना धि मं य कह ने है ॥ १५६ ॥

अप्यसंयुक्तं सत्यं धातुजं च विष्णुः कश्चिन् न संसृज्यमानो न हि तेषां च प्रकारकाः इत्येक आसेक्यं कुंभोक्तं सगंधो लुङ् एवाच है १७० जोखरुष
 ओखोमैयुनकतेदेव तं वरसर्गा रक्षाविषयपरस्वलोवहर्णक है सुश्रुतमैलिखा है किजवननुष्यके की धेस्थानमंथिन जाइहेगहेनौ धातुकी प्रथम
 ऐकता है तवइसरे कामेयुनमे प्रवृत्त होवता है इस वर्षसे पितर्ययको छोड़ देता है नौवीय प्रचलित होय रुषको कामाये क्षिगकर्मी हैं औनिसे स्त्रीके छव
 स्पर्शसे कामाये धातो सो आतेव है जो सुख स्त्रीका कर्म आपकते है उहेउस कर्म के अनंतर कामाये धातो लहे सो कुंभी है जो मनुष्य स्त्रीको योनि
 में सुगंधिलगवाई वासुगाधा धिलकामये वा कारते है जो मनुष्य स्त्रीके समान उत्तान पर कोलीके साथ संधरी स्त्रीको योनिमें वैशक कथ्य परसे स्त्रीही से
 भोग्य करते है सोखर है १७१ धातुस्थानमें आतुका कोरेग है धातुशुक्र कफशुक्र १७२ कृणय धृया भस्मो ए ग्रंथिल मलास ए आठशुक्रये

पुंस्त्वदोषालु पंचेव नोक्ता सन्नैर्योक्तः सतः आसेक्यश्चेव कुंभोक्तः भुगं यो खंडसंज्ञितः १७० शुक्ररोयासायाधो सुर्वोत्पित्तकफे
 न च कुणपे चास्वथितायां प्रथमं क्षेपं पित्ततः १७१ श्लोणं च वातपित्तभ्यां यथितं क्षेपं वाततः मलमंसं त्विषाताश्च शुक्ररोयास्तीरिताः
 १७२ अथ स्त्रीरोगानामातिशयं ते पूर्वशस्त्रतः अष्टावार्तवरोयाः सुवातपित्तकफैः स्थिधाः प्रत्याभंकाख्यं ग्रंथिभ्योऽं सलसं ततः १७३

पदे १७६ अमृतसंज्ञं मनुष्यशुक्रसंयुक्ता स्त्रीके संगमसमर्थस्ये उसके शुक्रासे संगवहो निसे शुक्रशुक्रकल उचित है जिसको धातु
 लासकाली हो औस्थान शुतकारनेमें कष्टवेदना हो सो वातशुक्र है जिसकी धातु पीन पानी लहोवह पित्तशुक्र है जिसकी धातु श्वेत हो औ
 तमममयो इवेदनायु करे वह शुक्रकफ है जो रक्तपित्तयोष है औधानुपीलीवाला लस्ये सो कुणपच है जो कफपित्तकफे धातु पीरी लेवजु पयस्युक्त
 पीवरादरा हो वसूण्याभरे जो वातपित्तकफे के हे उसमें धातु श्लोकमनुष्य सर्व नत्वा इदं पित्तव एते जागसे श्लोणशुक्रम उद्य है जो कफवायु के कफितसे
 से स्वेताकस्य श्लोको कवेदनायुक्त हो औधानुपे कटकी सी पीलाय सो ग्रंथिलशुक्र है जो सखिपातयोष से धातु मवता सूक्के राशे सो मलाभ शुक्रयोष है १७६

रनिकसप्रावैसोअंनमुंवीहै निस्कास्रश्केनाकेसमानमुखववहसखीसुसीहै जोसवापीडाकरेसोविद्युताहै जोयोनिजोधर्मेकेश्वरसुल
छिरगर्भाशयकामुखतिसमेपुच्छकाबीर्यधारएकारि यद्वेनदेईसो यत्रग्रीहै जिसयोनिमेसुरति समयपीडाहोई सोपरिजुतहै जिसजोनि
मेजोयधर्मेरुधिरकेनमिलारुजैगतिहोगिरेसोउपजुताहैजोयोनिमेखुनसमयपुरुषसेत्रयममुखजन्यहोकेकिरिदिसहोधाकचरणहै जो
सर्वीवशेषकेलीरहिसोमद्योयनिहै रसेविद्यताभीकहतेहै ओखोकाफरकाकेविकारसेयोनिमेंकमलाकरसीभोंसकीमांछि सीलोकगिेकाहै जिस
भेमेखुनसमयसंतोषनहोसोअग्यबदाहो जोयोनिसदाभेखुनकीकांक्षितरहें तन्ननहोदेरसेतन्नहो सोअतिवर्णाहै ऐसीयोनिवीर्यनसोधार
एकरती ६४ अथवारिप्रकार्योनिकदरेगवातजपितजकफज विसेवृज १६४ निदानदिनकेसोनेसे जोधुसे अतिभोगसेवानखलानसे
वातकपितसेहोकेनांगोंकेफलसदृशगोल अरुणउत्पन्नहोउसेयोनिकादकहतेहै रसमेजोदोवअधिकहो वातपितकफसन्निहैसेवासे
जानना ६५ अथाधुत्रकारगर्भसंवंधीरेग विष्टकवर्भेनागोदरमुकल्ल मूदगर्भ विष्टभ गूदगर्भ जरायुदोष गर्भमात एआठवकारहै

चतुर्थसन्नियातेनतथाद्योगर्भजागदाः १६५ उपविष्टकगर्भोस्यातथानागोदरः स्मृतः मकल्लोमूदगर्भश्च विष्टक
भोगगूदगर्भकः जरायुदोषोगर्भस्यपातचाष्टमकः स्मृतः १६६ ॥

सार्धबानेकेयोगमेंपित्तकोपित्त रक्तगिणताहै तवगर्भद्वलकापरिकेंमलदीनहोवदतातवनवमाससेअधिकदिनखीचताहै ओगर्भअचल
नहोरेलनाचलाकारताहै वसुपविष्टहै जोधातवारुधिरकेविकारसेवायुत्रवेशकरै गीसयेसदृशपेडकोधेरकेफलताहै तिल्लेपीछेअयनीर
सेमृत्पुकहोगिरपरताहै नानिसंधितोरहिजाताहै रसेनागोदरकहतेहै मकल्लरोत्रकारकाहै गर्भमल्लक प्रसूतीमकलगनराताप सेवास
कपित्तहोयेइमेंआरुमृत्पुजजाइगर्भकोपीडितकरिमारितहैसोगर्भमकलहै जोबालकभयेपीछेवायुकपित्तहोगर्भसंवंधिरुधिर
किकैऊपरज्वरवस्तीमेंचढोयदृढ्यभलतकेमेंमृत्पुजउत्पन्नकरै योनिकोमोदीओसंकुचिगकरै जोधसूतीकोमागडासेनहप्रसूतीमकलहै र
योनिंपरणभीकहतेहै जोवायुगर्भकोऐकेकेवाहुरकीओरखदासाअगवैयोनिपेडमेंमृत्पुजमनकरै जोमूत्रोकेवहसूदगर्भहै इल्लेवाठवकारकेने
दृश्यतादियथमेंकहतेहै निस्केलक्षण कोरखालकेहोतेहीमलकअवराधरोभकतीहै कोइवालककेविपरितसेनपरअ

कारती है को स्त्रियालको एक हाथ निवासे पर अथ वर रोध को को ई दोनो हाथ निकसे पर अथ वर रोध को ऐसे आठ भेद हैं और
 समग्र रहित भोजन बारुक्ष भोजन से वायु को पकरि गर्भ सुखावै पुष्ट न होई रसी से पिडन मूद्वर हलका पजार गेला को ओ भेद मरपी गका एत है जोग
 भेद कि पुष्ट होवे न हो एक दिन वाकी रहे न वगर्भ नी ऐ हो ताजात है गर्भ शय्या में वालं कजर सुकरु लिली में बेदिन रहत है सो जर सुबोय है भयसे
 प्रात से तीक्षा उल भोजन या न से गर्भ फल से की ना र्गालिके गिरय रता है वह गर्भ स्वाव है जो चारि मास के भीतर गिरे वह गर्भ यान है १६१ अथ
 पंच प्रकार सन रोग वातज पित्तज कफज सन्निज क्षतज जे से ऐया च सन रोग है ऐसे हो वाता दिया च रोग दुधजन मे सन रोग बोले रोग
 भेक है १६२ इधवाली वाबिना इधवाली स्त्री के लन में बना दिशे को पकरि मांस जात दुधित को लोपाच विधि रोग होइ सो एकज विधि के सनल

पंचैव सन रोगः सुवाता त्रि तात्वा कादपि सन्नि याता सता चैव तथा सन्योद्भवा गदाः ६७ वाल रोगे शु क छि
 ता स्त्री दोषाश्च त्रयः स्मृताः अदक्ष पुरुषो त्यक्तः स पत्नी विहित स तथा ६८ देवा जात तु तीय सुन था ये स्तुति का गदाः
 ज्वरादयश्चि किंसा स्तेय या दोर्ष यथा वलम् १६६ ॥

भणयुक्त होत है वातज में वायु के ऐसे दोष प्रति जानना १६७ स्त्री के दोष उ
 त्यक्त काले वाली तो न दोष है अदक्ष पुरुष कहें जो स्त्री के व्यपस्यर में च न रन होय उस के संताप करि कै जो रोग अत्यन्त होय न ह अदक्ष पुरुषो
 त्यक्त कहिये जो सवत की ईर्ष्या संताप का रण क रोग होय वह सपत्नी विहित है जो निज स्त्री के से पुरुष प्रसन्नता से मन न देई और स्त्री स्त्री से स्ने
 हरवना होय रस चिंता से कृश होवे शरीर में जोग उ त्पन्न होता है वह देविक है १६८ अथ वाला न रोग जो वाल क होने से अंत में रोग उत्पन्न होय
 वह वालांत है उसी को प्रसुत भी कहत है रस में ज्वर दिक दोष देविके और रोगी का वलावल विचारिके किंसा कारना जिस में देव सोई ज्वर पियस
 खजन शूल अतीसार हो सो असाध्य है जो केवल खाने की पीने से दुआ है ज्वर दिक वह विशेष भयंकर है जो मकुल रोग करिके शूल उत्पन्न क
 रे और अतः अवरोधन करि सव देह में शूल उत्पन्न करे वह शूल ला म म क ल्व है १६९ ॥

वार्षिकपाकारोर्गहैवालकके तिस्रोतीनरोगमातृकोत्तनसंबंधीहै वातज पित्तज कफज एतृधसंबंधीहै चारि रोगदातनकेहैं दंतोर्जिरदन
धान दंगशब्द एचारदंतरोगहैं एकप्रकृति १७० मुखपाक मुखलाव उदयाक उपशीर्षिक पार्श्व उरुगतासु कंदविष्टि न पारिगर्भिक १७१ दोषवत्पग
शयामूत्र कफरणक रोदन अजगल्बी रसभातिवारसवातरोगहैं १७२ अस्यनिदानतदुपवातकहि विगदूधपीनेसे बालकको बागजन्मरोगपैराहोतेहैं
त्वच्छीनदर्कत्व मलमूत्रावरोध एवातजहैं पित्तदूषितदूधयानसे संदेवपपीता छितरा विथरभलनेत्रपीतेहैं देहसवनागोवनीरहै एपित्तजहै कफसं
बंधीदुष्टदूधपीनेसे स्तारविशेषवहै निश्रधिकमुह्रुओस्त्रिफिजिायउवकारैआवेएकथजहै बालककेपहिले रोगअनेभंज्वरगडाखासीमाथेभेपीएवा
की दोषलत्वयहृदंनोभिदहैं सातएवाआठएवर्षबालकको दूधसंबंधीदानउखडनेसेज्वरह्निउधइवहोतेहैं वहृदंतयागहैं रसेदंतयागभीकरतेहैं ज
नकोवैरांतनिवालनेहैं वसंततशब्दहैं जोदंतअकालभेगि रैकेजमनेहैं तवज्वरदिकपीडाहोतेहैं वहृदकालदंतहैं जोवालकवाखाणअपिरेओआ

दाविंशतिर्बोतरोगानेसुक्षीणलसखयः वातापितात्कफचिदंतोन्निश्चगुर्धकः दंतयागोदंतशय्येकालरंगोत्तिष्ठतनं १७० मुखपाको
मुखत्तवोगदपाकोहिशोर्षको पार्श्वोरुणालुकंवेविच्छिन्नपरिगर्भिकः १७१ दोर्वत्पंगानत्रशोयश्चशयामूत्रकफरणकः रोदनवाजग
ल्लीस्यादितिषाविंशतिः स्मृतः १७२ तयावालग्रहाख्यागादादेशवमुनीध्वरेः खंस्त्रहोविशाख्यासात्सग्रहश्चपित्तग्रहः १७३

लस्यकगिसाताथेवेनहैं तोएरमेंत्वजुलीपैराहोकेप्रसियाउमनहोतेहैं सोयकफरुकेघावपरजाइवहृदअह्निप्रकृतहैरुधिकोयसेहोतीहैं ओरुयं
प्रकतीरसेरुद्ररोगमेंलिखतेहैं परस्यग्रहरेगकेवलककेहोताहै प्रसेरसग्रयकतोनेवालरेगमेंलिखाहैं जोवालककेमुखमेंसेपदमलारसी
जमीफनीकेदीसीदेवपरवहृदमुवेआवहैं संयदमूदानसिद्धहैं जोमुखमेंलावतहृदालेसेहोवहृदमुखपाकहैं यदलालभूहाप्रसिद्धहै बालककी
उपययकडोघावपरजाइवहृदएकहै जोवालककेमूडपरमेल्जमकेपिरकोपरतीहैं अथवाएधिरकोयसेफलकेधृखावपलायवहृद
पशीर्षहैं बालकरोगकेमध्यमे स्त्रीजन्यदोष मलपचनान विसर्पेरोगरात्रकारबोताहैं एकवसिज राडाकेवकसेहृदयपर्यंतड
खदेहृदोवसिजहैं जोमुखवा नात्वहृदहिरतकलालताम्रसमहोके हृदयसेगुरायपर्यंतड खदेवहृदशीर्षहैं एदि ॥ ॥ ॥

सुपरीरुण है यथांतरे से यन विसर्पक होते हैं बालक के ताल में कफ को पसे को दासाय जाता है उसे तालुकं ठक ओषो एतक कहते हैं जिस बालक
 का ताल खाली प रिजा सो सनपातन करिए के वं कष्ट से दूध पिये भल पतला गिरे ने नवा कं ठ मे विका रजा र्क मन से नही पीवे जो का तो इधग
 लदेर ऐसे उप इव युक्त हो तो विच्छिन्न है इसे ताल या न भी कहते हैं भोग भिगी का कुसुम यान करे तो एउय स्वये दा हो ते है खा सी अग्नि में डूबा
 की नडा अरु चि अम इत्यादि रोग प्रत्य इव न हो ते हैं उसे पारिगार्भिक कहते हैं गर्भिणी का सनपान करने से बालक न क्षय होता है देह दुर्बल
 हो के पेद तो पीसा निकल आता है एयारिगार्भिक कला अण है जो शरीर वृद्धन कय हो जाय सो गात्र शोष है ओ सुखंदी भी कहते हैं इस समंड का ई
 ओ अती लार सी होता है जो बालक अशान हो के ए निवा दिन को वेधे ना से मृति सी मया भूत्र है दुग्ध दोष से बालक के आंख को पलक पर
 खान हो के आंख से पानी वहा है ओ बालक आंखि ना क मस क घसग है उन रिमि आंखि न ही खोलगा उसे क हू ए कहते हैं जो बालक विशेष
 धरो वै उसका कम बढे उना विष के अनुमान करि के रोग जानना वतरो दन है कफ को पसे बालक के शरीर में भूगा सी पिर को हो शरीर को रोग में

नेग मे वग्रह स द्यच्छा निः शीत दृग नग मुख मं धितिका त द दृग नग नांचां ध दृग नग रेवती चैव संखाता त रथा स्या च्छु ध रेवती २७४

मि ख रहती है पीडान हो करती एक से एक मिल के रहती है वह अज गल्ली है सो बालक के विशेष के होता है जवान के कम होता है ७२ अथ वारह
 अकार बालक ग्रह रोग है स्कंद ग्रह विराट ग्रह स्वग्रह पितृग्रह ७३ भोग मे व शकु नि शीत दृग नग अख मं धितिका दृग नग अध दृग नग रेवती
 शु ध रेवती ए वारह प्रकार है ७४ अस्व सामान्य लक्षण कदादि कार भय हय सत बालक अनायास चौकता है उडि उडि वेगता है जो ठ दान च वात है
 मुख से केन गिराता है सो मान ही हांथ पावु रह जाते हैं मल पतला अर्च्छी गरु ह्वोलतान ही वेहें मच्छली के रक्त की सी रं ध आती हैं इधन चै पाना सव ग्रहो
 के सामान्य लक्षण जो बालक को को ये आंखि देह पानी व है वा एक अंग का ये ऊपर को देखे दांत च वाय मुह टुटा विटावन वि दूध न पिये कष्ट रोवे
 वह स्कंद ग्रह है निसे ग्रह मे बालक को ज्वर आऊ दृष्ट हो वह विराट ग्रह है इस के विशेष लक्षण बाल नत्र मे हैं निसे ग्रह मे बालक वे हो स रोग
 य अह से केन गिरे ज्वर दिक् उप इव हो गे है अधिक देह भ रक्त पीत की अथ आवे उसे स्वग्रह कहते हैं यं पात में क्लृप स्मा कहते हैं अग्नि घातादि
 पित्त क्वरि पीडित बालक को ज्वर ए दिक् उप इव होता है वह पितृग्रह है नेग मे वग्रह पीडित बालक तिसै उव का ई जछ कम कं मुख शोष मुखी देह में डगे

तववानावहेनेमेषहं जोवालकअंगालितहोतोमयंकत्तुप्रभरणउचसताहोदेहमेंपभाकीसीगंभआवे औखपिएथजवकार्द अतिसारदेहमेंडुंगं
धयहसीतप्तनहं जिसवालकनामुखनसन्तो शरीरकीनसेरेखिएअधिकतायदेहमेंओभ्रममेंडुंगंधआवे वस्त्रखमडिनहं जिसवालककोज्वर
अतोसार पियासऊर्धदृष्टि रोना निशहीन निवृलगा वरुहप्रतनाहं जोवालकलौसे ज्वरपियासदेहमेंमेदगंधरुदनविशेष इधनपिथे मलअधिकनि
रे वरुधंधसतना जोवालककीदेहमेंपिच्छीघाव घावसेरुधिरवहे देहमेंडुंगंध मलपतला ज्वरचहरेवनीहं जोवालककोज्वरशूल अजीर्णसाधेमेंपी
डमुखशोथ साशुछारेवतीहं १७४ बामरक्तकरिकेपंचकरोग सुनिपादसंभयाद सुटन इत्यादिकं पांचरोगमुनिलोणवद्यालिकाहिंगएहं सोयरोग
पदादिक रोगनिर्भयमकहिंगएहंसेजानना १७५ सन्निधपातादिकबोयंकरिके ६२ वासवप्रकारकेरोगहं सोवातादिकबोयमेंभिन्न
रोगकेभेदकहिचुकेहं परस्परइन्हेंभिन्नकरिको रंमंहीकहता एसासमुक्तना १७६ पंचकर्म वमननविरचन निरुहण वस्त्री अजुवासनवस्त्री

तथाचएकभेदास्तवान्नास्त्रादिकाश्रये विद्यत्वारिशयुक्तास्तोरोगे खेवमुनीश्वरेः १७५ विषद्विदोषभेदानुस
न्निपातादिकाश्रये तोपिरोगेषुगणितामृथक्योक्तानेकचित् १७६ होनभिष्यातिफगानांभेदःपंचविशोदिताः पंच
कर्मभवारेगा र्नेषुरोगेषुसंज्ञिताः १७७ स्नेहखेरोतथाधूमोगंडूयोजननयणे अष्टादशेतजाः योगलाश्वरोगेषुसंज्ञिताः १७८

नसा स्यांचोकर्मेउत्तरखंडमेंकहेंगे अरुहीनयोग मिथ्यायोग अतिभोग रनतीनोयकारकेभेदहं सोभीउत्तरमेंकहेंगे वमनकहें औ
षधिदेकेउचकावना विरेचनकहें औषधिकेंमलतिराना निरुहणवस्त्री अजुवासनवस्त्री औषधिकीपिचकारीशरस्मार्गेसिरेनीन
कहेंनाकर्म औषधिदेनेकायत्न इसभांतिपांचोकर्मेजानना हीनयोग मिथ्यायोग अतिभोग रनसेनानाभांतिदेखउत्पन्नहोने
१७७ स्नेहादि संग्रहभीउत्तरखंडमेंहं निहयानदेदन भ्रसमान गंडूष अजन तयए तयए रनछहोमेंहीनयोग मिथ्यायोग अति
योग एतिनोभेदकरिकेअवाहभेदहं उस्सेउत्पन्नमोरोगसोउत्तरोगमेंसंग्रहकरिआएहं ऐसेजानना लेहयान खर भ्रसमान गंडूषना अजन यह
पथमपरिभाषाभिलिखगए औषधादिककरिके धातुकोटपकलेषमयोगउसितयएकहतेहं अथबामेंचटभिकामेंकेत्रयोगउस्सेभोगएक

[illegible]

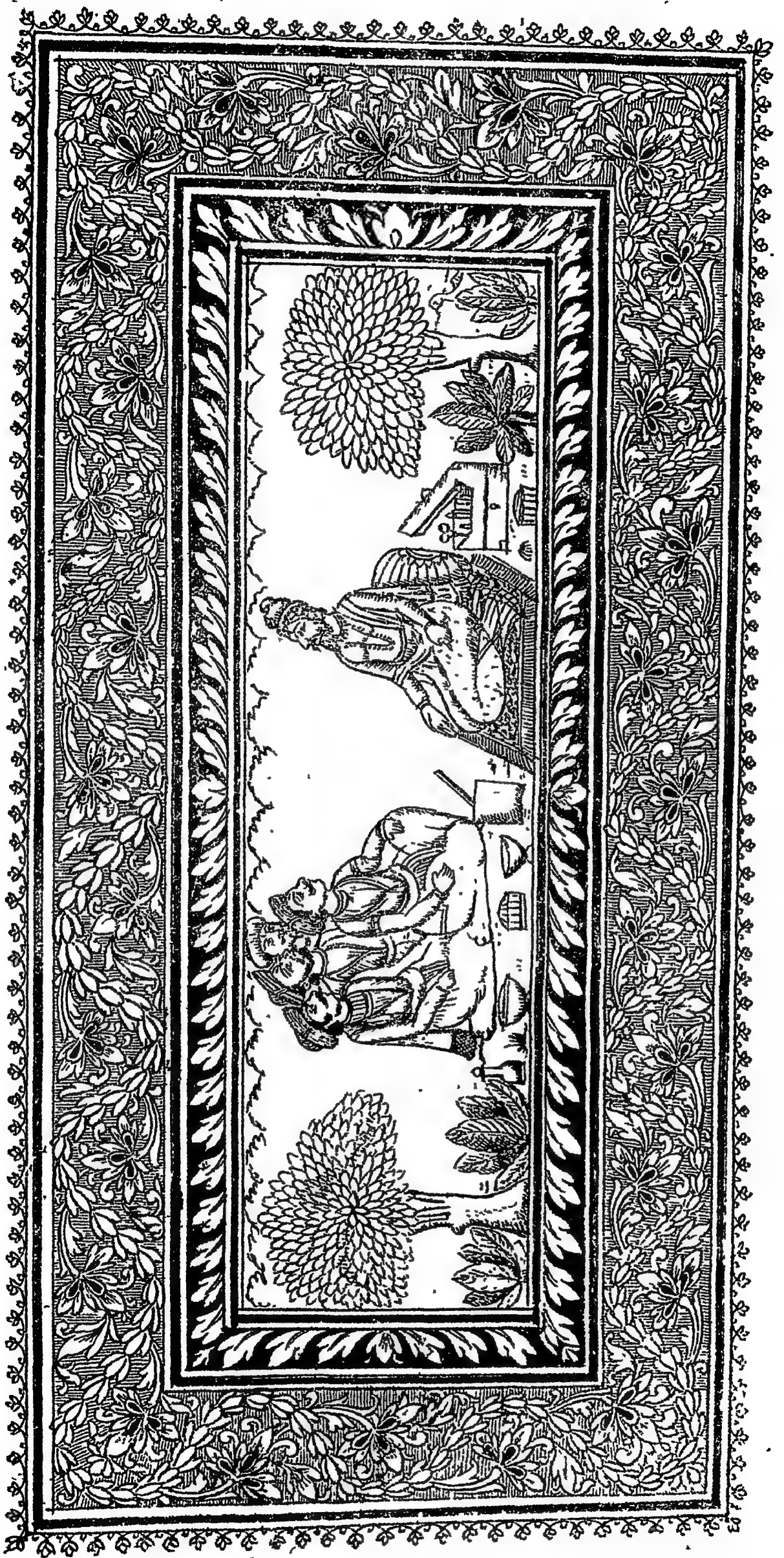
शीतोपइव एकः स्यादेकश्चोष्णो यतापकः शलोपइव एकश्चोष्णो रश्मेकः स्मृतस्तथा १०६ स्थावरं जंगमं च
वह्निमंच त्रिधा विषये तेषां च कालकृदाद्यैर्न वथा स्थावरं विषं जंगमं बह्नाद्यैर्नोक्तं तत्र तत्ता भजं गमाः
१०७ दृष्टिकं मूषकं कीदृशं त्वेकं ते च त्रिविधा दृष्ट्या विषं नृच विषं बालशृंगास्थितिस्तथा १०८ मृचातुरे
वायुकाचदष्टेर्निश्चासतस्तथा लालायास्पर्शेनश्चेव तथा शृङ्गा विषं गतं १०९ कृत्त्रिमं विविधं प्रोक्तं गरुडीविभे
इतः सप्तधा तु विषं ज्ञेयं तथा सप्तोपधा तु ज्ञं तथैवोपविषो भक्षजानं सप्त विषविषं बृहन्नीरं विषं चैकं तथैकं रश्मिजं विषं ११०

चारों किसीके संगमें हाउमें ७ सूत्रमें मलमें धाउमें राखें ध्यासमें लागें सग्लें ऐसे भिन्न भिन्न जानि विष है मनमें विष को शंका आने से वासु
 क यित हो जरा देख पस्व गरीरमें प्रगट करे सो शंका विष है ८२ इति म विष के दो भेद हैं एक वच्छना गदि एक वच्छना गदि एक दूधी संनति
 संपत्ति के निमित्त शत्रुता करि कैवासी लोग नाना प्रकार की चीज पसीना रज दिनाई मल मूत्र रग दिव्य न वे संगति वादे गेहि तो पांडु ज्वर गदि
 उपद्रव होता है ताम्र धनुनय क भये विष हूँ नीवू फर भिन्न भये विष हो वृत्त क विम विष है ओख च्छना गदि वृत्ति म विष एक चौकार देह को नीरु क सिंग

परक्रमे सोप्राणनहीना राकराक्ता परं गुञ्जरदि उपद्रवकरिके देश काल अन्नवा दिवादिनिद्राकरिके पीडितकरताहें औरसमरलादिया
तुनिकोइधिनकरताहें इसीकारणदूषितविषकहतेहैं एदोप्रकारकेद्वन्निमविषहें विषकेमेद सुवर्णदिकअशोधसमयात्तकीमसालानेसे
हतालादिसमस्तउपधात्तकीमसालानेसे सप्तमसदिकअशुप्रउपविषयानेसेविषसमानपीडासेतीहें उसकोविषसंज्ञहें अथदुष्टनीर जिस
में कीचउसेवालपतादिकजंतकेवाभेडकाकेमलमूत्रसेपानीविगडजाताहें उसेदुष्टनीरकाहतेहैं उसकेनहनेसे पीनेसे विषस
मानपीडितहोताहें प्राखादिकमेंविषकेपानीकोचढातेहैं उसप्राखकेघातकाधावनहीअच्छाहोता औरविषसदृशउपद्रवही
हें सोहिप्रविषहें १८३ तिलक अथचारित्रकार आर्गतुकउपद्रव वनकिमाच दुष्टपानीसूरन अंगकेघूनेसेदेहखजुआय

कषिकछुभवाकंडूदुष्टनीरभवानथा तथाभूरणकंडूअशोथोभदलातजस्तथा मद्धश्चतर्विधश्चान्यः स्रग
भंगाक्षकोद्रवेः १८४ इतिप्रसिध्गणितायेकिलोपद्रवाशुवि असंख्याआपरेधातमूलजीवादिसंभवाः १८५
इतिश्रीशार्ङ्गधरसंहितायांरोगगणितानां सप्तमोऽध्यायः ७ इतिप्रथमखंडसमाप्तम् ॥

भलावोंसंदेहेस्तज आवे इसप्रकारसेचारिभेदहें औरभीचारित्रकारहें सुपारीभाग वहेशकीमिंगी कोदवधान्य इनचारिकित्वा
चारिप्रकारकेमदहोवें औरभीजानना १८४ औषधिवनस्पती फूलशर पात मूल इनकेखानेसेचारिविधिमदहोतेहें
प्रकारजोपृथ्वीमेंप्रसिध्गोगोयद्वन्तिनकीसंख्यानिश्चैकरिगएहें इसेवा सुवर्णदिधातु हरितालादिउपधातु नानाप्रकारकी
वा औषधि वा जीवादिकउपद्रवकरिके अनेकउपद्रव उत्पन्नहोतेहें सोउपद्रव असंख्यहें अनुमानसेजानना १८५ इतिश्री
शार्ङ्गधरव्याख्यायांनिर्मितशार्ङ्गधरसुधाकरनामसप्तमोऽध्यायः ७ समाप्तेप्रथमखंडः ॥



श्रीगणेशायनमः अथ मध्यमं चतुर्थं वा नित्यं अथ काव्यपञ्चकार निसे काव्यकहे स्वरसकहे अंगारस १ कल्क
२ काथ ३ हेम ४ फांट ५ एकसे एकगुणमें न्यून है यथा अंगारससे लघुकटक १ उत्तम भूमिसे तरितकी उडलारी औष
धि जलविना कूटिकेवलमें डारि निचोरिले ई उसरसको स्वरसकहते हैं २ स्त्री इव कुडवकहे सोलहनेले कूटिके दुग्ने
पानीमें विनगरी तीभिजो इराये उल्केरसको भी स्वरसकहते हैं ३ जो इव हरीन मिले तो स्त्री इव अढगु निया नीमें औटे जव

म.
शा. दी.

२

श्रीगणेशायनमः अथातः स्वरसः १ कल्कः २ काथश्च ३ हिम ४ फांट ५ कौ जेयाः कपायाः पंचैते ल
यवः सुयर्थोत्तरम् १ आहतातस्थि एतद्वा इव्याक्षरात्सप्तश्रवः बलनिधौ ज्योतिषः सा त्वरसोरस
उच्यते २ कुडवं चूर्णितं इव्यं क्षिप्तं च दिग्गणे जले अहोरात्रात् स्थितं तस्मान्न वे कारसप्रतमं ३ आदाय शु
क इव्यं चास्वसानाससंभवे जलेष्टगुणिते साध्यं पादशेषं च गृह्यते ४ स्वरसस्मरु रुक्ताचय लमर्धे प्र
योजयेत् निशोषितं चाग्नि सिद्धं पलमात्रं रसं पिबेत् ५ मधुस्तेता शुद्धा शरीरकं लवणं तथा घृत
तेलं च चूर्णो दीनकोलमात्रं रसं क्षिपेत् ६ अमृतमात्राः रसः शोषः युक्तः सर्वेषु भेदजित् हरिद्रा चूर्णेण
कोवारसो धात्रा समाक्षिकः ७ ॥

चोथारहेतवलेले ४ ५ जोदी इव्यकारसगारुच्चाहे इस्कारणकार्यमें आ धायलले
जो स्त्री इव्यरातकी भीजीकारसहलकाहे इस्से पलभरलेना ५ स्वरसकावाकादा वायंनका निकालारस इनमें सहत शक
गुडखार जीण लोन घत तेज औष्ठरण एसव आठमासि युक्तकरना ६ गरचकारस सहत युक्तखाने से सब प्रमेहनाश होय
औ औवरेकारस हरदीका चूर्ण सहत मिश्रित करि खिलाने से भी प्रमेहनाश होय ७ ॥ " ॥ " ॥

अथवा साखरसंक्रान्तिदिपारुसेकालसुसंयुक्तमिलायकोपिधेसुरक्षितविजनापाहोर्ओरज्वरपौसीक्षर्कमलकफऔपित्तपरो
गभीनाशकोरे ८ अथत्रिफलादित्वरसकमलपरत्रिफलेकारससहजकावर्गोदरदीकारससहजवा नीवकारससहजयुक्तपिधे
नोकमलरोगकोनाशकोरे ९ अथगुलसीञ्चादिसरविषमज्वरपरगुलसीकारसमरिचकाचूर्णवागूमाकारसमरिचसाथपि
येनोविषमज्वरनाशहोई १० अथजंभादिसरक्वातिसारपरनासुनिर्बोवओवरइनतीनोकीपतीकारससहनयन

वासकःस्वरसःपेयोमधुनारक्तयित्तजित् ज्वरकासश्चयुद्धरः कामुलाम्नेष्मपित्तहा ८ त्रिकला
धारसःक्षौद्र्यक्तोदावीरसोद्यबा निवस्पवागुड्द्यावापीतोजयनीकामुलाम् ९ पीतोमरिचचूर्णे
नक्षुलसोपत्रजोरसः शोणेषुषोरसोप्येवंनिहंति विषमज्वरान् १० जंघाम्नामलकीनांचपल्लवोत्थो
रसोजयेत् मध्वाज्यक्षीरसंयुक्तोरक्तानीसारमुल्वणं ११ स्थूलवहूलिकापत्ररनः पानाद्यपोहति सर्वातिसा
रस्योनाककुटजस्त्वगयोद्यबा १२ आइकःस्वरसःक्षौद्र्यक्तोद्यबातनुत् श्वासकासारुचिंहंति
प्रतिश्यायंवयोहति श्वेजम्बरसःपानान्मधुक्षारयुनोजयेत् पार्थ्व्यहृदस्तिशूलानिकोष्ठवायुंचरारुणं १४

इध सहित पियेनोदिनीरक्तातीसारइरिक्करै११ अथवद्वर्गदिल्वरसअतीसारपर वद्वर्कीछलकारससहतयुक्तपिलावैतोसा
तभौतिकाअतीसाजाइ वाकुरेयोकारसवाकरीलकारससहनसंगपियैतोअतीसाजाइ १२ अदरखकमसरसअंडकोशओश्यास
परअदरखकारससहतपियैतोवातांडरूपचै श्यास कौसी अरुचि नाकबहना सवरेगमुक्तहोई १३ अथवीजदूररसयाश्चोदिअ
लपर बिझैएनीद्वकारससहत औयवाषारसहितपियैतो पशुरैकाभूल हृदयकीभूल पेड़पीर कोष्ठद्वएसवंगनिसिनिमुक्त

अथसतावरिसयिनुभूलपरि सनावरिससहृत्पियेतोपितभूलहरे अथधीकुवारएसहीहापरधीकुवारएस
पिल अथचीपेटकीमोटिहोई १५ अथमुंडीएसमंशमालाअपचीपरमुंडीएसआठनोलेपियेतोगंडमालाअपचीकोंवरोगमिटे १६
अथमुंडीएससुयोवतोदिपरमुंडीस्वरसुअमचिहृणुतसातदिनपियेतो आधासीसीअच्छीहोई १७ अथब्रह्मादिस्वरसुअम
ब्राह्मी स्वेतकुमडा कहरवावच कौज्जालाइनकास्वरसभिन्नभिन्न सहृत्ओकूटकेसंगपियेतोसकअमाइजाइ १८ स्वेतकोहडाकारसउ
असापाटे

महाभारत

प्रातावयोश्चमधुना पितृशूलहरीसः निशान्चूणेतः कन्यासः स्त्रीह्लाः पचीहरः १५ अलंबुधायाः स्वरसः पीत्ति
विपलगात्रया चपचीगंडमालायां कामलायाश्चनाशनः १६ रसेसुंशः सकोलोवामरिचैवधूलितः जपेत्सप्त
स्निग्धासात्स्वर्वावर्तोर्ध्वेदको १७ ब्राह्मीकृष्णोऽष्टद्वंशा शंकोनीस्वरसः पृथक् मधुकषयुतः पीतः सर्वोन्मादपह्लाकः १८
दूष्माइकसास्वरसोऽनसह्योजितः दुष्टकोऽवसंजातं मंदपानाद्यपोहति १९ खड्गदिष्टिजगात्रस्य तत्कालं धृतिव्रणः
गांगेद्वीमूलसैर्जोयते गतं वेदगः २० पुटपाकस्य कल्पास्य स्वरसोऽगृह्यते यतः अतस्तु पुटया कानां युक्तिश्चोर्ध्वते मया २१ पु
टपाकस्य मानवयं लेपस्यां गार्वर्णिताः लेपं च बांगुलं स्थूलकायां बांगुलमात्रं कं काशरीवदज्वादिपंचैर्वै छनमुजमम् ॥

दयाका स्थमानवरापलापि ॥ १८ ॥ अथवरियागरसुधावपरास्त्रकेलगेका
दपरसुयेवकासुदेकारसुपुरनेगुसंयुतपियेनोडुलकोदवकाउन्मादनाशहोई ॥ १८ ॥ अथवरियागरसुधावपरास्त्रकेलगेका
मंतरंतवरियागिलासलगाबेनोयावअच्छाहोई २० ॥ पुटपाककेरसलेनेहैं इस्सेउपकायत्नकाहनेहैं २० ॥
इब्बोठादीइयहोउसेयीसकैगोलावांधेतिसपर ॥ उवावरादवाजामुनकायतासयेहेफिरकपरेदोकरिदोअंगुलमोदीमादी
॥ जवलालहोतवत्रिकाविठरसकासनिचोरिलेउसेपुटपाकरसकाहनेहैंतवचारिद्वययाभरसउपयाभरसह ॥ ॥

॥ जवला लहो तव निवा लिख मुकासानचा ॥ ए उत्तुमाना ॥

तस्युतपिये ओजो कल्कं पूर्णं पतली इव सिञ्चितकली होतौ पुटस्य केयथा योग्य देना २२ अथ कुं रेया पुटपाका सवीति सार्य च
 रतेले कुं रेया कोष्ठा लताजी चावल के धोवन मेपी सिके गोला वां धजा मुन के पत्ते लये दे २३ फिर स्त्रजन सेवां धि मोह के आरा सो लेय क
 स्मिदी ल गावै तव गो रे को र्दामे फूटिके तव अंगारा हो जाय तव आगि सिनिकार निचो रिंटा करि सहत शरि पिबै तो वहु न दिन
 का कवित अती सारजा २४ स्त्रा र धोवन को किया चारि है या भरि स्रवा व अठ्ठु ने पानी मे धोइ वही धोवन सर्व देवा २५ पुनः अल

पलमान र सो ग्राह्य कर्षे मानं मधु क्षिपेत् कल्कं पूर्णं इवाया लु देवाः स्वरस व द्रुधेः २२ तत्कालोक्ताष्टकुटजत्वचं तं
 डल चारिणाः पिष्टा चतुः पल मितां जह्वं यत्नवै विष्टां २३ सूत्रवधा च गाधूम पिष्टे न प्रविष्टितं लिप्तां च यन
 पंकेन मोभयेर्वह्नि नारहेत् २४ अंगारवणे च नृदं दृष्ट्वा बन्धेः ससुषरेत् ततो रसंगृहीत्वा च शीतं क्षौद्रयुतं पिवे
 त् २५ जयेत्सर्वानती सारगुल्लरान् सुचिरेच्छिन्नान् कण्ठितं तडुल्यलं जलेष्टु गणिते क्षिपेत् भावयित्वा जल
 ग्राह्य देयं सर्वत्र कर्मसु २६ अल्लव कृतश्चैव पुटपाको निदीपनः मधुमो चरसाम्यं च युक्तं सर्वान्ति सारजित्
 २७ न्यगोधादेश्च कल्केन पूरयेन्नौरिति रेः निरंजमुदं समुत्पुटपाकेन तत्पचेत् तत्कल्कं स्पृक्षः क्षौद्रयुक्तः
 सर्वान्ति सारस्वत् २८ पुटपाके च विपचेत्सुषुप्तं दग्धिमीफलं तद्भस्म मधु संयुक्तः सर्वान्ती सारनाशनः २९ ॥

जो करी लवा सोहन पत्ता का पुटपाका अग्निको दीपन करता है जब सहत ओमो चरसामिला दकै दे दत व अनी सारजा २७ पुनः स्वपीप
 ल गल्ल पाकर जगन्नीधी पीपरि र्नकोष्ठा लपानी मे पी सिगोला वां धि स्वेन तीतर का पेट सा फण्णरी निकारि शरै र्जस मे गोला थि पुटपाका के रेय के प
 गोलानिका रि सनि वोरिले सोरस सहत संयुक्त दे र्गो सव अती सारजा २८ पुनः पक्षेचना र्का पुटपाका वना शनि सुकारस सहत मिलार दकै दे र्गो सव

जोरपुटयाक उवाकीपर विजोएनीदुजासुनकोपानीवाजइकोपुटयाककारससहुतयुतदेई तोसबरोषकीछर्दजाई ३० वा
 सापुटयाकक्रपिनकासज्जरएरुसेकेपुटयाककारसमहुतंपियेसेरुक्तिपिनकासभदेल्वजाई ३१ भठकीःकासश्वासपरभठकेयाकेपेवा
 मापुटयाकरस यीपरिकाचूरएणइरिक्केतौकासश्वासकफजाई ३२ विभीतपुटयाककासश्वासपर वहेरेपरधीलगाइपि

म.
 ग.दी.
 ६

वोजप्राम्रजंघनायल्लचानिजराः पृथक् विपचेत्पुटयाकेनक्षौद्रयुक्तस्य तइसः छर्दिनिवारयेत्तयोएन्सर्व
 दोषसमुद्भवाः ३० पिष्ठानां दृष्यन्नाणं पुटयाकसोहिमः मधुयुक्तो जयेइत्तपितकासज्वरक्षवान् ३१ यच्चैः शुशंस
 पंचांगं पुटयाकेन तइसः पिप्पली चूर्णं संयुक्तः कासश्वासकफापहः ३२ विभीतकं फलं किंचित् दृतेनाभ्यविलेप
 येत् गोधूमपिष्टे रंगैरेविपचेत्पुटयाकवत् ३३ ततः पंक्तं ससुधृत्य त्वसंतस्य मुखे क्षिपेत् कासश्वासप्रतिश्यायस्य
 रभंगाजयेततः ३४ चूर्णं किंचित् दृष्ट्वा भ्यर्क्षं क्तं मुद्वा एरुडजैर्दलेः वेष्टितं पुटयाकेन विपचेत्तं दन्दिना ३५ तत
 उरुत्यत चूर्णे ग्रासं प्रातः सिता न्वितं तेन याति शमं पीडाश्चामातीसारसंभवाः ३६ सुंढी कल्कं विनिक्षिप्य र
 सेरं इंसुलजैः विपचेत्पुटयाकेन तइसः क्षौद्रं संयुतः आमवातसमुद्भूता पीडां जयति दुस्तराम् ३७
 सोरणं कंदमादाय पुटयाकेन पाचयेत् सतैललवण रत्नस्य रसश्चाशौ विकारं हत ३८ ॥ ॥

घानसेलेपञ्चंगारपपुटयाककरे ३३ उसकाछिलकासुखमें एखेसे कासश्वासनाकहना गलापरजाना एरोगजाइ ३४ सोवि
 पुनः आमानीसापर सोढचूर्ण किंचित् घनसेवटीवनाय रुयचमें लपटमं रुचनिमें सुटपाककरे ३५ उसचूरणकोसर्वेश
 संगलाइतौ आमानीसारकीपीडाभिटै ३६ पुनः सोढचूरन हंडकी ॥ ॥ ॥

जडकेरुसमेंसानि पुटपाककरिसनिकारिससूतसंगखारनौआमवातकीपीउजाय ३० सूतनसुः ववासीरपर पुटपाककरिपुकाजमीकं
दलोनेनेलसायखाइतौअशोनाशहोइ ३५ हरिणामृगसुः हृदेष्टलपर हरिणसौग शरावसंयुटभंजराशौकीद्योभंजरियिथेनौहृदेकी अलंजा
इ ३६ इतिश्रीशार्ङ्गधरसुधाकरअथमोध्यायः १ अथकाय चारित्तयेवाभरइव्यनोशठद्वयेयाभरयानीकेपात्रमेंभारिमंदाग्निमेंज्योटे जवआ
ठद्वयेभेरिरहेतकउतारिलेइ १ कछउसरहे तववियेकाथकेचारिनामहै सूतकाथकेचारिनामहै सूतकाथ कषाय नियूह २ आहार

शरावसंपुटेदग्धंशृगंहरिणजं पिवेत् गवेनसर्पिवापिष्टं हृच्छूलं नश्यति भ्रवं ३६ इतिश्रीशार्ङ्गधरेद्विनीयवं
डेविकित्सास्थानेस्वरसादिकल्पनाध्यायः १ पानीयं षोडशगुणं शुक्नेद्रव्ययलेक्षियेत् सृत्पत्रिकाययेद्रास्य
मष्टमांसावशेषितं १ तज्जलं पायसेधीमान्कोष्मं मृगभिसाधितं सूतः कायः कषायश्च निर्गृहः सनिगद्यते २ आ
हारसर्पाकेवसंजातेद्विपलोन्मितं दृढवैद्योपदेशेनपिवेत्काथं सुगचितं २ काथेक्षियेतिसिनाभं सेश्वतथोष्टम
षोडशैः वातपित्तकफानेकेविपरीतं मधुसूतं ४ जीरकं गुणुलं क्षारलवणं च शिलाजितं हिंशुत्रिकदुकं चैव वका
येषाणोन्मितं क्षियेत् ५ क्षीरं घृतं गुडं तैलं मूत्रं चान्यद्रवतथा कल्कं चूर्णं दिकं काथे विशिषेत् कर्षे संमितं ६

कारसयकेपर दृढवैद्यकेउपदेशसेधैयलकाटापिये ३ काथमेमधुमिश्रीडारिकेप्रमान जोवायुप्रधानहोनौमिश्रीधोरीदेनापि
तमेंअष्टमांसकफमेंषोडशांश सत्तवायुमेंषोडशांश पित्तमेंअष्टमांसकफमेंचौथाअंशदेना ४ जीरकादिअनेकवस्तुअग्ने
काप्रमाण जीरा गुराल क्षारसंधव शिलाजित हौग त्रिकदुकाढेभंचारिमासेदेवावलसमयवेविकै ५ इध धी गुड नेल गो
घून औरखासादि दुग्दी चूर्णोदि एसवदशदशमासेदेना वलसमयदेविकै ६ ॥ ॥ ॥ ॥

गुर्वचरिकायसवज्वरपरगर्व धनियानीमकीछाल पभाष एलचंदन रसगुर्चोदिकाथसेसवज्वरनाशकौरे दीपनहे दाह तृष्णा लार उद्वकार
एरेताइहो ६७ गुर्चोदियाचनवातज्वरपर गुर्व पिप्लामूल सेठि यहुकाढावातज्वरमेसतरेदिनदेइ यहुपाचनहे ८ वातज्वरपर शालि
पर्णीकहे बनउदी वरियाए रासन गर्व सखिन स्नकाकाढापियेसेतोब्रवातज्वरजाई ६ इसराकाढा वातज्वरपर खभागी सखिन
दाय त्रायमाण गुर्व स्नकाकाढा गुडडारिकैपियेनौवातज्वरजाय १० कह-फलादिपाचन पित्तज्वरपर कायफर रंजव पा

गुडूचीधान्यकारिषपनकरंक्तचंरनं गुडूच्चादिगणकाथः सर्वज्वरहरः परः दीपनोदाहृल्लासतृष्णाछर्द्यरुविजये
त ७ गुडूचीपिप्लीमूलनागरेः पाचनंस्मृतं दद्यादातज्वरेष्टुर्णेलिंगेसममवासेरे ८ शालियणीवलागलागुडूची
सारिवातया आसाक्षाथपिवेत्कोक्षनीब्रवातज्वरछिदं ८ काष्मरीसारिवाडाक्षत्रायमाणमृताभवः कथायः सगुडः
पीतोवातज्वरविनाशनः १० कटुफलंइयवावष्टातिक्तामुलेः मृतंजलं पाचनंदशमेन्तिस्पातीत्रपित्तज्वरेनृणां ११ प
पेदेवारकतिक्ताकैरातोधन्वयाशकः त्रियंगुश्चकृतः काथरेखांशर्कोर्यासहः पियासादाहयितालयुक्तं पित्तज्वरं
जयेत् १२ दाक्षाहरीतकीमुलं कटुकीकृतमालकं पर्यटश्च कृतकाथ एषापित्तज्वरायहः तृणमृच्छोदाहयिता
स्तकशमनोभेदनः स्मृतः १३ बीजमृशिकापथ्यानागंभ्रंथकैः स्मृतं सक्षारं पाचनं श्लेष्मज्वरेखादशवासेरे १४

दा कटकी नागमोथा पित्तज्वरमेदशयेदिनदेइ ११ पित्तयापरदिकाथ पित्तज्वरपर तृसा कटकीचिरायता ज्ववासा त्रियंगुदाना
पीतसरसौसास्त्रेनाहं वत्त्रमेचिपदनहं यहुकाढाचीनीकेसंगपियेतोतृष्णाशह एकपित्त पित्तज्वरमुजाहोरे १२ इसरादाय हइ
मोथा कटकी अभ्रततास पित्तयापर स्नकाकाथ पित्तज्वरनाशकौरे तृष्णा मृच्छो राह एकपित्त इहेशमनञ्जीभेदनकरे १४

१४ पुनः कायः विरायता नीम योपरि कञ्चर शनावरि शरच्च भटकटैया यहकाढाकफज्वरनाशकरताहें १५ पुनः कायः पदेल
त्रिफला कडकी कञ्चर दसा शरच्च मधुर्गुक्तरनकाकाढापीनेसेकफज्वरनाशहोइ १६ चित्तयापडा काय वातपित्तज्वरपर पि
तपापडा मोथा गुच सेंढि विरायता रसपंचभद्रकटिसेवातपित्तज्वरनाइ १७ छोट्टी भटकटैयाकाथ कफवातज्वरपर भटक

भनिंवनिवपिण्लपः शरीशुंठी शनावरौ गुडूचीट्टहतीचेतिक्वाथोहन्यात्कफज्वरान् १८ पदेलत्रिफलातिक्ता
शरीवासांमृताभवः काथोमधुयुतः पीतोहन्यात्कफकृतंज्वरं १९ पर्यदाशमृताविश्वकिरणैःसाधितंजलं पंचम
इमिंदसेयवातपित्तज्वरापहं २० छुशशुंठीगुडूचीनांकाथायः योक्तास्सच कफवाताधिकेयेज्वरेवापित्रिदोषजे कास
श्वासारुचिकरेपाश्वशूलविधायिनी २१ आरवधकणामूलमूलतिक्ताभयाकृतः काथः समयतिक्षिप्रंज्वरंवा
तकफोत्तरं आमशूलप्रशमनोमेदीदीपनपाचनः २२ अमृत्तारिष्टकुट्टकामुलेन्द्रयवनागरेः पदेलचंद
नाभांचपिय्यलीचूणैर्युक्तं अमृताष्टकमेतच्च पित्तश्लेष्मज्वरापहं छर्द्यरोचकहृल्लोसदाहृत्तस्मा
निवारणं २३ कंदकारीदयंशुंठीधान्यकंसुरदारुच एभिःसुतंपाचकः स्यात्सर्वज्वरविनाशनः २४

देया सेंढि एकरमूल यहकाढाकफवातज्वरनाशकरै औसन्निपातज्वरमेपियैतौकासश्चासञ्चरुचिहरे औपसुरीकीपीडाहरे २५ अम
लतासादिकाथ वातकफज्वरपर अमलतास पिपरांमूल मोथा कडकीहरेवातज्वरकफ वेगहीनाशकरै आमशूलसमनकरै औणो
गगिरावै अग्निदीपन पाचनकरै २६ अथाअमृताष्टककाथ गुल्च नीम कडकी मोथा इन्द्रयव सेंढि पदेल ॥ ॥ ॥

कोफः कासज्वरपर कायपर मोघा भारंगी धनिषा खस पित्तपापए बच हड़की ज्ञाकडा। खी देवदरु सोठि इसकाटेसे कासज्वरनाशहो
२ ध्यास कफ कंठरोगसिद्धे गुर्वकाकावापीयस्थित्तपियेसे जीर्णेज्वरघृटे पित्तपापरेकाकायपीपरियुक्तपीनेसे पित्तज्वरना २६ पुनः
भटकटेया गुर्व सौठि इसकेकाथमेंपीपरिशरिपियेतो कास श्वास पीनस अरुचि गलावेग्न प्रल जीर्णेज्वर एरेगइरहोय ३० सर्व
शीतज्वरपरभटकटेया काय भटकटेया धनियां सौठि गुर्व मोघा पभाक रक्तचंदन चिरायता पदोल वसा मोचरस कटकी इंद्र

३१

कटु भवदभार्गीभिर्धान्यारोहियपर्यटैः वचाहरीतकी भृंगीदेवदारुमहोषधैः काथः कासज्वरं हंनिश्वास
क्षेमगलग्रहाम् काषोजीर्णेज्वरहरगुड्घ्यापिप्लीयुक्तः तथापर्यटैजः काथः पित्तज्वरहरोपरः २६ निदिग्धि
कासृताशुभीकायं पाययेद्विषक् पिप्लीहृणसंयुक्तं कासश्वासादिनापरं पीनसारुचिवैश्वर्यमूलजीर्णेष्व
रापटं ३० क्षुद्राधान्यकशुंदीभिर्गुड्चीमुस्तपमकैः रक्तचंदनमृनिवपदोलहृषयोकारैः कटुकै इयवारिष्ठ
भार्गीपर्यटकैः समैः कायं ज्ञातनिषेवेत सर्वशीतज्वरछिद्रं ३१ मुस्ताक्षुद्रामृताशुंदीधानीकाथः समाक्षिकः
पिप्लीहृणसंयुक्तो विषमज्वरनाशनः ३२ पदोलत्रिफलानिवदशक्षासम्पाकवासकै काथः सितामधुयुक्तो ज
येदकाहिकज्वरं ३३ गुड्चीधान्यमुस्ताभिश्चंदनोशीरनागैः कृतं कायं पिवेत्सौं इसितायुक्तं ज्वरातरः ॥ ॥

जो नीव भारंगी पित्तपापए रनकाकायज्ञातपियेतो सनशीतज्वरनाशहो ३१ विषमपर मोघाकाथ मोघा भटकटेया गुर्व सो
ठि श्वासला सहन पीपरियुक्त पियेतो विषमज्वरयुक्तहोय ३२ नित्यप्रातेज्वरपर पदोलकाथ यमेलत्रिफला नीम दश अमलता
स वसा सहन लादयुक्त पियेतो एकाहिकज्वरघृटे ३३ तनीयकज्वरयगुड्घ्यादिकाथ गुर्व धनिया मोघा रक्तचंदन ॥ ॥

खस सोहि शनकाकादायी कार सुहृत्तुक्तपयतो नतीयकाज्वर व्यास दोह एवय इव निधु ता दोह ३४ चातुर्थीकाज्वर एवेवरा रुक्माय देवरा
रु हृद रुसा सालयणी सोहि आनरा शनकाकादामधुमित्रीसंयुक्तपिथेतो चातुर्थीकाज्वरुता ३५ आसकास मंदाग्नि स्रवद्रहो ३६ ज्वरा
तीसारपरगुरुच्या दिकाथ गुर्च धनिया खस सोहि सुगंधवाला पित्तपायरा देल अतीस पादा एकचंद्रम कोट्या विणयता मोथा इरजोयह
कादादंडाकरिसहृत्तमित्रीसहितपिथेतो ज्वरातीसाररुक्तपित्तनाशहो ३६ पुनः सोहि कोट्या मोथागुर्च अतीस रसकादेसेज्वरातीसारता ३७

ततोयज्वरनाशयत्तस्मादाहनिवारणं ३४ देवदारुशिवावासाशा लिपणीमहोषधैः धात्रीसक्तैः सतंशीतं रघान्मधुशिला
युतं चातुर्थीकाज्वरेद्यासेकासेमंदानलेतथा ३५ गुह्रवीधन्यकौशीरशुठीवात्सकपर्यट्टे विल्वत्रातिविषायाद्यारुक्मचंर
नवस्रक्कैः किरातसुलेंद्रयवैः कथितं शिशिरं पिवेत् सक्षोद्रं रक्तपित्तघ्नं च एतीसारनाशनं ३६ मागरकूटजो
मुस्तममृतातिविषातया एभिः कृतं पिवेत्काथं ज्वरातीसारनाशनं ३७ धान्यानागरविल्वाद्युबालकैः स्नाधितं जलं
आमस्रलहंयासंदीपनं पाचनं परं ३८ सधान्यनागरकाथपाचनोदीपनस्तथा एंडुमूलद्युक्तं अजयेदामा निलम्ब
या ३९ चत्सकातिविषावित्त्वमुत्तवालकजः सुतः अतीसारं जयेत्सामं चिस्जं रक्तभूलजित् ४० कुंडजातिवि
षायादाधातकीलोध्रसुतकैः शीवेरदाडिमयुतैः कतः काथः समाक्षिकः पेयोमोचरसेनेव कुट्जनाष्ठकं संयुतः ॥

आमभूलपरधान्यपंचकाथ धनिया सोहि बेल मोथा खस शनके छाथसे आमश्रुतजार आसीरीयनपाचनहे ४० सहृत्त धनियो
सोदिकाकाथदीपनपाचनहे जोखुकीजडयुक्तकैतो आमवानद्विकारे ४१ आमतीसारयखोरेयाकाथसरित्तरकातीसारय एकोरेयाभूल अतीसेने
ल मोथा खसशनकाकाद आमतीसारसुलद्रिकारे ४० कुट्जाष्ठक कोट्यामूल अतीस पादभूल धवफूल लोथोमोथा साकवेर अनारसनकाकाथम

मोचरस्यक्तपियेनोसवञ्जनीसारजाइ इसकोकुलगाइकाकहतेहे राहल्लाकडिनभूलइरिकरे ४१ अनीसारपरहाअवेकाथ हाऊवेर धोक्क
ले लोधलजाल करेया धनिया अनीस मोया गुर्वे वेलसोठि इनकाकाबासे विखालकाअनीसारइरहोर अगेचक आमभूल ज्वरहोर
पाचनहे ४२ वालकनकेसवअनीसारपरकाथ धवकूल वेलं लोध सुगंधवाला गजपीयरि इनकाकाबमधुसुक्तदेइवा अवलहेह वना
कोरे सवअनीसारजाइ ४३ संग्रहणीपरवनडीकाथ वनडीवरियारा वेल धनिया सोठिकाकादेसेपरहल नाभिभूलसल्लिनवातग्रहणीहोरे ४४

अनीसारानयेदहरक्तभूलामदुलरान् ४१ ह्रीवेरघानकीलोधपाबालज्जालुवत्सकैः धान्यकानि विषामुल्लाग
इवाविल्वनागरेः कृतः कथायः शतयेरली सारं चिरोत्थितं अनीच कामभूलश्च ज्वरघ्नः पाचनस्मृतः ४२
धातकी विल्वः सोध्राणि बालवांगजपिप्पली एभिः कृतं सुतं शीतं शिशुभाः क्षौद्रं संयुतः ४३ अदद्याद्वले
हं वासवीती सारं शतये ४३ शालपर्णी वला विद्वधान्यं शुंठी कृतः सुतः अध्मानभूलसहितं वातजाग्रह
णीजयेत् ४४ गुडच्युती विषाशुंठी मुलेः कायः कृतो जयेत् आमानं सक्ताग्रहणी ग्राही पाचनदीपनः ४५ यवथा
नयणे लानां कायः सक्षौद्रशर्करः योज्यं छर्देति सारेषु विल्वान्नास्थिभवंस्तथा ४६ त्रिफलादेव रा रुद्रश्च मुलाम्
षकपर्णिका शिशुरेतत्कृतः कायः पिप्पली चूर्णे संयुतः विडंगचूर्णे युक्तश्च कृमिघ्नः कृमिरोगहा ४७ ॥

चतुर्भेदकाथ गुर्व अनीस सोठिमोथायहआभाशक्त अहणीदुरिकारे दीपन पाचनकरे ४१ सर्वनीसारपरइंश्जवकाथ इंश्जो धनिया यवेल
इनको काढा खोद सहतसंगावाइतो छर्देअनीसारजाय आमकीगुठली वेलकाकाठा सहत मिश्रीयुक्तपियेसेसवअनीसारजाइ ४६ कृमि
परत्रिफला काथ त्रिफला देवदारु मोथा भूसाकली सहिजन काथपीपरि विडंगयुक्तपियेसे कृमिअो कृमिजडयइवसबजाइ ४७ ॥

कामलपरत्रिफलादिक्वाथ विफला गुर्वे कटुवीनीम चिरायता ह्या इस्क्वाथ को सहनसमेतपियेतौ कामल पोडुनाश होइ ४
पोडुपराशपुत्रेना क्वाथवाशेयादिककामरपर गवसरेना हृदीम दारुहरी कटुकी पथेल गुर्वे सोंहि इनकाकादापियेतौपा
उ कास उदररोग श्वास उदरशूल सर्वांगस्त्रजनञ्चकीहो ४८ रक्तपित्तदुसाक्वाथ हसादास हृइ इस्काकादा सहन
पिये रक्तपित्तपीडा दारुण कार श्वासजाइ ५० पुनः रुसेककादा सहनसंगपियेसे रक्तपित्तक्षयी कास कफपित्तज्वराशहो ५१

फलत्रिकामृतातिक्तानिर्वकैरगतवासकैः जयेनायुतः क्वाथकामलापीडनांतथा ४८ मुबनवर्वाभया निवरा
क्षीतिक्तपदेलकैः गुडचीनागरुतः क्वाथोगोमूत्रसंयुतः पाडुकासोदश्वासभूतसंवोग शोथहो ४९ वासाश्ला
भयाक्वाथः पीतसक्षौडशर्करः निहंतिरक्तपित्तातिश्वासकासचदारुण ५० रक्तपित्तपयकासेष्टेभपित्तज्वर
तथा केवलवासकः क्वाथः पीतक्षौड्रेणनाशयेत् ५१ बलाशुशामृताक्वाथः क्षोड्रेणज्वरहामहा कासघ्नं पियलीह
णैयुक्तशुडासुतसया ५२ शुडाकुलन्यवासाभिर्नोगरेणचसाधितः क्वाथयोध्वर चरणेद्वयः श्वासकासोनिवार
येत् ५३ रेणुकापियलीक्वाथोद्विगकलेनसंयुतः जयेत्रियेबजांछर्दिपपेटः पित्तजांतथा ५४ विल्वान्वचोगुड्चावाक्वाथः
क्षोड्रेणसंयुतः जयेत्रियेबजांछर्दिपपेटः पित्तजांतथा ५५ सज्वरपरवासाक्वाथ हसा भवकट्या गुर्वे मधुमुक्त खानेसेज्वर

कासमिटे जो भवकट्याकाकादापीपलहृणैसंयुतदेनोखांसीमिटे ५१ कासश्वासपरशु इदिक्वाथ भवकट्या कुरथीहसा सोंहि पोष
मलकाचूर्णयुक्तपियेसेकासश्वासजाइ ५३ त्रिकापरमिवरीक्वाथ मेवरीकावीज पीपरिलीगभूनीयुक्तपियेसेपांचोप्रकारद्विचकीजाइ ५४ उवकाइ
परविल्वादिक्वाथ वेलकीछल यागुर्वेकाकादा मधुमुक्तपियेसेत्रिदोषजन्य छर्दिमिटे जो पित्तपा परासहंतुक्तपियेसेपित्तछर्दिजाइ ५५

गुरुसीवाय परदशमूलकाद्य हीगोपिका मूलकाद्ये त्रयमकहेदशमूलकाधर्मयुक्तकारिधितो गुरुसीवायुजाह जोमेवडीयानकाथमेदीावारा
उमूलचूणैयुक्तयियेसेत एनष्टकसीवायुमिह ५६ वायुपरएसनपचककाथ एसनगुर्चे देवदारु सौठि एउमूल एकाढापियेसेसप्तधातुगतवान
अव सव अगवायुद्विहो ५७ वायुपरएसनासप्त एसन गुखर रंड देवदारु गदापुरेना गुर्चे अमलनास एकाढा सौठि चूरनइरिकेपिये
से जांघ करि पसुरी पीऽथती ओभारी आमवातमिह ५८ संसर्णवायुपरमहाएसनादिक्काथ दोभागएसन ओएसवएकभागमे

हिंगूपोष्करचूणैदिवशमूलसुनोजयेत् गुरुसीकेवलः काथसेफालीपन्नजस्तथा ५९ रास्नामृतामहादारु
नागरैरंडजंस्तं सप्तधातुगतेवातेसामेसवोगोपिवेत् ५७ रास्नागोष्करैरंडदेवदारुपुनर्नवा गुडूच्याएवथ
अवक्काथमेयांविपाययेत् शुंवीचूणेनसंयुक्तं धिवजंघाकदीगृहे पार्श्वेष्टुष्टोतुपीडायाभामवातेसुदुस्तरे ५८
रास्नादिगुणभागास्पदिकभागालनोपरा धन्वयासवलेरंडदेवदारुशरीवचा वासकोनोगरयथा
चव्यामुलपुनर्नवा गुडूचीवृष्टद्वारुश्च शतयुष्माश्चगोक्षुरः अश्वगंधाप्रतिविषाकृतभालशताव
री कृष्णसहचरश्चैवधान्यकंदं हृतीदयं एभिः कृतं पिवेत्क्वाथं शुंवीचूणेनसंयुते कृष्णचूणेनवायोग
राजगुणुलनायवा अजमोदादिनावापितेलेनैरंडजेनवा सर्वांगकंपेवज्जत्वपक्षाघातेयवा ह्वे ॥ ॥

जवासा वरियार रंड देवदारु कष्टरवच दसा सौठि हणचाव मोया गदापुरेना गुर्चे विधार सौक गुडू असंगंध अनीस अ
मलनास शतावरि पीपरि रंडजी धनियाबोनौ भटकटेया इसकाकादा सौठि चूरण्डारिपाकवापीपरिकाचूणे वायोगराजश
गुलकाथ वाअजमोदादिचूणैकेसंगवारिंडीकेतेलकेसंगतौ सर्वांगकंप दूवड पक्षाघात वालुक गुरुसी आम पीलपाव अ

पतत्र खं च दृक् पेर मूलना मंघापीर धातुरोग वंध्याकी योनिदुष्टताय ह मक्षरात्मादिका घघ्रलाने कहां वै इस्मे वलून मनुष्य एष्यो बधिका
इना एसन लेने हे सो अत्रु चित्ते ५६ घानी की वायु पर अं इका सप्तकं इ विनो र की ज उ गुय ड उ भै भटवांटे या पायान भै दल क ए वैल इन स
वज डन का कादो रे डी का ते ल ही ग प वा वा र सें ध व यु क्त पि ये तो ल न पी डा कं ठ मे ड ह द थ स व पी डा मि डे ६० वा न श्र ल प र श्रुं बी का थ ॥
सौं हि रंग मूल वा र ड ज व का का दा भनी ही ग का ला लो न यु क्त पि ये से वा न श्र ल जा य ६१ पि न श्र ल प र त्रि फ ला का थ त्रि फ ला अ म

गृहस्था मा भवा ते च ऋषी पदे चा प्रतंत्रके अंडवृक्षौ तया धामने जघानु गदे दिते शुक्रागये मेदरोगे वंधायो न्या मयेषु
च मत्सरा स्तादि एख्या नो ब्रह्मण गभे कारणं ५६ एण्डो वीज प्रश्न गोक्षुं वृहती ऋय अश्रम भेद ज्ञाया विल्व एतन्मूलेः
कृतः स्रतः एण्डो तैल हिंवा ठोय वक्षारः ससैंधवः स्तन कंघ कावी मे इह द्योत्य व्याजयेत् ६० नागरेः रंडयोः
काथः काय मिं ड्य व स्प वा हिं ग सो व च लोपितौ वाल श्रूल निवारणः ६१ त्रिफला रवधः काथः शर्करा क्षौद्र संयुतः
रक्तपित्त हरेदा ह पित्त श्रूल निवारणः ६२ एण्ड मूलं विपलं जले षुण्ण ते पचेत् तत्कायो याव श्रुकायः पार्श्वे दृषा फ मूलहाः ६३
दश मूलकतः काय य वक्षारः ससैंधवः इह द्या गुल्म श्रूलानि कासंश्चा संचना शं पेत् ६४ हरीत की ड रालं भा कृत गाल का गोक्षुरेः

लतास इसकाढेमें शब्दर सहनयुक्तकरिपियेसे एतपित्ताह पित्तशूलजाय ६२ कफशूलपररंड मूलकाथ रंडकीजउदोयल सोरखपल
पानीमें काढकरियवाषाडिारिपियै यस्तुपीर हरेपीर कफजन्यनाशहो ६३ रुदयरेगपररशमूलकाथ वशमूलकाकाढा यवाधार
संधवसुम्नापियेसे हृदियेग वायुगोला कास श्वास नाशहोय ६४ मूत्रलघुपररहीतकीकाथ हर यवासा अमलतास पाषाणभेद
गुखर इनकाकाढा सहनसंयुक्तपियेसेमलमूत्रारेधदाह सहित सवरेगअछेहोय ६५ " " " " " " " " " " " "

प्रदरपरदारुहलदीकाथदारुहलदीरसवतमोथाभिलावातेलदूसाचिरायताशनकाकादाढाकारिमधुसंयुक्तपिथेतोपीतश्चेतकस
सहितशूलवीकागदरीगाअछाहोय॥१॥ क्षतत्राणादिपरत्वरदिक्कायवरयाकरञ्चोवसवेतसवेरत्ननिमधुजेठीचिरेजीगूलरीमधुकज
नाथीपीपरिप्लासतिदकदीनोजामुनआमहूडकदंघअर्जुनतरुभिलावेकाफलजोइव्यइसमेंनमिलेसोत्यागिदेइयह्यगोधादिगणकाथ
होहीओखोगावखरावहोगायातोअछाहोयोनिरोघराहमेदवमिदविषएसवनाशहोयवेतसकोकाहोजगनाथीपीपरिकह

दावीरसोजनंमुस्तंभल्लातःश्रीफलंद्वयःकैरातश्चपिवेदेवाकाद्यंशीतंसमाक्षिकंजयेत्समूलमृदंपीतश्चे
तासितारुणं॥१॥ न्यगोथलक्षकोसान्वेत्तसोवदरीगुनिःमधुयष्टीत्रिधालश्चलोध्रक्यमुंदवरःपिप्पलश्चमधुक्य
तथापालाशपिप्पलःसल्लकीतिदुकीजह्वयमाम्नतरुःशिवाकंदवकुभौचैवभल्लातकफलानिचमगोधादिगणकाथ
यथालाभंचकायेत्त्रयंकाथोमहाशहीत्रणभानंचसाथयेत्तयोनिदोषहरोदाहमेदोमेहविषापहं॥२॥ विल्वोनिमंथशोनाकःका
यसीरीपादलातथाकाथमेयंजयेन्मेदोदोषंक्षौद्रेणसंयुतः॥३॥ क्षौद्रेणत्रिफलाकाथःपीतोमेदोहृस्सुतः॥४॥ शीतोभूतंतथो
स्रावुमेदोहृक्षौद्रसंयुतं॥५॥ चयचिन्नकविश्वानांसाधितोदेवदारुणाकाथसिद्धचूर्णेमुतोमूत्रेणोदराजयेत्॥६॥

तेदे॥७॥ मेदरोगपरवेलाकाथबेलअरुणैसोहनपातखंभारीसिरसइसकाकाढासहतसंगपिथेतोमेदरोषमिटे॥८॥ पुनःत्रिफलारिक्का
यत्रिफलेकाकाढासहतसंगपिथेतोमेदरोषजायउरुजलढंढाकरिसहितसंयुक्तपिथेतोमेदरोषजार्इ॥९॥ उदररोगपरचावकाथचावचीना
होतिदेवदारुशनकाकाथनिरोघत्रुणेगोमूत्रकेसाथपिथेतोउदरेगदहोय॥१०॥

पेटफूलनेपरादापुरेनाकाथ गरापरेना गुर्वदेवदारु सौंति यत्काढा गोमूत्र गुगल युक्तपियेसेयेद स्सजन मिटे ७६ पिलहीपर हरीतकीका
थ हड अगियाखर यत्काढायबायाए पोपरियुक्तपियेसेसीहा वायगोलायकृतप्रच्छीहोरोहिनाम करिकेखेरलेना ७७ शोथपरगरा
धर्नकाथ गरापरेना बारुहलदी सौंति हड गुर्व चीता भारंगी देवदारु इनकेकाथ से साथ पांव पर छाती सखवी स्सजन जाइ ७८ अउष्टिस्सज
नपरत्रिफलाकाथ त्रिफलाकेकाठेमेंगोमूत्र संयुक्तकरियेसेवातकफजन्य अउष्टफजाय ७९ औतवृदिपर एसनकाथ एसन गुर्व वरियारा

पुनर्नैवामृतादारुपथानागारसाधितः गोमूत्रगुगुलयुतः काथः शोथोदरापहः ७६ पथमोरोहितकं काथं
यवक्षारकणायुतम् पिवेन्मातयकृत्सीह गुल्मोदरनिवृत्तये ७७ पुनर्नैवादारुनिशानिशशुंठीहरीतकी
गुडूचीचित्रकीभांगीदेवदारुकृतः स्तनः ७८ पाणिपादोदरमुरः घ्रासंशोफं निवारयेत् ७८ फलत्रिकोज
वंकाथंगोमूत्रेणैव पाययेत् ७ वातक्षेष्मकृतं हन्ति शोथं वृषणं संभवम् ७९ रास्नास्तनान्नलायथीगो
कंदैर्गुडजः स्तजः एण्डतैलसंयुक्तो वृषिमंत्रभवांजयेत् ८० काचनारत्वचः काथः शुंवीबूलेनिवाशयेत्
गंडमालोतयाकाथः क्षौद्रेणवरुणत्वचः ८१ सालोद्वल्कलकाथंगोमूत्रेणयुतं पिवेत् स्त्रीपदानां वि
नाशाय मेदोदोषनिवृत्तये ८२ पुनर्नैवावरुणयोः काथोतर्विदधिंजयेत् ८३ ॥ ॥

रेखी गुखत्र रंड इसकाठेमेंडंति लघुक्तपियेसेष्वं च वृद्धिमिटे ८० गंडमालापरकचनारकाथ कचनारकी छालकाकाढासौंति चर्येय
क्तपियेसेमंगंडमालाजार ८१ पीलपायपर सहोडाकाथ सहोरेकाकाढागोमूत्रयुक्तपियेतौपीलपाय मेददोषमिटे ८२ अंतरविदधि
परगदापूर्णकाथ गरापरेना वरुण इनकाकाथपियेतौ भीतरकाफोडाधिरुकीअच्छीहोय ८३ ॥ ॥

इसी भौति सविजनकाथ हौग शेंचवशरिपियेती चरुणादिकाढामें उस्कादि चरुणापिलावे समनसे नकची गणविद्धी अचची होय ८४
अथ चरुणादिगतकाथ चरुणयन भोलसिरीवा विजुगरीया वेल थिचिरा चीता सोनो अरुणी सेनोसुचिजन दोनो भटकडेया तीनो कटस
रिखा सुसे मेवशुंगी चिरायना वनकोलतमूल वा पालव करंज शतावरि इसवरुणादिगणाकाथ सेमेव बोधमुक्क होय गुल्म शिरोश्र
सु अंतरविद्धी पीनस सबभ्रूलोय मेवासिंगोत्रसिफहो ८५ भगंदरपरलदिरादिकाथ खेर त्रिफलाकाथ भेसघन वायविड

तथा शिशुभवः काथो हिंगु सेंधव संयुतः चरुणादिगणाकाथ मपुष्के मधुपविद्धो उषकादि रजोसुक्तं पिवेच्छमन
हेतवे ८६ चरुणोवकपुष्पश्च विल्वापामागचिन्नकम् अग्निमथ दयं शिशुययं च दृष्टतीकयं सेरेकत्रयं मूवोभये
शुंगी किरातकः अजाशुंगी च विंवी च करंजश्च शतान्बरी वरुणादिमणाकाथ नृपभेदो हस्सुतः हंति गुल्मशिरः शूलंत
था विद्धी पीनसान् ८७ खदिरत्रिफलाकाथो मसिवायतं संयुतः विडंगपुण्युक्तश्च भगदरविनाशनः पृथ्वील त्रिफलादिष्वकि
रत खदिराशनैः काथः पीतो जयेत्सर्बान् पदंशान् तस्य गुलुः ८८ अमृतं रंजुवासानां काथ एरंडं नैलघृक् पीतः संवीगं संचारि
वातरक्तं जवेऽक्रवम् ८९ पयोर्ध्वजिफलातिक्ता गडूची च शतावरी एतद्वाथो जयेत्पीतो वातास्त्रं दाह संयुतं ८९

गकाचूर्णं संयुक्तं पियेती भगंदरश्च अक्षरोय ९० उपर्वशक रंगरसोपर पथेल त्रिफला नौव चिरायता खेरकादीर
सन गुणुलकेसाथ इन्द्रोषधिनकाकाथ पियेती सबभ्रुं रंशुल्लोय ९१ वातरक्तोपर गुडूचादिकाकाथ रंडुकोतेलके संगपियेती स
वीगधवती वातरक्त निम्बेकफिके इरिलोय ९२ इसरा पथेल त्रिफला कटुकी गरुच शतावरि रंजकाकाथ मित्रेनो नातल्ल ९३
युक्त आरमलोय ९४ "

ब्रौवरा खैरसार दोनो कक्कादा क्यन्तो चूर्ण युक्तः थोरे दिने को भये कष्ट परस्त्रभासकारि पिथे ओपथ्य यथा बतु कैतो भ्येत राग मिखाय देखा
 प्रपरलयु मंजिष्ठादि काय मजीठ विफला कहू को वचदारु हृदी गुर्चे निव स्नकाद्या थु थिये से वातरक्त कंठ गलित कुष्ठ रक्तमं रल एडू होय ६१
 पट्टकि मंजिष्ठादि काय मजीठ मोथा कोरया गुर्चे कूठ सें ठि भांगो भटकटैया वच नीम इनो हृदी विफला परेल कहू को भूवो वाय विडंग आसन

काथो वलुज दूर्णोदयो धात्री खदिर सारयोः जये सुशीलितो नित्यं श्रितं प्रथ्यासिनां नृणां ६० मंजिष्ठा द्विफलानि क्ता
 वचादारु निशामृता निव श्रेयां क्तानः काथो वानरक्त विनाशनं यामा कया लिका कुष्ठ रक्तमं इलजनातः ६१ मंजिष्ठासु
 स्तकटजो गुडूची कष्टनागरेः भार्गी रुद्रा वचानि वनिशा कय फलनिकैः परेल कहू का भूवी विडंगासन चित्रकैः शतावरीना
 यमाणा क्लृप्तं इयववासकैः भृंगारज महादारुः पाट्ठा खदिर चंदनेः तट्टधरुणैः केरात वाक्ची क्तान् मालकैः साखो
 टक मद्धानि वकाजानि विषाजलैः इंडवारुणि कान्तो सारिवा यपेटैः समैः एभिः कृतं पिवे का थं काण गुगुल संशत
 दृष्टादरा सुकण्टे सुवात रक्तादि ततथा उपदेशे स्त्री पेटे च प्रसुमे पक्षिघातके मेदो दोषे नेत्र रोगे मंजिष्ठादिः प्रशस्यते ६२

चीमा सतावरि त्रायमाण पीपरि इंडुजव दृक्षा भंगरा देवदारु पाठा खदिर सार रक्तचंदन निशोथ परुण विणयता वक्की अमलतास
 वकायन काज अनीस खस रदाद जवास्त्र सोव पिजया परा एसव इत्यसमान लेके काटा कारि पीपरि गुगुल मिश्रित
 कोट चौवात रक्तापीडा पीलपा वप्रसुमक है अन्यवास यक्षाघान मेदो से प्र नेत्र रोग भूत हृदि मंजिष्ठादि द्रव्य स्न रोग निके इरु करि नेको हित है ६३

रक्तानीसारखरमोधादिवमथा मोधा इंज्ञोकात्रमथ्यादियल ठंडांकरिमधुमिअश्रीसुक्तपियेसेरक्तानीसारनाश्लोय ६८ यवागसविधानपोउ
रातोलेइव्यमे उस्कासोलहएनापानी २५६ तोलेभरदेजवआधाजखिआय नवइव्यछानिकेफेकदेउ जोपानीरहेनायउसेयवांगुक्तह
नेहें रसयानीमेंरोगीकोपथ्यदेनेहें इस्वकास जोशेषरहापानीतिसेयध्यजुरवै जवरसकोशेषलेइ तवदेनेहे १०० दूधविधानसे
विकाकल्कोवधि एकपलतिसेपोपरियांचमासे प्रत्यभरपानीमेंपचारतिसेअनखवगलाइकैदेइउसेदूशुकहनेहें १ सनियातपर

सुस्तकेइयवैःसिद्याप्रमथ्यादिपलोनित्ता सुशीतामधुसंयक्तारक्तानीसारनाशिनी ६८ साधंचतःपलइवंचतःषष्टिप
लेवनिताकाथेनार्थशिष्टिनयवागरसाधयेनयना ६६ आमाआमकजद्वैककषायेविपचेद्वयः यवांगुशालिभिसुक्ता
तामुक्ताग्रदूणीजयेत् १०० कल्कइवंपलंशुंठीपिण्णलीचार्यकार्षिकी वारिप्रस्थेनविपचेत्सइवोदूषउच्यते १ कुल
तयववकोलेअमुजैर्मूलकशुर्धकेः शुंदीधान्यावयुक्तैश्चभूषहेभ्यानिलापदं सप्तमुष्टिकइत्येषः सन्निपातज्वरा
जयेत् आमनाग हरकंठरुदिवक्त्राविशोधनः २ क्षुसाइवंचलंसाधंचतःषष्टिपलेजले अर्द्धशिष्ट
चत्तइवंपानेभक्तादिसंविधौ ३ ॥

सप्तमुष्टियूककरथी यववेरमृंग मूरीकौपेंदीजोपताकेपासहोतीहें एसवखबीइव्य इन्संवकायूश सोहिधनिवायुक्तयावेतो कफवा
तनाशहो इस्सप्तमुष्टिकयूशसेसन्निपातज्वराइ आमनागजाइ कंठरुदयमुखशरहें २ पानादिकल्पना कदीइव्य पलभरिचोशहि
पलपानीमेंजोठें जवआधारहिजाइ उसयानीकोभक्तकहतेहें इस्सभोजनसमयदेनाथोडाकरिदेइ १०३ ॥ ॥

भातविधि चाउरसेवौरहगुणापानीलिकेखरवे इसकागुडनिचोरे सोमोडहि हलकाहि हलभक्तमंडकहतेहे मुकमंडउसीमोडमें सोहिमेंथका
 रिकेपियेको दीपनपाचनकरे ४ अष्टगुणामंड धनियां विकडी सेंधव गवा हीगतेलकीमुनी पयुक्तमाइकाअष्टगु एअइनामहे प्राणसुताहे वलि
 रोथनं लकवर्धन ज्वरघ्न सवरोयहरनेहे १५ यवामंडपितादिपुर् जोकूदिभूनिकोसुरेयेलोवाइमंडयेह कापामिनाहरे काठशुधकरे एतापिन
 हरे ६ लावामंड धान्यकालावा कर्वाइव्य बाभुजा धान्यकालवावे सोलाजमंडइहै कफपित्तहरेआहीहे तडनाच्च एनाइकरे १९० इतिश्रीशा

जलेचतुर्दशगुणेनं दुलानांचतुष्पलं विपचेच्छावयेमंडसभक्तोभयुरो। लघुः १ नीरेतुतर्देवागुणेसियोमंड
 स्वसिवथकः सुठीसेंधवसंचुक्तः पावनोदीपनः स्मृतः १४ धान्यत्रिकदुसिधूथयुक्तसोकोसोयोजितः नृष्टश्चहि
 गुतेलाभ्यांसमंडोष्टगुणः स्मृतः दीपनः प्राणदोयस्तिशोधनोरक्तचर्बनः ज्वरजित्सर्वदोषघ्नोमंडोष्टगुण
 उच्यते ११ सुकंदितैरुतथा भृष्टैर्वोद्यमंडोर्यवैर्भवेत् कफपित्तहरे कंठ्योरक्तपित्तत्रसादनः १६ त्याजैर्वोतं
 दुलेभृष्टलोत्तामंडघकीर्तितः श्लेष्मपित्तहरोग्राही पिपासाज्वरजिन्मतः १७ इतिमधुमखंडकाथकल्क
 त्यनाथायद्वितीयः २ क्षुणेइव्यपलेसमुक्जलसुखं विनिक्षिपेत् नृत्यानेकुरवोत्तानंतरेण श्रावयेत्पुटा
 त ३ तस्यचूणेइवः फाटस्नेन्मानं दिपलीन्मितं सितामधुगुडादौ सुकाथवत्तत्र निक्षिपेत् १ ॥ ॥

१ धरसुभाकरलधमखंडेद्वितीयोधायायः २ फाटकल्कवा कुर्वीइव्यपलभर एककडवगानीमारोके एतमेअज्जामो गिततत्र करिमा
 रिलि उसकुचीदुइइव्यवतेउओदकमंडारिदकदे जउवर्गहोतवध्या निलेइ इसकाटकहतेहे आइइपंथेपरफारकीभाअहि मिथोस
 सत खरनागुइ तिसभाँतिकोटेमेडागनाकाहाहे उसीभाँतिकोटेमेंपडताहि १ ॥ ॥

यमधूकफाटमहुआ भुगेडी फालसा चंदन कमल कामलाना लोध नागकेसर त्रिफला साविन बाण लावा तसवारिमेडा रिमिन्नीस
हगसंयुक्त यिलावै इस फांटवा हेमसेवात पिगज्वादाह व्यास मुख्य मन्त्रिप्रभु कपिला मद एसवट्टा होय इसकायेमेंकुछविचानही २ पिमास
मर्यादादिफाट आम जामुनकीकोयल बटहिणुसाओजयाखस इनकाफांटकारिणियेसेज्वर प्यास छदि ज्वनीसार मूर्ध्ण सवट्टाहों ३ पि

अधूकपुष्पमधुकंचंदनसपत्नयकं नृणां लंकामंलं लोभं त्वं भारी त्वं भाग केसरम् त्रिफलासागिवाशिक्षालाजोको
क्षेजलेक्षियेत् सितामधुयुतः पयः फाट्वा सोहिमाधवा दानपित्तज्वरदाहं तृप्सा मूर्च्छा एति भगान् रक्त
पित्तमदहन्वा त्वात्र कायो विचारणा २ आस्रजं हृत्किशकलये बटुं पुंगवरोहकैः उशीरेणाकृतः फाटः
सद्यो दोज्वरनाशनः पिपासा धर्दनीसारमूर्च्छा जगति दुर्जयान् ३ मधुकपुष्पकं भारी चंदनोशीरधानकैः
शिक्षायाश्च कृतः फाटः शीतशर्करया युतः तृप्सापित्तहरः प्रोक्तो बाह्ममूर्च्छा भगान् जयेत् ४ मंथोपिकां
रभेदः स्यात्तेन वात्रैव कथ्यते जले च तः पले शीते क्षुण्णं द्रव्ययलं क्षियेत् मृग्यात्रै मंथयेत् सभ्यकृतस्माच्च
विपलं पिबेत् ५ स्वर्जरदादिमद्राक्षान्ति तिरीका म्लिकाभूलेः सपत्न्यैः कृतो मंथ सर्वमद्य विचारजुत् ६ ॥

नैतृष्णापरम धर्क फोंट महत्वा चंदन खंगारेलस धनियाँ बालावा दाब इनकाफोंट शङ्कर सुक्त पियेतौ नृष्णा दाह मूर्च्छी भ्रम
वजाय ४ अब मंथ जो फोंट भेव में हे सो कहते हैं इवका चो गुना अजल माटी पात्र में गरिकें मध्ये उस पानी को छान दो य लपिये ५
खजूर अनार दाब तित्तिरी आमली औवर फालसा इस बागंध सुकल मदन प्राक है " ह " " " " " " "

उववाइपरमसूरदिमंथमसुखिसत्त सहन दाउमरस इनवामंथपिलावेनोसन्निजनि तछर्दिजाइ ७ तक्षापरंथमंथयवकासित टटण
नीभेमथेवहुतगाढानहोतत्सायह स्तूपित एनाशकोर ८ इति श्रीशार्ङ्गभरत्तथाकोरमथमखंडे फाटकल्पना तृतीयोऽध्यायः ३ कवी इत्यपलभर
छः पलजलमेसंजकोभिजोइराषे प्रातनिवोक्तेछानिले रसेहिमकहनेह शीतकषायभोकाहनेह रसकामात्रा फाटवत रोलहै यहसर्व चनिश्चेजनी
२ रक्तपित्तपञ्चाद्विहम आमजंष्ट अर्जुन दृष्टियानीमेंभिजवे उसकाहमेघातसहत संयुक्तपियेतो रक्तपित्तजाय २ तक्षापरमरीचादिहिममरिव

क्षोइयुक्तामसूराणं शक्तदोशदिमांभसा मथितावारंयाशु छर्दिदोषत्रयोन्नवान् ७ स्नावितैशैतनीरेणसृतेर्यवसक्तभिः
नानिसांइवेमंथसुखादासपितदा ८ इति श्रीशार्ङ्गभरत्तथाकोरमथमखंडे फाटकल्पना तृतीयोऽध्यायः ३ क्षुड्दवपले सम्यकषड्भिनीर
पलैः लुनं निशेषि नंहुमः संस्थानथा शीतकषायकः तन्धान फाटव ज्ञेयं सर्वत्रैवे यनिश्चयः १ आम्रजंष्ट चकक्रभ
त्रणीकृत्यजले क्षिपेत् हिमं तस्यपिवेत्यातः सक्षोइ रक्तपित्तहि २ मरिचं मधुषधीचकान्ये वं वरपल्लवाः नीलोत्प
लं हिमं सज्जस्वत्सा छर्दिनिवारणः ३ नीलोत्पलं वलाइ क्षामधुक्कमधुकतथा उशीरं पत्रकं चैव काशमरीच पत्रपकं
एतच्छीतकषायश्च वातपित्तज्वरं जयेत् सत्रलायसमं छर्दिमोहतं इति वारण ४ अमृताया हिमः ये ये जीर्णेष्वरहरस्म
तः वासायाश्च हिमः कासरक्तपित्तज्वरं जयेत् ५ त्रानः सशकैरेप्यो हिमाधान्याकसंभवः अगदोहतथा तृष्णाजयेच्छोतो विशेषधनः ६

गुरेवी कटगंसा कीकोपल फालसा नीलकमल केहमेसेतत्सा छर्दिनाशदोय ३ पित्तज्वर एण नीलकमल काबिहिम नीलकमल वरियाए राषमहुआस
रेवी खस पयाष खमारीफल फालसाय हशीतकषाय वातपित्तज्वर पलाप भ्रम छर्दिमोह तत्र एसवसर्तोहै ४ जीर्णेष्वर एण उच्चादि हिमगुच के हिमसेवी
ऐस्यजाताहे वासाकहै त्सा के हिमसे कासरक्तपित्तज्वर जाताहै ५ धनियाकाहिम शकडारिषानपियेसे अंतदोह तृष्णा मूत्रारोथ एसवरोगनाशहोनेहै ६

कृपितयर् धनिमाहिं गन्धराहता बाघ पितायापर इतिमसे रक्तपित्तज्वर दहन्त्या कंठशोथ १ इति श्री शार्ङ्गः परे
 त्रिप्रकल्पनाध्यायोचरथः ४ अथ कल्क विधिः सखी इव्यजलमैपीसे ओदी निर्जलानिसे कल्कत्रौ त्रक्षेयक इति २ सानादशभासे १ क
 ल्कमं मधु घृत तेल माना सेहूनादेना मिश्री गुडसमानानाके अग्निश्चोदीयतलोचोशुनी २ पांडु परवच मानया परि पीपरितीनवा
 तचवा सातवदवे ओजैपीपरिसे आरभे करैतै प्रतिदिन वदवै दशदिनतारै किण्ठानो प्रतिदिन घवाह बीसवैदिल प्रथमदिलकी

धान्या कधानीवीसानां शक्षापर्यटयोहिमः रक्तपित्तज्वरं दहन्त्या शेषं च नाशयेत् १ इति श्री शार्ङ्गः धरेमधम
 खंडे हिमकल्पनाचतुर्थोऽध्यायः ४ इत्यमार्द्रशिलापिष्टमुष्णं वासजं लभवेत् प्रक्षेपा एव कल्का स्नेहमान
 कर्षे संमित १ कल्के मधु घृतं तैलं देयं विगुणमानया सिता गुणं समं दद्याद्वा देयाश्च गुणैः २ त्रिनुध्यापुन
 वृक्षाया स त्रष्टुष्याथवाकणाः पिवेत्पिष्ठादशदिनं त्वाप्तये वाप्यकर्षयेत् ३ एवं विंशदिनं सिद्धिपिप्यलीक्य म
 नकं अनेकपांडवाताश्च कासश्चासारुचिज्वराः उदरशरीः क्षयश्चेत्समावातान द्यत्तुरो यत्नाः ४ तेषां निवदत्तेः
 कल्को तणशोधनरोपणः भक्षणच्छर्दिकृष्टानि पित्तक्षेप्सवमोक्तयेत् ५ ॥

मानाशरीकरे यो वर्धमानपीपरि सिद्धकरनेसे पांडवात कासश्चास अरुचि ज्वरनिकार क्षयीकफवान धृतीन कृशता सच द्रुक्षे
 ओजोपांनी वातूधसगपियाचाहे तो जीन दिनतक दोवातीन तो लेहूथले फिर कल्क से चोशुनाले ५ घान पर निव कल्का बीस घ
 अकी लुगंदोधाव पर लगवै उस्से यावसा फहो घृताहे जहां लुगदी लगशके जहां न लगशके उसे यावन ही क हले चर
 ना सरहे उसकी विधि दूसरीहे ओरवानेसे छर्दिसव कृष्ट पित्तक मक्क मित्र चरी हो ॥ ५ ॥

गरुडसीधर्वकादनकाल्क वकायनकीजइकीछालकाकल्क गरुडसीवायुकोदूकतीहै एकलहभुनकीपीढीकरि तिलकानैलभिञ्जिकरिल
यतोतीत्रवाय विषमज्वरनाशहोय ६ वाजइरोगापरदूसरा यकैलहभुनकेजवाधीलकैभीतरकोअंकुरनिकारमदेमेझरिगतिभरिएधे
नोखस्कीकुंगथजाय ७ मदेसेनिकासपीसिकै पंचमांस रसद्वरणकोजोआगेकहतेहैंसोडांरे ८ कालालोन अजवाइन अनीदीग
सैंधव त्रिकटाजीरा एसववरारकूदिले ६ यद्व चरण औलहभुनकीलुगदीमिलायकेदशभासेखाय अग्निफलहोरेगीकी

महानिंजजटाकल्कोगरुडसीनाशनःस्मृतःशुचकल्कोरसेनंस्पतिलतैलेनमिञ्चितःवातरोगाजयेतीव्रान्निपमज्वरनाशनः
६ पक्ककंदरसेनस्पश्लिकानिलुबीकुमाः पादयित्वाचतन्मध्यं दूरीकृत्युनंदकर ७ तदुग्रगंधनाशायरात्रोतकेविनिक्षिपे
त ९ अयनीयचतन्मध्याच्छित्ताबांधेययेततः तन्मध्यं चमांसं सन्नृणं मेनं विनिक्षिपेत् ८ सोबर्षलंपवानोवभर्जितं हिं गुं सेंध
वं त्रिकादंजीखंचैवसमभागानि दूणेयेत् ६ एकीकृत्यततः सर्वकल्कं कर्षमाएततः खारेदग्निवलायेशीकरतुरेयव्यपेक्ष
या अन्नपानंततः कथोदं रंडसुतमन्वहं सर्वगोकागर्जवातमदिंतं बापतंत्रकं अपस्मांतथोन्मादमुद्रुतं भंचरुक्षी उरः शुष्कदीपा
श्चकुक्षिपीडं कुक्षीं जपेत् १० अजीर्णसातपण्डेयमसितितोरययोगुड रसेनममृत्पुरुषे त्वज्जेदेतन्निगतं मधमांसमबान्ध
चरसं सेवेन नित्यशः ११ पिप्पलीपिप्पलीमूलं भल्लातकफलानि च एतत्कल्कश्च सक्षौद्रसूतं भनिवारणः १२

शक्तिविचारित्रतु अतुसारिमात्रादि अनोपानं रकोछालकाकाढा सर्षगिवाएकंतवात अवतच गृहीच्छादगठिया गरुडसीछानीपीडा
पीठकरिहांड पसुरे कोषयीडा औ कसिदेयनाशहो १० संयमरेगोकरे लघुभोजन घामत्याग अन्नोदजलथोरपिये दूधगुडसागे रसचोषधि
भोगी पथ्य सरवमांस खयईखाय ११ उरुतं भपरीपरिकल्क यीपरि बीपरामूलभिलावाकीलुगदी सहतसंयुक्तदेयनीगठियादूरहो १२

बहुक्रांतापरिणाम मूलपर विभुक्रांताकीजड़का कल्कीभिन्नीसहृत्तभीलुक्तसातदिनयीथेपरिणाममूलजाय १३ पुनर्
द्विगु तिलदूधमेंयोसे इसकल्कसेपरिणाममूलपर आमवानजाय १४ अथरक्ताशेषनिर्विरादिकल्कचिर्विराकाचाबल चावलकेधोवनमें
सिकेपियेसेरक्ताशेषजाय १५ रक्तातीसारपरवैरकल्कवरमूलकीछालतिलाकाकल्कसहृत्तदूधमेंपियेसे रक्तानिसारजाई १६ रक्तसर्पपरलाही
कल्क एककपलाहीपेबाकेरसमेंयीसिकेपियेसेरक्ताछई छातीछतक्षयजाय १७ रक्तपरपरचौराईकल्क चौराई मूल चावरकाथे

विभुक्रांताजटाकल्कः सिताक्षौद्रुनेर्युतः परिणाममबंशूलनाशयेत्सप्तभिर्दिनैः १३ अंभीगुदनिलैः कल्कंबुधे
नसह्योजयेत् परिणाममबंशूलमामवीनाशयेत् १४ अपामागस्यवीजानां कल्कसंदुलवारिणा पीतोरक्ताशेनानां सकार
तेनात्र संशयः १५ वदरीमूलकलेन तिलकल्कश्च योजितः मधुक्षौद्रयुतः कुर्यो दन्तातीसारनाशकेनः १६ कृष्णोदकर
सेपिष्ठांलाक्षां कर्षेभित्तापिवत् रक्तक्षयमुरोघातं क्षयरोगं च नाशयेत् १७ तदुलीयजयकल्कः सक्षौद्रसरसंजगः तदुलीर
कसंपीतो रक्ताघ्नदग्नाशनः १८ अंकोलमूलकल्कश्च सक्षौद्रं संदलां वना अतीसारहृत्तः प्रोक्तं सथाविषहृत्तः स्थजः १९ वंध्याक
कोटकीमूलपाटलायाः जायद्यवाद्यतेन विल्वमूलं वा दिविधं नाशयेद्वियं २० अभयो संधवकल्काणामुबीकल्कास्तिशेषस्तप
थ्या संधवमुंभीभिः कल्कोदीपनपाचनः २१ तद्वनलाश्वीजनिपासीकजवानिका कपिल्लकं विङ्गं च गुडश्च समभागिकः २२

वनमेंयीसके सहृत्तसोनसंगपियेसेरक्ताघ्नदग्नाय २३ अतीसारपरअंकोलकल्क अंकोलमूलकीछाल चावरकोधोवनमेंयोसि
सहृत्तगरिधियेसे अतीसारअंभीविषहृत्तो २४ विषयर/खिलसाकल्कखिलसाधासिरसमूलवा नेरमूलकाकल्कधीसंग
नेसेविववासहोई २५ दीपनपाचनहरोनकीकल्क हरश्रीति संधवपीपरिकाक ॥ ल्कतीनोशेषहर्गोषे पुनः ॥ हरश्रीति संधवकाकल्क

दीपनयाचनहे २१ कृमिपरनिशेष कल्क निशेष यलाशर्वोदा खुशानीअजवारनु कवीला वायविंसा गुड एसवसमानमहाकेसाथ खाने
से हामिरेगजाय २२ पुनः नूनमिश्री नागकेसरकैकल्कसेरक्षाशनाशहोय मसूरकाकहाइयायुष सौंठिचेलि फलकाकल्कउस सुर्वकेसंग
पिनेसिग्रहणीनाशहोय २३ मसूरकाकहाइयायुष सौंठिचेलफलका भटकदेयाफलकाकल्क महासेग्रहणीनाशहो २४ इतिश्री शार्ङ्गधरसु
धाकरेपंचमोध्यायः ५ अथ चूर्णेविधिः अतिसूखीइव कूदिकैकामंडमेंछानिले उसेछरणेज औक्षौदकहतेहै इसकेखानेकी मात्राकर्षभर

नवनीतितिलैः कल्कोनेतारक्ताशसांस्तः नवनीतसितानागकेशरश्चापितदिधः पीतोमसूरयुषेण कल्कः शुंभी
शलाकुजः जयेत्संग्रहणीतकनकेण चरुहतीभवः २४ इतिश्री शार्ङ्गधरमध्यमखंडेपंचमोध्यायः ५ अत्यंतशुक्लवद्रव्यंसुपि
ष्ववस्त्वगालितं तस्याचूर्णेजः शोदस्तेन्मात्रानि संमिता १ चूर्णेगुडसमोदयः शर्कराकिगुणा भवेत् चूर्णेषु भर्जितं
हिं गृह्य नोक्तो दृष्टान्नवेत् २ लिह्चूर्णेस्वैसर्वयुताये किगुणे निमित्ते पिवेच्चतुर्गुणैर्वचूर्णेमालोडितं द्रवैः ३ चूर्णवलेहगुहि
का कल्कानामनुपानकं वातपित्तकफातैके त्रिको कपलमाहरेत् ४ यद्य ते लज्जलं प्राप्यक्षणेनेव प्रसर्पति अनुपान
वलादंगे तथा सर्पति भेषजं ५ इवेण यावता सम्यक् चूर्णे सर्वं क्षुतं भवेत् भावनाया प्रमाणं तु चूर्णे प्रोक्तं भिन्नवैरैः ६

१ चूर्णेमें गुडसमानलेना स्वाबुभूनी हीगभूजीइरदेना २ घृतसहता दितथा इव वस्त्रादूनीदेचाढे औषीनेकी इव चूर्णेके साथ चोशुनीदेना
३ चूर्ण अवलेहगुटिका अथ कल्काचूर्णे अवलेहगुटिका स्नकाअनोपान वातमेंतीनपल पित्तमें दोपल कफमें एक एक पल दीजिये ४ अ

किजैसे ते लयानीमें शरिसे फलजातहै तेरे अनुपानकेवलसे औषधि प्रवेश करती है ५ औषधिमें किसीकी
प्रवदेना होतो खितनेमें चूर्ण गुटकीमाफिक होतितनादेना भावनादेना होतो चूर्ण स्थानमें भाव प्रकारमें देखलेना है ॥ " ॥

जा. काहिद्वारे आंवराचीना हइ पीपरि सेंधव यत्पंचगणहृणें सर्वस्वरनाशकरें रेचन रोचक कफहृता दीपनपाच
वेसुक्तांनपरपीपरिहृणें पीपरि सत्तनयुक्तचाठेनौ ज्वरकास हिचकी श्वासकंठ रुज पिलही एकलरोगनाशहो ८ जमेहयेत्रिफलाचू
विशुद्ध तिलभाग बहेडाभाग आंवराचाभाग रसप्रकारत्रिफलाहें ६ सोत्रिफला जमेह सोथ विषमज्वराशकरताहें दीपनहें
१ शर्जनहें कष्टहरण (सायनहें वसीत्रिफलासहनघृतयुक्तखानेसेनेत्ररोगजाइ ७ पीपरिमस्ति सेहि रसेकषणधौत्रिकयक

कल्का

मलचित्रकंपथ्यापिप्पलीसेंधवलथा चूर्णितोयंगणोद्देश्यः सर्वज्वरविनाशनः भेदीरुचिकरश्चेभ्रमेजेतारोप
पियाचनः ९ मधुनापिप्पलीचूर्णेलिह्नेत्कासज्वरायहं हिक्काश्वासहरकं क्षंक्षीहं मंवालकोचित्रं ८ एकाहरीत
कीयोच्याडोतयोज्योविभीनको चत्वार्योमलकान्येवत्रिफलेषाप्रकीर्तिताः ६ त्रिफलामेहशेथश्रीनाशयेद्विष
ज्वरात् दीपनीश्चेभ्रपित्तघ्नी कष्टहं वीरसायनी सर्पिर्मधुभांसंयुक्ताः सेवनेत्रामयांजयेत् १० पिप्पलीमरिचंशुंढी
त्रिभिस्त्र्युषणशुच्यते दीपनंश्चेभ्रदेविघ्नं कष्टपीनशनाशन जयेदरोचकं सामं मेहगुल्मगंतामयान् ११ पिप्पली
चविकाविद्यापिप्पलीभूत्रचित्रकैः पंचकोलमितिखातंत्रचंपाचनदीपनं घागाहृक्षीहगुल्माघ्नंशूलेश्चेभ्रोदरायहं १२
त्रिगंधमेलात्वकैश्चातुर्जीतसंकेशरं त्रिगंधचवत्तजीतं हृक्षोमं लघुपित्तकृत् वर्णैरुचिकरतीक्ष्णं विषश्चेभ्रामयाजयेत् १३

दीपनहें कफकष्टपीनसनाशकर्ताहें आंव अरुचि मेलगुल्म कंठरोग सवदूरहोय ९ कफादियरपंचकोलहृणें योपरिचाव सेठिपी
पर मूलचीतास्तेपंचकोलकहतेहें रोचनकहें पाचनदीपनहें चनाह पिप्पलीगुल्म मूल कफ उदररोगसवच्छाहो १२ त्रिगंधचूर्णे पत्रज
गची एत्रिगंधहें चातुर्जीत तज पत्रज स्लास्वी एवागुजातसे एदेनोत्रयेहें उष्णहें कष्टुपित्तकारकहें कांति रुचिकार तीक्ष्णहें औविष ओकफ

जीवनीगणकाकोली क्षीरकाकोली जीवकरियभक्त मेदा महाभेदा जीवन्ति दृधियालताकोलीनीकी छोनीकी सीतकागीहोतीहै सुखी भ
गफली उर्दफली इतकीजीवनीगणसंज्ञहै सोत्पादिकहै गभे स्थितकाकहैभारी दुधवर्धनीहै धातुशोधकहै धातुशोधकहै स्निग्धठढी
तृष्णा रक्तपित्त छयी शोथज्वर दाह वायु एतवहरे १४ वैभेदा वैकाकोली जीवकरियभक्तारिषि बधि एतवहरीहै पाल्त्राठवेकोई मिलतीहै
अष्टवर्गकोबैद्यजीवनिगणतल्पकहतेहै १५ विष्णुत्रयार्लवणपंचकहैले संधावाला विडनीत खारी गड नीलसांभर एपांचलो नक्रमसे

काकोलीक्षीरकाकोलीजीवकर्षभकोतथा भेदाचान्यामहाभेदाजीवन्तीमधुकंतथा सुगंधयलीभाष्यपणीजीवनीयोग
णस्वयं जीवनीयोग एसाइगभेसंथानकगुरुः हस्तकुरुहणोवृष्यः स्निग्धशीतल व्यापहः रक्तपित्तक्षयशेवंज्वरदाहा
नितान्जयेत् १४ वैभेदेदेवकाकोल्योजीवकर्षभकोतथा चरबीदृधोचनेः सर्वे एउदारहतः अष्टवर्गोबुधेः चोक्तो जीवनीयसमो
गुणैः १५ सिंथसैवचलचैवविंसासुइकागडः एकदिन्निचतः पंचलवणानि क्रमादिदुः १६ तेषुमुखं संधवंस्याद
नुक्तैतत्प्रयोजयेत् संधवाद्यरेमकांतसेचलवणपचकः १७ सधुरंस्तृष्टविष्णुत्रंस्निग्धं सुधुमं वलापहं वीर्यो
संधोपनंतीक्ष्णं काफपित्तविवर्धनं १८ स्वर्जिकायावभूक्कश्च क्षारयुग्मसुसारुत सेयोवह्नि समो क्षारोस्वर्जि
कायावभूक्कजो १९ क्षारश्चान्येपिशुल्भाशोथहृणीरुक्छिदः सराः पाचनार्कमिथंस्वग्नाः शर्करैरस्मरिनाशनाः २०

जानो १६ इतमेंसंधानुस्वहै जहांनामनलिखितहांसंधालेना संधेसेसोभरितकपांचलोनजानो १७ पाकमधुरहै मलमूत्र
पकार्कैगिराताहै चिकना प्रवेशकर्ता वलहती धातुकोगर्भकर्ता दीपन तीक्ष्ण कफपित्तवशाहै १८ शुल्मादियरवारसज्जी
वार यवाधार एरोहै सोदोनीअग्नि समानहै दीप्यमानहै १९ क्षारखारसं हिजनधार गदाधर्न खार सांगुल्मचर्श ॥ ॥

मी शनरेगोकोनाशकतीहें पाचनूकमिनाशकपुंसत्वघशर्कोरामेहहोहें २० सर्वज्वरपरसुरशीनहूर्णे त्रिफला धवीचूरदीपुवोभटकोहें
या केचूर त्रिकटा पीपरा मूल सुरेगुर्वजवासा २१ कदको पिंगापापरा मोथी आयमान नेत्रवाला नीमकीछाल पोहकरमूल मुलेवी जारेया २२
शन रंशजो भारंगी सहिजनविद्या पुंजीभटकरी वच तज पप्पाख खस श्रेत चंदन अनीस वरियारा २३ वनउदी वनसुंग नायविडंग न
चीता देवदारु चाव पदेल २४ जीवकरिणभक रनदोनोकेअभावमें विलारिकंदलेना लोंग वंशलोचन कमलपत्र कंकोलीकेअभावमें

त्रिफलारजनीयुग्मंकटकारीयुगंशवी त्रिकटुगंधिकंमूर्वीगुडूचीधन्ववासकाः २१ कोहकापर्यदोमुलं नायमाण
चवालकं निवः पुष्करमूलचमथुजथीचवत्सकः २२ यवांनीइयवोभांगी शिशुबीजंसुराएजा वचोत्वकयत्नको
शीरुचंदनानि विषावला २३ शालपर्णी एष्टपणी विडंगतगरु तथा चित्रकोदेवकाष्ठं च चव्यं पत्रं पदेलजं २४ जी
वकर्षभकोचैवलवंगं वंशलोचनां पुरीकंचकाकोलीपत्रं जगानिपत्रकं २५ तालीसपत्रं चतुर्धा समभागानि दृष्ट्वा
येत् सर्वे दूर्णे स्पसार्धे शंकोरातं प्रक्षिपेत्सुधी २६ एतत्सुदर्शनं नाम दूर्णे दोषघ्नमापहं ज्वराश्च निखिला न हन्या
न्नात्र कार्या विचारणा २७ एयगंदवागतजाश्च धातुस्थान्वियं मज्जरन् सन्निपातोन्नवाश्चापि मानसादयिनाश
येत् २८ शीतज्वरेकाहिकादीन्मोहनं श्मभं तथा श्वासकासं च पांडुत्वं हृद्गं हंतिकामला २९ ॥ २९ ॥

सुरेवीलिना इरुमेंधना तेजयातजावित्री २९ तालीसपत्र एतवस्तुनानले हूर्णेकोरे सबदूर्णेकाआधाचिरायताडारे २६ यहसुदर्श
दूर्णेनिदोषनाशकगीहें सबज्वरहूर्तेनिश्चयहें २७ एकहिका दंक्षज सन्निज भागस एते सबज्वरनाशकहें २८ शीतज्वरजशी
अंतरिया तृतीयक चातुर्थिक मोह तंश्र भ्रम तस्मा श्वास कास पांडुहिरोगकागर २९ ॥

रिड पीठ कर्पिण्ड जाय प्रसुरी रनअंगनकी योगानाशहोइ जागीनजलसंगपियेनोसर्वज्वरहर ३० यथासुदर्शनचक्रसवदानवोकोनाश
कर्तोहै तथासुदर्शनचूर्णसवज्वरेकोनाशकर्तोहै ३१ कासश्वासज्वरपर त्रिफलादिचूर्ण कासश्वासज्वरपर त्रिफलापीपरिचूर्णसहस्रसंग
चोटोभेदीहै अग्निप्रवलकर्तोहै ३२ कफज्वरपरकायफलादिचूर्ण कायफल मोथा कटुकी कटुर्काफरसिंगी पुष्करमूल रनइव्यनिकाच
णसहस्र अइकरससंगवाटे ज्वरहरै कठुपहोइ कासश्वास अस्वि वातमूल छर्दि क्षयी सवज्वर ३३ बालककीखोसीज्वरपर ककरोसिंही आदि

त्रिकष्टकदीजालुपाथ्यभूलनिवाणं रीतांतुनापिवेश्यमान्सर्वज्वरनिहतये ३० सुदर्शनयथाचक्रं दानवानां च नाशनं तं दम्ब्य
रणं सर्वेषां भेन चूर्णो निवाह ३१ कासश्वासज्वरहर त्रिफलापियलीयता चूर्णो नाम धुनालोष्ठभेदी वाग्निप्रबोधिनी ३२
कटुकलंभस्तकंतिक्ताशदीभृगीचयोष्करं चूर्णमेवाचमधुनाभृगवेरसेनच लेयं ज्वरहर कंठकासश्वासारुचीजये
वातभूलतथाछर्दस्यंचेद्वच्यपोहम्बि ३३ भृगीप्रतिविषाकृसाचूर्णेनामधुना लिहन् शिशोकाशज्वरछर्दिशम्बे वा केवलं विषा
३४ अदीप्रतिविषादिशुभ्रलाकुटजचिक्किं चूर्णं सुलावनापीतमामातोसागनाशनं ३५ हरीतकीप्रतिविषासिधुसोवर्षलंवचा
सिधुचेतिक्कनचूर्णेपिवदुस्तेनवरिण आमातोसागमनथादीवाग्निप्रबोधनं ३६ सुलभिमिद्रयवं विल्वं लोभं मोचरसंतथा ॥

चूर्णं कालकरसिंगी अनीस पीपरिअधुसकचयवेतोवालककीखोसीज्वरछर्दिइरहोयनेसेवदीकेवलचनीससे ३४ आमातोसारपरभुंख्यादि
चूर्णं सोढिअनीस ह्रीग मोथा कोरमा चीता रनकाचूर्ण उल्लेपानीसातपियेसे औक्कअनीसासुरहोय ३५ आमवातपरहरीतकादिचूर्ण हउअ
नीसार सेधातोनालालोन दचह्रीग रनकाचूर्ण उल्लेपकीहै पियेनो आमवातादीसाजार ग्रीहीहै अग्निप्रवलकरै ३६ सर्वोनीसारपरलसुगंगा
धरसूर्ण मोथा रस्तेवेतल लोथमोचबस् धोफूल रनकाचूर्ण महुगुरगरिकेणवेतोसवअनीसारप्रवाहिकवदकरैयहलसुगंगाधरसूर्ण परमयासीहै ३७

अतोसाएषद्विगंगाधरद्वणे मोधा सोढि करेया धौफूल लोध सुगंधवाला बेल साचएस पाढा इज्जो मधुकरेया आमकीविजुरे अगिरी ललना-
रुनकाद्वरण सदा चाउकाथोवनसंयुक्तपियेसे प्रवाहिक सवअतीसारग्रहणी जलबीआमहोय यसद्वरुगंगाधरचरणसरितप्रवाह
रोकनेकोसमर्थहे ३८ मद्वा मिरचद्वणे चीना कालालोन संगपियेसेग्रहणीनाशहोय उदररोग लीला मेरुअग्नि गुल्म अश एसवप्रच्छे

धातकीचूणेयेतकगडाभ्यांपायसेत्सुथो सर्वोतीसारशमनंनिरुणद्धित्रवाहिभक्तो लघुगंगाधरं नाम चूणे संग्राहको
परं ३० मुस्तारलुकसुंभीभिर्द्योतंकौलो ध्रुवालकैः विल्वमोचरसाभ्यांचषाढेइयववत्सकै आम्बीजंप्रतिविषाल
ज्जालुरितिचूणिंत क्षौद्रंतंडुलपानीयपीतैर्योतित्रवासिका सर्वातीसारग्रहणीप्रशर्मयातिवेगतः दृग्गंगाथर
नामसरिद्वेगोपिवंधकं ३८ तन्केणयः पिवेन्नित्यंचूणेमस्त्विसंभवं चित्रसौर्वचलोपेतंत्रद्गणेनस्पनश्यतिउद्
रह्नीहमंदानिगुल्माशौनाशनंभवेत् ३९ अष्टौभागाः कपित्थस्य घञ्जागाशर्करामता दाडिमंतंडीकंच श्रीफला
धातकीनथा अजमोदापिप्पलीचप्रत्येकः सुखिभागिकाः मस्त्विजीर्क्धान्त्यंग्रेधिकं वालकं तथा सौर्वचलं
यवानीचचातजोतंचचित्रकम् नागरंचैकभागाः सूत्रप्रत्येकंसूक्ष्मचूणिंतं कपित्थाष्टकसंज्ञस्या चूणेमे
तज्जलामयात् अतीसारश्चर्यशल्मंत्रग्रहणीचव्यपोहति ॥ ४० ॥ " " " " " "

दोम ३६ संग्रहणीयरकपित्याष्टकहर्णे आसभागयक्षाकैथा छत्तभागखोड अनार अमलीवेल धोंफूल अजमोद पीपरि एसवती
 नतीनभाग मस्ति जीराश्चेत धनिया यिरामूल सुगंधवाला अजवाइन तज पत्रज इलायची नागकेसर चीता सोंठि एसव एक एक
 भाग इनसवकामसीन हर्णिकर येकपित्याष्टकनाम हर्णे गलेकरेग अतीसार क्षवी गुलम ग्रहणी एसवअच्छेलेय ४० " "

डिमाकष्ट अनार आठनूपयाभर शंकावतीसुभर तज पत्रज श्लाघवीनीनौमिलाइकेचारिभर त्रिकटावारहभर इन्हे एकक
 छकनामद्वारे ऐवन दीपन आहीहे कंदमुष्कर कासज्वरनाशकौरे ४२ अतीसारपरद्व्यदाडिमाष्टक अनारआठपल
 पिपरामूल अजवाइन धनियौ जीरासेत सेडि सवपलपलभर वंशलेवनदशभासे तत्रतत्रज एलो नागकेशर एयांचयांचभासे यहइ
 क छदी अमीसारगुल्म ग्रहणी जलग्रह मंदगिनी पीनस कास एरोगनाशकौरे ४३ छयोपर लवंगदिह्वारे लवंग शुष्ककष्टर लाय

दाहिमादिपलोआहोखंडादशपलानिच त्रिगंधस्यपलचैकं त्रिकटुश्चपलत्रयं एतदेवीकृतं सर्वेष्टृणैश्चादडिमाष्टकं रुचिक
 दीयनं कंठ्य आहिकासज्वरायहं ४१ दाडिमस्यपलान्यष्टौ शर्करायाः पलाष्टकं पिप्पलीपिप्पलीमूलं यवानोभरिचंतथा धा
 न्यकं जीरकं शुंठी प्रत्येकं पलसंस्मितं कर्षमात्रावगाक्षीरोत्तक्यत्रैलौ श्रकेशरं प्रत्येकं कोलमानास्यस्तच्छृणौ दाडिमाष्टकं अतीसार
 क्षयगुल्मग्रहणीचगलग्रहं मंदगिनीपीतसंकासं चूर्णमेतद्यथोहति ४२ लवंगशुष्ककष्टरमेलातृनागकेशरं जातीफलमुशीरंचना
 गरकुक्षजीरकं कृष्णारुत्वगाक्षीरोमांसीनीलोत्पलकणं चंदनं नगरं पालं कोलं चेति द्वाणैश्चेत्तस्य भगानि सर्वेणि सर्वेष्वचसि
 ताभवेत्तलवंगाधमिदं दृष्ट्वा राजाहं वन्दिदीपनं रेचनत्रयं शृण्वर्षं त्रिदोषघ्नं वलप्रदं द्योगं कंदरो गंचकासं हिक्वाचपीनसं यक्ष्माणं
 तमकं द्यासं मतीसारसुरः क्षतं प्रमेहा रुचिगुल्मादीन् ग्रहणीमपि नाशयेत् ४३ जातीफललवंगौलापत्रैस्त्वनागकेशरैः

यची नागकेशर जायफल खस सौं डि कुक्षजीर कक्ष्म्वगर वंशलोचन जगभांसी नीलकमल पीपरिचंदन तगर सुगंधवाला कंकोल इनकाष्टणे
 करि चर्णेकी आधी मिश्री मिलाने यहलवंगादि द्वाणैर्गजदीपन रेचकतृत्तिकारक धातुपुष्टिकौरे त्रिदोषघ्नं वलप्रदं कंदद्विरोग कास हिक्वाचपीनसक्षेत्र
 अमीसारगुल्म प्रमेह रुचिगुल्म ग्रहणी एसवरेगइरिक्ते ४३ जातीफल लवंगौलापत्र जायफल लौंग श्लाघवी तत्रपत्रज नागकेशर कष्टर चंदन तिलवं

पालोचना नगर आंबरा नालोसपत्र पीपरि २३ चीना कालाजीरा सोढिविडंग मरिच स्वकी समानभांगलेना तिसकाट्टएकरि चणीकेवगवर
वरवांडरे कर्षभसहस्रमिलाइके लाय इनकेप्रभावभ ग्रहणीकास् व्यास् अरुचि क्षयी वातकफ नाकटयकना एरोगवेगहीइहोस् ४४ अरुचिपरहाखा
स्वच्छ मरिच नागकेसर तालीसपत्र पाकेलेम एस्वसमानभांगलेना गंधि चित्रकतज पीपरि अमलीजीरा येस्वदेवभागलेना धनिया अमलबेगस

कर्पूरचंदनतिलेखकक्षीरगारभले तालीसपिप्पलीपथ्याचित्रकाखलजीरके गुंरीविडंग मरिच सप्तभागानिच्छणिते या
वंतनासिस्वर्वाणिकार्योभगाचनावती सर्वत्रणसमादयागार्केगन्धिपत्रैः कर्षमात्रं नद्यात्वादेन्मयुनाला वितंमुधीः अस
प्रभावा गृहणीकासश्चासारुचिक्षयान् वागक्षेपप्रतिशयाय प्रथमयातिवेगतः ४४ मरिचं नागपुष्पाणि ताली सं
संवर्णानि च अत्येकमेकभागास्तुः पिप्पली भूलचित्रकेः ४५ त्वक्कणानि तिरीकं च जीरकं च किभागिका धान्यात्मवेतसो
विश्वभंडलावदराणि च अजमोदजलधरः अन्येकस्युखिभागिकाः सर्वौषधचतुर्थोऽंश इडिमस्यफलभवेत् इव्येभ्योनिखि
लेभ्यश्चसितदियादैर्भावया सहात्वाडवंसस्यार्चणमेतत्सरेचनं अग्निदीनिकारुह्य कासानीसारनाशनं रुधोगं
कंठजगरं मुखरोगप्रणशानं विस्तृचिका तथा धानमर्शोऽगुल्मकृमीनपि छर्दिपचविधंश्वासं चृणमेतद्ययोदति ४५

सोढिवडोलाची वेर अजमोद माया एतीनतीनभाग स्वइत्यकीचोथारुचनारस वकीआधीमिश्रीदेई यस्महात्वारव संसकट्टणरोचक
क्षीयनहे इदेकोवलप्रदेहे अतीसारुहदिरोग कंठजलना मुखरोग शीतस्स पेटफूलना अर्शेगुल्म कृमिछर्दिपचविधिश्वाससवनशकरे ४५

उदरोगघरनाययण्डणं चीता त्रिफला सेंढि पीपरि भरिच हीरा हाउवेर वच अजवाइन ग्रंथ सौफ अजगंधी अजमोद कटूर धनिया
वेडंग कालीजीरे चोक घुकरमूल दोनोषार पांचौलोन कूट एसवसमानले इंदूरन देभाग निशेधनीनभाग जमालगोदानीनभाग पीन
पुष्पीसेंडुड मूलचात्रिभाग एसवएकचकरिचूर्णेकरे कठिनकोदरोगीको प्रथमपाचन स्वेदनकरि यहुचूर्णरेचनार्थ देरती सवरेग हुरेग पां
इ काम आस भगंदर मंदानि ज्वरकुष्ठ ग्रहणी कंठरुज एरोगनाशकरे अनोपानकहानाहे पदफूलेमेमंघसंग शुल्ममेवेरकाथसंग मलफेरनेसेमेद

चित्रकान्तिफलाकाथंजीरकह्स्वषावचायवानीपिप्पलीमूलंशतपुष्याजगंधिका अजमोदाशरीधान्यंविदंगंस्थूरीरक्तं हंभावा
मोक्षरमूलंक्षारेलवणपंचकं ८ कुष्ठचेतिसमांशानिविशालायाद्विभागिका तट्टिभागाविशेषादंत्वाभागत्रयभवेत्
चतुर्भागांशानलास्यासर्वान्येकचतूर्णेयेत् पाचनक्षेप्तनायेअस्तिगंधको हस्यदेहिना रघाचूर्णेविरकायसंवरेगप्रणशनं हरे
नेपाइरगेनेचकासेआसेभंगरे मंदानीचज्वरेकुष्ठग्रहणचंगलग्रहेदद्याद्युक्तागयानेनतथाभ्रानिसुरिभिः गुस्मेवदलीरग
विस्मेदेदधिमलुनारुसांशुभिर्जीर्णेचवृक्षास्तेऽपरिकरिषु उष्ट्रीदुग्धेनोदेषुतथानक्रैणवागवां प्रसन्नयावातरेगोदाउमेशोभातथा
दिभेदचविषेदद्यात् रथनेनविषनाशनं चूर्णेनारायणनामदुष्टरोगगणपहं ४६ ह्त्वषान्तिफलचैवचायमाणवपिप्पली हेम
क्षौणेत्तट्टचैव शानलाकटकावचा ४७ नीलनिसेधं चक्रालवंगचेतिचूर्णेयेत् उस्त्रोदकेनमूत्रेण रादिभस्त्रिफलारसेः ४८

होवाजल अजीरणमेउसोर देष्टरोगमेअमला कठेदरादिमें उष्ट्रीद्वध वागोनक्रमे वातरोगमेंसुरामंउमेदे अशोमेअनारससंगदेदोनोविष
अधीकलंगदेना यहुनारायण हर्षहे दुष्टरोगेकेगणकहे समूहनाशकहे ४६ अजीर्णपरह्त्वषादिहर्षे हाऊवेर त्रिफला चायागण पीपरि
चोक त्रिर्णेच पीतपुष्प सेहुउकीजइ कल्कीवच ४७ नीलकीपत्ती सेववकालालोन इनकाचूर्णेऽस्त्रोदकदशगोसूत्र अनारकासत्रिफलारस ४८

वामांसरससंग जिसरीगीकोजोउचितदोतिसकेसाथपिये अजीएँ घिलीहा गुल्म शोथ अर्श विषमग्नि ४६ हलीम कमल पांडु कछ पेठ फूलना
उदरोग एसवट्टहोय भूलादियरपंचसमचूर्णे सोढि हड पीपरि निसोथ कालालोन सबसमचूर्णे भागलेसुस्मचूर्णेकरे ५० यद्वर्णचसमचूर्णे
बरीभूल पेठफूलना जठरसंवधीअर्श अमनान्त सबहरे ५१ नाएचचूर्णे पीपरिदशमासे निसोथचारिहययेभर खांडपलभर एसवएक
भकरिचूर्णेकरे कार्यभरिसहतसंगाथाय पेठफूलनाजाइगोरिउदर कफ पित्त शूल नाशहोइ ५२ ह्रीहादिपल्लवणत्रितथादिचूर्णे तीक्ष्णलोने

तथामांसरसेना पियथायोग्यपिवेनर अजीएँहीहगुल्मेखशोफाशोविषमग्निषु ४६ हलीमकामलापांडुकुछाधानोद
रेषपि शुंढीहरीतकीकृष्णातटसौवर्चलेतथा समभागानिसर्वोणिसुस्मचूर्णेनिकासेत ५० जेयंपचसमचूर्णेमेतच्छूलसंपर अभान
नदराशोप्रभामवातहरसरुनं ५१ कर्बेमात्राभवेत्कृष्णातटतास्यानलोन्मिता खंडात्पलंचविज्ञेयं चूर्णेमेकत्रकारयेत् कार्णेन्मे तंलि
हरेतंक्षीरेणध्याननाशनं गाढविहोदरकफान्पित्तंभूलानिनाशयेत् ५२ लवणंत्रितसंक्षारीशतपुष्पाययंचचा अजमा
दक्षगंधाचह्रस्वयाजीकंधयं ५३ मरिचंपिप्पलीमूलंपिप्पलीगजपियली दिगुअहिगुपत्रीचशर्दीपादोपकुंचिका
५४ शुंढीचित्रकचव्यानिविडंगचाम्लवेतसं दाडमंति तिडीकंचतटदंतीशानवरी इंदवारुणिकाभागी देवदारुज
वानिका ५५ कसुववत्रसुववणियधरंवदराणिव शिवाश्चेतिसमांसानिचूर्णेमेकत्रकारयेत् ५६ "

नोएार सौफ सोवाबीज वच अजमोद ममरी हाऊवेर दोनोजीरे ५७ मरिच पीपगमूल पीपरि हुरदुरा कहर पाढीभारीला ५८ सोढि चिता बाल
विडंग अमलवेतस अनार अमलीकीछाल विशेष जमालगोदा प्रातावरि भारंगी देवदारु अजवारुन ५९ धनिया जुंवरु प्रकरमूल बैर
हड सबसमानचूर्णेकरे ५९ "

अर्कारस विजोएरसंभवनानादेय घीव वापुएनीमघकेसंगपिये वाउसोदकसंग ५० बेरकेकाथमें आमट्टेके बाऊठययमें त्रादहीके
नोडमेंपियेसे वकत सीहा कटिशूलगुदकोख दुरिगेग ५० अर्शमंदाग्नि मूलसंभ गुल्म सी ह ३२रोग हिचकी पेटफूलन आसकास
एसवदुरिहोय वाइनइव्यनकार्यैववनायकैवेद्यदेयनौभीएरोगदूरिकरे ५६ शूलपरतंवरादिचूर्णे तुंवर नीनोलोक अजवाइ
नपौकरमूल यवक्षार हड हौग विडंग एड्व्य समानले ६० नीशोयनीनभाग सबकासूक्ष्मचूर्णेकरिउसोदक वायवकाथमें

भावयेदाइकारसेवीजपूरसे स्रया नापिवेच्छर्कराजीरोमघेनो स्नेनवारिण ५० कोलांभसानातके एड्व्य
बोड्डिनमनुनायक्तपृष्ठकदीशूलगुद्वक्षिशिह ३३मयात् ५८अर्शेमंदाग्निविष्टंभगुल्मशीलोदराणिच हिक्काथानश्वासकासा
जायत्येतन्नसंशयः ५६ एतेरवोषधैः समुग्धतदासाधयेत्सुधीः ५८ तंवहृणित्रिलवणंजवानीपुष्करब्दयं यवक्षारभयाहिंशु
विडंगा निसमानिच ६० तट्टिभागिकारोयसूक्ष्मचूर्णेनिकारयेत् पिवेदुस्नेनोयेनयवकाथेनवापिबेत् जयेत्सर्वोणिभू
लानिगुल्माभानोदराणिच ३२ चित्रकोनागरं हिंशुपिप्पलीजरा चव्याजमोदमस्त्वित्रत्येकं कर्षे संमितं ६२ खजि
काचयवक्षारः सिंधुसौवर्चलं विडंः सासुडिकरोमकंचकोलमावाणि कारयेत् ६३ एकीकृत्वा सिलंचूर्णे भावयेत्मातुलंगजैः
रसेवादाडिभिर्वापिशोषयेदानपेनवा ६४ तच्चूर्णेनाशयेदुल्मं ग्रहणीमामंजूरं अग्निं चकुरुते दीप्तिरुचि कृत्वा फलाशनं ६५

पियेनो सर्वशूल गुल्म पेटफूलना सबअछेहोरे ६२ मंदाग्निपचित्रकादिचूर्णे चीतासो ठिहीग पीयरि पियरासूल चाव अजमोद मरिच
कर्षे कर्षले ६२ इतौवार संथा काला योगा कदीला सोभर एकोल कोलले ६३ चूर्णेकरि विजोएरस वाअनारसमें बांढिधाममें भु
षाइवे ६४ ग्रहचूर्णे गुल्मग्रहणी आमरोग्रहरे अग्निदीप्तरुचिकरे कफनाशकके ६५ ॥

नंदानिपरवडवानलचूर्णे संध्यापिपरामूल पीपरि नाब चीता सोढि हृद कमसेवडा रचूर्णेकोर जेसेसंध १ मासातौपीपरामूल २ पीपरि ३ ऐसेते
ना ३ गहवडवानलनामअग्निदीपनहे ६६ वातादिपरअजमोदादिचूर्णे अजमोद विरंग सोधो देवदारु चोला पित्तपिपर मूल सोय पीपरि ६७ मरिच एड्य
कर्ष कर्षभर हृदपांचकर्ष विधारादशकर्ष ६८ लोहिदशकर्ष ६९ एतवचूर्णेकोर गुडमिश्रितकारि उमोदक सेपिये ६६ अक्खीनरह्वायतोस्तजनदूरस्तोत्र

संध्यापिपलीमूलपिपलीचव्यचित्रकं सुंवीहरीतकीचेतिनमबुछाविचूर्णेयेत वडवानलनामेतचूर्णेस्यादग्निदीपनम् ६६
अजमोदाविडगानिसंधवंदेवदारुच चित्रकंपिपलीमूलंशतयुष्माचपिपली ६७ मरिचंवेतिकर्षोमंप्रत्येकंकार
येदुधः कर्षोस्तपंचपथ्यायाः दशस्यष्टद्वारकात् ६८ नागराच्चदशेवस्यः सर्वोपेकत्रचूर्णेयेत पिवेत्कोलजलेन ७० ॥
वचूर्णेचगुडसंमिश्रं ६६ भक्षयेदशवासम्यक्स्वपथुनाशनं आमवातरुजंरुंतिंसंधिपीशचगुडसी ७० ॥
कटिपुष्टगुदस्थांचजंघयोश्चचजोजयेत तंवीप्रतत्तीविद्यांचीकफवाताभयाजयेत ७१ हिंगुयागभयाधान्यंदा
रिमंचित्रबांशदी अजमोदात्रिकटुकं हृदयांचाम्लवेतसः ७२ अजगंधांतितीक्ष्णंजीरकंयुक्तंरुचं चवंक्षा
रंरुधं पंचलवणनिविचूर्णेयेत ७२ जागभोजनस्यमध्येवाचूर्णेमेतत्प्रयोजयेत् पिवेदाजीर्णमघेननक्त्रेणोक्षो
दकेनवा ७४ गुल्मेवातकफोन्नेतेविट्गहृष्टीलिकासुच दक्षिणाश्चश्रूले सुश्रूलेचगुदयोनिजे ७३ ॥ ॥

आमवात गांदिपीर गहसीवासु ७० कटिपीडा पीठ्यादा जोगपीर तूलीवासु प्रतत्तीवासु विद्याची कफरोग एसवनाशहे ७१ श्रुत्वादिपहिसांवादिचूर्णे होग
हृदधनिबा अनार चीता कर्च अजमोद विडवा लक्षवेर अमलवेतस ७२ मरी इमलीकीछाल जीरा एकरमूल वचचाव इनोषार पौनौलो न सकचूर्णेक
७३ भोजनाद्विवांसंग एलीमेयार् ७४ वातकफ कागुल्म कोष्ठवधशालिका हृदय येद पशुरी गुण योनि एसवमूल ७५ ॥ ॥

भृशकृष्ट पेटफूलन पांडू अरुचि ह्रिक्की यकृति लोह श्वास कास गलरोग ७६ ग्रहणी अर्श स्तनपरमत्तृणैहै विलोएकेरसमें सातभावनादे गोली बांधले स्ते
वात कफ रोगनाश होय ७७ अरुचि परजवानो खांडव चूर्ण अजवास्त्र अनार सेठि रमली की खाल अमल वेगस ऊखेर एसवचारि चारि शाण ७८ भरि चढाई शाण
पीपरि ७९ शाण तज कालालोन धनिया जीरा एदोनो शाण ७८ शर्करा ६४ शाण शाण चारि गैसे का होनाहे स्तनका सबका चूर्ण करे स्तेजवानी खांडव कहेत है

मूत्रकृच्छ्र तथा माहे पांडू रोगे उचौन तथा हिक्कायां यकृति लोह श्वासे कासे गलगहे ७६ ग्रहण्य शै विकारेषु चूर्णमेतत्तथा
स्यते भावितं भात लिंगस्य बहुशः स्वरसेनवा कृष्णोच्चवटिको वद्मो वातश्लेष्मा मयापहः ७७ जवानो दाडिमं शुंठी निंति
डीकाम्लवेतसो वदरा म्लच कर्षीत चतः शाण मितानि च ७८ सार्द्धे दिशाण मरिचं पिप्पली दश शाणिका त्वक्से
वर्चल धान्याकं जीरकं दिदिशाणकं ७६ चतुःषष्टि मितैः शाणेः शर्करा चान्न योजयेत् चूर्णितं सर्वमेकत्र यवा
नी खांडवाभिधं ८० नाशयेत्पांडू रोगं च हृद्दोषं ग्रहणीज्वरं छर्दिशेकाति शाणं अली हानाह विवंधता अरुचिं शूल
मंदानि मर्शे जिह्वा गलामयान् ८१ तालीसं मरिचं शुंठी पिप्पली वंशलोचना एकदित्रिचतुः पंचकर्षे भीगान्न
कल्पयेत् ८२ एलास्त्वचो रक्तकर्षोर्ध्वान्येकं भागमाहरेत् वाविंश कर्षे तु लिता प्रदेया शर्करा बुधेः ८३
तालीसाद्य मिदं चूर्णं पाचनं रोचनं स्मृतम् कासश्वासज्वरहरं छर्द्धनी सारनाशनम् ८४ ॥ ॥

८० ग्रहपांडू हृदि रोग ग्रहणी छर्दिशेष अतिशार लोहा पेटफूलना कोष्ठवद अरुचि शूल मंदाग्नि अर्श जीभरोग गलारोग एसवनाश होय ८१
अरुचि परतालीसादि चूर्णे तालीस मिर्च सेठि पीपरि वंशलोचना इव्यत्र तिकर्षे वडाइलेई ८३ इलायची तज आधा आधा कर्षे खांड ३२ कर्षे लेई
८३ ग्रह तालीसादि चूर्णे पाचन रोचन है कास स्वास ज्वर छर्दि अतीसार ८४ ॥ ॥

[illegible]

शेषाधानहरेऽङ्गीदृग्रहणीपाङ्गुरेणजित् पद्मावाणर्केरचूर्णेक्षिपेद्वागुटिकोत्ततः ८५ सितोपलायोऽङ्गः स्यादष्टोऽस्या
दंशलोचना पिप्पलीत्याचतक्षकीक्षुडिलास्याद्विकार्थिकी ८६ एककर्षत्वचः कार्यश्च एतेत्यसर्वमेकतः सितोपला
दिकचूर्णेन धुसर्पियुतं लिहेत् ८७ आसकासक्षयहरं हस्तपादाङ्गदहजित् मेदाग्निं सुप्रजिह्वाचपाश्र्वाभ्रलम्
एचकं ज्वरसूध्वगतं रक्तं पित्तमाशुव्यपोहति ८८ सामुद्रलवणं कार्यमष्टकर्षमिदं बुधैः पञ्चसेवर्वलं ग्राह्यं वि
उसेधवधान्यकं ८९ पिप्पलीपिप्पलीमूलकस्मज्जारकपत्रकं नागकेसरतालीसमम्लवेतसकं तथा ९० दि
कार्यमात्राण्येता निप्रत्येकं कारयेद्बुधः मरिचं जीरकं विश्वमेकं कर्षमात्रकं ९१ वाडिमं स्याच्चतुर्ष्वर्षे त्वंगे ला
वार्धकार्षिके बीजपरसेनैव भावितं सप्तवारकं एतच्चूर्णीकृतं सर्वे तवणभास्कराभिधं ९२ शणैश्चमाणैरेय
धुसस्तकसुरासर्वैः वातक्षेमभवं गुल्महीहानमुदरक्षय ९३ ॥

काला भूर विड सोंघा धनिया ८६ यीपरि पिपलाभूल कालाजीरा पत्रज नागकेसर मालीस अमलबेगमस ८७ एसवरोदोकर्य मरिच
सोठकर्योकर्यभर ८९ अन्नार ९० भर इलायची तज पाचपांचभासे एसवएकचकरिचणे कोर फुलन एभाकर ९१ एकल पादहीविनोर के संगदेय
कमहा वामध संगदेय गो वातकफजनगुल्म हीहं पेटरीग छट्टे ९३ अथो यरुणी कुछ कोखध भगदर सजन बल आस कस आमरोय हृदय रोग ९४

मंराति एसबरेगनाशकरे दीपन पावनहैं संछर्णलोगनि केहितमयम श्रीभास्करने कह्यहै ६१ वतपितकफछरि पाएवा दिहाए न्यह
विपगु मोषा नेकी भिषी पीपरि सेतचंदन लाबालंबग नागकेसर सबछर्णकसि हतमिश्रीमिलाबचाहे भोचालपितकफजन्मछरि माशकोरे ६२

निवछर्णे नीवकेपंचांगकाछर्णसभपीसिके ५५ पल लोहभस्म हउ चबावडीन चीता भिलावा विडंग खांड आंवरा हूदे पीपरि मरि

अंशेसीग्रहणेकुंछेविद्विबंधभंगंदरं शोफंभूलंश्वासकांसंवाभरोषं च हउजं ६४ मंराग्निनाशयेदेन दीपनं पावनं पर
सर्वलोवहिता प्रीयभास्करेणेदितंपरा ६५ एलाप्रियंगुमुस्तानिकोलमज्जाचपिपली श्रीचंदनं तथा लाजालवंगना
गकेशरं एतच्छर्णीकृतं सर्वेसिताधौद्रुतलिहेत् वानपितकफोद्धूनाछर्दिहंत्यतिवेगत् ६६ मूलपत्रफलपुष्पं त्वचं नि
वात्समाहरेत् लक्ष्मच्छर्णमिदं कृत्वा पलैः पंचदशे निमित्तं लोहभस्महरीतवैषवकमर्बकं चित्रको भस्मान्तकविडंगा निश
कोरामलकं निशा पिपली मरिचं शुंठी वाकची कृतमालयः गोक्षुरश्च पलोन्मानमैकैकं कारयेद्विषयः सर्वमैकी कृतं चूर्णेभ
गणनेन भावयेत् अष्टभागावशेषेण खरिरासनवारिणा भावयित्वा च संसुक्तं कर्षमाणं ततः पिवेत् खरिरासनतो
येन सर्पिषा पयसा यवा मासेन सर्वकुष्ठानि विनिहंति रसायनं पंचनिंबमिदं चूर्णे सर्वरोगप्रणाशनं ६७ शताव
री गोक्षुरकं वीजं च कपिकछुजं गां गेरुकी चातिबलावीजमिधुरकोद्रवं ६८ ॥

च सौंठि पकची अमलतास अशुद्ध एसबपलभरलेसवच्छर्णे भंगकरि सभं भावनादे खेख्यौद्रासनसे रभयानी मैकाढाकरि अष्टमां
सहैति सेफिर भावनादेई फिरसखाश्छर्णकरि एकवर्ष स्वाय खेख्यासनके काथके संग वाद्रुयवाधीनसायभासभरसेवनकरेतीसव
कोढनाशहोई ग्रहरसायनहैं रसेपंचनिंबच्छर्णकहनेहै सर्वरोगनाशकर्ताहै ६९ सनावरि छर्णपुछपर शतावरि जोसुद्ध ॥ ॥ ५

किंवाचकेवीज गुलशर्कीरी वग्यारा नालगवाना ६८ इतकाचूर्ण सतकोगोदुग्धमंधिये २२ सकोधभावसेखो सेतुनिदोय खोखोखी प्रसंगनकोरे
तोवली सोयवारुन सेतुकोरे ६६ पुष्टियश्चश्चगंधादिचूर्ण नागोरीश्चसंगंध ४० तोलेआ विधारा ४० भर इलेकाचूर्ण धनकाचूर्ण धनकेभाजनमेधारे १०० मासे १००
मेपियेतोखी सेतुनिदोय धातवपर नवायसादिचूर्ण चीता त्रिफला मोघा विडंग निखटा एस्वस्मान तमयाश्चशपोलादभस्म ॥३३ इनकाचूर्ण सहत घृत

चूर्णितं सर्वमेकचगोदुग्धेनपिवेन्निशि नतृप्तिंयातिनारीभिरतचूर्णेप्रभावतः ६६ अश्वगंधादश पला तन्मात्रो
वृषदारुकः चूर्णीकृत्योभयंविद्यात्त्यनभारेनिधाययेत् १०० कर्षेकं पयसापीत्वानारीभिर्नैवतृप्यति अगत्वा
प्रसदांभूयोवलीपलितवर्जितः २ चित्रकं त्रिफला सुता विडंगं चूषण निच समभागा निकार्योणिनवभागा हता
यसः २ एतदेकीकृतं चूर्णे मधु सर्पियुतं लिहेत् गो मूत्रमथवा तत्र मनुयानं प्रशस्यते ३ पांडुरोगं जयत्यं रुद्रो
गं च भगंदरं शोथं कष्टोदरांशो सिमंदाग्निमरुचिं कमीन् ४ अकारकारभः शुठी कंकोलं कंका मंकाणा ॥
जाती फलं लवं गंच चंदनं चैति कार्षिकान् ५ चूर्णेनीमा स्नातः कुर्याद्ब्रह्मि कै नं पलोन्मि तम् सर्वमेकी कृतं
चूर्णे सुक्ष्मं तद्वस्त्रगालितम् ६ सिता सर्वसमादेया भार्थेकं मधुना लिहेत् शुक्रसंभकारं चूर्णे पुंसा मानं रका
रकम् ७ नारीणं प्रीतिजननं सेवेत निशि कामुकः १० ॥

संगचाटे गोमूत्रवामदुक्केसाथ ३ तीपांडु रुद्रिगेग भगंदर सज्जन कोद उदरोग अशो मंदाग्नि अरुचि रुमिताशयेय ४ स्तंभनपर अकरुण दिष्टणे अकर
सोढि कंकोल केसर पीपरि जायफल खोंग स्वेन चंदन एकर्षेक र्षे भर ५ चूर्णेक रिपल भर अफीम देपीसिक पउमं धान लेई ६ सवस्मान खाइई मासा
भर सहन मेचाटे यहचूर्णे वीर्य स्तंभन करे परबली कोसु खेनाहे कामी एरुधर सेर एतिका सेवन करे १०० ॥ ॥ ॥

शतिश्रीणार्द्धधरविरचिते चूर्णे कल्पनापधीतमो ध्यायः ६ अथ वदी कल्पना वटिका गुटिका वदी मोदक पिंडी गुंडी एगोली नामहे २ गुड क्षौद्र
इदे आगिने कावेजे से भवलेह तव गुगल वा चूर्णे उसीयन मे शरिगोली बांधे २ विना आगि को भोग गुगल से भीगोली वधती हे जो रोगे
लीवक्त तदा सहते से भीवधती हे ३ मिश्री चौगुनी गुड इना चूर्णे लिखे प्रभाणे देना गुगल सहन वर वरेना इव वलु दूनी देना सदे वेधय

शतिश्री गभ्रखंडे चूर्णे कल्पनापधीतमो ध्यायः ६ वटिकाश्वायक अर्थ ते तन्नाम गुटिका वदी मोदकी वटिकाः पिंडी
गुंडी वर्तित योच्यते १ लेहवत्सायते वन्हो गुंडे वा शर्को एयथा गुगल वा क्षिपे तत्र चूर्णेन निर्मिता वदी २ कुर्या
द्वन्हि सिधेन घाचि गुगलना वदी इव एण मधुना वापि गुटिका कारयेत्सुधीः ३ सिता च त्र गुणे देया वदी शु
द्धि गुणे गुडः चूर्णे चूर्णे समाकार्यो गुगल मधु तत्समं ४ इवंच क्षि गुणे देयं मोदकेषु भिषग्वरेः कर्षे प्रमाणे
तन्मानं बलं एषो वयुज्यते ५ इद्वारुणिका सुस्तां गुंडी दंतो हरेत की नृवच्छदी विडंगा निगोशुरश्चित्रकं त
था ६ तेजो ब्रह्म वदिकार्षोणि एयग इव्याणि कारयेत् शूरणस्य पलान्यष्टौ द्रुदरु चतः पल ७ चतुः पला
नि भल्लातं द्वां ययेत्सर्वमेकतः जलशेण चत्तर्थो शगट स्लोयोत्काद्यमुनमं ८ काथ इव्या त्रिगुणितं
गुंडं क्षिना पुनः क्षिपेत् सम्यक् कंच ज्ञात्वा वै चूर्णे मे तस्य दापयेत् ९ ॥ ॥ ॥

सीरति करे कर्षभ गोलोखाने के प्रमाण हे वादेह वल से बदे बिखितावा १ इंदरुकी गुटिका अशेर पर इंदरु मोथा सो छि जमाल गोटा के जड
की धासा सह निशेय कचूर विडंग गुण्ट चीता ६ वच एस वदे से कर्षे जमी कंद पल विधा सुचारि पल ७ भिलावा ४ पल मे एण भयानो मे भजे
देन वचोथा ३ रे हे तब उता रले ६ ८ छान के उ स का ति गुना गु र्देय त करे ज व ए क नि से तार उ दे त व य ह ह् ए शेर ९ ॥ ॥ ॥

28

28

28

एवमस्मान्नेगोमन्त्रमेव लकारे घुंघुची समानगोलीवाधे अद्वैतकेसमें खिलवें ९ अजीर्णेमेगोली १ वित्तचिकामें २ सौंपकेडसेको ३ सन्निपा
४ स्सकां संजीवनीवनीनामदे मनुष्यको जिलाती ५ पीनसादिपरत्रिवुन्यादिवदी त्रिवुन्या अमलवेतस वच तालीसदल चीता जीरा अमलीछाल एसवकवर्ष
२१ तज पत्रज स्वाचीचरिमासे गुड २० कर्षयत्त्वोषादिनामगुदिका पीनस भ्यासकासकोमाशकारे रुचिकारे कंदस्वरसुद्धकारे नाकपुनोवटकारे २१ आवदो

एतानिसमभागा निगोमन्त्रेणैवपेययेत् गुंजभागुदिकाकार्योदद्याद्वैकजैः रसेः १८ एकासजी एंगुल्मस्य देविस
च्यात्रदापयेत् तिस्रस्तुसर्पदंष्ट्रेनुचत्वारस्सन्निपातिके १६ वदीसंजीवनीनाम्ना संजीवयतिमानसं १६ वयोवासवेतसं च
व्यंतालीसं चित्रकंतया जीरकं तित्तिडीकं च प्रत्येकं कर्षभागिकं २० त्रिसुगंधं त्रिशणं स्याजुडः स्यात्कर्षवैविंशति व्योषादिगुदि
कासेयं पीनसं द्यासकासजित् २१ रुचिस्वरकरात्वाताप्रतिशयाय धणशिनी २१ आमेखसगुडाशुंदी मजी लींगुडपिप्यली क
छुजीगुडदद्यादर्शः सुसगुडाभया २२ छुषदारु कभल्लातशुंभी चूर्णेन योजितः मोदकः सगुडो हन्यात् यद्विधाशेकृतां रुजो २३
शृङ्गभूरणचूर्णस्य भागाद्या त्रिशदादरेत् भागान्वोदशचित्रस्य शुंढ्याभागचतष्टयं २४ कैभागो मरिचस्यापि सर्वमेक
चूर्णेयेत् गुडेन पिडिकाकार्योदर्शसां नाशनं परम् २५ भूरणे छुषदारुश्च भागेः खोरशभिः पृथक् सुशलीः
चित्रकौशेयावष्टभागा न्वितो पृथक् २६ ॥

प्रमं गुड सौंहिकीगोलीदेना अजीर्णेमें गुड पीपरि कछुमें गुडजीरा अर्शमें गुड हडकीगोली
देना २२ अर्शपरछुषदारु मोदक विधारा भिलावों सौंहि पीसि गुडमें गोलीवाधे देजोभाति अर्शोदूकरे २३ अर्शपरभूरनबडिका सुखेस्तरनकाद
रन ३२ भाग चीता १६ भाग सौंहि ४ भाग ३४ मरिच २ भाग सबचूर्णेकरि गुडमें गोलीवाधि खिलावेतौ सब अर्शनाश होय २५ यनः स्तरन विधारा सो
लह सोलह भागदेह सुसली ८ भागदेह चीताभी ८ भागलेह २६ ॥

त्रिफला विडंग सौंढि वीपरि भिलवा पिपरासूल तालीसु भिन्नाभिन्व २० चारवाए भागान्त्रे इलायची मरिच के के भाग इतसवकान्चरणेकरि २०
इनेशु ३० भोलोयां धिलिसा बेनोअ ग्लिजवल होय अर्घ २५ वात कफ जन्य ग्रहणी श्वास कस क्षय होइ पीलायद शोथ जमेत् भगदर चार
सेत होवा सब मिटे धातव द्विप्रवल करे चहमसायन हे ३० कामलादिपरमं डुखटक त्रिफला त्रिकटा चाव पिपरा मूल चीनादेवदारु सोनाभाबी हे

शिक्षाविभीनगोधात्रीविङ्गनागरंकाण भस्वातःपिप्यलीमूलंतालीसंच एथेकएथक् २० चत्तर्भागाप्रमाणनित्य
मेतामरिचं तथा विभागात्राणि एथवत्सर्वस्वैकचूर्णयेत् २८ दिगुणेनगुदेनाथवटिकाकारयेद्युधः प्रव
त्तापिकगयेतेतथाशोनाशनः पर २६ ग्रहणीवातकफजाश्यासंकासंक्षयाभव लीहानंभ्योपदंशोथंप्रमेहं
चभगादरं निहत्यः पलितं दृष्यास्तथामेध्यास्तायनाः ३० त्रिकलात्रूषणंचयंपिप्यलीमूलचित्रकं दारुमाक्षिक
धातश्चहवीमुत्तवरंगकं ३१ प्रत्येकं कर्षमात्राणिसर्वे दिगुणितं तथा मंडूरचूर्णयेद्युधं गोमूत्रेष्टगुणेक्षिपेत्
३२ पत्काचवटकंकृत्वाद्यानक्रानुपानतः कामलापांडुमेहार्शः शोथकुष्ठकफामयात् गरुत्तंभमन्नीणेचल्ली
हाननाशयेदपि ३३ चंडप्रभावचामुत्तंभृनिंबामरदारुच हरिद्रातिविषादावीपिप्यलीमूलचित्रकान् ३४
धान्यकं त्रिकलंचर्षविङ्गगजपिप्यली व्योर्षमाक्षिकधातश्चक्षौक्षारेलवणंचय ३६ " "

रही मोथा मजीठ ३१ एकुर्षकधर्भर मंडरशोधकैसवसेदूनाले अष्टगुणगोमूत्रमें ३२पकाशोलीवांछिमट्टकेसाथवायतेकामलपॉइ अश
प्रसेत् कुष्टकफरेग गठिया अजीर्ण लीहा स्नकोनाशकरे ३३कष्टक्व मोथा चिण्यता गुर्व देवदारु हरदौ पिपलीमूल चीता ३४ धनिया
विफलानच बायविडंग गजयीपरि त्रिकुट्य सोनामाथीकीभस्म सज्जीषार जवाबार तीनोलोन संधा काला पोभा ३५ " " "

एसभादय चाल्सासासे निरोध दत्त यन्न तज रत्नाची वंशलोचन ३६ एकर्षे कर्षे भगवद्विमानलई लोहभस्म वै कर्षे रत्नकासव करि करि
मिथी ४ कर्षे २० मुक्कशिलाजीन एकर्षे शुगुल ८ कर्षे एसव एकत्र करि कटिके गुटिकासुंदर वनावै ३८ वहचंद्र प्रभा गुटिकासव से रोगतारा
करे कसात्रे मेह हाछ मूत्राघात पथरी ३६ विटवथ येद फूलन अल रंसी फूलन ग्रंथी अर्बुद अंडरुषि कटिशूल श्वास कसस कुष्ठसेद ४० अर्बुद

अ.
श-टी.
५१

एतानि शाणमात्राणि प्रत्येकं कारयेद्युधः तद्वद्वती यत्र कचत्वगे लावंशरोचन्या ३६ प्रत्येकं कर्षे मात्राणि कुयोरितानि बुद्धि
मान्दिकर्षे दत्तलोहस्य चतस्र कर्षे सितभवेत् ३७ शिलान्तत्त्वष्टकर्षे सार्दष्टे कर्षे अग्रगुलेः एभिरेकत्र संक्षुरेः कर्तव्या
गुटिकाश्रुभाः ३८ चंद्रप्रभेति विख्याता सर्वरोगप्रणशिनी प्रमेहात्विंशति कच्छमूत्राघातं तथा शमरी ३९ विषंधाना
हृश्लानि मिहनेत्रं धिमर्बुदं अंडरुषिकटीशूलं श्वासं कसं विचंचिकान् ४० अत्रिष्टुष्टिं तथा पांडुकामलाचहली
मकं कुष्ठान्पथीसिकं इवलीहोदं भगंदरं ४१ दंतरोगं नेत्ररोगं स्त्री एभा र्मे वजं रुजां पंसां शुक्रगतां न रोगान्मर
तिं मरुचिंतया ४२ वातपित्तकंहन्या दल्या कृष्णारसायनी चंद्रप्रभावाः कर्षे स्तुचतः शाणो विधीयते ४३ ॥
यवानीजी र्कंधान्यं मरिचिगिरिकर्णिका अजमोदो यकुची चंचनः शाणः पृथक् पृथक् ४४ द्विगुणदृशाणि
कंकार्ये क्षाणैलवणं चकं तद्वच्चाष्टमि तैः शाणैः प्रत्येकं कल्पयेत्सुधीः ४५ ॥ " ॥ " ॥

द्वि पांडुकमलव मलभेदः सवकुष्ठ सर्वोर्षो वज्रस्त्रीसुदरोग भगंदर ४१ दंतरोगं नेत्ररोग स्त्रीकैत्रजुणेण पृथक्काधात्त रोगमंशानि अरुचि ४२ वातपि
कवसवनशमरी वलकीर धातुकटावै यद्वत्सायनं वै एगंसे त्वा ४३ गुल्मपृक्का इत गुटिका अजवा इन्जी एधनिया
मीच कृष्णकांता अजमोदं मर्गरेला भिन्नवास्वार्शासा ४४ सुंजीहीग ६ शाण इनीयार पांचोलीन निशेध एथाठ आठशाण ४५ ॥ " ॥

दन्तीशदीपोष्करं च विङ्गं दाडिमं शिवा चित्रोऽस्त्वेतसः श्रुतीश्राणेः षोडशभिः पृथक् ४६ बीजपूरसेने व गटिकां कारयेदुधः
घटेन नययसामद्यौरम्लैरुक्षोदकेन वा ४७ पिप्पेत्काकायनप्रोक्ता गुटिकां गुल्मे गोक्षीरेण च येनिके
४८ सूत्रेण कफगुल्मं च दशमूले त्विदोषजं उद्ध्रीदग्धेन नाशयेत् रुद्रांगं ग्रहणी भूलंकमीनं शोषि
नाशयेत् नागरं पिप्पलीचव्यं पिप्पलीमूलं चित्रकौ भ्रष्टहिं ग्वज मोदाच्च शर्षपाजीरक द्वयम् ५० रेणुकेंद्रयथाया
ढाविङ्गं गजपिप्पली कटुकातिविषाभाभीवचा मूर्वा त्रिकंदकम् ५१ प्रत्येकं शणि कानि स्युर्द्व्या नीमान्नीविंशति
इव्येभ्यः सकलेभ्यश्च त्रिकलादिगुण भवेत् एभिः श्रृणोक्तैः सर्वैः समो देयाश्च गुलुः ५२ वंगरो घ्नं च ना
गंच लोहसारं तथा भ्रुकं मंडूरं स सिंहरं प्रत्येकं पल संमितम् शुद्धपाकसमं कृत्वा श्मं रद्याद्यथोचितम् एकयिं
उत तप्तं कृत्वा धारयेत् एतभाजने ५३ " " " " " " " " " " " "

सालो इनोजीरे ५० नेवरीबीज इंदजी पाबा विदंग गजपीपरि कटकी खतीस आंणी बच भुगे गुषट् ५१ एसवशाणाणभर सवकाइजा त्रिफलेकाचूर
ए ५२ सबइणिके समानशुफ शुगुल वंगा इयरस लोहा अभक तोगेध्व मंडू एसविंदूर सार एएसयलपलभदेह उड पाक करि रसओसव पूर्ण
गुरपाकमेसा नि एक पिंडकरि द्यत भांडमंधरे ५३ " " " " " "

मोली ४ मासेकीयहयोगगुजगुलत्रिदोषनाशकारसायनहै ५४ मैथुनविहारयानाहारवर्जितनहो सववानरगेगसर्वीशेशयदणी ५५
प्रमेहवानरुक्तमभिपीरभंगदरउदावर्तक्षेदेगुलमिगीघातीरोग ५६ मंसगनिश्यासकासनाशकारैयुरुषकेधातस्त्रीकोरजोदोष ५७ नपुंसकको
पुंसत्ववरबौद्धगर्भधारैरास्त्रादिक्वायवानरोगहरे ५८ कंकोल्पादिक्वायसंगपितहरे अगर्वेधारिसंगकफजहरे हरदीक्वायसंगधमेहहरे जो

मृटिकाशाणमात्रासुःकृत्वाश्रायायथोचिता गुगुलुर्योगराजोयंविदोषभ्रंसायनं ५४ मैथुनाहारयानाभ्यानागोनैवा
त्रविद्यते सर्वोत्वातामयानुष्टमंशेसिग्रहणीगदं ५५ प्रमेहंवानरुक्तवनाभिभ्रूलंभंगदरं उदावर्तक्षेयंगुलममप्रसार
मुष्टेग्रहं ५६ मंसगनिश्यासकासंचनाशयेदरुचिंतया रेतोदोषहरपुंसां रजोदोष हरस्त्रियां ५७ पुंसासमपत्य
जनकोनभ्यानांगभवेत्तथा रास्त्रादिक्वायसंयुक्तोविविधं हंतिमारुतं ५८ काकोल्पादिद्युतःपित्तकफमार
ग्वेध्यादिना दर्वीसृतेनमेदौश्वगोमूर्त्तयेवपांडनां ५९ मेरोरुक्षिचमधुनाकुण्ठनिं वसृतेनच छिन्ना
क्वायेनवातास्वंगोयंश्रूलं कण्ठासू ६० पाठलाक्वायसंहितोविषमूषकजंजयेत् त्रिफलाद्या
यसहितोनेत्रार्तिहंतिदारुणं ६१ पुनर्नवादिक्वायेनहृन्पात्सर्वोदराण्यपि ६२ त्रिफलाद्यास्त्रयःप्रस्था-
यस्येकममृताभवेत् संकटयलोहपात्रेणसार्धेद्रोणोवृणापंचेत् ६३ ॥

मत्तसंगपांडुसरतसंगमेरुद्विनीमकाक्वायसंगकुष्ठनाशैर्गुर्वेक्वायसंगवातरक्तनाशैर्पोपरिक्वायसाथशोथभ्रूलनाशै
सिर्सेक्वायसंगमूषकं दशविषहरे त्रिफलाक्वायसंगनेत्ररोगहरे ६१ पुनर्नवाक्वायसंसर्वउदररोगहरे ६२ वानरुक्तपुंसां
रागुल त्रिफलातीनप्रस्थगुचे १ प्रस्थ एकवक्त्रेडदशोणपानीमेभोगर्वे ६३ ॥

नतञ्जर्जलरहे तव ध्यानिके उपगुगुलप्रस्यभएरि ६४ किमि सोहपात्रमेवोहेवीकर छोसेघोटि गुदपाकेसमगाढाकरि ६५ ओषधि शरेजो आगे
कहेगे आकर नलजा छंद अर्थअर्थपत्तौ गर्व ६५ पल ६६ विकटा ६६ कर्षे विंडाअर्थपत्तौ दहनि ६७ कर्षे निशाय ६८ सवगुडपाकमेसा मिपिंडयंभिधीपात्र
धरे जगणभणोलीयाहोषविवाखोदर ६८ वैद्यअनोपानतअकरि आहूध नाम जीबकायमेदेना वाययाचिनदेना ६९ सर्वकएजाइ निर्दोषजन्यबात

[illegible]

रक्ततारः सर्वत्राण गल्मः त्रमेह उदरोग मंदाग्नि कास स्तन पाद आवरोग पसुवनाश दोष पहरसाधन हे ७१ के शो रक्त मृषिनेक हो हे
 चिक्षा रगु गुलतामहः कृत्वा दिव्यय संगने ॥ ७२ ॥ त्मद् रकोरे ७२ स्वर्दि काय संग्रहण दूर करे कष्ट दूरक
 र खट्वा आक्षेप मेषव अम घाम मध क्रोध पसुव त्याकर जा गुण चारे भो मथम निरुद्ध ७३ ॥ ॥ ॥ ॥

भगदरपरत्रेफला गुगुल त्रिफलाचूर्णे १ पल पिपलीचूर्णे पल भर शुक्र गुगुल ५ पल पीसिके इकवकारि ७४ गोतिवाधिरोगी कौश्लग्नविचारिकेदे भगं
दशुल्म शोथ छहोअशेदूरहोय ७५ भमेहगोक्षरदिशुगुल गाखेर २० पल धनुगुणपानीमंकाकाकरिअर्धशेयले ७६ सामपलशुगलदे फिरिपकावे जवशु
डयाकसाहोतवजोइव्यकहनाहूसेपोसिकेडोर ७७ त्रिफला विक्रगा मो ७८ एसातोयलभरपिला ६ पिंडीकरिगोलीवांधे ७९ प्रमेह भूतकष्ट प्रदर मूत्रा

त्रिपलं त्रिफला चूर्णे कृष्णा चूर्णे पलोक्तिनं गुगुलं यंच यलिकं क्षोदयेत्सर्वमेकतः ७४ ततस्तुवटिकां कृत्वा घृतं जुया दद्यायेक्ष
या भगदरं शुल्म शोथा वंशं सीच विनाशयेत् ७५ अथाविंशति संख्यानि पलान्यानीयगोक्षरोः विपचये षडु लोनीरे
क्षायायाद्योर्ध्वशेषतः ७६ ततः पुनः प्रचेतत्र परं सप्त पलं क्षिपेत् गुडपाकसमाकारं तात्वा तत्र विनिःक्षिपेत् ७७
त्रिकटुं त्रिफला मुस्तं चूर्णितं पल सप्तकं ततः पिंशीकतस्यास्य शुटिकासु पयोजितः ७८ हन्यात्समे हं ह्यं च प्रद
रं सूत्रयातकम् वातासंवातं रोगांश्च सुक्रदोषं तथा यमरी ७९ त्रिफला छुपलं कार्यं भस्मानं च चतः पलं वा कुत्री
यंच पलिका विडगानां चतः पलं ८० हतलोहं तृचैव गुगुलुश्च शिलाजगुं एकैकं पलमात्रं स्यात्पलांश्च योक्
रं भवेत् ८१ चित्रकं संप्रसार्य स्याद्विशणं मरिचं भवेत् नागरं पिप्पली सुसं त्वगोलायन कुंकुमं ८२ शाणोन्मि
तस्यादेकैकं चूर्णयेत्सर्वमेकतः ततस्तत्त्रिफले पृथक् खंडे च न त्समे ८३ ॥ ॥ ॥ ॥

आयान वातरोगा अक्षरोग पथरी सवनाशो ७६ कुष्ठपरत्रिफला मोचक त्रिफला ८ पल भिलावां ४ वक्रची १ विडंग ४ । ८०
लोहभस्म निशोद्य गुगुलं शिलाजीतं सर्वा एक एक पलं पुष्करसूत्र अर्धपल ८१ चीना अर्धपल मरिच २ शाण खेति पीपरि मोषा तज
इलायची पत्रज केसर ८२ संबं शाण शाण भरले चूर्णे करि सव चूर्णे समान खोरले पाककरि चूर्णी डारि गोलीवनावे ८३ ॥

पलपलमिति मोदकवनाद् रोगवत्तदधिगेगीकोस्त्रिधाये तो सवकुष्टनाशकरे त्रिदोषजन्य आंवरोग ८४ भगंदरलीलागुल्मसिद्धि कंठरोग
तालुशिरोगनेत्रभोक्तुरोगात्रीवपीठरुचसर्वकुरोगनाशहोर्द ८५ शरीरेकोनीचैकोरोगाविभेभोजनानिदोषधिदेना मंदग्निजनितभेभोजनके मध्यदे
शिरैस्वर्धिरोगनिभेभोजनानिदेना ८६ गंडमालापरकचनारगुगुल कचनारखल ९० पल त्रिफला हृपल त्रिकुवा ३ पल ८७ वरुण हृपल इलाइची

मोदकां पलिकां तावाप्रदुंजीतयथो चित्तान् हन्यात्सर्वाणिकृष्टानि त्रिदोषां प्रभवामयान् ८४ भगंदरलीलागुल्मे जिह्वाता
लुगलामयान् शिरैस्त्रिभूगताच्चोगात्मन्या षष्टिगतानपि ८५ प्राग्भोजनस्येदं हस्यादधः कावस्थिते गदेः भेषजं भक्त
मषेष्ट्यमध्ये च रोगेजठरसंस्थिते भोजनस्योपरि आद्यमूर्ध्वजं तु गेदेषु च ८६ कांचनात्त्वचोत्रासं पलानां दद्यात्कंबुधेः
त्रिफला षष्ट्यलायाश्च विकट्टस्यात्पलत्रयं ८७ पलकं वेरुणः कुर्यादलात्त्वकचकतया एवेकं कर्षमात्रं स्यात्सर्वोपेक
चक्षुर्णयेत् ८८ यावच्चूर्णे मिदं सर्वं तावन्मात्रं लुगुगुलुः संकुट्टः सर्वमेकत्र पिंडं कृत्वा च धारयेत् ८९ गुटिकाशणमा
त्रेण प्राप्तोऽस्य यथो चित्ता गंडमालाजबेत्यत्रा मयची मर्बदा निच ग्रंथिन्नणादिगुल्मांश्च कुष्टानि च भगंदर ९०
अदेवश्चानुयानार्थं क्वाथो मुंडितिकाभवः क्वाथः त्वदिस्सारस्य पथ्या क्वाथो द्वास्मकं ९१ निखुंयं मावच्छ
र्णेऽस्य तथा गोधूमसंभवं निखुंयं यवच्छूर्णं च शालितं तु लज्जतया ९२ ॥

पञ्चजतज कर्ष कर्ष भर सव एक च करि चूर्णे
कौरे ८८ सर्वचूर्णे समानगुगुलयो सि चूर्णे मिलान् पिंडवनांवेः ८९ चारिमासे कीमे लीवना श्रेगवल औषधि व
नसमर्थरेय गंडमाला च यची अवेद घावग्रंथि कुष्ठभगंदर ९० अस्यानुपानं मुंडीस्सारस हृक्वाथ वाऽसोदकमेभदे ९१ धानु
पष्टिपरमाषादिमोदक माषकहेपुददलिधोर्द चूर्णे करलेर्दे गोव्दच्छूर्णं यवकीरुदीका चूर्णे सादी चाउरका हरेण ९२ ॥

पिपरीचूणे सवप्रलयलभलेर सवचूणेकीआभागेघनवेभजे ६३ चूणेक नमानखाडले तवसवकाइनाजलडा रिमरमर आच
 दोटे ६४ जवसिखोतवप्रलयलभकेलडूवां धिसोऊकोखाय उसपरचारिपलधपिये ६५ फिरखाखोखय रदोरसन खा रस्वी वसगक
 र्जोवीर्यनइवेदेहपुष्टरहे ६६ इति श्री शाङ्कधरसुधाकरे सप्तमो ध्यायः ७ अथावलेहकल्पना इवकोकायसदशओषवेकिरिविशेषा
 चदेइ जवगाढासेनवधवलेहकहेलेहभीकहतेहे माना ४ मुग्रभर १ चूणेसेमिश्रीचोगुनीदेना गुडना इयादियोगने यहसर्वत्ररीतिहे

सूक्ष्मंच पिप्पलीचूणेपलकानुपकल्पयेत् एतदेकीकृतं सर्वभर्जये जोघतेनच ६३ अर्धमात्रेण सर्वभक्षततः खंडस
 मंक्षिपेत् जलंच विगुणंदत्वा पाचयेत्वंशनैः शनैः ६४ ततः पक्वं समुक्त्य मोहकं च यलोन्मिंतं कुर्यात्सायं च नं भुक्त्वा पिवेत्क्षी
 रं च तर्गुणं ६५ कर्जनीयो विशेषेण क्षारान्ते कोरसावपि कृत्वेवं रमयेत्तारीवीर्येन क्षीरं यतेन ६६ इति श्री शाङ्कधरम
 ध्यमस्वंबटककल्पना ध्यायः सप्तमः ७ काथोदयं पुनः पाकान्नयनत्वं सारसक्रिया सेवलेहश्च लेहः स्यात्तन्मा
 त्रा स्यात्पलोन्मिताः ८ सितचतुर्गुणाकार्योचूणेच विगुणेगुडः इदं चतुर्गुणंदद्यादिति सर्वत्र निश्चयः सुपक्वेतं
 गुमतं सारं वलेहोन्मिताः सुमज्जनं स्थिरत्वं पीडयते मुद्रगंधवर्णं रसोन्नवं ३ दुग्धमिक्षुरसं घृषं पंचमूलकषाय
 जवासाकायथायोग्यमनुपानप्रशंसते ४ कंदकारितुलनीं शोणे पक्वा कषायकं पादशेषं रहीत्वा च न स्मिच्छूणे निरापयेत् ५

२ जवअंचनेपनाखंधी औपानीमिपाककी भूंदनद्वेनयुले तवसिफ्जानि औषंगुरीसंद्वानिसेकुछदेवे नवसुगंधओरसादिशरे ३
 औदुधसे ऊषसे उत्पतिवक्त मूत्रसे पंचमूलकायसे दसाकायसे इतअनोपानसे देना अथवाओरजोरेगो चितअनोपानहोसेदेना
 ४ हिचकी औकासश्वासपरभटकटयावलेह भटकटिया ४ सेलेइएणभरजत्वमंओटे जवचौथाईरहेनवउसमं दूणेडारे ५ ॥

॥ १ ॥ आत्मा आत्मा का का गतिं गी चित्तं तत्तासा ॥ आत्मा १ असवकं चर ॥ ये प्रमापन्ना भवन्ते चर ॥ १ ॥ पल २ ॥ पल ३ ॥ पल ४ ॥ पल ५ ॥ पल ६ ॥ पल ७ ॥ पल ८ ॥ पल ९ ॥ पल १० ॥ पल ११ ॥ पल १२ ॥ पल १३ ॥ पल १४ ॥ पल १५ ॥ पल १६ ॥ पल १७ ॥ पल १८ ॥ पल १९ ॥ पल २० ॥ पल २१ ॥ पल २२ ॥ पल २३ ॥ पल २४ ॥ पल २५ ॥ पल २६ ॥ पल २७ ॥ पल २८ ॥ पल २९ ॥ पल ३० ॥ पल ३१ ॥ पल ३२ ॥ पल ३३ ॥ पल ३४ ॥ पल ३५ ॥ पल ३६ ॥ पल ३७ ॥ पल ३८ ॥ पल ३९ ॥ पल ४० ॥ पल ४१ ॥ पल ४२ ॥ पल ४३ ॥ पल ४४ ॥ पल ४५ ॥ पल ४६ ॥ पल ४७ ॥ पल ४८ ॥ पल ४९ ॥ पल ५० ॥ पल ५१ ॥ पल ५२ ॥ पल ५३ ॥ पल ५४ ॥ पल ५५ ॥ पल ५६ ॥ पल ५७ ॥ पल ५८ ॥ पल ५९ ॥ पल ६० ॥ पल ६१ ॥ पल ६२ ॥ पल ६३ ॥ पल ६४ ॥ पल ६५ ॥ पल ६६ ॥ पल ६७ ॥ पल ६८ ॥ पल ६९ ॥ पल ७० ॥ पल ७१ ॥ पल ७२ ॥ पल ७३ ॥ पल ७४ ॥ पल ७५ ॥ पल ७६ ॥ पल ७७ ॥ पल ७८ ॥ पल ७९ ॥ पल ८० ॥ पल ८१ ॥ पल ८२ ॥ पल ८३ ॥ पल ८४ ॥ पल ८५ ॥ पल ८६ ॥ पल ८७ ॥ पल ८८ ॥ पल ८९ ॥ पल ९० ॥ पल ९१ ॥ पल ९२ ॥ पल ९३ ॥ पल ९४ ॥ पल ९५ ॥ पल ९६ ॥ पल ९७ ॥ पल ९८ ॥ पल ९९ ॥ पल १०० ॥

पृथक्पलाशा न्येतानि गुह्यं च वचित्रं केऽसु संवर्कं केदं शृंगी च त्रुणं धन्वया सवकं ६ आत्मीयं गत्वा शरी चेव शर्को रापल
 विरातिः प्रत्येकं च पलान्येषो प्रद्यात् घृतं ते लयोऽ ७ पत्काले हत्वमानो यं शीते मधुपलाखकं द्रवतः पलचतुर्गा क्षीयो
 धिप्यलोनां चतस्रः पल ८ क्षिप्वा निदध्या स्तं ददेष्टु एष्ये भानेन शुभे ते सो यं दंति सिक्वा निम्ब्या सवकासानं शेषतः ९ पा
 दसारणि कायमये विस्वा र्णुकं गार्क्षरे पण्यं दृष्ट्वोपि प्यत्यः शृंगी द्राक्षा मृता भया १० दला भूष्या मली वा सा नर
 दीजी वंति काशरी नीत कर्षे भको मुस्तं यो स्कारं का कना शिक्वा ११ मृदु पण्ये मा यलो विद्या री च पुनर्न वा काको
 ल्यो कमलं भेदं दृश्यन्ता गुरु चंदनम् १२ एकैकं पलं संमानं स्थल चूर्णितं मो वधं एकीकृत्य महत्या नै पंचामल
 शतानि द १३ पचेत्रा चं गजलं क्षिप्वा ग्राह्यमष्टावशेषितम् ततस्तत्तान्या मलानि निष्कृतीकृत वाससाम् १४
 १५ दृष्टदं स्तनमपीरा क्षिप्वा तत्र ततो रृतम् पलसप्तमि तं तानि किं विद्मष्टाल्यु च न्दिना १६ ॥ ॥ ॥ ॥

नाला चाला द्रुमा रित विना वा एदी केदं दधिया फली कच्छर् नीव करि पभक्त दन्विना विला र्को र मोष्या पक्ष मूल को कर्गरी एव न संश वन श्री विला र्
 कंद गदा द्युगी काको ही क्षीर काको ली र्तस विना प्र पां ध कमल गवा मर्म्मि रा र्त्न विना मुस्ली र्जला स्वी ध्वार स्वेन न दन १७ एसव सव पल पल ले गो को भ
 करि १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० ॥

सोपलखां इदं पका इ सोति पीपरि जीरुं देह पल २१ धनिया पत्रज इलायची गर्व कच अर्थ अर्थ पल स्वका चूर्ण धीका जवा स हत
 डारि २६ बला सुसार रक्तपित्तवाले को ज्वरी को क्षयी को सोष व्यास कास आस क्षदि एरोग युक्तनिको भुजाना को दे २७ कृष्ण ३३ बले
 बालक दुष को देना स्थानीय एकै रौप्य धातु बटा वै बल वर्धन दे २८ अर्शो परस्व ३ कृष्ण ३३ बले ह जै से क सग को विधि हे सो इ स्नान को भी हे
 लंदा पल शतं दत्वा सर्वगे कत्र पाचयेत् सुयक्के पियली सुधी नीरणं बेपले एयक् पृथक् पलां ध्यानात्कं

यत्रैतामर्चन्वचं चूर्णी कृत्य क्षिपेत्तत्र यत्ता वै क्षोद्रमावहेत् २६ स्वादेदनि वलं दस्वारक्तपित्तज्वरे भू
 यी शेषात्स्नातम छर्दिका सश्वास्य छत्तां तरः २७ कृष्ण ३३ बले होयं बाल वृद्धेषु युज्यते २८ उरः
 संधानकृ दृष्णो हं हणो बल हन्म तः २९ युक्त्या कृष्ण ३३ बले इत्युच्यते ३० अर्शो सं मूढवाता
 नां मंदगुनीनां च युज्यते ३१ हरीतकी शतं भंड्यवानी मादकं तथा पलाति वृशमूलस्य विंशतिश्च नि
 योजयेत् ३२ चित्रकं पियली मूलं मयामार्गः शठी तथा कपिक च्छुशं खयुष्णी भागी च गजपियली
 ३३ बला पुष्कर मूलं च पृथग्विध पल मात्रया यचेत्पंचाद के नीरय वैः रिविन्नेः स्तनं येत् ३४ तच्चाभया
 शतं दद्यान्कायेनास्मिन् विचक्षणः सर्पिलेलाष्टपलकं लिपेजुड तलां तथा ३५ ॥

धाजमीकंद की छोटी कर्चकरि हुनो एकत्र कस्मिन् सीरी तिसि अ वले हवनार्थे खिलार्थे तौ अर्शु मं राग्नि पृथगात ए अस्थि च ३६ क्षयी फल्गु
 दसत कावरी इ सोयव १ आडका दश मूल २० पल ३० चीना पीप ए मूल विविध पक्कर के वाच को गला भांणी जल योपर ३१ वरिया ए
 यो धार मूल सर्व वै बेपल ५ आठक जल मं पचाइ गला दशतारि घानि ले ६ १२ तिसमें १०० हउ तेन घीव ८ पल गुलतला भर दे ३३

पकावैठंटाकरिसहतापीपिकाचूर्णे एसवएकएककडवडारे ३४ इस्तअवलेहयोसंगदोहइनितत्वायक्षयीकनरा श्यासज्वरु हिवकी
अर्शे अरुचिमीनस ३१ ग्रहणी एरोगनाशहोईवलवतहो स्वेतवारकलहो हयवानहोप्ररुषकोयुहअवलेहसायनहे अगल्पमुनिकोकिहि
यहअगल्पहरीतकीसर्वेणनाशकरे ३६ अथाशपरकुरेयाअवलेह करियाकीकालबलाभएकडोणपानीमें पचवैजवचोथाइरहेतबउ
पकालेहत्वभानीतेसिस्सीनेएथकएथक क्षौड्वपिप्पलीचूर्णेइहाकडवमाचवा ३४ हरीतकीधयंखा
देतेनलेहेननित्यशः क्षयंकाशंज्वरश्वासं हिक्काशोरुचिपीनसाम ३१ ग्रहणीनाशयेदेखबलीपलितनाशनः
वलवणेकरूपसामवलेहोसायनः विह्नोनास्तमुनिनासर्वेणनाशकरः ३६ कुरजत्वकुलोइरणेजलस्य
विपचेत्सुधी कषायपादशेषचगुल्लेयाद्रह्यपालितं ३७ त्रिशत्यलगुडस्यानदत्पाचविपचेत्सनःसां
इत्वमागतइस्वाचूर्णेनीमानिदपयेत् ३८ सांजनमोचरसंविक्कुं निफलातदा लज्जालचिक्कंयाढाविल्वमि
इयंववची ३६ भल्लोतकप्रतिविर्भाविङ्गानिचवालकं प्रगेकंपलसमानं धूमसुकडवनद्या ४० सिद्धशीते
ततोद्यान्मधुनाकडवंतथा जयेदोषोबलेहसुसर्वाएयशीसिवेगंतः दुर्गोमप्रभवारोगाअतीसारमरेत्
कं ग्रहणीपांडुरेगंचरुक्मपिन्नचकासल अम्लपिन्नतथाशोथंकार्येचैवत्रवाहिकाम् ४२ ॥

तारिवस्त्रमेषानिते ३० फिर १० पलगुइदेयकावे गाढाभएतहचूर्णगरि ३८ स्तोतमोचरस त्रिकुय त्रिफला लज्जान्न चीता पाटावेल इन्जी
नच ३६ भिलावा अतीस विडंग संगंधबाला एयलपलभर घोकडवभर ४० ठंडापुरे कुडवभरसहतेदे यहअवलेह सर्वोर्शवेग
होइरिकरे ४१ दुर्गोमरोग अतीसार अरुचि ग्रहणी पांडुरुक्मपिन्न कमलपिन्न सोय खजुरी त्रवाहिका एसवइहोय ४३ ॥

तस्यानेपानं छगरीकाइभवामहा दही घीउसीका योपानीभोजनकेपाचनकेसमयओषधिलाय ४३ सर्वोतीसारपरकुरेयाएक अर्धगुलाक
रेमाछलशेणभरपानीमेंपकावेत्तचौधारेहेतवयहचुरेणारे ४४ लज्जाल् धोफूल वेलपाठा मोचर मोथा अतीस एपलपलभर ४५ फिरीउसीका
टेमेंओडेजवलोकएधोमेंनलपौतवसिरुजानौ सोवकारेयय वापानीवामाउसंगपिये ४६ तौसर्वेअनीसारकीघोखेदनानिवर्तहो सुकभोतिहो
क्वाह सर्वाशेषवाहिकानाशकरे ४७ इतिओषाईधसुधाकोलेविरचितेअवलेहकल्पनाएभोधागः ८ अथयूनैलसाधना कल्कसेचौगुणयून

अनुपानेप्रयोक्तव्यभाजंतक्रंपयोदधि घृतंजलंवाजीणेचपथ्य भोजीभवेन्नरः ४३ कुरंजत्वकतला मांशेदोषाणनीरेवि
पाचयेत् पादशेषसूतं नीत्वा चूणेन्पेता निदाययेत् ४४ लज्जालुर्धोतकीविल्वपाढाभोचरसलया मुक्तप्रतिवि
माचैवप्रत्येकंस्नात्पलंपलं ४५ ततस्तुविपचैर्योगावद्धवीपलेपनं जलेनछागदुग्धेनपीतोमहेनवाजियेत् ४६ स
र्वोतीसारान्धोरगश्चनानावणीन्सवेदनां अस्तरुंरसमलंचसर्वाशांसिप्रकटिको ४७ इतिअषीशाईधरमधमखंडे
अवलेहकल्पनाएसोधागः ८ कल्काचगुणैणीकल्पयूनंवातैलमेवच चतुर्गुणैर्द्वेसाध्यंतस्यमात्रापलोमिता नि
क्षिप्रकाययेतोयंकायइया चतुर्गुणै पादशिष्टंरहीत्वाचलेहलेनैवसाधयेत् चतुर्गुणैर्महोद्वेकप्रटिन्येष्टगुणंजलं अमृत
करिने इत्येनींखोडशिकंमनं ३ तथाचमध्यमे इत्येदयादष्टगुणैपयः कर्षोदितः पलंयावदद्यान्वोडशिकंजलं ४
यानेत् ओकाथादिद्वइवइवभीचोनीदेना तिएककल्कीमात्रापलभरहे १ जिसइवकाकाथदेना होतौचौगनेजलसेओटे चोथाईहे
उतारिछानिलेउसमेंघीतेलसिक्करेकोमलइवनघोगुनजल कबोसेअधगुना अत्यक्तकबोसेसोलहगुनजलसेइ मध्यममेंअधगुनाअनर्विधि
पयाभसे ४ दसपयाभतांमें सोलहगुनापानीदिकोथकरेचोथाईहेधतूनकरे पलसेकुउवताईअधगुना प्रस्थसेसत्तारीपर्यंतचौगुनादे ४

केवलकल्पाधीवतितमसिद्धिरेतौ च तत्तत्कल्पादेसेभतेतपाउसेकल्फ ओजो कल्फाधिके संगधीनितपकावैतौ घृतने
लकाषांशकल्फेना तीनपाउमें प्राधयाउ ओजवकल्पासकेसंगधीवाने लमें पकावैतौ तत्तत्कल्फेना सेरुं प्राधयाउ घृतनेल
काषमानयहीहे ५ दूधवह्नीरसमहानरने अष्टासकल्फेदे ओजकल्फभलीभातिपकाने काका एण दो गुना जल देना ५ ओजहा कल्फधीनेल का
पाथपांचोलेय तहां खेहादिकसमान देना पानीचौ गुना दे ७ जवसणी इणी स्वघृतने लमें पकानी होय तेजलमें इवपी सिंगेला वाक

नतस्तु कुड्वंयावतोयं चाष्टगुणं भवेत् त्रयाद्यादि तः क्षिपेन्नीरिवारीयावच्चतुर्गुणं ४ अथ द्वाथरसैर्यत्र तृथयवर्त्तते
स्य साधनं कल्कसांशं तत्र दद्याच्चतुर्थं षष्ठमष्टमं १ द्वाथरसैर्न के कल्केदिमोष्टमांशकः कल्कस्य सम्पत्क्याकार्ये
तोथमत्र चतुर्गुणं ६ इत्याणियत्र स्नेहेषु पचादीनि भवन्ति हि तत्र स्नेहसमानाद्द्वयथा ध्वे चतुर्गुणं ७ इत्येन केवलैर्नैव स्ने
हयाको भवेद्यदि तत्रांबुषिष्टः कल्कः स्याज्जलं चात्र चतुर्गुणं ८ द्वाथेन केवलैर्नैव पाको यत्रैरितः क्वचित् द्वाथ इव स
कल्कोपितत्र स्नेहे प्रयुज्यते ६ कल्कादीनस्तु यः स्नेहः स साध्य केवलेः इवे प्रथम कल्कस्य स्नेहस्तत्र तोयं चतुर्गुणं त्वे
हात् स्नेहस्य भागश्चाष्टम कल्कः प्रयुज्यते १० वर्तिवत् स्नेहकल्कः साधारणत्वा विवर्जितः शब्देहीनोपि निःक्षिप्तः स्नेहसिद्धिर्भवेत् ११

लूकरिचौगुनेयानीमेंपचाव दजोकिवलकादमेकहोत तहाँउसीकाथकीइव्यकाक्ककरि घतवातेलयुक्त वहुकाद्यऔ चोगनापानीदेय
काना ६ नहोंकरकरहिनिह तो केबलइव्यवस्तद्रूपधायानीदेकोपकालेना जवफूलकीकल्कमेंलेहसिफकहेगे तवचौगुनायानीदेगे जवस्त्रे
सेस्त्रेहसिफकहेगे तवस्त्रेहकाअष्टमांसदूसएस्त्रेबलेसुष्यदल्कयुक्तपकालेना १० जववहस्त्रेहपाक अंगरीमेंलेकेभवसेयनीवनजा
य उसेआगियशरै औजलतेशेप्रत्यविरेहरनकरेतवस्त्रिभयाजनो १२ " " " " " "

तेलफेनउरनेसे सिद्धज्ञानिये घुनफेन शंतिसेसिद्धिज्ञानिये जवगंधआवे ओनिर्मलहोजाय ओरस सत्यतिकरे तवघनवातेलसि
प्रभयानानिये १२ जेहपाकतीनचकारकाहे मृदुमध्यवस्त्रोक्तत्वकमोभवतहेतोमृदुज्ञानिये १३ जोकल्कनिसुद्धेकुष्ठकोमलहेतोमध्य
जोक्तत्वप्रिसुखौ कयेरहेजाश्लोखराजानिये १४ जोइसपमाणसेअधिकजेरतोजानीस्नेहविगडगया अकार्यगया जोवारहेतोसेव
साग्निकरेओभाएहो १५ नासलेनेकोनरुसहिगहे मध्यमसर्वकार्यसाधकहे एवमर्दनेकीहे जहेजैसा चाहेतहो नैसावना

यदाफेनोऊमत्तेलेफेनशंतिश्चसर्पिषि गंधवणेएसोत्पत्तिः स्नेहसिद्धस्तथा भवेत् १२ स्नेहपाकस्त्रिधाप्रोक्तो
मृदुर्मध्यवस्त्रया इषत्सरसकल्कस्तस्नेहपाकोमृदुर्भवेत् १३ मध्यपाकश्चसिद्धश्चकल्केनोसकोमलेः इष
त्कठिनकल्कश्च स्नेहपाकोनवेत्स्वरः १४ तद्दृष्ट्वेदग्धपाकः स्यादाहकनिष्प्रयोजनं आमपाकश्चनिर्वीयोवन्दिमाद्यकारे
गुरुः १५ नस्यार्थस्यामृदुपाकोमध्यमः सर्वकार्यसु अभ्यगार्थः स्वरप्रोक्तोयुंजादेवंयथोचितं १६ घृतनैलगुणदेश्चसाधये
नैकवासरे अकुर्वत्सुषितायेतेविशेषाङ्गसंचयं १७ पिप्पलीपिप्पलीमूलंचवचित्रकनागरेः संसंधवेअवघलिकेयूत
प्रस्थंविपाचयेत् १८ क्षीरंचतर्गुणंदत्वातत्सिद्धंस्त्रीहृत्नाशनं विषमज्वरमंदाग्निहरंरुचिकरंपरम् १९
पिप्पलीपिप्पलीमूलंचिचकोहस्तिपिप्पली स्वंदंष्टानागरंधान्यपाढाविल्वयवानिका २० ॥ ॥

ये १६ तेतघज गुड एकदिनमेनसाधेदिनांतरेकरेतोअधिकशुनकरे १७ पिल्लीपर क्षीरघटपुल पीपरि पीपरामूल चाव चीना
सोदि सेधो एसवपलपलभर धीपस्थभरमे पचावे १८ दूधचौगुनाजवसिद्धहे तोयत्तधीवस्त्रीह्लाकोनाशकरताहे विषमज्वरकिमंदाग्निह
रको ओरुचिकरे सग्रहणीअतीसारपंचंगेरीघृत १९ पिपरि पिपलामूल नीतागजपीपरिगुडरुसोदि धनिपा पाढा वेल अजवायन २०

एतलपलभर ओघीचौसठपल छोदीलुनियौकाएस २६ पलदे २२ ओ २६ पलदहोदेसंदमंद ओचपचावे इसकानामचांगेरीघत
नहे २२ सेवातकफयहणी अशेइहो पेटफुवन कांचनिःसारण सूत्रकछ प्रवाहिका सकनाशकौ २२ अतीसारएमसरथग सौपलमसुरी
शेणभजेलमेंकाथकौ चौथारहै उसकाटेमें चाठयलवेलकौगदीदे २४ ओ एवस्थभअनी सारयहणी ओविथगमलगिरला जवाहि
काएसवदूहो २२ एकपितपरकामदेवघत असंगंध १०० पलजुषट्ट ५० पल शतावरीविलास्कंद वनउदी वरियाराणच २६ ॥

इवैअपलकौरैतेश्रुतःषष्टिपलंघतं घताच्चतुर्णंदेयं चांगेरीस्वरसंवधे २२ तथाचतुर्णंदेयंस्वादधिसर्षिर्वि
पाचयेत्तानैःशानैःविपक्तव्यचांगेरीघतसुन्नमं २२ तत्पुनंकाफवातमंत्रग्रहणशौविकासुत हंभावाह्मगदभ्रगभूत्रकछप्रवा
ह्तिपं २२ मश्रुणमलशतं नीशेणं विप्रचयेत् पादशेषं सुतनीत्वाह्मविल्वपत्वाष्टकं २४ घतप्रस्थपचेनेनसर्वानीसारनाश
नं ग्रहणीभित्तविट्कवनाशयेच्चप्रवाहिका २२ अथगधापलशतं तद्देगेक्षुरमतं गजाचरोविदारीचशालिपर्णीवलासू
ता २६ अथतयस्यचशुगानिपयवीजं पुनर्नवा काश्मर्यश्चफलचैवभाप्रवीजंतथैवच २७ एथग्रहापलानगणा
श्चतुर्गोभसः पचेत्तदशेषे रसेतसित्यलेचैव घृतादकं २८ मदीकापयवंकुण्ठपिपलीरकचंरुनं पत्रकं नागपु
ष्पंच चान्मगुजाफलंतथा २६ नीलोत्पलंसारिखेंद्रीबिनीयगएस्तथा एथग्रहर्षसमानागाञ्छर्कएयापलद्वयं ३०

पीपरिकादिगुसारक्त कमलगङ्गा गदापुरेना खंभाशैखव्यन्यलेउदे २७ एदशादशपल ४ दोणयानीमेंपचारचतुरंशरहेतवआठक
भरयोदेपचावे २८ फिरदाबयनाथपीपरि रक्तबंदन पत्रज नागकेशर किंवाचत्रवीजकौभीगी २६ नीलकमलकाफूल विनाकमलगङ्गा स
रिवन जीवनीगणहवौक्कजोनभिलेनौकेवलनुरियारेदेना एसवद्वयकर्षकभरले शाकादोपलउक्तकरना ३० ॥

आतकभरयोडाकारसः सवस्काद्वाउसंभयचोर्वे जवधीरैकेवलगतवशा निले रक्तपित्तं उरुक्ष्मक्षीणं कमलवातस्त ३१ हलीमकं पांडु
हरे स्ववर्णहो स्वस्वमभूतकच्छुःखदह पसुरोपीडाहूकरे ३२ यद्वह्यत वह्नरमणिर्कोरेऽस्वाग्रपुत्रवनीक्षेऽद्वैतकोदेतोभोगहो ३३ श्रेष्ठहै वल
कनोहे शरीरकीरांतच च्छोहो हृदयकोविमप्रष्टिकर्तोहो सायनहे तेजवल आद्य आणवदानीहे उदयले
वलीहो सर्वरोगनाशहो जेसेसीचनेसेचक्षतरुणहोता तेसेमुगुष्यकाशरीरहोताहे यहकामदेव धृतवशगुणदाहे ३४ का

दृष्टियत्नी ३

रसस्पपौंडुके क्षणाभाढकैकं समाहरेत् रक्तपित्तं क्षतक्षीणं कामलोवातशोणितं ३१ हलीमकं पांडुरोगं वणैर्भेदं
क्षयं भूतकच्छुमुरोदहयश्च भ्रूलंचनाशयेत् ३२ एतत्सर्पिष्योन्नत्यंबूतः पुत्रचारिणं स्त्रीणांचैवाश्रजानानाद्वैत
नाचदेहिनां ३३ श्रेष्ठवलकं वाणैरुद्यप्य छिरसायनं श्रोत्रस्तेजस्करं रुधभायुष्यभाणावर्धनं ३४ सवर्धयति
शुक्रस्य पुरुषं दुर्वलं द्रियः सर्वरोगविनिर्मुक्तोऽप्यलिकोऽयथादुमं कामदेव इति स्वातः सर्पिक्रमस्तुगुण ३५
त्रिफलावेनिशेकोतीसरीवेदविपुंगुका शालिपर्णीदेवदंष्ट्रैर्मलवाणकं ३६ नर्तविशालादनीचदाडिमं नागकिश
रं नीलोत्पलैलामंजिष्टाविडगपद्मकृष्णकम् ३७ जातीपुष्पं च दनं च तालीसं दृहतीतया एतैः कर्षस
मैः कर्कैर्जेलंदत्वाचर्तुरेणं ३८ धृतवशपंचैर्धमानपस्मारेज्वरक्षेय उन्माद्विवातरक्तेचकासं मदनलेतथा ३९

ल्यानधृत अपस्मारपर त्रिफलादूनीहृदी रेनुका सार्विन पित्तवन मकरावनउदी वनभृंग देवदारु एलवास्तनमिलैतोमुगंधवा
लोदे ३६ तगर इंदोरुन जमालगोदिकबीज अनारुगिकेसर नीलकमल श्लायबी मजीठ विडग पत्राष कूठ ३७ मालतीपुष्प
स्वेदचंदन तालीसपत्र दृढभट्कटैया एसवकप कर्षेयानीभेपी सिकत्क करिचौगुनायानीदे ३८ उसयानीभेप्रस्थभर ॥

श्रीषट्कल्पादेकैयकावेद्यदेहस्यैसि भिगी विगमम ज्वरक्षयी वातरक्त कासमंदाग्नि ३६ नाकटपकना करिपीडा तिजरी
चातर्धिक मूत्रकृच्छ्र विसर्पिका खजरी पांडु ४० दोनोविषमें चै-मेदमें ओरीगसवमच्छेहो वोगुपचजने भूतराक्षसबाधासुव
हरहो पानीकल्पान् घृतस्नानामहे ४१ वातरक्षापरश्चमृतादिघृत गर्भकाकल्क सुर्वकाकाथ इधकेसाथ घृतपचावैरस्से
वातरक्तचैकोढहरहो ४२ वातकृष्णादियरमांतिक्तादिघृत छित्तोनी अमलतास अतीस कड़को पाढा मोथा खस विफला पि

पतिश्यायेकदीश्लेष्टगीयकाचगुर्थके मूत्रहृद्येविसर्पेचकंडूपांशामयेतथा ४० विषवयेप्रमेहसुसर्वथेवप्रयुच्यते वंध्या
नांघुनदभूतपक्षरक्षो हस्मन् ४१ अमृताकाथकल्काथामक्षीरेत्रिपचेतघृतं वातरक्तं जयन्यामुकष्टजयति इत्यग ४२ स्नान
च्छदप्रतिविषासपाक्नदुरहिणी पादसुस्तसुशीरं च विफला पर्यटस्तथा ४३ येलेनिवर्गजिष्टापिप्लीयमकंशवी चंदन
धन्व्यासश्चविशाले वतिशेनया ४४ मुहूचीसारिवंधेषमूर्वावासाशनावरी चायंतीदुषवायवीभूनिचाश्वाश्वभागिकं ४५ घृतं
चगुणंदत्ता घृताहामलकीरसः क्रियतेसपिषश्चाक्षजलमष्टगुणं भवेत् ४६ तिसिद्धिपाययेत्सर्पिर्घात रक्तेषु सर्वसु कृष्टानिर
क्तपित्तं च रक्तांशे सिचपाइना ४७ हृद्येगुणस्मवी सगुणं घृदं गुंडमालिका क्षुद्रेगं ज्वरं चैव महातिक्तमिदं जयेत् ४८

तपायउ ४३ पटोल नीम मजीठ पिपरी पद्माष कहर चंदन जवासा इंडारुन देनी हरदी ४४ गुरच सखिन पिठवन भूरो ह्सा
शतावरि चायमान वसिष्ठे इंडुजो मुखी चिरायता एसवकर्षकर्षभले ४५ घौचौगुनाले घीकाइना ओंबेकारसदेअठगु
णोजलदे ४६ यहसिद्धी सुववातरक्तकेविकारमेदेई अगारहो ४७ कृष्णमेदे रक्तपित्तमेदे रक्तार्श पांडुमे ४८ हृदिरेग
गुल्म विसर्प मंदर गुंडमाला क्षुद्रेग इरिकरै वहामहा इस्का नामहे पहिले कहेरेग सबअच्छेहोई ४८ " " " " " "

उदररोगपरमिंदुष्टनु चीता शंखाहली दृड कवीला दोनोनिशेष्य विधाग अमलतास जगाल्लोदा त्रिफला ५८ कटुतण्डु देवदालीकित्तें
वंदाल नीलकौपतीकोवापुंठी सेंहंडकी छोमी पियरामूर विहंग कटकी ५९ चोका एसवकर्षेवर्षभले कटक कसिस्थभरघीमेंपवाविष्टप
लसेहंडकादुधगरे ६० २ पलमदारदुग्धगरे वहसिषयीदेतागुल्मकाष्ठअच्छाहो भलउदावर्त शोधयेटफूला भंगदूर ६१ आबोउदररोगदूरहो

चित्रकंशंविनीपथाकांपिल्लस्तृतायुगं दृष्टहारुकसंपाकीदंतोच्चत्रिफलातया ५८ कोशानकीदेवशालीनीलनी
गिरिकर्णिकाशानलापिप्लीसूलंविडंगंकरुकीतया५९हंमक्षीरीचविपचेत्कल्केरभिमिच्छन्मिनेः घृतप्रस्थंस्तुह
क्षीरखट्पलंनुपलवयं ६० अर्कक्षीरस्यमत्तिमानत्सिद्धगुल्मकष्टलेन हन्तिशूलमुदावर्तेशोयाऽध्मानंभगंदरः
६१ शमयत्युदरान्यष्टौनिषीदंविंदुसंख्यया गोदुग्धेनोष्टिदुग्धेनकलत्पसास्तनेनवा ६२ उष्णोदकेनवापीत्वा
विंदुर्वैगेर्विरिच्यते एतकिडुघृतंनमनाभिलेपादिरिच्यते ६३ त्रिफलायारसप्रस्थंप्रस्थवासारसंतया भृंग
राजरसप्रस्थंप्रस्थमाजपयस्तया ६४ हत्वातत्रघृतंप्रस्थंकल्केः कर्षमिनेः दृढयक् त्रिफलापिप्लीशक्षानं
दनं सैधवंवला ६५ काकोलोक्षीरकाकोलीमदामरिचिनागरशर्कराएण्डरीकांचकमलंचपुनर्नवा ६६ निशा
यमंचमथकंसर्वैरभिर्विपाचयेत् नक्तांधंनकलोधपचकडूपिल्लनद्येवच ६७ ॥

बाजदकेदूधसे कलथीकाथसे क्षरगण्यानीसे ज्योत्स्नदपियेनैदल्लहोयहृष्टदधमनाभिसेदल्लज्जावेदनेनपरोगत्रिकलाद्यत्रिकले
कारस्रत्रस्थ२॥ स्थदसेकात्रस्थभंगरेकात्रस्थवकरीकादूध६४॥ त्रस्थयीकार्येकार्येओरद्वयत्रिकलापीपरिदाषचंदनसेधवव
रियाए६॥ दोचोकाकोलीविनाअस्रगंधमेदविनामुग्दीमर्चिशोढिखाइसेनकमलरत्नकमल गदाछरेगाधुदोनोहरीमुग्दीइनका॥

कल्ककर्णौ भंपचवैतौ नक्तानधनवल्लङ्घ ह्वान पिबल्लङ्घेग ७० नेत्रह्वान पटलतिभिर्नीला निंद एतवञ्चोहो रसत्रैफलादिद्युत
कोलाथवानासरो यथाचित्तञ्चनोपानकरै ७१ दधानवपौ योदिद्युत चंदी दोनो शालिपणी सुरै सस्तिन चंदनरोना सुरेदी कमलका
सर कमल दहेनीलकमल ह्वस भेषविनासुरेदी त्रिफला आम्रवट पीपर पाकार हलकीछाल सचकपेकपेले काटकक रिजस्थभस्य
भंपचवै ७० यदुगोयोदिद्युत विसर्पिका अमिआशुन सीतला कीरविष छत सवञ्चोहोकरै ७२ शिरोरेगेगपरमपरघनवरिसार

नेत्रह्वानं च पटलंति मिंक्लां च कंजयेत् अन्धेपि प्रशमं गंति निचरोगा सुसरुणाः त्रैफलं द्युतमेन विमानेन
स्यादिह चितं ७१ देहरिद्रेस्थिरासूवीसारिवाचंदनकथं मधुपर्णी चमधुकपपकेशरूपयकं ७२ उत्पलोशीर
मेरोभिस्त्रिफलापंचवल्कलैः कल्केकपेसितैरेतैर्द्युतप्रस्थं विधाचयेत् ७० विसर्पेलताविस्फोटत्रणक
ष्ठविषायहं गोर्पोदिकमितिल्यानंतपि प्रणहरस्मृत ७१ वलामधुकारह्लाभिदेशासुलफलत्रिकैः एयस्थि
लेरभिद्रोणानीरेणपाचयेत् ७२ मयूरपिच्छपि तात्रयत्कृत्यादास्यवर्जितं पादशेषस्तनं नीत्वा क्षीरं दत्वा
चतस्रसं ७३ द्युतप्रस्थपचैत्सम्यक् लोचनीयेपि चृन्ति तेः तत्सिद्धिगिरसः पीत्रमत्पापष्टग्रक्तया ७४
अर्द्धितं कर्णेमासाधिसिद्धागालाउज्जयेत् प्रातेन स्पेतयाभ्यगे कर्णे स्तरेषु यज्यते ७५ ॥

सुरेदी एतन् दशभूल त्रिफलादोनोपलंदे द्रोणभजल्लेपकवै ७२ मयूरमांसविना आनञ्जोफ्रेणिना पांडयानीमिगतावेचोपादे
स्ति उत्तारिलो वसुसु जितनाहोति तनाइधरे ७३ प्रस्थभर्यीभकपेकपेले भल्ली वनीगण आनञ्जदा सचपनाचै सिलेगमन्यावि
या छष्टग्रह ७४ लोकाका कर्णे नावनेत्र जीभ गला सचनरोगेगनाशो ह्वाय ह्वै मले वनभरे हंगंतशिषि एव संतंभं सेचनकरै ७५

या वंध्याका फलघृतं त्रिफला सुरेयी कुटुंबो हृदी वृत्तकी विरंगपीपरिमोथा कायपरवच ७६ मेघमहामेघविनासुरेयी देनो को कोली विनाससगत्र स
स्त्रिमं पिठवन मकारसो फलौग रासनदूनोचंदन ७७ चंगेली पुष्य वप्रलोचन कामल शक्कर अजमोद दत्तन एकर्षवर्ष भलेवाल्कवारि ७८
एकारंगाय वच्छराहो आनाहो निस्वाधो मत्स्यमर्चै गनादधे देवि नवांकं राममंद आचंदे पचवि ७९ सुदरतिथि पुष्य नक्षत्रमेनातां चैको फल

हमंतकाले शिशिरे वसते सुचसेष्यते ७५ त्रिफलामधुवांसाष्टदंति शेषकादुरोहिणी विरंगं पिप्पलीमुस्तं विशालाकाटुफ
संवचा ७६ देमेदेवचकोल्पासारिवेद्यपियंगुवा शतपुष्पाहिं गुरास्त्राचंदन रत्नाचंदन ७७ जाती पुष्यं तुगाशरीरकमल
शर्करा तथा अजमोदा चंदनी चवाल्कौरेनेश्वकापिकौः ७८ जीवत्सेकाप्रणोयाद्युतं प्रयंगवापेवत् चतुरंगोनूपय
सापेच चरएयगेमयैः ७९ सुतिथौ पुष्य नक्षत्रे मृगश्रिरेतामजेनथा ततः विवेक्षुर्भादिनेनारी वासुषो यवा ८० एतत्सपिर्नरः
पीत्वा स्त्रीषु नित्यं वृषायते पुत्रं संजनययोगान्वं च्यापिलभते सुतं ८१ अनायुषवाजनयवाचसत्ताः पुनर्माप्नोति सोनारीव
धिवंतं शतायुचं ८२ एतत्फलघृतं नाम भारद्याजेन भाषितं अतुक्तां लक्ष्मणा मूलं क्षिपत्पुत्रं चिकित्स्वाः ८३ त्रिफ
लाधे सह च रेगुर्ची सपुनर्नवा शुक्ला साहसिरे देरास्त्रामेदाशतावरी ८४॥

मंथुभविनपियै स्त्री वायुस्य ८० पुरुषजोपियै सो वृषभ तुला कामी रेहे कैसा भीक्षु समर्थे हो परंतु पुरु उभय न करे औवां गिनको पुत्र होइ ८१
जहि स्त्रीको पुत्र मोजाना हो उसके पुत्र हो सो वर्य जि यै घृतं सेवन हे ८२ यह फल घृत भारद्या जभाषित है विनावाहे वैद्य इस घृत के सुंगलक्ष्म
नाचंदी बीज देते हैं ८३ योनि दोष पर त्रिफला विद्वत ८४ रासने मेदाशतावरी ८४॥

गोपी
श्रीः
३२

रुक्मकास्तपस्वगौरिणा ४ पश्यन्धमेतकोने ननभीसिद्धस्यजननक्षीपियेतासन्ध्यानिधायपदस्य २५ पतिन यन्निना निधिम निधिमपिभ्यानिनि
धोतसंरयानि २६ एतान्ध्यानितामिदं योगगौरिना भस्मफलमृगमृगभ्रमभ्यानिनियोजयपारयत्ता २७ २० विधमपारयत्ता २० विधमपारयत्ता २०
मा अत प्रताभोगांने भन्तवांनेया परा स्नानेनकाताय चोपकायहाय गोविपमन्वाजाय पादसंज्ञनिमप कोमि यथा ३३

कन्धीरुक्मपचतप्रसंयन्ध्यांस्तनुरिणं नत्तिदं पापेयन्ध्यारीयोनिगोमनिर्गिरिना २४ पतिना नलिना गार्धनासुता निरुक्ता २५
या पितयानिचविभंतासंरभानिनयांस्तुता २६ प्रपथेतेस्तितास्थानांर्गैप्रकुनिवाससेत् एतत्फलमृगमृगभ्रमभ्यानिनयां
संरस्मृते २७ विपनिचासुतायाचीपयत्तानांस्तननन् चालेनपतोसपिनिगिन्ध्याप्रियमन्वयान् पादकृद्विसंपन्न
कणीनयोसिनायायन् २८ इतिस्त्रीयादुधसंयमसंभ्रमस्तस्याभ्यागः २९ लायादकंभाभ्यायित्वा नलिष्व ननु राट
कीः चतुर्थोपास्तर्गनीत्वातेलसंस्थमिदंशिपत् १ मल्लादकाचगान्धः २ मल्लालिनिः क्षिपत् यातपुष्पांमध्यमांयादोर
शदेवत्तरुच २ कटुकारेफलांप्रवीकृतं चमलमृष्टिका चंदनसुतकासांलाप्रयकाप्रपमापातः ३ नृपेयेनचनिक्षिप्य
साधयेन्मृदुवल्गना आस्थाभ्यंगास्य सायंभित्तं चपिपिमन्वराः ४ कासभ्यांसंयनिस्यायस्विकपृष्ठयत्तथा ॥

दस्तेय २९ इतिस्त्रीयादुधसंयमसंभ्रमस्तस्याभ्यागः २ मल्लालिनिः क्षिपत् यातपुष्पांमध्यमांयादोर
पयाभरत्तासे चारि आदवापनीमंसायाकोरिओव्यारेस्तेजास्ते जस्यभतेलेने प्रस्थ ६६ उपका भाले १ वर्यताजलजोदकाभर
२ साफ भसिगंध ३ रत्नो भवत्ता २ कटुगोसेचकीचीक मुरैकटुगोसे पंरुगंभाया तासन कपेकविभर ३ चण्णकोलेलेगंधिषकरेगा
मुपानवे रमनेलेनेसागायेविपमन्वरासुतसुमिक् कसेरीदपीमा पीरमकाइगा यातपिमन् ॥

रुनकाक्वप्रस्थभरिणी ४ प्रस्थद्वयमेवगवै तवयोसिद्धोतवस्त्रीपियेतौसवयोनिसेषइति ॥ २५ ॥ पलितचलितनिश्चितविकृतपित
योनिविघ्नोतवड्योनि ॥ २६ ॥ एसवयोनिरोगमिटे श्लोभर्तिके यदफलघतनामघतयोनिरोषपरवडुतश्चछहै ॥ २७ ॥ विषमपरंपचति
क्तघतइसा नीमगुर्वभटकटेयापटो इनहीकाकोदा औकल्कमेघीपकायस्वायतौविषमज्वलाय पांडुकुष्टविसर्प कृमिअशोभो
इहोय ॥ २८ ॥ इतिश्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेनवमोऽध्यायः ॥ अथयतनेलसाधनप्रकारः लाक्षादिनेल लाहीएकादक आदकतीनसेर ॥

कल्पोकात्ययतप्रस्थं पंचेत्क्षीरं चतुर्गुणं तस्मिन् पापयेन्नारीयो निरोगनिशीडितां ॥ २९ ॥ पलितचलितायाचनिसु
तानिकृतायया पित्तयोनिचविघ्नोताखरयोनिचयास्मृता ॥ ३० ॥ प्रपद्यतेहितास्थानं गभैरुल्लंतिवासकत् एतकालयतना
मपोनिरोषहरस्मृतं ॥ ३१ ॥ विषनिषामृताचाघ्रीपटोलानां सुतेन च कल्केन पक्तसपिण्डनिह्ना विषमज्वरान् पांडुकांश्चिसर्प
वक्षसीनशोसिताशयेत् ॥ ३२ ॥ इतिश्रीशार्ङ्गधरमधमस्वरेयतकल्पनाध्यायः ॥ लाक्षादककाथयित्वा जले अचतुरादकै
चतुर्थांशं सुतनीत्वा तैलं प्रस्थमिदं क्षिपेत् ॥ ३३ ॥ मत्वा दकं च गोदघ्नः सर्वतैले विनिःक्षिपेत् शतपृष्ठा मश्रुगंधाहरिद्रादे
वदरुच ॥ ३४ ॥ कंदूकारेण कंठं प्रवाक्य कष्टचमययष्टिकां चंदनं मुक्तकं रास्त्रां पृथक् चार्पेत् ॥ ३५ ॥ चरणेन च निक्षिप्य साध
येन्मृदुवह्निना अस्याभ्यंगात्साम्पत्तिं सर्वेपि विषमज्वराः ॥ ३६ ॥ कासश्चासंप्रति स्मायस्त्रिकष्टत्रहस्तथा ॥

इत्ययाभरहोताहै चारि औठकयानीसेंकाढाकरिचोठ्याइरहैउतारिले प्रस्थभरतेलेदे प्रस्थ ६४ उययाभरहै ॥ ३७ ॥ वहीकाजलचाब्क
भरहे सोफअसंगंधहरदीदेवदरु ॥ ३८ ॥ कटकीसेवडीबीज मुरेकूट मुरेडी चंदन मोथा रासन कर्पेकपर्षभर ॥ ३९ ॥ चरणेकरिलेमेंसेबकरेमध्यमअ
वसे रसतेलेकेलगायेविषमज्वरसमनहोय ॥ ४० ॥ कामश्चासनाकवज्रहव त्रिक कहेरीदपीडा पीठजकडना वातपित्तज ॥ ४१ ॥

नकाकल्त्रस्थभरियो ४ नखद्वयमेपकावे जन्वद्योतिद्वौतचस्त्रीपियेनोसवबोनिदोषदूहो ८१ पलित चलित निश्चितविह्वल पित्तयो
 नेविद्यानखइयोनि ८६ एतस्ययोगिनिरोगमिदं श्लोभर्तुके घटफल्यतनामयतयोनिदोषपरवस्तुतश्च ८७ विषमपर्यचति
 कंचरतत्सानीमशुर्ध्वमदकदेधाधरो दलकाकोदा श्लोककसे योपकायखाय तोविषमज्वरजाय पांडुकाष्टविसर्पे कृमि अशो एभी
 दूरक्षेप ८८ रनिभोशुर्ध्वसुधाकोरनवभोधायः ९ अथद्युततेलसाधनप्रकारः लाक्षादितेल लाक्षीएकाटक आढकतीन

कल्कोक्तायद्यत्तत्रत्यं चेश्वीरं चत्तुर्गुणं तत्सिद्धपापयेत्तरीयो निरोगानिर्भीडिनं ८९ पलिताचलितायाचनिसूतानि
 कृताचया पित्तयोनिचवित्रातासइयोनित्वयास्मृता रवेत्रपद्यते हितोस्थानगर्भगर्लुतिवा सुकृतर एतत्फल्यतानामयो
 निदोषहरस्मृत ९० विषनिदानमृताबाधीपदेलानां रतेन च कल्कोनयकसर्पिकनिहन्ना विषमज्वरस् पांडुकाष्टविसर्पे
 कृमोनशोसिनाशयेत् ९१ इतिश्रीशार्ङ्गधरमध्यमखंडेद्युतकल्पनाध्यायः ९ लाक्षाढककाययित्वागले श्वचत्
 राढकैः चत्तयोर्गं सुतनीत्वा तैलप्रस्थमिदं क्षिपेत् १ भस्वाढकं च गोदग्धः सर्वतैले विनिः क्षिपेत् शतस्थाम
 श्रृंगया हरिद्रादेवदारु च रक्ताङ्गो र्णका द्वौ कष्टचमयुषा धिका च दर्शनं सुतकरा स्वांष्टय कर्षत्रमाणः ३ सूणेयेत
 त्रनिक्षिप्यसाधयेन्मृदवह्निना अस्याभ्यगात्तशार्भतिसेर्वेपि विषमज्वरः ४ कासश्चासंप्रतिस्थायस्विकपष्टग्रहसंथा

रष्टत्तयथाभरत्वोताहे चादि आढकपानीमेकादाकरिदोष्यारहेउतारिले वास्यभरतेलहे प्रस्थ ६५ उपयागरहे रदोकाजल
 आढकभरे सेफअसंगध रदोदेवदारु रक्ताङ्गीसंवडीबीजमुए कुटुमेवी च दर्शन मोथा रासन कर्षकर्षभर ३ दूणेकरिते
 से रस्तेलेकेलगाये विषमज्वरसमनहोय ४ कास आसवहवत्रिकहेरी टपीडा पीढाकडना वात पित्तज ॥

भिरगो यक्षराक्षसी ३ खाजपेटपीरुङ्गंधदेहफूटनमिटे गभिनीमलेतोगर्भेष्टहितीय ६ बाधुपनाएयणनेल खसगंध वारियावेल
पाढा भद्रकौटयादोनो गुष्ठनृ कर्कोर नोम सौहृनपत्तोगरासुरेना ७ गंधपसारिणी एरशरायल सवद्रव्यलेवारिशोणपानीमैयक
जेजवाएकशोणरहे शोण १३ सरएकऽ-ध्रटाकलेनाहे ८ तवएकभ्रादकातेलमेछनावरिकास एकाभ्रादकरे जोगीलीहोयतौरस
निचोरिकैश्य स्वयीहोयतौकाढाकारिकेदेय तेलकाचोगुनादूधगऊकादेय ९ तिस्रंकल्कशरिधीस्थीरेपवावेकू स्नाम्बी वंलपुग

नोतपितचपस्मारुमुत्तादयक्षराक्षसां कंइशूलंचदोर्गं भृगुनाणां सुटनं जयेत् ॥ पुष्टगर्भा भूदेदस्पगर्भिएभ्य
मनोभृशं देअश्वगं धावलावित्वयादलावृहतीधय त्वदृष्टातिवला निवश्योनाकचपननवा ७ असारिएपनि
मंयंचकपीदशपुलष्टयक् चतुर्दोणजलेपुष्पापादशेषधुनंनयेत् ८ तैलादकरसंयोज्यं शतावयी
रसादकं क्षिपेत्तत्रचगोक्षीरंतेतानस्माच्चतुर्गुणं ६ शनैर्विपाचयेदेभिः कल्कैर्षिपलिकैः ८ यथक् क
हेलाचंदनंवालाभांसीशैलेयसंधवे १० अश्वगंधवलागलाशतपष्पेइदशरुभिः पणीचतुष्टयेनेवतग
रेणवसाधयेत् ११ तैलेनावनंभगेपानेवल्लोचवोजयेत् पक्षायानं हृत्पलंभं मन्यास्तंभगलग्रहम्
१२ कुडात्त्वधिरत्वंचगतिभगंकटिग्रहं गान्धोर्षेइयवंसेनष्टप्रुर्नैज्वरक्षये १३ ॥ ॥

धवाला जवमांसी छरीला १० संधालोनअसगंध वरियाएएसन सोफ देवदारु शालपर्णी एष्टपर्णी वनउडी वनमंगनगर एसबडर
इरेपल्लैकैकल्ककारै औतेलभं सोधिनेइ ११ उसेनेलकौनासुदेइ औशरीरेपेमलै पिचकारिआदिकर्मेदे पक्षायानढोबीजकड
मन्या गलाजकाउना १२ कूकरा वहिरा लंगडा कमलकडा देहस्वप्ना नउसकाव एसवअच्छेहोय औज्वरक्षयहोइ १३

अंउष्ट्र चंत्रिष्ट्र चंनरोग शिरोरुज पलुरोपीउ पंगुल्व गरुसी १४ बुद्धिदानि विषमवान सवरेहकीवाइ २२ सतेलकेवभ
पुत्रहो मनुष्यधोउहाथीस्वकोहितकहे ११ रछांतजे सेनाएयण दुष्टरे त्योकोनाशकरतेहे नैसयहनेलवानरोगोकोनाशकर्तोहे १६ वान
पलुरियारातेल वरियाराकोजउकाकाय दशभूलकाय कुरथीकाय मवकाय ऊरवेरीकाय एकाटेओइध १० एसवअरुआटसेतेव

अत्रष्ट्र चंरुचंनरोग शिरोग्रहं पार्श्वभूलं चंपंगुल्यं बुद्धिदानि च गरुसी १४ हृत्पाच विषमं वानं जगे त्सर्वो गसंश्च
य अस्पृशभावां ध्यापिनोऽपुत्रं नृयते ११ मत्पौगजोवानुरागैस्तेलादस्मात्सुखी भवेत् यथानारायणे देवो दुष्टदे
त्यविनाशयेत् तथैव वातरोगाणां शनते तलुत्तमं १६ बलाभूलकपायेन दशभूलसूतेन च कालत्ययव कोलानां
काथेन ययसा तथा १७ अष्टाष्टभाग उक्तेन भागमेकं च तैलतः गणेन जीवनीयेन शतावर्य इवारुणी १८ मंजिष्टा कुष्ठशैले
यत्तगरागरुसंधैः ववापुनर्न वामाशी सारिवाद्यं पत्रकैः १९ शतपुष्पाश्च गंधाभ्यां मेलयित्वा च पाचयेत्तुर्विणोनां च
नारीणं नराणां क्षीणैरेतसो २० व्यायामशीलगात्राणां सुनिकानां च युज्यते राजयोग्यं मिदं नैलमुखीनां च विशेषतः बला
नैलमिति ख्यातं सर्वधातामपापहं २१ असारिणी पलशतं जलशोणे विपाचयेत् पादशिष्टः सन्नायाद्यैस्तेलैर्यदधिकतत्समं २२
सेरभर जीवनीगण शतविरि र्नारुन २८ मजीठ कूट छरीला तगर अगर् संधव वच गदासरेला जवामासी सरिवन पिटवन तेजपा
न २६ सौफ असगंध रत्नसर्वको मिलारुके पचावे गर्भिणीस्त्री आधातक्षी एषुरुष २७ अतिश्रमी प्रस्तीको देयहनेल राजा
एजलमपचावैचोया रेहे तवउतारिले रोगकाटेकेव एवरदहीओरतेलहे २८ पलः लेपः सेरो एका एकोरो

गदापराणा रासनरं दुपीपरिसौफ वरियारा गंध अक्षरिणी जयमांसी कटकी ३२ एसवत्रायाचायायल धीभीचाचवेडसतेलमेंपकावे
रसतेलसेजीवजकडना वाक्यया ३३ अर्धोरा सूर्यना आक्षेप उद्धर्तुं पतानक सर्वोर्गकंप्र शीतस्स इसमायादितेलसे एरोगाद्रहो इसव
चातविकारनरहे ३४ शतावरीतेल शतावरी इतौवला इतौपणीगुंड अस्सगंध गुण्ट वेदा कास करेया ३५ सवडेदेदपलवाल्करिचोर्गेनेल
भेपचास्वोयाइहे उतालि ३६ किलखभरतेलप्रस्वभद्रधमेपचावे एकअस्य शतावरिरसप्रस्वभद्रपानीमें पचावे ३७ फिराना

गतापुनर्नवेरंडपिपुल्याशनयुषया बलाप्रस्रारिणीभान्यमांसाकटकयानया ३८ एधमधेयलेभिस्साधयेन्मडव
हिना हन्यातेलमिंदशीअर्धोबालभापचाहको ३९ अर्धोराशोप्रभाक्षेपमुण्ठभापतानको शालाकोपः शिरकापविश्याचीम
रिततथा भाषादिकमिंदौलसर्वयानविचरान्नर ४० शतावरीवलापुमयएणंगधचहलेकः अश्वगंधाश्वदशचविकाश
कुटकः ४१ एषान्तरुपलाभागांकास्कार्यचविषाचयेत् चण्णेनेनीरुपादशेषं सतनयेत् ४२ विषेज्यप्रस्थनेलेन
क्षोरप्रस्थविनिक्षिपेत् शतावरिरसप्रस्थजलप्रस्थचंयोजयेत् ४३ शतावरीदेवदारुमांसोतगरचंदनं शतप्रया
वलाकृष्टमेलाशैलेयमुत्पल ४४ अरिमेराचमथुंकाकोलीजीवकास्तथा एषाकायेसलेऽयालेतेलंगोमयव
हिना ४५ पचेतन्मूर्द्धितेलेननरः क्षीणवृषायते नारिचलभतेउत्रंयोनिशृणुचनत्यति ४६ ॥ ॥ ॥

बरीदेवसरु जयमांसी तगर चंदन सौफ वरियारा कूट इतलायची छुरेलाकमल ४७ शिबिसिद्धिविनावरहो कंड मेराबिना मुखी डरवार
कहीहे इससेइतीलेना कावोसो विनाअसगंध जीवकविनावारहीकंड एसवकथनाभरलेवाल्करिचोइराकोअचमेपचावे
इसमाथेमेलगानेसेपुरुषस्त्रियोमेवृषकगुत्पारहे स्त्रीपुनर्जने जोनिविकारनाप्रसोय ४८ ॥

अंगभूल शिखल कमल पांडु गृध्र सी लीह शेष प्रमेह वडा पतान कवासु ४१ दाह सहित वात रक्त वात पित्त भक्षका सरुधि अध्यान स्क्रि
नर सव इर होय ४२ यद्दशातावरिते लक्ष्मि से आचयेने कस्तू है प्रथम मंत्र निमंत्रण इत्तराउपाटन तीजापाकार्थ एती नोमं न भूल से जाकना
४३ अर्थ पर क सी स तैल क सी सक रिसोरि क्ति सौ द्वियी परि सैथ वमन सिल कने रवाय विङ्ग चीता अट्टसा ४४ जमाल गोत्रा वनत रोई

अंगभूल शिरः मूलं कामली पांडुता तथा गृध्र सी लीह गेणं वमं हान्द्रा पतान कं ४१ सदा ह्वात रक्तं ववात पित्तं भदा रितं अस्तु
गदं तया ध्यानं रक्त पित्तं नियच्छति ४२ शतावरी तैल मिदं क्षासात्रे येन भाषितं उवा रायणी ये स्वाहा उग राभि सुखे भूत्वा
स्वै र्गवदिर शंका अं सर्व व्याधिसाधनी ये स्वाहा रत्न स्पाटन मंत्रः उक्त्वा राजीव नीये स्वाहा इति पाक मंत्रः ४३ कौशी
शालागुली कष्ट सुं बी क्क्षम च सैथ वं मनः शिलाश्मि र्वा विङ्गं चित्र कांडुमः ४४ कंती कौशात की बीजं हेमाब्दा ह
रिताल के काल्केः कर्षे सिते खैल ततः प्रस्थं विपाचयेत् ४५ स्तूय कं पयसा दद्यात् पृथग् विपल संमिगं चतुर्गुणं गवा
मूत्रं दत्वा सम्यक् मसाधयेत् ४६ कश्चितं खाना देन तैल मशी विनाशनं क्षारवत्या तयेत्येत दर्शी सुभ्यं गतो भृशं ४७
बलिन दूषयत्येत क्षा कर्म के रस्मृजं ४८ मंजिष्टा सा रिवा स र्जयष्टी सिकैः पलोन्मि तैः पित्रा खं साधयेत् तैल मभ्यगादात् रक्ता

उत्त ४८ ॥

बीज चोकर हिताल एसव कर्षे कर्षे भर ले कल्करि प्रस्थ
तेल का चोग न गो मूत्र दे भली भांति पकावेः ४९ यद्दत्वा र्नाद आचार्य भाषित है इ सकै लगाने से ववा सी र्का मस्सा गिर य उता है
को र्क्षा एव कर्म सो कष्ट न सी होना है क्षा कर्म सधिये करत है तो मल मार्ग के चक्रे जो विमजाती है इसमें नही आती ४९ बाग रक्त पर कि
तेल गजी व सव रि व न रा ल सरेठी गोम पल पल भर ले तैल मे पचावे इस पिर तैल के लगा से वात रक्त दूर होय ॥ ४८ ॥

कंपपरमदातेल गवारपुत्रका ससुरदेशककल्कारसोकेनेलेमंपकाचिंतो खलुगैरादविचंचीहूहो कष्टपरमरिचनेल हरितालनिगो
थ एकचंदन मोथा भेनशिल जावांसी दोनोहूदी देवदारु ५० इहून कनेरकूट भवाकाहूध गोवत्कारस कथेकथेभले ५२ आधापल्लसि
हिया प्रस्थभत्करुवातेल गोमूत्रइना जलइनादे ५२ इसमरिचादिनेल सेवकल्लकाधवअच्छेहो सेतलकाकालेसगामिदे स्वसरासेल्लआकवी
लादाद भैसहादादसवइहो ५३ धातपरत्रिकलातेल त्रिफला नोमचिएथलाउजोहूदी एकाचंदन रस्तावनतेल लागानेसेमउप्यकेवह

अर्कोपत्रसेपुण्धहूदिकल्कसंसुनं साधयेत्सार्धपंतैलंयामाकच्छविचर्चिन्म ५६ मरिचंहरितालं चतुर्तास्तु चंदनं सु
स्तामनशिलां सौखेनिशं देवदारु च ५० विशालाकास्वीत्तुकल्लमकेपथलथा तथेवंगेमयसंस्कार्योत्कर्षेभितं पृथ
क ५२ विषं चार्धपलंदेयं प्रस्थं च कटुतेलं कं गोमूत्रं क्षिणं हस्ताजलं च क्षिणं भवेत् ५२ मरिचिदिमिदं नैलं सिद्धिं कष्ट
व्रणाय हं जयेच्चित्राणि सर्वाणि पुंडरीकं विचर्चिकां याथास्थिं यानि रक्तांसं दृक् चूयिनायेत् ५३ विफलारिष्टभूनिचं वनिशे
राकचंदन एतेऽसिंधं मनुष्याणं तैलमभ्यंजनेह्यतं ५४ भावयेन्निववीजानि भृंगराजं रसेन हि तथा सनस्य तोयेन गते
लं ह्यंति नश्यतः अक्वातपलितं सद्यः पुंसोऽङ्गधानं भोजनं ५५ षष्ठीमधुकाशीराभ्यानं वधानो फलेऽसृजं तैलं नृणो
कृतं कुर्यात्किं शांशमश्रुणि संधसः ५६ क्वांस्तु श्विन्नं क्वांति कर्षी रश्म्यापितं तैलमेभिद्रुतं ह्यादस्पगां रिद्रुमकं ५७

मशुणहै ५८ पलितपरनिवतेल नीववीजकीभिंगी भृंगरासंभेभावनादे फिरासनसमेदे उस्तोनेलनिकारिनासुलेनोअक्वलके
ल्लकल्लिखे इथभोजनपथं ५९ पुनतेल मुंछी कचिवावैककल्कचोगनाइथ चोगनतेल रपकवि फिरिचोगनानीरयकावै केवलतेल
नवउत्तारिले इसकेनाससेकेससघनहो ५६ कलुतेल इद्रुमपर कंजा चीता चमेली कनेमंतेल पकायलणवै तोवाइशा इहो ५५

पलितपरनीलकादिनेल नीलकेतकीमूल भंगरा कटसैया अर्जुन फूसनकाहीर ५८ चमेलीकाले निल नगर कमलकासर्वीग लोहद्वनम
नी अनास्कीछाल गर्व ५६ त्रिफला कमलकीजः कीकर्मकर्म भरसुवस्वलेके उमनेनेलापचै विमलेकाकाथसमेत ६० भंगेकरसभीगरे सिद्ध
मिते लखगबेवालस्थितहोय अकालयलितअथहो सरुण्डयजिन्हेक शिरेणा एसकप्रच्छेत्ते ५९ पलितपरभंगराजतेल भंगेके समे लेहहल
नीलकाकेनकोकं दृग्गलः वारटकः तथा अर्जुनस्यपद्याणिर्विजकः समनापिच ५८ कृष्णतिला चतुर्ग सुमूलकमलतया
अथोरुजः वियंगु अर्द्धा हिमत्व गुडचिका ५६ त्रिफला पयपंक अकलेकेते ५८ अथ कटुयक कर्ममानेः पचेत्ते त्रिफलाका
थसयुत ६० दृग्गराजसेनेवसिधकेरास्थिरीकृत अकालयलित हंति सरुणोचोपजिन्हेक ५९ भंगराजसेनेवलोहकिट्टक
लनिके सारिकंचपचोफलेकेते लंदारुणनाशनं अकालयलित कांडुमिश्रु नचनारायेत् ६२ इमिदत्तचं शुष्णोय
चेत्तस्तशतोमिति जलदोणेन तत्कायंगुल्लोयात्पादशेषितं ६३ तैलस्याधीठकं रत्नाकटकेः कर्ममिनेः पचेत् ६
रिमेदलवंगाभ्यांगीरिकागुरूप भकेः ६४ मंजिष्ठा लोभमधुकलाक्षान्प्रोधमुल्लकेः त्वजानीफलक धूरककाल
खदिरैलया ६१ प्रतंगधातकीपुष्य सहमेलानागकेशरम् काटफलेन संसिधते लं सुखरुजं जयेत् ६६ ॥

वाकीट त्रिफला सारिव इनकेकल्कभनेलपचै दारुणनाशहो पलितखाज रंजु भमिटे ६२ सुखदंते रोगपर इमिदादिने
सं खिरछाल १८० पल कटके शेरुणभजलभेंपचाइचोप्याइरहेउतारिले ६३ आधाआढकतेलेदेखेलोंगगेदू अंगारपभाष
६४ मजीठ लोधभुरेदी लाही वटकीजइ मोद्या नज जायफल कट्टर कंकोल खदिरसार ६५ पतंग धीपुष्य रत्नायची नागके
शर एसवकर्मकर्मभरले इस्मिनेलपचाइलगावैमोसुखरुगइहो ६६ ॥

गुडदेतेहिमुखं दितीनतीनदिनधान्यसमाधीतद्विकैमधुसुक्तचतुस्रधैयमस्थी ७५ डेनीसरेदिनकादेसोमधुमुक्तै ७५ योनसपरपा
 ठादिगेल पादादूतोहंदीसुरोपीपरि चमेलीपत्रदत्तनि र्नकेत्ससेदुष्टपीमसअक्खोह ७६ नाकरोगपरभट्टकोटयातेल भट्टकोटबादत्तनिव
 सदिजन गुलसीसादि मिरवपीपरिसेधवश्नकेतेलसेनाकसेपीपगिना औनाकरोगदूरह्यय ७७ छिकापरकूदतेल कूदवेल पीपरिसो
 ठि दाष र्नकाकाबा औकल्लकरिनेलवार्योमंपवाइनासलेश्तोक्षीकरोगदूरह्यो ७८ नाशार्थपरगृहधुसदिनेल र्सोईकेस्थानका

धान्यराशौ निरात्रस्थमधुसुक्तसुदाहृतं ७९ पादावेचनिरोमूर्वोपिप्लीजाम्निपल्लवैः दंत्पाच्यते तलसंसिपितं स्यादृष्टपीनसे
 ७६ व्याघ्रीदंतीवचाशिशुगुलसीव्योषसैधवः कफस्पपाचनं तैलं प्रनिवासागरापहं ७७ कष्टविल्वकाणशुर्गशशाकल्ल
 कषायवान्साधितं तैलपान्प्रवानस्यात्सवधुनाशनं ७८ गृहधूमकाणादारुसाग्नक्ताहसैधवैः सिंघसिषरिवीजेभ्रते
 लनासाशोहितं ७९ वज्रीक्षीरविक्षीरं धत्तचित्रकं महिषीनिट्भवरसं सर्वांशं तिलतैलकं ८० पंचतैलावशेष
 तज्जीमूत्रेयचतुर्गुणे तैलावशेषपक्त्तचततैलं प्रस्थपात्रकं ८१ मंधकाग्निशिलातालं विङ्गानि विषाविषं तिक्तकोश
 तकीकृष्टं वचामासीकादृत्रयं ८२ पीतदारुचयद्याहर्बर्जिकाक्षीरकं देवदारुचकार्पाशं त्रैलैले विमिश्रयेत्क्वथं
 तैलमिति स्थातमभ्यगात्सर्वकष्टनुत् ८३

कारुह्यौ पीपरि देवदारु जवाधार कांज सैधव विवशवीज र्नकातेल नाकरोग हर्जोहित
 ८४ स्वकोटपरछमिया सेहुंडनेल सेहुंडकार्तिले दूध मदारदूध धत्तरे औवीनेकारस भेसगोवरकारस तिलतैल ८५ भेसवयवक्यमेल
 दैतवयोगनागोसूत्रदेकिएवातेल ह्नेतवप्रस्थभर्तलेर्भे ८६ गंधक भिलावाचीताभेनसिलहृतालविङ्गान् औनीसकटतर ईरुटजवमासीवच
 त्रिकटा ८७ दारुहदी सुरेदी सज्जी जीरो देवदारु एसवकार्षकभेभर पीसितेल सिक्करे र्सवज्जनेलकेलगनेसेसवकष्टनाशह्य ८३

कनेरकानेखरोमसातनपर कनेरमूल दंतीमूल निरोध्य काटुगैवोलाक्षारऔकेलेकापानीमेतेलसिद्धकरिलगावैतौवालगिराये
८४ इतितेलकल्पनानवमोध्यायः ६ अथासवकल्पनाउदकादिइवद्वलुमे औषधिदेके पाचयेभरिसुहृदमरिमासभरएखनेसेऔष
धिउत्तमहोतीहै औसवअरिष्टमेदोभेदहै १ उसेचासवअरिष्टकाहतेहै उदकादियसार्थमेजोऔषधि दूधोक्तगतिस्सिद्धकरेउसेआसव
जोकोईइवकोकाषमेउसीरीतिसेसिद्धकरेउसेअरिष्टकाहिये इसकेत्वानेकीमानाउपयेभहै २ जहाअरिष्टमेइवकीतो न होय ज

काखीरसिफादंतीतृट्कोशातकीफलं आक्षारोदकोतेलं प्रशासंलोभशातनुम् ८४ इति श्रीशाङ्गधरेनैलकल्पनानव
मोध्यायः ६ इवेष्टचिकालस्थइव्यंयत्साधितं भवेत् चासवारिष्टभेदेत्तत्त्वोच्यते भयजोचिषं १ यदपक्षौघथाबुधसिक्म
घंस्त्रासवः अरिष्टकायसिद्धयातयोर्मानयलोनितां अनुक्तमानारिष्टेषुइव्यंशोत्तलागुं क्षौद्रंक्षिपेजुडांर्द्धय
क्षेपदशमासिकं ३ त्रेयःसीतरसः सिंधुपक्वमधुरइवैः सिद्धमकारसः सिंधुः संपक्वमधुरइवैः ४ परिपक्वान्नसंथान
समभनसुराजगः सुरामंडः प्रसन्नास्याततः काद्वरीघनः ५ तद्वद्योजगलोत्तयोमेदकोजगलाधनः पक्षौसौर
जसारः स्यात्सुरावीजं चकिण्वकाः द्येयतालखजुरैः संधितं स्याद्विवारुणी कं दमूलफलारीनिसस्नेहलवणानि च ७

तहजलादियदा भरेगुग्गुलाभर सहतर्धतला औरइवकाहणगुग्गुकादशांशदेअरिष्टसिद्धकरे १ सिंधुमधभेदकरतेहैजोव

उसेषीतरससिंधुकाहिये जोपकाइकरेउसेमंसिद्धकरेउसेवकारससिंधुकाहिये ४ सुरापसन्नादिभेदधान
चाउर स्वमीरकरिअग्निबलयंउसेउतारेसेसुराएकहिये सुराकेफेनकोपसन्नाकहिये फेनरहितजानीवेरेउसेकंद्वरीकाहिये धनभीकहिये
५ सुराकेनीवेरेउसेजगलकहिये जगलकेघनेभागाकोमेदकपुसकाहिये मेदकयकानेसेजोसारनिकरेउसेसुरावीजऔकएवककहियेः ८

ताडवाखज्जकारसञ्जग्नियंनयोगकरिवाकचालिमद्यसिषकरेसोवारुणीहै कंदमूल फल घृततेलादिलेह लवण ७ एसबइवपदार्थ
मंभ्रनियंनरोगसेमद्यग्निकोउसेसूक्तकहिये ८ जोविनष्टकहेचलितएस लोकेश्वमीउदीमद्यवान्तमधुरइवमे रवइ
गंडारिसंधितकरीमासभक्कीउसेसूक्तकहिये वागुगपानीतैलकंदमूलफल ६ इहेहवौक्तरोनिकरिमासभरमेंसिद्धकरे ७ सुगुडस
क्तकहिये रसीप्रकाण्डपरसकाऔषकासूक्तहोताहै १० यवयानीयुक्तएकदिनसंधितकरे उषेगुबांखकहिये जौयवगरीया नोमें

यत्रइवेभिश्चयंतेतत्सूक्तमभिधीयते विनष्टमस्तनांयांतिमद्यंवामधुरइवः ८ विनष्टेसंधितोयसुनत्तुनकमभि
धीयंते गुग्गुवनासगैलेनकंदशकफलेस्तथा ९ संधितंचाम्लताजातगुडसूक्तंप्रचक्षते एवमेवेशुसूक्तंस्थान्म
द्वोकांसंभवंतथा १० गुग्गुवसंधितंनेयंमाषेर्विदलितैर्वेवैः यवैलुनिखुषैः पक्कैः सोवीरेसंधितंभवेत् ११ कल्मा
षथान्पुमंशुदिसंधितंकांजिकंविदः संशकीसंधिताशेयामूलकैः सर्षपादिभिः १२ उशीरंवालकंपुष्पंकशस
रीनौलमुत्पलं प्रियंगुपुष्पंकंलोध्रंमंजिष्ठाधन्वयासकं १३ पादाकिराततिक्तंचन्यगोधोद्वरः शबी ॥
पर्यटंयुंररी८कंचपयोलंकांचनारकं १४ ॥

रिफायएकदिनसंधितराखेउसेसीवीरकहिये ११ करऔवाचावलपानीमेंरिफावेउसेमाइकहिये उसमाइमें सोहिगईजीए होग लोन
इरतिनचारिदिनसंधितराखेउसेकांजोकहे मरी उवालेपानीमें होगसुरसोंजीए संधाअदरखगस्त्रिचारिपांचदिनए लैउसेसंशकीव
हिये इसभांति आसव अरिष्ववलवनताहै १२ एकपितपर खसासनखस सुगंधवालाकमलपत्र खंभारेनील कमल पद्मएव मास
कंगनी लोधमजीठजवासा १३ पादाविरायता कहली बटजनग गुलरी कच्छर पितपापर स्वन्वमल खर्वल कचनार १४

अनिसेनाकागोद पसवपलपलभले चरणकरि रावनीसपलदेर ११ धवपल्लसोरहपल उरुशेणजल तुलाभराकर तुलाभर
हन् १२ जयगोपीधोभिर्वदनकाधुआदेवासनमें सबकोषधिभरिमुचीनाभरि रोषे रसेडसीरासवकहतेहे रत्नपिजकोनाशकलाहे
इकष्ट प्रमेह चररी कृमिस्तजन एरेगभीत्र च्छेहोय १७ क्षरपरपीपरिआसव योपरिमिरच चावहरदी चीता मोथा विडंग सुगरी
लोभ पादा प्रमेत् अशो कृमि स्तजन एरेगभीत्र च्छेहोय १८ स्वस सुपेदचंदन कूट लवंग तगर जयभासी रालचीनीइला

जंघुशालमलनिर्वोसंप्रत्येकंपलसंमितं भागोस्तूणीतान्कान्वाश्रमायागलविंशतिः ११ धातकीधोडशपलंजलशेण
वयेक्षियेत् शर्करायास्कलादत्वाथोडस्पेकत्तलातथा १२ मासेकंस्थापयेज्जडेमांसीमरिचधूपितेउसीरासवश्लेष्मरक्त
पित्तविनाशनः पाडकाप्रमेत्सर्पेच्छमिगोयहरत्तथा १७ पिप्पलीमरिचंचवंबंहरिद्राचित्रकोपनः विडंगं कमकोलोभयाद्य
धान्यैलवालुकं १८ उशीरंचरनकुट्टलवंगंतगरत्तथा मांसीन्वगेलापत्रंचत्रियंगनोगकोशर १९ एवामर्षपलान्भागान्स्वस्थ
चूणीकृतान्छुभान् जलशेणषयेध्विन्वादद्याकुत्तलान्नयं २० पलानिदशधानक्याश्रमाषष्टिपलांश्चिपेत् एतान्येकान्
संयोज्यभज्जोडेविनिक्षिपेत् २१ शालाग्रान् सतस्यपायमेदग्नयेक्षया क्षयगल्मोदंरक्तंश्रेयन्दूणीयांइनागरं अंशेषस्त्रिंश
येच्छ्रीप्रपिप्यल्पाद्यासवत्तयं २२ लोहसूणीकिकट्कं त्रिफलान्वयवानिका विडंगंचित्रकंसुखंचगुः पलमिनंष्टयक् २३ ॥

यची तेजपान पुष्प त्रियंगुवागोदी नागकोशर १९ आधाआधापललेकोभिहीनबुक्कीजलशेणरेमडारि तीनतुल्यगुडेय २० दशपल
पुष्प सहियसदाय एतवमारोकोवासनमें एकमासराषि २१ जवजानेसुवचोयधिएकतनसेगई तवखिलोबेचगिबलरेषिकैतीक्षर
ग्रहणी पाडुवशी ग्रहणीपरिआसवधनरेगोकोजलरीदूरकर २२ पाडुपरशेस्त्रिआसव लोहसून् त्रिकुय त्रिफला अजवाइन विडंग चीता मो

रनस्वकाङ्क्षेकौ चोसठियलसत्तगुलाभगुउदेडइशेणजलेदे २४ घतपात्रमेकमासिराषियहवन्तिकलोत्त्रासवपीनेसे २५ पां
 दुयोरफुलनागुलम अशकिएयिलहो स्वाज कास आस भागदर असुविग्रहणी सुशेग एगेगनाशहोई २६ ज्वरपरकौरियारिष्ट करेयाछल
 पाष आधातला महुआ खभारीछालदशदशपल २७ चारिशेणपानीमेपचायशेणभरिरहेउता रिले बीसपलधवफूलतुलाभरमादी

चूणीकृत्यततः शोइचतुःषष्टिपलंक्षिपेत् दद्यात्तुडतुलांतत्रजलशेण कयंतथा २४ घतभांडेविनिक्षिपदध्यासमानत्र
 कम लोहसुवमिंदमर्त्योःपिर्वेक्त्तिकारंपर २५ पांडुअष्टगुलमा निजठगुनपरशेसारुजं कुहलीहागय कडूकास
 आसभागदर २६ अरेचकंचग्रहणीइशेगचविनाशनं २६ गुलाकुटजभूलस्यमृषीकार्धतुलांतथा मधूक
 सुषकाश्मयोभागान्दशपलोन्मितान् २७ चतुर्शेणेभसः पक्ककाथयेइशेणशेषिते धातक्वाविंशतिपलंगुड
 स्यचतुलांक्षिपेत् २८ मासमानंस्थितेभांडेकुटजारिष्टसंज्ञकः ज्वरान्नशमयेत्सर्वोन्कुर्योतीक्ष्णं धनंजयं २९
 विडंगंयथिकंरालाकुटजत्वक्फलानिच पाटलंवाल्क्यकंधात्रीभागान्यचपलान्दृथक् ३० अष्टशेणेभसः
 पात्काकुर्योशेणवशेषितं पूतेशीतेक्षिपेत्तत्र श्वोडं पलशतत्रयं ३१ धातकीविंशतिपलं त्रिजानंदिय
 लंतथा त्रियंशकाचनारणासलोद्याणपलंपलं ३२ "

केपात्रमेमासभरार्षे यरुक्कृज्जारिष्टसवज्जारिद्रिकिखिनितीक्ष्णकौरे २४ विदधीपरविडंगारिष्ट विडंगपीपरामूल रासन कौरे
 याश्चल एकएकपल पादा एलावालछड आवरा एपांचपांचपल ३० आठशेणजलेभेधेचइशेणभरदेउतारिले ठंठाभरतीन
 सेपलसहत्त ३१ बीसपल धवफूल तजपन्नज इलायचीदियल गौदी कचनार लोथयलयलभर ३२ " " " "

त्रिकुण चायपल नृणाककिंभारे ध्यतभजनमे एकमासभरिणसे ३३ जेसा अग्निवल्देवेने सोपिलावेनौ विरधी इहो वरुसंभपथरी प्रमे इ
अप्यहीला भगंरुंगडमाला हतसंभ इसविंदंगारिष्टसिएग अक्खोइ ३४ अमेस्परदेववारुआरिष्ट अर्यलला देववारु नृसा ३५ पय मने
४ इइतन रुत्तनि तगर दोनेत्तरी ३६ एसन विंदंग मोथा सिसंवेर अजेन क्कादपापल अजवाइन वारेया ३७ चंदन शर्चे कडकी ची

[illegible]

१९६३ कुटानपाए ८
आरआरपल पानी ८ दोणमेंपचार्वे ३० जबदोणभरहेतोएओबधिगरे ओपुषा ३६ पल नीनजुला सत्ता ३८ निऊवा ३९ पल
तत्त पवज श्लाचची ४ पल धियंग ४ पल नागकेशर २ पल ३६ इनसवकाछरणेदे धीकिवरुनर्मेभासभराधे किरपियेनो
१ बभेहकोहने ४० वातरोग मटणी अर्श मूत्रकच्छनाओ इसदेवरा ४३ रिष्टसे दादकष्ट अच्छाहो ४१ "

कुहपरतदिरागिह्वेगभर्षत्तलदिवराहृद्यर्नजुलावकुची२२पल४२त्रिफला२०पल४२
 * एन्नेषधिदो४३सहन२जुलाखंड१जुलाधवफल२पलकंकोलनागकिशोर४४जायफल
 लोणझलायचीतजयनजएसवयसपलभरयोपरिपल४४
 दोकेवासनमासभराविकैपियेसमतकुहृद्दोगपोड्याविद४५जुल्मंगयिकासपित्तदोएसवजाययहएकखदिरागिह्वसवकुहृदकोषोनाहे४७क्षरंपर

त्वदिरस्सनुलाभेदेव सरुचतत्समं वाक्चोदादशपलादवी स्यात्पलविंशतिपलाचाष्टदशेणैभसः पंचेत्
कषाये देशेण शेषेण हृत्ते शीते विनिक्षिपेत् ४२ तुलादयमक्षिकस्य तुलैकाशर्कममता धातव्या विंशतिपलं कपोलनागकेश
जातो फलवर्गो लात्वक्षत्राणि एथ कष्टयकपलो भित्ति क्षायाद्यात्पलचतुष्टयं ४३ द्युतभां देवि निक्षिप्य मासा इध्वं पिवे
त्तरः मृदा कष्टानि हृद्भागं पांडुरोगा बुदा निच ४४ गुल्मग्रंथिक्तमौन्का संतथा क्षीहोदं जयेत् राखो वै स्वदिगारिष्टः सर्वकष्ट
निवारणः ४५ तुलादयं च वधूलं च तुं देशेण जले पचेत् देशेण शेषे रसु शीते गुडस्पृचं तुला क्षिपेत् धातकोषोऽशपलां क
श्चां विप्रलिको तथा जातीफलानि कंको लं त्वगोला पत्रकेशं ४६ लवंगमरिचं चैव पलिकालुपकल्पयेत् मांसभां डे त्विदं स्या
यं वबूलारिष्टको जरेत् ५० क्षयं कष्टमतीसारं च मेहं श्वांसकासजिन् दक्षिणगुलां धिदेशे जलस्य विपचेत् सुधी ५१ पाद
शेषे कषाये च हृत्ते शीते विनिक्षिपेत् गुडस्पृचं तुला पत्रकेशं ५२

वदुलापिष्टवदुलादिष्टल ५ ओणपानीमिप

चारश्रेणभरातिबंदाकरिल्लाभरणुदे ४८ ध्रुवफूल १६ पल योपरि २ पल जायफल सीतलचीनी तज पन्नज केदार ४८ लोंग सरिच एयल
पलभरपीसिकेडारि मासभरमाबी केपान्वमें एति रसवहरारिखसे ५० क्षर्ब कुष्ठ अनीसार प्रमेह श्यास कास सबडूरहो ऊरुक्षतपरश
भारिए अर्धतलादण २ डोणजलमे पचाई ५१ चौध्याई एखिबंदाकरि एंत्रोषधिउरिगुगुला तज इलायची पन्नज केदार ३२

प्रियंगु अथवा मकरा मस्ति पीयर्षि विडंग एसव एका एकपल मादोपात्रे भेद्य रिक्तां करि ५३ ग्रहमत्वा सुनके सुशकारिमास्मरि
एधेनवपियेतो उरुक्षत शईकास गलेकभीतरी रीग इरहोई ५४ यहशक्षारिखलकरे मलयोधे तेहिता रिष्ट अशोपर हरकारी कृष्ण २
तुला ४ शेणपानी भेपचाई ५३ चोथाई रूडता रिष्टा करिगुड २०० पलदे धवमुष्म ५६ पय ५६ सोहि पीयर्षि पीपरामूल चाक्रीता पत्रमरुला

प्रियंगु मरिचं कलां विडंगं चेति दूर्णयेत् पृथक् पलो न्मिते भोगे सुतो भोगे निधाययेत् ५३ स्मंत नोद्य हयित्वा पिवेज्जात संसृत
तः उरुक्षत क्षयं हंतिकासश्चास गला मयान् ५४ शक्षारिष्टा द्युः प्रोक्तो वल्लभ लशोधनः ऐक्षित कत्तला मेकां वगुं शैणेज
लेपयेत् ५५ पादशेषे सेष्टने शीते पलशतक्यं दद्याद्गुडस्य धानक्या पलशोऽशकं मंत ५६ यंच कोलत्रिजातं वनिफला वनिभि
येत् ५७ रिष्यिन्वा पलाशेन ततो भोगे निधाययेत् ५८ आसादूर्ध्वं च पित्तो गृह्णायाति संक्षयं ग्रहणीयां इह द्रोगं हीत्वा ग्लोदराज्ये
त कष्टशोफा रुचिहरो रोहिता रिष्ट संचक्रः ५९ दशमूलानि कुर्वीत भागे न्यचपलेऽप्यक् पंचविंशत्यलंकयो चित्रकं
पीष्ठांतथा ५६ कयोदिंशतपलं लोघं गुडचीतत्समाभवेत् पलेः षोडशभिर्धोत्री रविसंखेदे गुलभा ६० खरि
रोवीजसारश्च यथ्या चेति पृथक् पलेः अष्टभिर्गुणितं कुष्ठं मज्जिष्ठा देवदारु च ६१ विडंगं मधुकभागिकपित्येक्ष
पुनर्नवा चयं मांसी प्रियंगुश्चक्षारिवाक्क मजीकं ६२ ॥ चो नज त्रिफला एपलपलभले चूर्णे करि सवस्ववासन भस्मिरे ५० म
हीनाभपी छेपियेतो कंचके रेगग्रहणी पांड हृद्रेग पिल्लो गुल्ल ओकष्ट शोध मरुचि इसरो हितारिष्ट से इरिहोई ५८ क्षईचमे
परदशमूला रिष्ट दशमूलपा चपाचपल चीता पुष्यक्रामूल पचीशपचीश पल ५९ लोधा २० गुच २० आनरा ५६ जवासा १२ पल ६० खेर
विजैसार चउआठधा पल कूटमजीठ देवदारु ६१ विडंग भार्गी के भावहराण सुपुं रेताना वज्रवामा सीमकरा समित्वन कलज्जरा । ६२ ।

का

नशेयमेवर्षीवीन रासनपौपरि सपारीकहर सदी लोफपमाक नागकेसर ६२ मोषा रंजव सौहिद्रुनोकरसरेषा मेदा महामेरा काकोली स्थी
रुबी ६४ एसवड्डरुपल सर्वधोषधीनका अठगुनाजलरेधोढावेजव चोषा रेहिजाड तवउतारिमादीके पात्रमेधरे ६५ दाषसाठ
पलचोगुनाजलरेधोवेचोषा रेगौनचरणरुहे तवढढाकरिपहिलेकाथसायमिलोवे ६६ सहतपल ३२ गुडपल ४०० धव

त्रिवृतारेणकावालापिपलीक्रमुकः शमी हरिशशतसुष्माचपचकनागकोशरम् ६३ सुस्तमिंद्रयवंशुर्षीजीव
कर्षभकौतषा मेदाचानामहामेदाककेलोकरद्विचिके ६४ कुर्यान्पृथधिपलीकान्यचेदष्टगुणेजले चतुर्थीश
स्तंतीत्वाभ्रज्जंडेसंतिधापयेत् ६५ ततः षष्ठिपलाशक्षापंचेन्नीरेचतुर्गुणे त्रिपादशेषसीतंच भवकाथेस्तनक्षिपेत्
६६ षाविंशत्पलिकंक्षोड्द्रद्याष्टचतुःशतं त्रिंशत्पलानिधातवयाककोलंजलचंदने ६७ जातीफलं लवंगं च
तंगेलापत्रकेशं पिप्पलीचेतिसंष्टणोभागे द्विपलिकैः पृथक् ६८ शाणमात्रांचकल्लरं सर्वमेकत्र
निक्षिपेत् भ्रमोनिखातयेज्जंडेतनोजातरसंपिबेत् ६९ कतकस्यफलं शिम्बारसंनिर्मलतानयेत्
ग्रहणीं मरुचिंशूलं श्वासकासं भगंदरम् ७० वातव्याधिं धयं छर्दिपांडुरोगं च कामलां कथा
न्यशोसिमे हांश्चमंदागं मदरातिच ७१ ॥

उष्णफल ३० शीतलचीनी लवसांचंदन ६७ जायफललौंग तज श्लायची यक्ज केसर पौपरि स्नसवकाहरणे दोपल ६८
कल्लरिचामासे सवड्डकेकस्त्रिमीमेडारि धरतीखोदिगाटे उसमेकारसपिये ६९ निर्मलीतगकेडारेतीरसनिर्मलहोजार
इसकेपानकरनेसेग्रहणी बह्विश्चलश्वासकास भगंदर ७० वातव्याधिं छर्दिपांडुकमल कल अशो प्रमेह औभंदाग्नि उदरोग ७१

सिक्ताप्रभेत् पथरी मूत्रकृच्छ्र धातुक्षय एरोगजाय उर्वलमोधाज्ञाय कोकिनपुत्रजनेयसदृशमूलारिष्ट तेजधातुवलयवेताहै ७२ इति श्री
शार्ङ्गधारासुधाकरदशमोऽध्यायः १० स्वर्णदिभ्यालशोधन सोना चादी आस्तावा सोसा रांग लोह इनसोतोधातुभके शोधने की रीतिकक्षतेहै
२ सोना चादी पोतरतावा लोहा पांचोके सुस्मयत्रवना आगिमेंलातपाइतपाई तेसमट्टेको चजीमेंधुगाई २ गोमूत्रमें कछ्छीकाधमे २
सबमेंतीनीनवाखुकावै रसीभाति स्वर्णोदिधानुशुषहेतीहै ३ सीसा रांग जस्त एगला रकेवानपाइके पूवोक्तपदार्थनिमेतीनीननीन

शर्करामशरीरमूत्रकृच्छ्रधातुक्षयंजयेत् कृशानापुष्टिजननोवंध्यानांगर्भदः परं अरिष्टोदृशमूलाख्यलेजः शुक्राः
वलयवदः ७२ इति श्रीशार्ङ्गधरेणविरचितं संधानककल्पनादृशमोऽध्यायः १० स्वर्णनाएरागाणिनागव
भोचनीक्षणकं धातवः सप्तविज्ञेयास्तस्मान्शोधयेद्धधः २ स्वर्णनाएरागाणां यन्नाएणोप्रतापयेत् निषिन्ने
तन्नतन्नानिर्लेतत्रेचकांजिके २ गोमूत्रेचकलित्यानां कषायेच त्रिधा त्रिधा एव स्वर्णे दिलोसनां विष्
किः संप्रजायते ३ नागवंगौ प्रतप्तौ वागलितौ निषेचयेत् त्रिधा त्रिधा विष्किः स्याद्द्विविदुर्गधेनच त्रिधा
४ स्वर्णेस्पक्षिणं सूतमन्धेनसहमर्दयेत् तृजोलकसुमगंधनिदग्धादथरेत्तर ५ गोलकं चतनोर
ध्वासएवदृढसंयुटे त्रिंशद्वनोयसेदद्यात्यवन्नैवचतुर्दश ६ ॥

खुगने फिरतीनवारसदाखुग्धमेंबुगावै ४ सोनाभालेकीविधि सुफसोना निस्काइना सुप्रपाण नीचकेरसमेंघोदीगोलीकर
गोलीसमानगंधपीसितरेफपरधरै ५ मदीकेयोसरवाले एकनीचेमेंगोसाधारिदूसराऊपलके उसपरकरोकायरीदीकरि
२० बिनबाकअकीआचंदेई २सेसरावसंपुठकहेतेहै रसीप्रकार आगिसेनिकारिसंपुठकरिचोदह्वाएआचंदेई ६

घोषतिष्ठां च देगंधकदेने से स्वर्णे भस्म निर्वह्योतीहे पुनर्विधिसोनेकी १६ मासे सोनागलाइमासभरि सीसाडा रिउता रिठंडा करि १७ चर
मकरे नीदके रसमें गोला बांधैनीचे ऊपर गंधक धरि ८ गोले के समान सराव संपुट करि १० गो इराकी ओं चंदे तव सोना निरुत्थ भस्म
हो ६ तीसरा कचना एकर समें पाए गंधक समान भिलाय एवल करे जव उजली होत वसेने के पत्र पर लगाने १० फिर अक्नार की छाल
भी सिके उस गोले पर बहु जसी लये है कि दो घमिया मिर्ची की वना एक में धरि ६ सरै करि दिकि १० कस कै कपरी दी करि सुखाय कड़ी आंच दे

निरुत्थ जायते भस्म गंधो देय पुन पुनः कंचने गलितं नागं घोडशो नः निक्षिपेत् १७ चूर्णयित्वा तथा म्लेन घृ
ष्मा कृत्वा च गोलकं गोलकेन समगंधं दत्वा चैवाधगे नरं ८ सराव संपुट दृत्वा पुन विशदनाय लेः एव सप्त पट्टे हे
मनिरुत्थं भस्म जायते ६ कंचनार से घृष्मा समस्त कगंधकं कजली हे मपात्रा एले पुये त समया तथा १० का
चना एत्व चः कल्क मूषा युग्मं कल्पयेत् दृत्वा तत्संपुट गोलं मृण्मूषा संपुट च नत् ११ निधाय संधि गंध च कृत्वा
संशोष्य के किलेः वल्किः खतं कुयो देव दत्वा पुट नयं १२ निरुत्थ जायते भस्म सर्व कार्य सुयोजयेत् का च नार
प्रकारेण लागली हंति कंचन १३ ज्वाला मुखी तथा हन्या तथा हंति मनः शिला सिला सिंदूर सो ऋण सम
गोर के हृदय के १४ सप्तैव भावना दद्याच्छोषयेच्च पुनः पुनः ततस्तु गलिते हे त्नि कल्कोयं दीयते समः १५ ॥

रसीतरह त्रयमक होरी ति से नी न च्वांचंदे ११ जब जिलाने से वजिये तो उत मम सम है जैसे कचना रविधान मरणा है ते से हो करी यारी मे भी
मरता है १३ ऐसे ज्वाला मुखी कहें चरण से भी भस्म होना है ते से मे न सिल से चोथा मे न सिल से दूर सम ले मदार दूध में घो टि १४ सान वा ए टि
घोटि सुबाई सुबाइले तव दशमा से सोना गलारे चरख खाने लगे तव दशमा से वह मे न सिल सिंदूर क सिक् चरण सोने में छोड़े ॥ १५

बुवानीदेकैतीत्र आचवेजवतकवहवुकनीनजलिजाइ नवतक आचवे इसी भौतिबुकनीदेतीन आचवे इती सोनाभसाहोय १६ पावयाकव
तकी वा कुकुलकीबीदोनोसोनेकेपत्रकरिलयेडेजपनीचे १७ इसी केसुमानंगंधकवर्णभीवोनोआरथरेतवसंयुटकरे किरथोरोसीभूमि
खोरिपांचकरेमेंफूकरे १८ इसप्रकारनववार आचवे इशमीचारवी आच ३० कंदेकीदेइ इसीप्रकारसोनाभसलेतादे ६ इतिसणोभस्मभस्म
रवथत्तारविधिः एकभागतवकियाह्मनाल जभीरीनीब्रकेसुमेंधोटिजभीरीकेअभायमेंजोखट्टानीद्विमिलेसोलेइतत्ततीनपाणांचारीकापत्र

पुनर्येसेदतितारंपथाकल्कोविलीयते एवंवारत्रयंदद्यात्कल्कोहेममृतिर्भवेत् १६ पाएवतमलेलियेदशनाकृच्छ्रो
नैवेः हेमपत्राणितेषांचप्रदद्यादंतरांतर १७ गथदृणसमंस्तत्वासरवयुगसंसुटे प्रस्थात्कुच्छ्रपुटपंचभिर्गोमयो
तपलेः १८ एवंनवपुटदद्याद्दशमंचमहापुटं त्रिंशदनोपलेखंजायतेहेमभस्मतां १६ भागेकतालकंमर्घयाममस्लेन
केनचित् तेनभागत्रयंतापयन्नाणियलियेयेत् २० धत्वाभूषापुटेरुध्वापुटेत्रिंशदनोपलेः ससुरृत्यपुन
स्तालेष्टत्वाब्रुध्वापुटेऽपचेत् एवंचतुर्दशपुटेस्तारभस्मप्रजायते २१ सुहीक्षीरेणसंपिष्टमाक्षिकंनेनलेपये
त् तालकस्यप्रकारेणतारपयन्नाणिवृद्धिमान् २२ पुटेचतुर्दशपुटेस्तारभस्मप्रजायते अर्कक्षीरेणसंपिष्टो
गंधकस्तेनलेपयेत् समेनारस्यपत्राणिशुष्मास्तन्यम्लद्रवैर्मुहुः २३ ॥

करियहिलेकहीकजलीचांदीकेपत्रपरतलेऊपरलेपकरे २० मसाग्रचंमे २० चैनवाकंडमिफूकरे मृषायंत्रेति रोयरियासुनाकि
सीचनारएकमेव लक्ष्मिदेसरेचदिकपरेदीकरिसुखाइले ऐसेहोप्रवोक्तकजलीलेपलेय १६ वारमृषायंत्रमेंफूकेतवचादीभ
साहोइ २१ इस्सरीविधिः ध्विगियासेहुइकेइधमेंतृपाभाषीपह्मभयोठितिगुनेचांदीयत्रपरलपटेलोक्तप्रकारवोइह

भस्म होय २ इति दृष्ट्या भस्म अथ योत्तर पीत रक्ते पत्र पत रेकरि खदा ई दे दे अर्घ्यो भो तिमो जै ज व व क ने लु गौ त व उ स प त्र यै पीत र समान गर्भ धर
मृदा के इय मे कजरि करि हवौ कपत्र पल पेदि २३ मूव सं उटकारि गज प्रद मे अच दे गज पुष्क के जोग ज भर्ग ल गू गढ हा हा य भ र को गुला शे
भेनो चेतक खो दि गो र द्या भ र्विो च मं यं त्र थारि फुक दे ऐ से सी दो अत्रो च मे नि अत्रे पोत भरे २४ योत्तर की मार के को ख ता वा भी भस्म हो तो हे म
द्वारय वा छरारे पय व भि व डी र स्त मे गंध कर्पो से ता च वा पोत र य त्र प ल गा इ ह्वो क्त रे ति से क्क के तो तो नौ भरे २५ ताम्र भस्म इ म ली पत्र

ततो मूवा पुटे धृत्वा पुटे रुज पुटे न त एवं पुठ दये ने व भस्मां भवति क्रवं २६ आरवत्कां स्प मये वं भस्म ता आति
निश्चितं अर्क क्षी एव राजं स्या क्षीरं निरं छेदिका तथा ताम्र रीति ध्वनि वधे समं गय कयो गजः २७ सुध्मा निता म्र पत्रि क ता व स्वे
दये वट वा स त्रय म भ्ते न ततः खल्वे विनिः क्षियेत् २८ पादांशु त कं दत्वा या म म भ्ते न म र्दयेत् त त उ दृत्य पत्रा णि ले पये क्रि गु
णेन च गंध के ना म्ल दृष्टे न त स क र्गो च गोल कं ततः पिष्ठा च भी ता क्षी चां गे रें च पु न र्ने वा २९ दत्वा ल्के न च हि भौ लं ले प
ये कं गु लो न्नि तं धृत्वा त फो ल कं भां डे स ए वे ना व री धये त् २९ वालु का भिः अष्ट यो थ वि भू तिल व णं व भिः दत्वा भां डे स ए
मुं शं तं तं च ल्हा वि पा चये त् २९

को सु द इ स म प त्र क रि ता म्र य त्र प र ख व रं का पा नो दे तो न दो ला यं त्र की अत्रो च रे ख ल क रे २९ तो वे की
चो थारै पा र दे प त्र भ र नो द्र में घो टे फि र तां वे की दू नो गं ध क नौ द्र में घो टे फि र तां वे की दू नो गं ध क नौ द्र में घो टे वि प त्र य त्र ले प गो ल
वां धि म को र वा त्र म लु नि थो वा ग दा हर्ता २९ इन की पो री से अ गु ल मो री गे ला प ल पे ट एक वा स न ध रि मु ख स रि दे २९ त व एक व इ वा
स न की पैं दो में छे द क रि उ स प र अ भ र ख ध रि थो रे वा ल् भू र्ति स प र लो न का या नो छि र क प हि ला ग स न ध रे फि र वा ल् भ रिलो न का
पा नो दे द्वा र हे ली स मे व ल् वा स न त प जा ई त व व दे वा स न का मु ह्मु दिक प री क रि च ल्हे ये ध रि ल क री की अत्रो च दे ई २९

क्रमहृद्वाग्निना सम्यक्वावधामचत्तष्टयं स्वांगशीतलमुष्ट्यमद्वयेच्छुराण्डवैः ३० दिनैर्वांगोलकां कुर्यादध्रु
गंधेन लेपयेत् सद्यतेन ततो भूषापुटेन गजपुटे पचेत् ३१ स्वांगशीतलमुष्ट्यमनतामशुभमवेत् वातिश्रा
तिलमरेकं न करोति कदाचनः ३२ तांबूलीरससंपिष्टशिला लेपात्पुनः पुनः द्वाविंशद्भिः पुटेनो गो निरुह्य
याति भस्मात् ३३ अथ त्वचिं चात्वकूर्णे च तथोशेन निक्षिपेत् मृत्पात्रे शविने नागे लोहद्राव्या प्रचालयेत् ३४
यामेकेन भवेदस्मत्तत्प्राचमनः शिला कांजिकेन वयपि श्वापचेददपुटेन च ३५ स्वांगशीतं पुन पिष्ट्वा
शिलाया कांजिकेन च पुनः पचेत्सुरावाग्भ्यामेव बहिष्षे मृत्तिः ३६ मृत्पात्रे शविने वंगे चिं चा
अथ त्वचो रजः क्षिप्वा वंग च तथोशमयोदाव्या प्रचालयेत् ३७ ॥

गलेनववहीदोनो छालका चूनगरिदुगिलोहेकीकलछीसेचलानाजाय ३४ ऐसेपहभरघांचेदेतवसीसेकीभसलेकैवण
रमेनसिलदेकाजीमेघोटिसुखायगजपटघांचेदे ३५ ढढाभयेफिगेमनशिलकांजीदिपीसिगजपटदे ३६ ऐसेमाटघांचेदेतवसीसाभेजे
सावसेकमदेतोनीसकताहे ३७ वंगभस रंगाभादीकेवासनेंगलारचोथारपीपरिघमलीछालकाटलदेलाहेकीकणीसेघोट ३८

दोपहुर्योटेतोरागाभसमहोय संगभसमनुत्ताहरतालशरनिचूकेरसमंघोटि ३८ गजपुटकोप्रोचदे फिरनिकारनीटूकरसओदशांश
हानालदेयोदयहरभर ३६ फिरउसेरुक्कदेस्सभातिदशआंचदेतवंगतेपारहोय शुचलोत्पतिसकाचरण पातालमूली ध्येपातालमूलीविनमयर
हृदकोस्समंघोटिआंचदे ऐसेतीनआंचदे ४० फिरयीकुमारकोस्समंघोटिगीनआंचदे फिरकुंरेयाधालकेकाथमंघोटिछांचदेनोलोहभसहो

ततोधियामभान्नेणवंगभसप्रजयते अथभससमंतालं शिवास्तेनविमर्देयत् ३९ ततो गजपुटेयत्का पुनरस्तेनम
र्देयत् तालेनदशमांशेनयाममेकं ततः पुटेत् ४० एवं दशपुटेः पञ्चवंगस्तु मियते क्रवं शुष्कलोहभवं दृष्ट्वा ताल
गरुडीरसेः मर्दयित्वा सटे दहो दद्यादेवं पुटत्रयं ४० पुटत्रयं सुभार्यश्च कुवर छिन्नकारसेः पुटषडं ततो दद्या
देवं तीक्ष्णमृतिर्भवेत् ४१ क्षिपद्वादशमांशेन दशं तीक्ष्णतृणैः मर्दयेत् कन्यकाशवेयामयुग्मततः पुटेत् एवं सप्त
पुटेर्मल्लोलोहद्वारमवाप्नुयात् ४२ रसेकुवर छित्वा याः पातालगा रुडीरसेः सत्येन चार्फे दुग्धेन तीक्ष्णस्यैवं मृ
तिर्भवेत् ४३ स्रज्ज्वलितगुणं गंधदत्वा कुर्याच्च कज्जली दयोः समं लोहद्वारैर्मर्दयेत् कन्यकाश्वैः ४४ ॥

ताहे ४१ पुनः जित्तनालोत्तहोति स्कावारवाअंशसिंगरफदेधोकाकोरसमंदोपहरयोटेप्रोचदेयो होसीतआंचदेतोलोहभसहोताहे
४२ पुनः कुरेयासवाछाह्वारसमेवात्वीकेदूधमंवाभदारसमंसिंगरफपुक्तकिसीमंघोटिसांतआंचदेतोलोहभसहोताहे ४३ पुनः
पारकोइनो गंधकमिलाद् कजलीकरि कजलीरकेसमानलोहद्वारैर्मर्दयेत् कन्यकाश्वैर्मर्दयेत् ४४ ॥

दोषस्योद्यिपिंशवनोव नोवोकोणाचो नोवोदि ४३ वाखिरोद्यमंगरधिपनो व्याजनां रिकोकेरुसुरेपात्रसेयपिअनाजरा
मंनानरिनज्जरिकेनिकास्येरे ४४ एतयपिसिनेकोवा ४५ वल्लभा ४६ निपाउरेसेलोसुनिरेण रोसेलोसुर्णदिसचधात्तमरिये ४७ तोसरिविधिमेनसिन
पांधकमसारकेरुधंमंस्वलाकरिये रसोत्रकासातधातुमेवोत्तिसपातकोवा ४८ द्वाचनेदसेधानभसो ज्ञातहि यथेपेनिनिअरेजेसेगुरुसमवव
कह्तासे सोनात्रामाधी वत्तिया अम एसुसुसा शिल्लजोन रसिगल वपरिया एसातएपाथानसे ४९ सोनात्रा माधी सोधनपाए सोनागत्तयामापी

यामसुगमंतनः पिंदंक्रत्वागाभ्रस्यपात्रके धमेधत्वा रुवकस्य यत्रैराक्षादये सुधः ४१ यामार्फिनोसतांभूयाधान्यराशो
न्यसेततः दत्वोपरिसरावंच विदितांते समुद्धरेत् ४२ पिस्वावगालयेधत्वा देवंवारितं भवेत् एवं सर्वो गिलोत्सुनिस्व
णोदीन्यपिभायेत् ४३ शिलागधाकर्केदुग्धाक्ता स्वणाद्यासन्नधातवः म्रियते वादशयदेः सत्यं गुरुवंचोयथा ४४ साक्षीकं
गुणकाभौचनीलांजन शिलालकाः सक्वाथैर्वितेया एतास्सन्नोपधातवः ४५ भाषिकस्यत्रयोभागा भागो एक संधवस
च मातुलंगश्चैवोयजंवीरोत्थयैः पचेत् ४६ चालयेत्लोहपात्रेण यावत्पात्रं सुलोहितं भवेत् ततस्तु संशुद्धं स्वर्णमा
क्षिकममृशति ४७ अन्यच्च कुलात्थस्य कषायेण दृष्ट्वा तैलेन वा पुटेत् तत्रैका एवाजमूत्रेण म्रियते स्वर्णेनाक्षिकं
४८ कर्कोटीमेव संशुत्यै ईवेजंवीरेरसेः भावयेदापयेतीत्रे विमलाशुभ्रनिध्रवं ४९ तोनभाग संधव एकभाग

विजोरावाजंभीरोकास ५० लोहपात्रमंगरियागिर्य रचदाशुघोटे जवपासनलालचोजाशतवजानेवी सोनात्रयामापीशुद्धसोम
ई ५१ तवउत्तरिच सकुलाथीकाथतिलतेल समानलेघोदि वामद्वौ वा घ्यागमूत्रमेघोदि ५२ कंठेकीत्राचमेफूकदेतोषीनामार्थामर ५३
त्रयागपीवंध्यालिकसां मेदासिगीरुनकेनाजभीरेकेरुसंमेघोदि तीव्रघ्याममेधरेतो द्रव्यामापीशुद्धसेरे खोमारुतागनामापीकीनरुजना

तत्तियाशोधन विलास्वीट त्वतियाकादशांश सुहागादेयोऽटिमध्यमञ्चाचदे फिरद्दीकापुटेदूकै फिरसहनपुटेदूकै तवमुचसोय ५४
अनकाशोधनभाण कालअभृक कालकरितायाइइधमेव्वाइधृणोकविोरार् ओकोइलवार्इमिलाइआवयहरघोरैतो शुद्धहोयतव
वत्त्वमेवाधिधानओअन्नककोजीमेंजरिमले ५६ फिरछानिवासुनमेंधरिजवथिरास्काजीवहाइ अवरत्वसुत्वाइमदारइधमेदि
नभरधुबारदिकियाकरे ५७ मदारयचमेंल पेरगजपुटञ्चाचदे रेसेसोमसारइधमेघोटिघोटिसातपुटेदेई ५८ फिरलगरदजराका

विष्ट्यामर्देये गुत्थंमार्जो एकवापोतयोः दशांशंरंकाणंद्वापुटेन तत् पुटेदूपापुटेधौ इदेयं तत्थवि
शुभये ५४ कालान्नकंधमेव न्होततः क्षीरेविनिःक्षिपेत् भिन्नपुनंततः कृत्वा तंदुलीयाम्भयो ईवेः ५५ भावयेदष्टया
मंतदेवं शुभतिचान्नकं वत्थाधानपुतावत्त्रैमुर्येत्काजिकैः सह ५६ कृत्वाधान्याभ्रकंततशोषयित्वाथमर्देये
तत्रैकैक्षीरेदिनंमर्ध्वचक्राकारंत्तकायेत् ५७ वेष्टयेद्वैकोपत्रैश्च सम्पुगजपुटेयेत् पुनर्मर्ध्वपुनः पात्रं सप्तवारं पुनतनः
५८ ततो वज्रगद्यैस्तुर्देयं पुटनयम मृयते नात्र सदेहसर्वकर्मसुयोजयेत् ५९ शुद्धधान्याभ्रकंमुक्तं शुभीषद्भागयो
जितं मर्देयेत्काजिकैर्नैवदिनं चित्रकजैरसेः ६० ततो गजपुटेदद्यात् स्माद्धृत्य मर्देयेत् त्रिफलावारिणातव
तुर्देवं पुटस्त्रिभिः ६१ वलागास्तत्रमुसलीतुलसी सूरण इवैः मर्दितं पुटकं वत्से त्रिविंशं वलं व्रजेन्मृतिः ६२ ५

यमेघोटिघोटिनीनपुटेदेई इस्तत्रकारनिस्संदेह अन्नकर्मरेणा सर्वकर्मयोग्य होइगा ५८ दूसरीविधि शुद्धअभ्रकले छयाछ
वाअंश मोथा सोढिदे कांजीमेंदिनभर खलकरि फिरवीताकेसुमें ६० तवगजपुटञ्चाचदे फिरनिकारितीनवार त्रिफलारसमेंघोटिघोटि
गसपुटञ्चाचदेइ ६१ फिरलरियाए गोमूत्रं शुशलीक सतलसी सूरण इस इनकेरसमेंघोटिघोटिनीनवार गजपुटञ्चाचदेइ तोअभ्रकमरे ६२

एकभागशुद्धध्वजः दोभागमुत्सागणदेके अंशमृषकयन्त्रमंधिगजपुटकीतीव्रअर्धमं पूरके इत्कीठढीप्रकृतिहे सवरोगमिंदेनेयोग्येहे ६३
मुसामृणकलिंभीरीनीवृकेसमंयोदिएकदिनधाममंधेरीसर्वकार्येलायकलोताहे ६४ ऐसेहीगेत्रकसीसमुहा
गाकौडीशंखफस्वदीचोकएसवशुद्धहोय ६५ मेनशिलशोधनमारण मेनसिलवकीकेभूतमंडोलायंत्रमतीनिदिनयकायवकीके
यतमैसातभावनदित्वमैनशिलशुद्धहोय ६६ वाअगस्तिपत्रकेरसमैसानभावनदेवाअदरएवकेरसमैसातभावनदेतौमेनशि

धान्याभ्रकस्थभागैकंदोभागोटंकणस्पच पिध्यातदंधमृषायांरुध्वातीत्राग्निचायचेत् स्वभावशीतलंचूर्णेसर्व
रोगेषुमेल्जयेत् ६७ तीलजनेंचूर्णेयित्वाजवीरस्वभावितं दितैकमातपेपुष्टंभवेत्कार्येषुयोजयेत् ६८ एवंगौरिक
आशीशंटंकणनिवणटिका शस्वतोरैवककुष्टशुद्धभायानिश्चितं ६९ एवेदह्देत्रजामृत्त्रेदोलायंत्रमनःशि
त्वं भावयेत्सप्तयापितैरजायाशुद्धिमृच्छति ६६ अन्यच अगस्तिपत्रतोयेन भावयेत्सप्तवारकं शृंगवेरसे
वोपिविदधातिःमनःशिलाः ७ तालककणशःकृत्वासदृष्टेकांजिकेशिपेत् दोलायंत्रेणयामेकगतःकृष्णा
उज्जैइवेः ६८ तिलतैलेःपंचधामंयामंचत्रिफलाजलेः एवयंत्रेचनुयामपाच्यंशुश्चातितालकं ६९ नरसू
त्रेणगोमूत्रेसप्ताहंरसकंपचेत् दोलायंत्रेणशुद्धस्याततःकार्येषुयोजयेत् ७० ॥

कार्येसाधपहो ७१ हरतालशोधन लग्नालचूर्णेकांजीकेपानीमंडोलायं त्रिकशिसिद्धकरे मोहीकुसुमकरसमेकरे ६८ तिल
केतलमंपहरभरदोलायंत्रमंकरे पहरभरत्रिफलाकार्यमं इसप्रकारखारमेवारिपहरमेसिद्धकरेशुद्धहोय ६९ स्वपरिया
शोधन स्वपरियालेगोमूत्र वा मनुष्यमूत्रेसातदिनदोलायंत्रमेशुद्धकरे तयकार्येसाधहोय ७० ॥

सवधानुनिकेसतनिःसाणविधिः लाहीलघुमीन छगरीयय लुहागा मगसीगा पीना सरसौ सहिजन लालगुंजा गुउसंधव ७१ यव कटुकी
 घृतगुध रनमेजोएकरोन होतो चिंता नही जिसयानुमे चाहे तिसमे देअधमूणयंत्रकरिआंच देतो सवधानुका सतनिकल नाहें ७२ होय सोधनमा
 नयतमधु कार्याषोकोदर्वकोकाथकोशेलयंत्रमेभरनिसमेभएकौट्याकोजइकीलुगरोमेहीएरावकपडेमेवाधिसिद्धिकोर तोनदिनतवहीएअरुहो
 किआगिमंतयायतयायव सत्रमे २१ वा लुभवे ७४ मज्जाणकहेखटकिखाधोहरनालपीसिंगोलाकरिउसमेहीएधरितीव्रअचंदेर मूषायंत्रमे राखिआ

लाशामीनपयष्ठांगंटकांमृगशृंगकं पिण्णकंसर्पपाशिमुगुंजोर्णगुउसंधव ७१ यवतिक्ताद्युतंक्षोइयथालाभंविचूण्यत् एभिर्वि
 मिश्रितासर्वेधातवोगाढवत्तिना मूषाधाताप्रजायते मुक्तस्त्वानसंश्रयः ७२ कुलत्थकोइवकाथैरौलायंत्रेविपाचयेत् व्याघ्रीकं
 द्रातंवज्रं त्रिदिने शुक्तिमच्छति ७३ तत्तंतं तु तद्वज्रं खरसूत्रे निषेचयेत् पुनस्तप्तुं पुनः सेचयेत् वक्रयो त्रिसप्तधा ७४ मत्कोणे
 तालकं पिस्वायावज्रवतिगोलकं तजोले निहिनं वज्रं तजोले चाधिकंधमेत् ७५ सेचयेदश्वमूत्रेण तजोले चक्षिपे
 त्यनः रुधाधानं पुनः सेचयेत् वक्रयो त्रिसप्तधा एवं च म्रियते वज्रं चूर्णे सर्वत्र योजयेत् ७६ हिंगुसंधवसंयुक्ते
 काथे कोलत्थजोक्षिपेत् तप्तं तप्तं पुनर्वज्रं भूर्यो चूर्णे त्रिसप्तधा ७७ मंडूकं कांस्पजेषां त्रिनिग्रहस्था ययेत्सु
 धी सभीतो मूत्रयेयंत्रतन्मध्ये वज्रभावेत् तप्तं तप्तं वज्रं वज्रं सेवत् मृतिर्भवेत् ७८ ॥

धीमंफूके ७१ फिछप्रश्नमूत्रमेंस्कीसवारलुगायद्वरतालणोलोभेधरिफूके इसप्रकार २१ वार अश्वमूत्रमें वुगायवुगाइफूके ऐसेहीरामस्म
 होताहै उसको चूर्णसर्वत्रसांघ्यहै ७६ पुनर्निधि हीगसेधानोनकरथीकाथमें गरिउसमेहीरात्रयायतयाय २१ वार वुगवितेतीहीमरे ७७ त
 तीयविधि मंडूककासेकायंत्रमें मूत्रेउसेउगवै जवभयसेमूत्रेउसमूत्रमेहीरात्रयायतयाय वज्रतवाजुगवितेती खिलकै चूर्णे होमस्त्रियाय ७८

वैकांतीशोधनमाण वैकांतकचेहीरेकोकहते कोलाहोवाला ल सोहोरेकीनाईशो धेला ल करिकारि १४ वारख गाई ७६ मेदासिं होकेपंचा
गकेगोलेमें धरि सुसायंत्रमें भरिस पुटकरि फुकांदे इसी नरहसानवार ८० तव वैकांत भस होय सोहोरेकी दोरेदेई सर्वै रत्न सोधन
मारन अछे मोनी वामाणिक वामुगा अरणे सुदेही दोल यंत्रमें सिद्ध करे एक पहर लो अफ हाय ८१ धीका अओचो ए देवा लीका इध
रुन तो नोमें सान सान वारमा णिका हित पाइत पाइव नचे ८२ मृगा मुक्तादि सुवक्षण भुमें वारे पलट जाते है इसमें संशय नही ८३

वैकांत वज्रवच्छोध्य नीलवालो हितंतथा ह्यमृत्नेण सिंचेत तप्तं तप्तं हिंस्रया ७६ तनश्च मेघदुग्धेन पंचांगे
गोलं कक्षिपेत् पुटेन्मूषापटे रुचा कथो देवं च सप्तधा ८० वैकांत भस तां यांति वज्रस्थाने नियोजयेत् स्वयं येशेति
कायं चैजयं त्याखनेन च मणिमुक्ताप्रवाला निधामेकं शोधनं भवेत् ८१ कर्माया तंदुलीयेन सन्येन च निषेचयेत् प्र
त्येकं सप्तवेले च तप्तना निहत्तस्रः ८२ भोक्ति का निप्रवाल निनया रत्नान्यशेषतः क्षणाविक्रतवर्ण निम्रियंते ता
त्र संशयः ८३ उक्तमाक्षिक वस्तुक्ताप्रवालानि च भारयेत् वज्रवत्सर्व रत्नानि शोधयेन्गारयेत् तथा ८४ शिलाजंतुस
मानीय यीयंत प्रशिलासुतं गोदुग्धं त्रिफलाकाथे भृंगराजैश्च भर्दयेत् आतपे दिनमेकं गुणं च्छुष्कां शफतां व्रजे
त् ८५ मुखं शिलाजंतु शिलां सूक्ष्म खंडं कल्पितं निक्षिप्यानु क्षयानीये मां कं स्यापयेत् सुधी ८६ ॥

मृगा मोती सोना माघी कीरोति भीम एताहे ओर सब रत्न सोरेको नाईशो धे मारे ८४ शिला जंतु शोधन ग्रीष्म कीता पकरि पर्वत से उवाशि
ला जीत लाइगा स्का इधवा त्रिफला काथ वाम भृंगरेक सुमें पहर मृगा राजादि दिन भरयाम भे धरे रत्न रत्ना इतो सुधि जाई ८५ इसरी गेति अ
च्छे शिला ली तकी शिला ले छोट छोट इक करे अनि उ सजल मे पहर एराजे ८६

ने

से पानी में फीर छान के लेले इ फीर सारी के वासन में बरिघाम में धरे ८७ जब मल्लाई परे उ से काछि और पात्रे रवे फिर और जल तता करे
८८ दे फिर मल्लाई लेले प हिली मल्लाई से खना जाई इसी भाँति दो मास तक करे तव शिलाजी तकायी का होता है ओ आगि में रखे में लिंगा का
र होता है ८९ निर्यस भरा जानिये कि शिलाजी त अच्छ वन गया पहिली मल्लाई इस प्रकार बननी फिर प हिली मल्लाई के तरे ओ रोजो वले
बार कानिकला पानी उ सके तरे धिरा र रे इत दो नो को गरम पानी दे देयी सि फिर दो मास ताई रूना मानी झरि सु रु करे ९० अथ मंड

मर्द यित्वा तं तो नीरं ग्लेया द्रव्य गालितं स्थापयित्वा च भृत्यान्निधारे सतयेतु धः ९१ अपरिस्थं धनं वत्स्या तस्मि
पे वत्स्य पात्र के धारये दापत पे तस्मादुपरि स्थं धनं नयेत् ९२ एवं पुनः पुनर्नीत्वा द्विगुं साभ्यां शिलाजतुं भृत्यान्कार्य
समावन्दौ शिवा लिंगोपमं भवेत् ९३ निर्धुमं च ततः शुद्ध सर्व कर्म सु योजयेत् अथः स्थितं च तच्छेद्य तस्मि
नीरं विनिःक्षिपेत् विमर्द धारये क्षमे पूर्ववच्च वतन्वयेत् ९४ आभारागैर्यमेत्किं हं लो हं जंतुं ऊर्वां जलिः से
वयेत तन्न तन्न च सप्तवारं पुनः ९५ पूर्ण यित्वा ततः कार्ये धिगणे स्त्रि फला भवेः आलो ज्य भर्जये कन्दो मंड
खायते वरं ९६ क्षार लृक्ष्य काष्ठानि सुकान्त्य नो प्ररीयते नीत्वा तन्न समृत्पाने क्षिप्वा नीरे चतुर्गुण ९७
विमर्द धारये शत्रौ घातवध्वाजलं नयेत् तं नीरं काथये कन्दे यावत्सर्वं विशुष्यति ९८ ॥

विधि कीयी लोहा का मैल बहरानी लकरी के को इला में लाल करिगे मूत्र में सात नार सुगंधै ९९ तब कोटका पूर्ण करि दूने विफ
ता का थर्म में मिलाई पात्र में धरि आंच में त्रि फला का थजराई के उत्तारिले तव मंडूर अच्छा होरे ९९ अथ क्षार विधि क्षार लृक्षकी
करि चो गुने पानी में घोलि ९९ रात में भरा लिआत धिरा पानी ले आगि पर न्वा श्यानी जरा वै जब पानी जराय ९९

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

नवउजामिले उसीको शास्त्रहर्तकं संपदहोजानाहे अस्मत्पथानी नजरोहोकाथसम रहनाहे एसोप्रकारपावैद्यजनचोअधिभेदेतेहैं कोर्यापलार
वकायनवहेडा अमलनासुमदारहलदोअमलीसेहुडचिविचियाढाकेलाजभांलगोधसुद्धिजनमरी इत्यादिशास्त्रसहे ६९ इतिश्रीशार्ङ्गधरेण
दशोध्यायः १९ पाणसेवगेरजीतेनैवात्ताओपष्टिकाक्कहतेहे शुभदिनसिषकलनाआंभुकरे आच्छासिषहोतोजगवाधिइरिकरे लोहा
धातुपासेसंस्कारकोरुजमहोरशरीरप्रष्टिकरतीहैं प्रमाणउत्तमरसरणेनमध्यमंवंधकादिभिः अथममूलक्षरेश्वरैतेलेनाप्पधमाथमर

ततः पात्रात्समुल्लिख्य क्षारे ग्राह्यः सितः प्रभुः चूर्णो भवति सार्यस्य निजः स्यात्कायवस्थितः इति क्षारप्रयं धीमा
न्युक्तः कार्येषु योजयेत् ६५ इति श्रीशार्ङ्गधरेण कदादशोऽध्यायः ११ पादः सर्वरोगाणं जित्वा पृथ्विः कारः स्मृतः सुदिने सा
धनं कुर्म्यो तं सिद्धिं देहलोहयोः १ रसेन्द्रः पादः स्तुतः हजः स्तुतको रसः बधे रत्नस्यैति नामानि नेयः निरसकर्मसु ३ तावा
ता रातनागाश्च हेमवर्णे च तोषणाकं कांस्यकं धृतलोहं च धातुको न वसुं स्मृता स्वर्यादीनां ग्रहणं ते कथितानां भिन्नमात्र ३
एजीरसो न मूखाणां संक्षित्वा पिवंथ येत वत्सेण दोलिकायं नेत्रे खदये त्वाजि कैः स्मृहं दिनैकमर्दयेत्तत्तं कानां रोगे संभवे र्वे
तथा वित्रकजैः क्षार्थे र्मर्दयेदवाचा सुरका च मावीरसैस्तददिनमेकं च मर्दयेत् ५ त्रिफलायास्तथा काथेरसमर्धः
प्रयत्नतः ततस्तेभ्यः पृथक् पृथक् तत्तत्तं च क्षाल्य त्वाजि कैः र्द ॥ पाणनाम् रसेन्द्रपादस्तु हजस्तकज्ञ एण्डनापडितस्ता

प्रयत्नतः ततस्तेभः प्रयच्छायेत्सूतं प्रक्षाल्य कान्तिकैः च ॥ पारानाम रसें श्या रस्वत्त हजस्तक ह्य एण्डनां पंडित स्वा
मगले २ तां वारूपा आसीता सोना रंगो यो लाद्वयं सालोह एनवथात्त सूर्यो दिनवयस्व केक्रम सेन बीनाम समगले ३
नराईल सप्रुन कीलुग दीकान्द सायं त्रकारि पा एभ रि सु ख मुं दि गटि वस्वै वां धि रोलायं त्र भ काजी के संगती न दिन आच दे
प्रच करै फिरि एक दिन धी घार मे घो टि ४ एक दिन बीता क्षण्य मे एक दिन म को रस्से ५ एक दिन विफला काथं मे घो टिया रानि का किजी

निकालनेकीरीति नींदूरस्वधानीमपत्रासमेंपहरभरसिंगरफद्यो टि किउमहयंत्रकमिउगारिलोइ दुमरुयंत्रयोकाहतेहै
गउदायाहैउरायलेनेसेभीपासमुधिजाताहै सर्वकार्यकारकाहोजानाहै १३ अथवापरेकासुखकाना काबेसुधाकारकानाभीकाहतेहैकालकूट
छनागसिंगियाप्रदीपनहलहलमलसुन्न हसिया सजुकसौरष्टिक एनवविषहैओमदारसेहंधतएकारियाऐकनेर लालघुघुची अफोम
तउपविषहै १४ इनसवविषमंभर्देनकनेसेपाएयक्षहीनहोजानाहै समसधातुनिकेभक्षणकनेकोसमर्थहोजाहै १५ अथइसरीप्रकार

नींदूरसेनिंवपत्रसेर्वोयाममात्रकं पिष्वादर्दमूर्ध्वचपातयेत्सतयुक्तिवत् ततःशुधंरसंतस्मान्नीत्वाकार्येषु
योजयेत् १३ कालकूटोवत्सनागशृंगकश्चप्रदीपनः क्षालाहलोत्रस्फुटोदारिद्रः सज्जुवत्तथा सौराष्ट्रिकरतिप्रो
क्ताविषभेदात्रमीनवः १४ अर्कोसेहंडधत्तर्गलांगलीकारवीरकः गुजाहिफेनमित्पेताःसप्तोपविषजातयः १५
एतेर्विमर्दितःस्ततश्छिन्नरसःपक्षःप्रजायतेमुखंचजायतेतस्यधातुश्चग्रसतेपरा १६ अथवाकटुकक्षारोरा
जोलवणपंचकोः रसोनोनवसारश्चशिशुश्चैकत्रदृष्टिर्नैः समांशैःपादादेर्नेर्जवीरेणरसेनवा निदृतोयैः
कांजिकोवांसोसखल्वेविनिक्षिपेत् १७ अहोरात्रह्ययेणस्याइसोधातुचरेन्मुखम् अथवाविंडली
किट्टैःसोमर्द्यस्त्रिवासं लवणम्लैमुखंतस्यजायतेधातुघस्मर १८ ॥

योगएइओपांचेलोन लहसुन नवसादर सहिजनकीछाल एसवसमभागलेदृष्टिकैरे तवपाऐकेरुमानलेजंभीरोरसवीनीघृस
वाकांजीमंगरभकमिखलकरे १९ तोनदिनरात तवपाएसवधातुनिकोखाइ ओतोलनबटे पाऐकेमुखहोनहै ओरछरखरा वावीरव
हयोभेतीनदिनघोटै फिएपांचेलोन ओनीघृकेरसंभयोई तवपाऐकामुखबुले ओधातुभक्षणकरे २० ॥

वाष्टपयंत्रक रिंगधक कूकन विधि एकमाद्योका कूडालेनिसंभं चारु गुर्यानी भारे एकसहनको राधिउससहन कीकेतरेयानी एकअंशु
 २६६ तिसमेपाएधो गंधकसमभागधरिपुइसरीसहनकट किटनेसे दोनोसहनककासु खनिःसधिमंदिकरिफिखस्मेकोमुहपुग्माधोत्तगास्वंद
 वरे तिसमेकंडनकीवारकीसीनगिरेतवऊपरसेचारविनधोकाकोआचंदरे इसीप्रकारछहवारपाएगधकसमान दोकाइकोआचंददेइकोतो
 पारतीक्षणा निवेतोहरे ओसवकार्येलायकहोतोहरे २० अथपाएधोसकृत धुवाकासाअध्यातकरुवापाए फट्करी गंधक नवशहर सवइव्यसमा

अथकच्छपयंत्रेण गंधजारण मुच्यते मृजुंडे निक्षिपे नीरं तन्मध्ये च सुरावकं १६ मत्तुंडं पिधानाभ्रमध्ये मेखलयाशु
 तं लिखाचमेखलामधे दृणीतत्रसु क्षिपेत् सस्योपरि गंधस्य स्रोदद्यात्समाशकं दत्तोपरि सुरावचभस्मसुशं प्रसापयेत् तत्सोपयस्त्रि
 दं दत्वा चतुर्भिर्गोमयोपलः एवमुतः पुनः गंधं बज्रं एजायेद्युधः गंधजीर्णे भवेत्तत्तली क्षणाग्निः सर्वकर्मसुः २० दूमसा
 रं संतोरी गंधकं नवसादं वामेकं मर्दयेदस्लेभा गृह्णत्वा समासकं २१ कांक्वायि विनिक्षिप्य तां च मृदु वज्रसुइया विलिप्य
 पारितो वज्रं सुशंदत्वा च शोषयेत् २२ अथः सखिइ पिठरी मध्ये दृपी निवेशयेत् पिठरी वालकभट्टरे मृत्पाचाक्वपिकाग
 ले निवेशाचुल्हानदधः कर्मवृत्तिं शनैः शनैः तस्मादप्यधिकं किंचित्पावकं ज्वालयेत्क्रमान् एवमादशभिर्गोममिश्रितं सत्तकोत
 मः स्फोटयेत्स्वो गरीनां तादृशं गंधकं त्यजेत् अथस्य ध्रियने सत्तं सर्वकार्ये सुयोजयेत् २३ ॥

भागले पहरभानी टुक्करसमेयोहि २२

फेरुआतसीसीसेभंगिकपरेसीकीरैथयेमसुबावे २२ तवएकनांदलेवीचमेंपेरोछेदिसखिइपाएअभक्तधरिउसीपरसीसीस्थितकारिऊपरवा
 ल्धभरिचुल्हेधरितरेआगिवारहूपहरवारहयहिलेअप्रतिमंदूआचवतीत्रकोरैतोयाएनउडेसिकहो २३ जवसिराई
 तवसीसीनिकारिफोरे उसमेंगंधकऊपरगलेमें पाएनलेपेदोमेंदोइगाउसगंधककोफेकपासमेंदिलेवहयाएसवअर्येयोग्यहोताहै २३

पुनः चिचिउवीजपीसिदोमृधावनार्हपागेकदगूलकोद्दधमंघोटि २४ मृधायां नमं रसस्रनकेवीचमंपाराधरैरुमाकलविंड
गखैरकाचून ऊपरदसगमृसाथरिकपरेयैलेसैकेसुबावेएकगजपुटकोआचेदे ऐसेपाए एक सोन्नाचमंभसहोय २५ पुनः कद
गैकोद्दधमंपाराघोटिकिसुसीदधमंहीरापीसिमृसावनार्हपागथरिकपरेयैकस्मादेकेमृत्सोमंभरै पुनः कपरेयैकरि २६ तीसगोइवा

अपामार्गस्यबीजानांमृषायुगमंप्रकल्पयेत् तत्संपटेन्यसे नूतनंमलवूदुग्धमिश्रितं २७ शोणपुष्पोप्लुतानि विंडंगमि
रिमेदकं एतच्चरणैर्मथोर्ध्वंचदत्वामुद्रांप्रकल्पयेत् तज्जलं संधयेत्सम्यग्दृग्मूषासंपदेस्त्वधी मुद्रांदत्वा शोषयित्वा
ततो गजपटेपचेत् एवमेकपटेनैव संजातं भस्मस्तृप्तकं २८ काष्ठीदुर्वरिकोद्गर्धेः रसकिंचिद्विमंदयेत् तदुग्ध
घृष्टहिंणोश्चमृषायुगमंप्रकल्पयेत् २९ धत्वा तत्संपटेस्तृप्तं तत्र मुद्रांप्रदाययेत् धत्वा तज्जलकंप्राप्तो मृत्सूत्र
संपदेधिके ३० पंचेनूदुपटेनैव स्तृप्तकोयातिभस्मतां नागवल्लीरसेर्धृष्टः कर्कोटीकोदगर्भितः ३१ मृत्सूत्र
संपटेपक्वः स्तृतोयात्येव भस्मतां ३२ इति श्रीशार्ङ्गधरेण वादशोधाग्रः ३३ खंडितं त्वा रिंगं शृंगं चालामु
खा रसेः समः रुध्वाभाडेपचेच्चूड्यां यामुभं ततो नयेत् ३४ अष्टाशान्ति कटुदधानि कामान्न तनमक्षयेत्
नागवल्लीरसेः सार्धं वातपित्तज्वरापहं ३५ ॥ कोआंचदेपारागमस्महेताहे पुनः पानके रसं भयागघोटि पिब सजड

कोलके भरेउसीसे मृदिरिकपरेयै करी मागीले पसुषाई थोरि आंचमें फूके से पारागमस्महेताहे ३६ इति शार्ङ्गधरेण वादशोधाग्रः ३७
अथ ज्वरां कश हरीणकांसीग चूरण एक रिवरा न जेत का रसले माथे के वासनमें धरि मुहं रियो पत्तकी आच देइ उतारि
लेर ३८ अठवांच सत्रिक दयेयीसे चारि तीज गंऊरा पान कर सउक्त खिलवै तो वात पित्त ज्वर नाश करे ३९ ॥

यत्तु ज्वरं वा शोनाभससर्वज्वरापहं पाण्डुरसुकांतं त्रिधा सुहागागंधकएसमानिशोधिकेलेकेरसभाक
दिन ३ घोदके नाम्नपात्रं भेषजं लोसिपात्रं सुखमृदि ४ कपरोटी करिवालुकायंत्रं मैथरियत्रमुत्तुलारणि आंचयेयजवउसव
ल्लभं धानशरेसेलीलकोजाय तवजानियेकोरससिद्धमया ५ जवस्वभावसेठढाहोतवउसेपात्रं सेछुटान्लेई इसज्वरा रिरसकेसमानमस्ति
मिलाशपीसिलेई एकमासेपानकेटूकं मंधरिखिलावैजकोनाशकोरेतीनदिनखानेसेअतिकठिनज्वर अंतरिया विजारी चालुस्थकसवहूरहोई ७

अयं ज्वरां कशोनाभससर्वज्वरापहं पाण्डुरसुकांतं तुत्यं कणागंधकं सर्वमेतत्संभृष्टं कारवेत्पारसेदिनं ३
मर्देयेलेपयेतेन नाम्नपात्रोदं भिषक् अंगुल्यष्टप्रमाणेन ततो रुद्ध्वा च नल्लवे ४ पंचेतं बालुकायंत्रं क्षित्वा धा
न्यानि तल्लवे यस्य सुपुटं तिधा त्यानि तदा सिद्धं विनिर्दिशेत् ५ ततो नयेत्स्वांगशीतं ताम्रपात्रोदं राक्षिषक् रसज्वराणि
नामायं निघूर्णे मरिचैः समं ६ माथैकं वणस्वडेन भक्षयेत्ताषाण्येज्वराण् त्रिदिने विषमं तात्रमेकदित्रिचतुर्थ
कं ७ तालकं तुत्यकं ताम्रसगधमनः शिलाः कर्षकं पत्रयोक्तव्यं मर्देये त्रिफलां लुभिः ८ गोल्पं न्यसेत्सुपुट
केयुदं रघात्प्रयत्नतः ततो नीत्वा कर्दुगधेन तत्र त्रीलुगधेन समं संधा ९ काथेन दंत्या श्यामाया भावके तसन्नथापुनः
माषमात्रं रसं दिव्यं पंचाशना रिचैर्युतं १० गुंडयुधानकं चैव तुलसीदल युग्मकं ॥

सो न ज्वरादिस्सहृिताल त्रिधा तौवाभस सोधापाण गंधक शुषभै नसिल एसवकर्षकं भलेके त्रिफला के रसं भेद्योदि ८ ल गोल
वाधिकपयोदेमादिले सत्त्वकृमिराकोदधे मेषागमवनीदेई फिजभालगोदके जउके कोठे मेसात भावना देन बएकमासे रस पचाशमस्ति
३७ छत्तमासे गुंडो लसीदल भक्तिघर्षकतीनदिन स्वाय धोतारिरस इसका नाम है बहुत दुर्लभ ॥

६१ पञ्चदशभातदेय अशीराहज्वरतिजारीचत्वर्थक १२ अंजरिया नित्यज्वर चोत्प्लव्जनिनविकारसबनाशहोई अथज्वरघ्नगुटिका
एकभाग एलुआ पीपरि चउजंगी १३ अकारकाहकडुगोलेसकाशोधागंधकरदूरन एचारचारभाग १४ इहूनरसमेंघोटिआयमात्रगो
धितरुणज्वरमेंगुर्वर्चकेरसमेंवेधज्वरघ्नी गुटिकाखिलावे १५ लोकनाथरस पाणवसुक्षितधातभक्षकदोभाग गंधकदो

मं-
शा-दो
१०८

भक्षयेत्त्रिदिनं भक्ष्याशीतारीदुर्लभंपर ११ पथादुग्धोदनंदेयं विषमंशीतपूर्वकं दाहपूर्वहरिताशुस्त्रतीयक
चत्तर्थको १२ घाहिकंसततंचैववैद्यार्णवनिघृच्छति आमेकः स्यादसाधुद्रादेलीयः पिपलीशिचा १३ अकार
काभोगंधः कटुतेलेनशोधितः फलानिचंद्वारुणाश्रातुभागमिताश्रमी १४ एकचमद्वैचूर्णेमिड्वारुणिकासेः क्षौषोन्मि
तांवटीतेले कृत्वा दद्यात्सद्यज्वरं भिषक् छिन्नारसालपानेन ज्वरघ्नी गुटिकागता १५ शुबोवसुक्षितः स्तनोभागेद
यमिताभवेत्तथागंधास्पभागो दोषायात्कज्जलिकावयोः १६ स्तुताचतुर्गणे धेवकपदेषु विनिःक्षिपेत्
भागेकं टकाणदष्टादशाक्षीरेणमर्दयेत् १७ तथाशरवस्य खडानां भागान्पथे प्रकल्पयेत् क्षिपेत्सर्वे
(पटस्यातंचूर्णे लिप्तासरावयोः १८ गर्जहस्तोन्मिषेत्तत्वा पाच्यगजपटनच स्वागशीतंसमुच्ययिष्वान
त्सर्वमेकतः १९ षडुजासंमितंचूर्णमेकनानि शद्वर्णैः घृतेन वा तजेदद्यान्ववनीतेन येनिके २० ॥

भागसेनोखलकरिकजरीकरे १६ पारेसेचोगुनीकोडीकोभस्म पारेसमानसुहृगागोद्वैधमेंघोटि १७ पारेसेछत्रठगुणोशंखकी
भस्मअथसबपीसिरोसंबोकेभोतलेस १८ दोनोकोसंपुटकरिवस्त्रलेयेदिमादोलगा १९ गजपुटमेंपूकदे जवठंडा होतबनि
कोरेबुखकेः खलकोरे १६ किछहूस्तीयहस्तमिन्चसंगखलकारिवानरेगमेंदेयपितातिमेंममकवनसाथदेई २० ॥

एगमेसहितरे चनीसार धरे अरुणि अहली दुर्वलतामंदाग्ने २१ कासस्वास प्रुत्ताभस्वरेगोमेतुहृतयुक्ते २२ सलोकनाथपरप्रथमधीभातसा
पतीनकोरफिरसणभरविनातकियेविशेने स्वादपुतागालोशफिरचह्निजेसेसेवे २३ स्वदारछोइमधुइहो अक्वाथतवेसैगअन्नस्वाभ
ओरअवपणजंगवीमृगारियसुभक्षमांसबीवंअच्छीतरह्मं निस्वाय २४ ओसंभाकेसमपयवअर्द्धभानभोजनकर ओ भृगकेभोरक

क्षोइणकफजोदधादतीसारक्षयेतथा अरुबोअदृणीरोगेकार्येमंशानलेतथा २५ कासस्वासेषुगुल्मेषुलोकनाथ
रसभिधा तसोपरिगतान्नचंजीतकवलन्नयं मंचक्षणेकमुत्तानशपीत्तानुपधानके २६ अन्नम्लमस्त्रसयन्तंअंजीतमधु
रंद्धि प्रायेणजागलमांसत्रदेयंयथानयाचितं २७ सदुग्धभक्तं दद्याच्चक्षुःक्षीणैस्तोसंध्यभोजनं सधनान्मुधवटकान्वंज
नेष्ववचारयेत् २८ तिलाभलककल्केनस्नापयेत्सर्पिषाथवा अभंजयेत्सर्पिषाचत्वानंकोक्षोर्दकेनच २९ कृत्विनेलं
नगरुणोथान्नविल्वंकार्वेलकं वातकंशफरीचिवात्पजेद्यायामभैथुनं ३० मद्यंस्थानकिंदिगुअंढीमाखमसूरि
का कूष्मांडराजिकाकालंकात्तिकं चैववर्जयेत् ३१ तपजेदयुक्तनिशंचकां स्पृपान्निचभोजनं ककारादिद्युतं
सर्वेत्पजेच्छाककलादिक् ३२ आद्योयंलोकनाथस्तु अभंजयत्वासरं पूर्णंतिथीसितेयक्षेजानेचंद्रवले
तथा ३३ पूजयित्वालोकनाथंऊमारोभोजयेत्ततः दानदत्त्वाविधटिकमधेआशेरसोजनमः ३०

अधिकथतर्भवेनेस्वाइभेड
३४ तिलधौवरयोसिउवचनालागा ३ वायीमर्दनकरिचिन्हाइवाउलोढकासेकमराईन्हाइ ३५ तेलनछुवे केलकोला भय मछरी अमली
स्त्रीभोगात्योगे ३६ मद्य अचार हौग सौदिउदे मसूर येदमार्देवेर कजीतजो ३७ अस्मयनसेवे कांसेमंनस्वाय ककारादिआमकेकल ओसाग
तजो ३८ यह्लोकनाथरसुभमुइने पूर्णंतिथिरुक्तापभुवलवान्नचंद्रमादिषे ३९ लोकंजायस्सकीप्रजिक्मणिगागाइरानेदे दुघदीकासाधिभक्ष
एअरभकरे ३०

लोकनाथको प्रतिष्ठा चारो सिवाय प्रथम रासनदेघटिका साधि औषधि लाय ३० रसके लाने परत पधानी है तब मिश्री गुर्वका सप्त यशो लोचन
दमस्वयंते मिला देकर ३१ स्वज्जर अनार लाय ऊपको गडि रोवे नोर सनाय धूसो द्वा धनको छाल दूरिवारि घी भैं भूजिके चलाक रिमि श्री मिला
भेखिलावे ३२ उमीतायमें धनिया गुर्वका कादा देख सारु खेवा कादा देख मधु मिश्री मिलावे ३३ रत्नपित्तकफका सस्वा सल्लग गमवध के लोय भा

३० रसाच जायने ता प्रस्तदाशु के एया
पूजयित्वा लोकनाथं दुमारी प्रजयेततः दानं दत्वा विघटिका मधो ग्राह्यो रसोत्तमः ३१ रसाच जायने ता प्रस्तदाशु के एया
युतं सत्त्वगुड्यागुल्लीयां यशो लोचनया युतं ३२ स्वज्जर दाहि मंदाक्षोऽशुस्वंशश्च दाययेत् अरुचौ नितु यंधान्यं च तन्म
पुंसशर्करं ३३ दद्यात्तथा ज्वरं धान्यं गुडचीकायमाहृतं उशीरं वासकं कायं रधान्समश्वाशर्करं ३४ रत्नपित्तक
फेद्यासेका सेचस्वरसंक्षये अग्नि भृष्टजयान् एमधुना निशि दीयते ३५ निशनाशेति सारे च त्रल्लणा पाव
कक्षये सोवर्चलाभया कृष्णान्न एणमुत्तजले क्षियेत ३६ श्लेष्मीणे तया कृष्णामधु त्रज्ज्वरे हिता लीलादरे
वातरक्तो छंदो चैव गदांकरे ३७ नासिकादिषु रक्तैष रसं दाडिमस्य पृजं द्वौ वा स्वरसंनष्टौ यददा कृक्वा न्वितं
३८ कोलमज्जाकाण कर्हि पक्षभस्मसंशर्करं मधुना लेहये छर्दिद्विकाको पत्रशानये ३९ त्रिधरे वधयो
जस्तु सर्वे सिन्योदली रसे मृगाके हेमगर्भे वमोक्तिका खेपरेषु च ४० अजिच्छरेकरि लोकनाथ संयुक्तविलाये रानको
४१ नीदनाशमे अतीसारमे संयुक्ताणीं मंदानि मे एस च दूर हो सो चर हृदपीपरि साधरसंदिगा रमपानी पिलावे ४२ तोष्ठल औज्य

४३ नीदनाशमे अतीसारमे संयुक्ताणीं मंदानि मे एस च दूर हो सो चर हृदपीपरि साधरसंदिगा रमपानी पिलावे ४२ तोष्ठल औज्य
जीरन दूरकरे पोषणिसहन युक्तपि वलीवातरक्त छर्दिष्यो दूरकरे ४४ नासास्तावत एण अनारसंसे देइवरस मिश्री लोकनाथ युक्तनास
दे ४५ निरसिमी मोरं पखकी भस्म मिथी सहन युता दवायती छर्दिह्निचकी दूरकरे ४६ एण जो भाति भित्तिके अनोपान लोकनाथ मे करे सो

मवपोदणिकारसमंभीउसीरोतिदेना जेसे नृगांकचे मगर्भ भोक्तिकाख्य औपचरत्नादिपोदलिकारस इत सर्वोभिलोकस दशपुशुकै नौस
पूर्णगेगच्छे सो ३६ नृगांकपोदगेरसस्यदिपसोनेकपत्रसमानवनाइ सोनेकासमपणभिलाइखलकोर ४० कचनारकारसवात्ररणी
रसवाकरियागीरसमेंघोठेजवतकगोलाबंधजोइ ४१ सोनेकाचौध्याईसुखागोरे ओसोनेकाइनामोतीकाचनदे ४२ इनसवकेसमान
गंधकदे सवखलकरिगोलाकांधिखलकपडालयेटे ४३ फिरमादीसेलेससुखाइ सगवसंपुटकरिकैफिरमुदासंपुटकरि ४४ लोन

इत्युयलोकनाथोक्तोसः सर्वरुजाजयेत् ३६ भुर्जवननृपचाणिहन्तः सूक्ष्मानिकारयेत् तुल्यानितानिसूनेनखल्वेक्षित्वाविमर्दये
त ४० काचनारसेनेवज्वालामुखासेनवालागल्यावारसेलावधावभवतिपिष्टिका ४१ ततोहन्नाचतुर्थांशं टकणं तत्र निःक्षिपे
त् पिष्टमौक्तिकाचूर्णं च हेमं क्षिण्णमाहरेत् ४२ तेखसर्वसमगंधं शिन्वाचैकत्रमर्दयेत् तेषां कृत्वा ननो गोलं वा सोभिः परिवेष्ट
येत् ४३ पश्चात्कदावेषु गित्वा शोषयित्वा च धारयेत् सगवसंपुटस्यांतलत्रमुद्राप्रदापयेत् ४४ लवणोः पूरिते भांडे स्थापयेत् तत्र
संपुटं मुद्रादत्वा ततो गोलं वा सोभिः शोषयित्वा बहुभिर्गोमये पुद्रे ४५ ततः शीते समाहृत्य गंधस्तनसमं क्षिपेत् दत्त्वा च घूर्ण
वत् खल्वेपुटं नृजपुटेन च ४६ स्वांगशीतं ततो नीत्वा गुजासुगमं प्रयोजयेत् अष्टाभिर्मरिचैर्युक्तां कृत्वा त्रयमथापि वा
४७ विलोकयेद्वा दोषादित्येकैकस्मक्तिका सर्पिया मधुना वापि देया दोषाद्यपेक्षया ४८ ॥

हरितपात्रमं संपुटधरे उसकासुं हर्मुदिसुधाई गजपुटमं फुकेदेइ ४५ ठंढाभाणिकारिकै सोनेसमानपारासोनेसमानगंधकयुक्तक
रि घर्ववतसमं खल्लकरि फिरुसी क्रियासे गजपुटमं फुके ४६ जवठंढा होतवनिकासि दोगुंजारास आठ भरि च ज्ञातौ नपीपरिसंगदे ४७
औदोषकोविचारिके औषधिजीभायादवाकाइ समरुकेदेइ धी अथवा सत्तसाधदोष विचारिके देला ४८ ॥

पथलीकनाथसदृशसंभेदीदेनायोग्यसं चित्तएवाएकस्मिन्निपवित्रहोत्वा इतोऽस्येकाग्रहणी कथमसत्त्वासहस्रैश्चरुवि यहस्रगांकारसर
नरोगोन्मोहरकर्ताह वलहीनकोबलवानकर्ताहै हर्बलकोमोयकरे ४६ कफक्षयीयसैमपुटलीरस पाण पातौचोवोई सोनाले
खलकरे जवपीढीहोनाशनवइलोसेइलीगंधकादे काचनारसंभेद्योदिगोलाकरे ५० सोमसायनमभसिंपुटकरि वल्लयेदमादीलगायमु
त्वाइ भूधरयंत्रमंफ्रकादे भूधरयंत्रएकहाथगतिरांलंबाचौअखोदि तिसमेंछोयागाढापोदिञ्चोयदिरत्तुमादीसेदावि तिसपरवेनवाकंश

लोकनाथसंभयंपंकुर्योत्सस्यमनाशुचिः श्लेषाणंयहणीकासंस्वांसंक्षयमरेचकं मृगंकोयंरसोहनात्कश
त्वंवल्लहानिनां ४६ सूनानादप्रमाणेनहेन्नापिष्टीनकल्पयेत्त तयोःस्याविगुणगंधमर्देयेत्कांचनारिणो ५० कृत्वा
गोलंसिपेन्मूषांसंशुटेसुस्येतातः पंचभूधरयंत्रेणवासंनितायंबुधः ५१ तत्तच्छृत्य तत्सर्वेदधांजंघनत्समं मर्द
येदारुकारसिञ्चित्रकस्यरसेनवाः ५२ स्थूलपातवर्णदीप्यप्रयेतेनयन्वतः एतस्मादेषधात्कयोऽष्टमांसेनटंकाणं ५३
टंकाणंविषंरत्नापिष्ठासेहृद्दुग्धकैः सुक्येतेनकल्केनवर्णदीनांसुखानीच ५४ भांडेदूर्णप्रलितेचधत्वामुद्रंप्रशय
त्त गमोदलोनिनेधत्वापुटेऽज्जपुटेनच ५५ स्वोपशीतंरसनीत्वात्रदधात्लोकनाथेवत्त पथ्यंस्त्रगांकवत्त ज्ञेय
त्रिदिनंलवणंत्पजेत् ५६ गदायष्टिभवेतस्य स्याच्छिन्नारसगदा मधुमुक्तंरसंस्त्रेभांकोपेदधाजुडांइकं ५७ ॥

करलीकरीवडगांमेभारिचोवदेतीनदिन ५१ जवत्तभावसेरीनल्लहो तवनिकास्तिमान्गंधकलेचइकवावीकेरसमेंघोरि ५२ व
डीपीलाकोडीमंभारि ओषदिकात्रष्टमासमुहागा ५३ सुहागोकाआघासिमिसारीनोसेइउकेदूधमेंपैसिध कोडीकासुख
फिरमादीपानमेश्नलेसिकोडीभारिहुसरेरिवसयैरिपरिमुद्रित्कारिगजप्रदधानाचदे ५४ ददानएनिकारिल्लेकनाथवीमंतिवित्तने मृगंकाकी

सतिसेयथ्यदिनीनदिनलो नवर्त्तिताह ५६ जो छर्दिहो इतो गुर्वेकारसवाकायमधुमुक्तदकाफा निभैगुड अइवारसयुक्तदे ५७ अतिसार
मेंचनीभागदहीयेनेकेसंगदेक्ससग्थासंक्षयीग्रहणेअरुचिरुनमेभौदलीभंगसंगदे ५८ अग्निदीपचकफवातनाशनयहहेसयोदलीभस
अरुहै ५९ पुनदेमगर्भसकासपरपाण ४ भाग सोना ४ भाग दोनोपीथीकरिआदश भागगंधकादे ६० तीनोकोकजरिकारि १६
भागमोती २४ भागशंख २ भागसुहागा ६१ एसवएकत्रकारिपेकेनीवृक्केरसमेघेटिगोलाचांधिसूसापुटमेंआधिसूससंधि ६२

विरेकेभर्जिताभंगाप्रदेयादधिसंयुता जयेत्कांसंक्षयंश्चासंगहणीमरुचिंस्तथा ५८ अग्निं चकुरुनेदीनं कफं वा
तं नित्यच्छति हेमगर्भैः परेक्षेयोरसः पोटलिकाभिधः ५९ एससभागश्चास्वावतः कानकस्य च तयोश्च पिष्टिकां क
त्वांगथोवादर्शभागिकः ६० कुर्यात्कज्जिकांतेषां सुत्कांभागाश्चोष्णं चतुर्विंशश्च शत्वसुभागे कंठकाणस्य च ६१ एक
त्रमदेयेत्सर्वेष्वर्चानिं बुक्कौरेरेः क्वाचतिद्याततो गोतं नूयांसं पुटकेत्पसेत् ६२ मुद्रादत्वाततो हस्तमत्रिगते
चगोमयेः पुटेऽजस्येदेने ब्रह्मांगशीतं समुद्धरेत् ६३ पिष्ठाणुजाचतुर्भाजनं दद्याद्गव्याज्यसंसुतं एकोनत्रिंशद्
जानमपि चैस्महसेयते ६४ एज्जिनेमूरमेयानेकं चर्जवापिलेहयेत् लोकनायसमपथ्यं कथोत्पयतभानसः ६५
कासेश्चासेद्वयेवानेकफे ग्राहणिकागदे अनीसारेचयोक्ताया पोटली हेमगर्भिका ६६

पुबाइहाअमभूखेदिस्सुमेभगुइ साधुभर्कांगभराइरुक्कदेजवश्चेत्तपरैतवनिकारिधरे ६७ चारिल्लोरसमिर्वउनीसगो घृतमं
पीसि ६८ चांदोवाभादीकवां काचकोमात्रं मेधरिखिलावे लोकनाथरससमपथ्यवताने ६९ इसयत्तसे कास आस क्षेधाल
वापः अहणी अनीसार मयोकोदेइ यहहेमगर्भयोदली इत्तमअरोभनकोहरेलेइ ६६

पारागंधक विषशोथेचारिमासे धतरबीज १२ मासे सवकादूना ६७ चोक चोकविनादूदसवयुक्तकारिस्वक्ष्मचरणेरेणुजार
सजंभीरीकेरस ६८ वा अक्षरषाममेदे त्रिदोषजनितज्वरनाशकरे नितप्रानेवाला अतरिया चतुर्थक यद्वज्ररं कुश
विषमज्वरीनाशकरेनिश्चैकरू ६९ आनंदभैरवस अनीसारपर शुभसिंगरफ सिंदिया भरिच सुहागावीपरि एसवसमानले
चरणेकरिथे यद्वआनंदभैरव ७० रेगीकावलदेपि रसाएकजुजावा दोणुजा इद्रौकरेयाछालदूनीदशमासेपोसिरस

शरुसूतं विषंगंधं प्रत्येकं शाणसंमितं धूर्तवीजं त्रिशाणं स्यात्सर्वेभ्यो ह्यिगुणा भवेत् ६१ हेमाब्जकाये षेयां चू
र्णे स्तक्ष्मं प्रयत्नतः देयं जंवीरमज्जाभिश्चूर्णेणुं जाययोनितं ६२ अर्द्रकस्वसेर्योपि चूर्णं हन्ति त्रिदोषजं एकाहि
कषाहिकाचतृतीयवाचतुर्थकं विषमं चूर्णं संख्यादिख्यातोयं ज्वरं कुशः ६३ द्रवत्वत्सनाभं च भरिचंद
काणं काणा चूर्णेयेत्समभागेन रसो द्या नंदभैरवः ७० गुंजेकं वा दिगुजावा वले शात्वा जयोजयेत् मधुना
लेह्ये चतुक्वजस्य फलत्वं चूर्णितं कर्षमाणं च त्रिदोषोत्थानि सारजित् ७१ दध्यन्तं सपयेत्पथंगं व्याज्यंतं क्रमेण
वा पिपासायाजलं शीतं विजयाच हितानि शि ७२ विषं पलमिगं सूतं शणिकं चूर्णेयेदयं तच्चूर्णे संपेठ्यत्वाकांते
स्तिनसरावयोः मुद्रादत्वात्तं शोष्यततश्च त्वां विशेषे बयेत् वन्दिशनेः शनेः कयोत्पहृदयसंख्ययाः ७४ ॥

हृत्तमं भिलाय च दावे तौ त्रिदोषजन्यजना अनीसारदूरोय ७१ गजकारदही वामहानाघन पष्यभांतसायत्वाइ
नीपिलावे औभांग अच्छीनं रत्नधोयवनापराजकोपिलावे ७२ सन्निपातपरलघुस्त्विकभरण सिंगिवा १ पल पारा ४
मासे इनोखलकरि दोपरईकाचकेलुककरे इदं मंधरिके ७३ मुद्राकारिसुखाय चूर्णं पत्तवई मंदमंदोपचरकीचां चिद्वि

इनेज्जदाकरिज्जपके सरवेमेलगाधुआरललेसेथील ७५ त्रिसपात्रमेपीतनजागकेवासीसीमेंधरे सुचीमुखसेसीसीमाखे २ सूचीमुख
खे एकसुईसमलेकहोउकासुखसुईसमानहो असेसुवाअस्यकहनेहैं ७२ तिनना सन्निमृद्धितकाशिखुंग २ यधनेदेरजोरक्तबोनिमरे
इसीधावपुससरसुकोअंशुगीसेमले ७७ जोरुधिरखोरसमेमिलजाइतोमृद्धितजागे तैसेहीसापककवंगजागे फिरइसेरुसउपचारसेतपचावे
तकउसरोगीकोमधुर अर्थात् गंडगे अनाखुवाएदायादिसिलवे ७८ सन्निपुल्ललंबरुस पारभससमानगधक गधकमेवोयाइमेनसिलसेना

ततउत्पाद्यतसुद्राउपरिस्थेसएवके संगलग्नोयोभवेद्वूमः सगर लोयाच्छनेः शनेः ७५ वायुस्पर्शेपयानस्यान्तः
कृष्णोनिवेशयेत् रसः सूचीमुखेलग्नकृष्णानियोनिभेवज ७६ तावन्मात्रोसोदयोमृद्धितेसन्निपातनि धरेणप्रस्थिते
मृद्धितंदुल्याचघर्षयेत् ७७ रक्तभेषजसंपर्कान्मृद्धितोपिहिजीवति तथेवसर्पदष्टसुभृतावस्थोपिजीवति यस्ततापोभवेत्
स्यमधुतत्रदोयते ७८ भस्मसूतसमंगंध्यात्पादमनःशिलाः माक्षिकंपिप्यलीवोषंप्रत्येकं शिसयासमं ७९ चूर्णेयेज्जा
वयेत्पित्तैर्भस्ममायूरसंभवैः सन्नपाभावसंशुष्कंदंयं गुजादयोन्मितं तालपर्णीरसैश्चात्रयंचकेलसुनेपिवा जलजंशेर
सोनामसन्निपातंनियच्छति जलंयोगश्चकर्तव्यस्तेनवीर्येभवेइसे ८१ शुष्कसूतंविषंगंधमरिचंदक एाकण मंदये
हर्षणेभवेदिनमेकंचशोधयेत् ८२

मापी पीपरि सौठिमर्च एसवैमेनसिलसमानले ७६ खलकरिमधुरीकेपित्तैमेंसलभानकरैतेस्मै
यूरपित्तैमेसातभावनादेसुवाइदेगुजायवावे ८० खेतपुसरैकेरसमें चोपंचकोलहैं सौठिमिरिविषोपरिचावनीता इन्केकाठेमेदे गहूजल
बुंदरससन्धिकोहूरकतोहैं जलठंबगिरीये ठंडेजलसेहाथमुंहयोवे जलकास्यशेराखे तोओषधिवलपानीहैं सन्निपातदूरकणीहैं ८२ प
क्षिपर्युंचवक्ररस अक्रपाग सिंमिया गंधक मत्स्य सुहागा पीपरि धतूणकेरसमें एकदिनमर्दनकरिघाममेंसुधावे ८२

यस्यैववक्रसदृशं जातं त्रिपातमेवेदं तो सन्निर्जाह मरुतसुलक्ष्माथसौ विमिरचपीपरिकेसंगदश्यदो धनोपानेहे ८३ पञ्चादहीआन देना से
वधिलेखय मरुतसंगदेयनैकफजनि तत्रपद्वच्येहोय ८७ अइकसहसंगदेस्तौ अग्निदीपनकरे औग्यथा योग्यदुनभां सखागोतोअग्नि
प्रवत्सकरे ८९ सन्निपातपरुन्मत्तसु प्राणगंधकसमभागले धत्तरफलकेसेमेलकहि निसकेसमानत्रिकुददेफीसि यहउन्मत्तसु यतीना
शदेनेसेसन्निपातदूरहोइ ८६ सन्निपातपरुन्मत्तजन जमालगोचघ्नीलिपितादूरिकरिचालिसमासे चरणकरे खोलिनि

पंचवज्रो रसोनाम किं गुंजासं निपातहा अर्कभूतकवायंतु सञ्चुबमनुपाययेत् ८३ युक्तं दध्यो दुनं प्रकां
जलयोगं च कारयेत् रसेनानेन साम्यमिति स्थौ ८४ मध्यार्द्रकरसंचानुपिवेदगिनिहृद
ये यथेष्टं घृतमांसाशीशक्तो भवति पावकः ८५ एसगंधकत्वत्प्रांशं धत्तरफलजैः रसेः मर्दयेदिनमेकं
तु तत्तल्पं त्रिकटुक्षिपेत् उन्मत्तात्पो रसोना मनसे स्यात्सं निपातजित् ८६ नित्यं कोषालवीजं च हस्तिनि
कं विट्पुण्येत् मसिचिपिप्लीषुं प्रविशेति निषिद्धं विप्रयेत् ८७ भावो जंजीरुं श्रेयैः सभाहंसप्रयत्नतः रसोयमंजने दृष्टः स
न्निपातविनाशयेत् ८८ हृत्तुल्यं कण्ठं गुल्फं मण्डिचं सृगुल्यकं गंधकं पिप्पलाशुं भीक्षुं चो विट्पुण्येत् ८९ सर्वम
ल्पं क्षिपेदंतीवीजं निह्नुषि तं भवेत् गुंजेकरे च न सिद्धं नाराचोयं महारसः आभानमलविष्टं भुसुसवर्तचगाशयेत् ९०

चपीपरिचरचारमासेले ९० जंभीरीसंमंसातदिनघोद्विजंजनकैलौ सन्निपातदूरहोइ ९८ भूलपरनाराचरस मारसुहृगमाभ
भाग परिसमानमिच्व गंधकपीपरिसौ विदेधे भागलेखलकरे ९९ सवकेसमानसुजमालगोदादु एकचकरिल्लकरे १०० भा
रदेनेसेस्वनहोइ यहनाराचनामरस अध्यान मलविष्टं भुसुसवर्त एसवरोगनाशकमोहे ९० ॥

भूतधरश्च भवेत्सु अर्धसिंगरक सहागा सौंठि वीपरिकर्षकभवेत्कोकपलभजमालगोदापलभर् ६१ खलखलकरिगोद्वर्ध ६२
 रचनायेद्वयत् दृष्ट्याभेदीरस्तसोवष्टुक् अथानद्वल्लो ६२ क्षाईपरगजमृगांकास पाणभस ३ भाग सोनाभ २ नावाभ २ मेनसिल ३ भाग
 कहरतात् ६३ देवभागसवद्योदिकैडिमभस्विकरकेइधमंमुखागापसिकोडीकासुखवदिमावोपात्रमंधरिसंयुटकरि ६४ सुलाइराजपुटमंभकदे

दरुंदंकाणंशुंठीपिप्पलीचैककार्षिकान् हेमाव्तापलमानंस्वांतीवीजं चतासुमं ६१ विट्पुष्पैकान्सर्वोणिगोदुग्धयेनैव
 पाययेत् त्रिगुंजं रचनेदद्यादिष्टभाधानरेणिबु ६२ भस्मसूतत्रयोभागाभोगेकं हेमभस्मकं मृताजासस्यभागे
 कंशिलागंधव ६३ त्रिभिभागपयंशु ६४ मेकीकानुविट्पुष्पयेत् विरादीप्रयेतेनभागीक्षीरेण्टकाणम्
 पिष्ट्वातेनमुर्वेत् ६५ मृच्छादेसंनिरोधयेत् ६६ अर्धगजपुटपुत्का चूर्णयेत्स्वांगशीतलं रसोराजमृगांको
 यंचतर्गजः क्षयापहः दशपिप्पलीकाश्चो ६७ कोननिंशदूषणेः ६८ अर्धसूतं विधागंधं कुयोत्खलेनकज्ज
 ली तयोः समंतीक्ष्णचूर्णमर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ६९ दियामांतेकतंगोलताम् पानेविनिक्षिपेत् अर्धयैरुय
 त्रेणयामांतेत्युस्तनाभवेत् ७० धान्यगणेशेन्यसेतुश्चाद्वहोरात्रमुनेत् संपूर्णगालयेद्वह्वे सत्पवारितं भवेत् ६८

जवसिरातवलकरै इसरजमृगांकरसको ४ गुंजादेरुतोक्षरक्षयहोर् अथनोपान उनीसमिचसहत्त वादशपीपरिसहत्तसंग
 देई ६३ घट्टेपरस्वयमग्निरस शुप्रयारेसेदूनीसुखगंधक खलकरिकजलीकरि दोनोसमानपोलादभस्मलेसवधीकाकेस
 में ६४ दोपहर्घोदवासनमेंगुलं रुपत्रसेवापिपहरभर्धयमेंधरेउस्महोर् ६७ तवनाजकीराशिमेंएकदिनराशरातगा
 डिकैनिकारलोर् फिरखलकरिखस्वमेंछानिले तक्जलपरजारेनोतिरेगी ६८

त्रिचयीकेसाथतवग्रणीनाशक्षीयं भाराभातपथदेय १७७ त्रिषिकमरसस्मरोपगुमरातांवावकरीइधसमानलेकिसीपात्रमेंभरि
चदेइधतरेउतारितवतविकेसमानशुषपाएगंधकदे १७८ मेवरीरसमेंएकदिनयोदिगोलीकरिइसायंत्रमेंभरिबालुकेयंत्रमेंआचदे
तवदेगुजासिलावे ६ बिजेणकीजडवेगसेमंवाकादेमेंयहूरसदेय स्तरसका। त्रिविक्रमनामहे मासेभरसेवनकरेनौपथरीइहो १० कुष्टपुष्प
ह्यालेखरु रुताल सोनामापी मेनसिल पाए सेंधव सुहागा एसवसमानखलकरिपारेसहितगंधकदे ११ गंधकतुल्यमरातांवाजंवीरीकेर

निहंतिग्रहणीरोगंपृथं तन्मोदं हितं ७ मृतंताम्रमजाक्षीरेः पाच्यं गुलैर्गतं इव ततामं शुष सूतं च गंधकं च समे सम ८
निगुं शीत्वा सैमर्धे दिनं तजोल संधयेत् या मैकं बालुकायं त्रैपाच्यं भोज्यं किं गुतकं ८ बीजप्रक मूलं च सजलं चारुण
चयेत् एसस्त्रिविक्रमोनाम मासे केनाशरीप्रएत १० तालं ताप्यं शिलाहृतं शुष सैधवटकाणं संमां संचरणयेत्
स्वेसतागद्विगुणगंधकं ११ गंधतल्पं मृतनामं जवीरे दिवपंचकं मर्धवड्डिः पुटे पाच्यं भूधरे सपुटे पंचेत् पुटे पुटे
इवेमर्धे सर्वमेतत् षट्पलं १२ विपलं मारितं ताम्रलोहमस्मचतुष्यलं जवीरस्नेन तत्सर्वं दिनमर्धं पुटलघुः
१३ त्रिशदंशं विषं चास्य क्षित्वा सर्वं विचरणयेत् महिषाज्येन संमिश्रं निष्कार्धं भक्षयेत्सदा १४ मध्वाज्येर्वज्रको
चूर्णं कर्ष मात्रं लिहेत्सुः सर्वं कष्टं निहंत्याशु महातालेभ्यो रसः १५ ॥

समे १ दिनघोदिसएवसंपुटमें धरिकपरोदीकति
सुधायंत्रमेंफूकदे एसेछ्वारफूकफिरिनिकारविजोसएमेंपाचेदिनघाटेएववत् ० ध्वादे तवछ्यपलरसले १२ मरातांवा २ पल
लोहमए ४१ पल एतीनोजवीरीरसमेंएकदिनघोटिदसुगोइधमेंआचदे १३ इसभस्मकातीसवाचंससिगियादेखलकैतवदेमासेभे
सकेसमेंनितवाइ १४ स्सपीछेवकचीकाचनदशमासेमधुयुक्तधीसाधवाइ नोसबकुष्टनाशहोय स्तरसकानामहातालेभ्यदे १५

कृष्णकृष्णस्य पारमस्य गंधक मालोहा नाम गगुल निफला यकारन् चीता मुकुशिलाजीता १६ एद्वयुसोलहराण चोशतिग्राणका
जेवीजकात्तराण १७ अथकमसदृशणसवएकदीकरिस्मानयतसहतेमंसानि घतभांमंभयिधिरि रसेग्राह्यासेविलासवकष्टकोदूरको
यस्वकृष्णकृष्णस्य गगुलितकोढभोगाशक्तोह १८ उदयादित्यस्य शुष्पपाणदूनीगधकाएकदिनधिकाकरसमेमर्देनकरिणोलीवीधिमादोपानमे
धरिपारसेविगुणतावेकोगहिरिकवेरिवनाई उममाबीपानकेभीतरगोलेपरद्वपिकिसीवसुसेनिःसंधिकरिवंदकरि १९ चारोच्चोखक

भस्मसूतसभोगंथोभृतायलासगुगुलः निफलाचमहानिवचिचकश्च शिलाजतः १६ स्येततृणितं कथीत्तत्पेकं
राणवोडयाः चतःषष्टिकंजस्यवीजद्वैर्णैषकल्पयेत् १७ चतुःषष्टिमृतचाभमध्वाज्याभ्यां विलोडयेत् स्निग्धभांरेधेन
स्वादेषिनिष्कंसर्वकृष्णत् रसः कृष्णकृष्णरोगं गलच्छादयतिवारण १८ सुषुप्तं विधागंधमर्धकं न्याइवैदिनं तजोलेपि
दमीमथेताम्रपात्रेण रोधयेत् सूतकात्रिगुणैव शुधेनाधोमुखेन च १९ पाश्चैभस्मनिधायाथपात्रोद्वेगोमयंजल
किंचिक्किंचित्त्रदातमं चूल्हायामध्वपंचेत् चरगिनिनातदुद्धृत्य स्वांगशीतं समुक्षरेत् २० काष्ठोदवरिकाव
न्निफला राजदृक्षकं विडंगवाङ्कवीवीजं दद्यात् २१ दिनेकमुदयादित्योरसोयं देयोविगुणं
जकः विचर्चिकां दुष्कृष्टं चेतकां च चनाशयेत् २२ अजुपानं प्रवार्तय वाकुचीफलद्वयैक ॥

नेराषिभरि चूल्हेपरधरिपत्रचोचंदई औहसतांवेकेढकेपरपानीमेगोचरघोलियोएथोराछेडितानाजं अंतर्मेतीत्रचोचंदई
दाभयेडनारि २० कटगुलर चीता निफला अमलतासपत्र विडंग वङ्कवीवीज स्नकाद्याथकरि रसकोभावनादे २१ एकदिनघा
दे गह्वरुदयादित्यस्य दोगुंजाखिलानेसे विचर्चिका दादसेतकुक्ष अच्छाहोई २२ अनोपानरवदिरसारस्राथ वा ३ गजकाकूयवा

त्रिफलेकेकायं मेतीनशाणवकुची चूर्णे कुंजाससुताखा २३ तोतीन दिन के अंत में फूटकाकाट्टर हो सात दिन के अंत में ये द्रव्य दू
 र होई विन पलेपनी लपत्र गुंजाकासीस धत्तरास पद सूर्य सुली छोटी लुनिया एसव समभाग ले पकरने से २४ अहां फूटकाको तो सात
 दिन मंगलित काट्ट अच्छ होय औ खेत काट्ट वायवा असाध दूर होई २५ इसी पर अष्टवेध औ लेप काहते है धुधुची चीता जल में पीसि
 लगाने से खेत काट्ट होय मंशिल विवि रकोराषि पीसी पानी साध ले पकोरे तो खेत को दूर होई २६ काट्ट पर सर्व धरस अथवा राप लगाय
 खदिरस्पक षाये न सुमेन परिपाचितं त्रिशुण्गं वागवाक्षी रोघाथे वा त्रिफलोद्भवैः त्रिदिनां तो भवेत्फोटः सप्ताहा वा
 किलासके २७ नीती गुंजा च काशी संयत्तरास पादिका सूर्य भक्ता च चांगेरी पिष्ट्वा गुल्फानि लेपयेत् २८ स्फोरस्था
 न त्रिशुण्गं यथे सत्तरात्र पुनः खेत कुंछनि हंत्वा शुसाधं साधन संशयः २९ अपर विन लेपोपि कथाने त्रिभि
 ष खरैः गुंजा फलाग्नि चूर्णे च लेपितं श्वेत काट्ट वृत्त शिलायामागे भस्माभिलिप्ताश्चित्रं विनाशयेत् ३० सुवर्णे रजतं चैव त्रये कं दर्शनिष्कं माषे
 धं पलं यामं विचूर्णेयेत् मत्तातान्नाभ्र लोहानां दत्तं च पलं पलं ३१ सुवर्णे रजतं चैव त्रये कं दर्शनिष्कं माषे
 कामृतं वज्रं च तालसत्पलत्रयं ३२ जंबीरे न्मत्तवासाभिः शुद्धां कौविष सुष्टिभिः मर्घं ह्यारिजैश्चैव
 त्रये केन दिनं दिनं ३३ एवमन दिनं मर्घं तजालं वस्त्रं वेष्टितं वायुकायं त्रयं खेयं त्रिदिनं लघु च न्दिना ३३०

क ४ पल एक पहर खलकर मरणांवा अभ्रक लोह ईशु शुष्क सुवर्ण एक पल २९ मर सोना चांशै एक पल मासे भर हीरा २
 परहर तालकासात २८ जंबीरी धत्तरा कसा सेड्डु मदार वकाशन वाकुचला कौर मूल इन सब को रस में एकाएक दिन भावमादे
 घोटि ३६ ऐसे सात दिन घोटि गोला करि सुखाइ कर परीदी करि वालुकायं त्रयं मेतीन विन मंद मंद आंच देय चावे ३३०

वहरनिकासखलकरिपलभरसो गिया देपलेपीपरिदूणीकरिघोटे सर्वेधरसरसस्कानामहे ३० दृग्गुजासहतसंगविलायेसे
सुतनोएहूहो अनोपान वखचीदेपदरुहूणएककपरेडोकेतेलेमेंमिलायेऊपरसेचाटे बहचनोपानसुखदेताहे ३१ कष्टपरस्वणे
क्षीरीरसपीसपेसेभरचोकयडभरसहे मेपचाइजवमहागाबाहोतवनिकारिघडभरहूधमेपचबेजबड्यकावोआहोजायनबनि
कालभोरसुसाइ ३३ उस्केकमेडुइपलमीचपलभर पोरकोकजली सर्वमिलाइखलकरे चारिभासेखिलावे नोएसत्रकएपीडितके

आदायचूर्णेयेल्हक्षणांपलेकंयोजयेद्विषं देपलेपिपलीचूर्णेमिश्रंसर्वेधरोरसः ३१ दिग्गुजोलिघतेक्षोड्रेःसुप्त
मंडलकण्डलित् वाकुचीदेवकाष्टयकार्षमाणंमुचूर्णेयेत् लिहेंदेरंडतेलेनअनुपानंसुखावहं ३२ हेमाब्हायं
पलिकंक्षित्वातकपदेपचेत् तर्कैजीणैसमुद्रत्युपनःक्षीरघटपचेत् क्षीरंजीणैसमुद्रत्यक्षालयित्वाविशो
षयेत् ३३ तच्चूर्णेपचपलिकंमरिचानांपलद्वयं पलेकंमूर्धितंस्तनमेकीकृत्वातमक्षयेत् निधैकंसुप्तकष्टा
तःस्वर्णेक्षीरोरसोद्ययं ३४ भस्मस्तुतंमृतंकातमुंडंभस्मशिलाजतु शुद्धताप्यंशिलावोषंविफलांकोलवीजकं
३५ कपित्थरजनीचूर्णेभंगराजिनभावयेत् विशाखंविशेषायमधुसुक्तेचिहेतदा ३६ निधमाचंहरत्मेह
मेहवधोरसोमहान् महानिंवस्यवीजानिपिक्वापद्रुसंमितानिच ३७ ॥

कारणयहस्वर्णेक्षीरोरसकहाहे ३४ जमेहपरमेहवधरस भागपाए कांतीभस्म लोहभस्म शिलाजीतशुक् नामापीशुद्धमेन
शिलशुद्धविकटा विफला गरवरेकोरदी ३५ कैया हरदी इनसवकाट्टणभंगरेवा केरसमेंघोटे जवसुषुजा
चाटे ३६ मासे ४ निगपाइतो जमेहनाशहोय यहरसमेंहवधनाभकहेतेहै वकारकेविषाछहूपीसिलेइ ३७

वर्षेसाभवा उरकाभोवन आठसासेयीसवमिलाश्केपियेनोवहनदिनीत्रमेहहो १३८ जलोदपरवन्त्रस पारपल ४ गंधकम
 १३८ हल्ली त्रिकला हह एसवहह १३८ एसवतीनतीनपल त्रिकदा जमालगोटेकीजड स्वेनजीण एआ
 ठआठपल सवमिलाश्खलकरे १४० डेकारएससेहहदूध भंगारस चीतारसबाकादो रेडीकोतेल रनमेकमसेसानसानभावनादे ४१ यद्
 महावन्त्रिस ४मासे मुहमेधगिरामपानीसेउतागिजारे तवमलगिरे संधाकोरेचनकेपोछेपथ्यमडाभानसेधवलोनदे धोजलगरमपि

पलमंडलनोयेनद्यतनिष्कवयेनच एकीकृत्यापिवेचालुहंतिमेहं चित्तनं १३८ चतुःसूतस्यगंधाधो रजनी त्रिक
 लाशिवा प्रत्येकंचदिभागः स्यात्त्रिवृज्जैपालचित्रक ३६ प्रत्येकंचत्रिभागस्याभूषदतीचजीरक प्रत्येकमष्टभागांस्या
 देकीकृत्यविघृणयेत् ४० जयंतीसुखयोभृगवन्निवातारितैलकैः प्रत्येकेनक्रमान्नावां सप्तवारं एथक् एथक्
 ४१ महावन्त्रिसोनामनिष्कमुस्मजलेऽपिवेत् विरेचनं भवेत्ततः क्रमं ससंधवं ४२ दिनांनेदापयेत्
 ध्यं वर्जयेच्छीतलंजलं सर्वोदरहरः प्रोक्तो भूदवातहरः परं ४३ गंधकं तालकं ताप्यं मृतनाम्न मनः शिला
 मुक्कं सूतं चतुर्लगां मर्दयेन्नावयेत् दिनं पिप्यत्पासुं कषायेन वज्जीक्षीरेण भावयेत् निष्कांर्द्धं भक्षयेत् क्षौ
 र्देणुल्मस्राहादिकं जयेत् रसो विधाधरेनामगोमूत्रं च पिबेत् १४४ ॥

ये सवपेयं केरोगहहो १४५ गुल्मपरविधाधरसु शुक्रगंधक हरताल सोनाभाषी मरतांवा भैनसिल पार स
 वसमानलेखकारि किरपीपरिकाथमेदिनभस्वलकरे एकदिनसिंहदूधेभस्वलकरे ४३ दुग्मासे सदनसंगचाटे गुल्मली
 हाहहोय यद्द्विधाधरसुवाय ऊपरसेगोमूत्रपिये १४४ ॥

त्रिनेत्ररूपं किं भूतपरा सुहागा हरिणशृंग सोनातावापारमरे एकदिन अश्करसंभयो दिगज पुटमं फूके ४१ यद्द्विनेत्ररसमासाभर
धृतसूतगने चोटे निसपर सैधवजीराहोग धनसूतगने चोटे योमासभचोटे संपुसुरी कीसमल योडा हूबोर ४२ शूलपर गजकेसुरीरस
शुद्धपारा इनीशुभगंधवादेनावल प्रलेकघोटि निसकेसमानशुचतोवेकटककारिकाजरीमेंमिलाइसुपुटकरै ४३ फिरा
जमेंसुपुटगादिगजपुटगाचदेददाभयेनिकाले ४४ तवलवलवारिपेघोपानमेदेयंजारसुखवोवेनोपेटकाशूलमिद्वेओखसीपर भुंजीहीग सौछिजीरा

टंकाणहारिणशृंगं त्वं मृतं रसं दिनैकमाश्वाश्वैर्मर्धेरुध्यापुटपचेत् ४५ त्रिनेत्रास्वारसः सोयं माषं मध्वाप्यकोलेस्त्रे
सैधवं जीरकं हिंगमध्वास्पाभ्यां लिह्नेदन्नं यंक्तिशूलं हृत्याशुमासमानं न संशयः ४६ शुद्धसूतं विधागंधपामैकं मर्दयेदुदं
ठयोतुल्यं शुद्धगान्धसं पुटं तं निरोधयेत् ४७ ऊर्ध्वोधातुलवणं दत्वा भृञ्जोरेधायेन्निषक् ततो गजपुटं पत्का स्वागशीतं सुषरे
त ४८ संपुटं द्यूणेत्सूक्ष्मपणं वेदं किंजकं भक्षयेत्सर्वशूलतो हिंगशुंरीसजीरकं च चामरिचं जटूरं कर्षेयसूतं लेपित्वेत्
असाध्यनाशयेच्छूलं सोयं गजकेसरी ४९ शुद्धसूतं विषगाधमजमोदाफलत्रयं त्वं निक्षारय चक्षारं वन्दि सैधवजीरकं ५०
सौवर्चलं विडगा निसासुइशुषणं समं विषमुष्टि सर्वतुल्यं जंजीरास्तेन मर्दयेत् मरैचाभावरीस्वारि वन्दि माधप्रशंतये ५१
पुष्पसूतं विषगंधसमसर्वं विचूर्णयेत् मरिचं सर्वतुल्यं शंकां टकाप्यां फलैश्चैः ५२

३४

वच मरिच रुतकाद्वर्णवत्त्रोटकासाधपियेतोञ्ज
साधयत्सुभीनाशहोत्रयहगजकेसरिसंवे ४८ मंदाग्निपरश्चानितुंरीरस शुष्पपारविषगंधकनीनी अजमोदत्रिफला सज्जीयवत्तार चो
धजीरा ५० कालासोनं विडगा पांशुलोतनं त्रिकटा एसवसमभागले ओसवकीसमकचलाले जंभीरीकेसमं चोटिप्रश्चिस्समगोलीबाधिसा
इस्य चानितुंरीरससंदाग्निद्रहो ५१ विषस्त्रिकापरश्चजीरेकटकासपारसिगियागंधकनीनीशुष्पसवसमभागलोत्पलकस्सिखकेसमान्मास्वद

हलकेरसर्भेभिजोरु।करसवारघोदि ५२ तीनरतीभावदीवनार्षाईरसअजीर्णकटकवर्षकेसानेसेसपचजीएरणतिहोइ भोविस्तन
कारुने ५३ अथमथाननेव पाएतोवाभनकहीग पोहकारमूल सेथव मुद्रगंधकहृताल कटकी सबसमभागखलकरि ५४ गरापरेना
बंदालमेवडी चोर्गरे करुतोरे रनसर्वकेसमे एकरकदिनवख पूर्वककामसेयोदि ५५ मासाभरसंहतयुक्तनितलाइ येयानभेवरस
काफरेगनाशार्थ इत्यरनिंदकधयपिये ५६ अथनाननाशकरसअक्षारअधसोना अफलेहा अफलीरा अफसीनामावी अफहलालअफ

मर्दयेजावयेत्सर्वमेकविंशतिवारकं ५७ वदीपुंजात्रयंस्वादित्सर्वोजीर्णोपशान्तये अजीर्णकटकअयंसीहंतिविस्तवि
का ५८ मृतंमृतंमृतंतामंहिगुपुकारमूलकं संधवंगयकतालकटकी घृणयेत्समं ५९ एननेवादेवदालीनिगुंभीतु
लीयके तिक्तकोशानकीशवेदिनैकंमर्दयेदुदं ६० मासमानंलिहेत्सोदः सोमंथानभैवः काफरे गअशंन्यर्थे छिन्न
काथंपिवेत् ६१ स्तुत्तारकवज्राणिताम्रलोहचमाधिकं तालनीलांजनंमुन्यंमहिफेनसमांशकं ६२ यंवा
नालवर्णानांचभागमेकविमर्दयेत् वज्रोक्षीरेदिने कंजुरुध्वातंभूधरे ६३ साधेकमाइकाइवेलेहृयेवाननाश
नं पिप्पलीमूलजंकाथं सकृद्वमनुयाययेत् सर्वेवातविकारंलुनिहन्वा क्षेपकादिकान् ६४ कन्यकस्याष्ट
भागाः स्युस्ततोवा दशभिर्भक्तः गंधोपि वा दशचो कसाप्रशाणकयोन्मितं ६५ ॥

पुला अकृतनिया अफोम एसभभाग ५६ एकभागभैपांचोखीन एसचइव्यले एकरदिन सेहं इकेइयमेंखलके एसउमेंराबिभययंन
भैयचवि ५७ मासिभएसअइलकेरसर्भेभिजितकारिद्वार्थेगोसबचयुनाशोय वापिपराभलकाथंभयगिरिमिला इकेदेयतेसवरानविकारि
लाइलाइआक्षिपकादि ५८ सन्निधानपरकनकतुंरस आहसेनाभागभस्मवाहभाग पांगभसअयगंधक १२ भाग दोषाणनाचभस्म १३

अमकभस्म ४ शाण सोनामाषीभन्वंश २ सर्मभ ३ लोहभ ८ ६९ विष ३ कश्मिरीपलभ १ इव्यओभरस एकदिनजंवीरानीइसै
२ १२२ संप्रचक्रिथोरीषचंद्रेप्रकिफरखलकरिमासाभखिलावेनोप्रतिवडासानिदूरिलो ६ ६३ अहरखवालहसुनकोरसभखिलोव
लोस सर्वैकए विसर्पभंगदर ज्वरविषविकारयत्कनकासुदरसरुनरोगनकोहर ६४ सन्निपभेरुनरसपाण ३ निष्का मंधक ३ निष्का इजो
७ टिकर नांवा चांदी पीतरवण पोलाद एयांयोभस्मकय्कयोभर ६५ सल्लिननेकार सौटिकात्ताडा वेलकेपलकारस चौराईरसा

अमकस्पचतः शाणमाक्षिकस्पदिशाणकं वंगोदिशशासोवीर्गत्रिशाणंलोहमष्टकं द्र विषंत्रिशाणकं
वंगालीपलसम्भिता मर्येयदिनमेकंचसेरुलफलोत्तैः ६२ दधान्मदुसुंदवन्नेमततश्चैतत्कारयेत् माषमात्रोस्मोदयः सन्नि
पाते सरुंधयः आर्देकस्वसेनैव सोनस्वसेनच किलासं सर्वकृष्टानि विसर्पचभंगदर ज्वराग्रसजीर्णचमये संग
हरोरसः ६४ रसो गंधस्त्रिनिष्काः स्यात्कु - त्कज्जलिकांतयोः ताम्रतारा खगा निसारश्चैकैककार्षिकः ६५ शिशुज्वाला
मुखीजुंवी विल्वेभ्यस्तंडलीयकान् प्रत्येकंस्वरसेः ऊर्याद्यामिकैकंविमर्दयेत् ६६ क्षत्वांगोलंघृतंतवत्सैलेवणेः पूरितं न
सेत् कांचभडिततः स्यात्पाकाचकूपीनिवेशयेत् बालकाभिः प्रक्षयाथवन्हियामबधंभवेत् ६७ गतच्छुपतंगाल
चूर्णयित्वा विभिन्नायेत् प्रबालचूर्णैर्कषणं शाणं मानावेषेण च कक्षसर्पे स्पगलैर्दिवसं भावयेत् गथा २८ ॥

इनरसममं पहरपहरभयोदि ६६ गोलावांधिकयरोदीकारि दोकाचकेयाले एकमे लोनभरिगोलाकारिद्वसरा लोनहरिनया

करितवमादीपान्नकेमालकायंत्रमंधरिदोषहरकीआचरिद ६७ ठंढाभएनिकारिखलकरिफिरिम्गचरुनकायेभर विषयाणभरका
सेसोपकाजहरमुक्तएकरिनखलकरि फिकाचकीसीसीमंभरिवालुकयंत्रमंधोपहस्वीआचरिद ठंढाभएनिकारि चूरणकरि १६८

मगर मुशली जयमांसी चोक जगन्नाथीपीपरि नीलक्रीमाती लाश्ची चीता काटसंख्या ६ सोफवननरुंद यत्तर अगलसुंशी महुआ चमेलीभेनफ
ल रनसवका एस्वाकादकारिकमसे एक एकवार धोदि सुखाइराखे ७० जंबीरिखुवा अदरवारस ६ मिरच दोगुंजारस के साथ संनिपात
भेदे यह ससिधरसहे यह सन्निपात भेखनामसहे ७१ अथ यखणीका पाटस चांदीमोतीर सोना लोह रनकी भस्म एक एक भाग पुष्पगंधक
२ भाग शुक्रपाण ३ भाग एसवखलकरि ७२ फिर कंधे कोरस भेखलकरि हरिन सींग भरिक परोठी करि ३० गोश्वाकी औबरे

तगरा मुशलीमांसी हेमाब्दावेत संकणा नीलनीपात्र कंचैला चित्रकाश्चकोट्टकः ६ शतसुष्पादेवदालीध
धरागस्य संदिक मधुकजाती मदनारसे रंभा विमर्दयेत् ७० अल्पकमेक वेले चततः संशेष्यथारयेत् ७०
बीजधराइकाशवमरिचैः शोऽशोभितैः एसा विगुंजः प्रमितः सन्निपाते शुदीयते प्रसिषेयं रसोनाम्ना संनिपा
तस्य भैरवः ७१ तस्मै न्तिकहेमा निसारश्चैकैकाभगिकः किभागो गंधकः सूतखिभागो मर्दयेदितं ७२ कपि
त्यस्वरसे गाढ मृगशृंगोततः क्षिपेत् घटेन मथ्य पुटेनैव सुगुण्डय मर्दयेत् ७३ वलारसेः सप्त वेले मया भागे र
से खिबा लोप्रवति विषा मुस्ता धातकी इष्यवा मृत्ना प्रत्येकमेक सरसे भोवनस्य त्रिधा त्रिधा ७४ माषमात्रो
स्मरेद्यो मयनाम मरिचैलया हत्यात्सर्वो नीती सारम्भ हर्णे सर्वजामपि कापयेत् ग्रहणी रोगे रसोयं वह्निदोयनः ७५

ठंडा भएनिकारि खलकरि ७२ वरियारस में सातवार खलकरि फिर तीनवार चिरचिरारस मे खलकरि फिर लोध अनीस मोथाधव
पुष्प इंझो गुर्च रनकोरस में तीन तीनवार खलकमसे करि ७४ मासाभारस सहत मरिच मिलाइ चठि सब अनी सारग्रहणी इ
खिरै यह यखनी का पाट अग्नि को दीपन कर्तो है ७५ ॥

वज्रकपाटसुग्रहीपर पाणभस्म अथवाकभस्म शुद्धगंधक यवाधार सुहागा अरणीबीज बालवच एसव समभागले ७८ ह्नेकार एसजंभीरं
 वज्रसस
 गरनकेसुमेतीनतीनदिनघोटिगोलीकरि सुखा २ लोहेवीकदेयामेथरिमाथीपात्रसेवदिकरि ७० मंदमंद ४ घण्टावेदना
 मानअनीसमोधारसुग्रहिकेयभागकेसुमेवेयसानधाघोटि ७८ फिरथवसध्य रंइयवमोयालोधवेलगुत्तु रनकेसुमे एकेकवारयो

मृतसूताभकंगंधवशारसंदकणं अनिमंथं वचाकायोत्सूतत्वल्यानिमानुधी ७८ ततो जयंती जंवी एंगशवे विमर्दये
 त् त्रिवासंती गोसंक्रान्ता संशोषा धारयेत् लोहपात्रे स एवंच दत्तो परि विमुद्रयेत् ७९ अथो वह्निशने कुर्याद्यामाफ
 तत ऊधरेत् रसतल्पं प्रति विघादधानो च रसस्तथा कपित्थविजयाश्वेभावयत्सन्नाभाभियक् ७८ धातकी इयवासुला
 लोभं बिल्वं गुडचिकां एतद्दसेर्भो वयित्वा वैलैकैकं च शोधयेत् ७९ सुवज्रकपाटस्वशाणौकमधुना लिहन् वन्हि
 शुंभी विडं विल्वं लवणं दूषणं येत्समं पिवेदुष्मां वुना चानुसर्वजा ग्रहणी जयेत् ८० तालेजं सुवर्णे च नाभं सूतकागध
 कं लोहं त्रिमादि दृशानि कुर्यादेतानि मानवया ८१ विमर्दं कनपकाशवेत्यसत्काचमये यदे विमुद्यपिठरो मध्ये धारयेत्संघ
 वेभृते पिठरो मुद्रयत्समकतनश्चुल्यानिवेशयेत् ८२ वन्हिशने शने कुर्यादिने कंतत ऊधरेत् स्वांगशीतं च सद्रूपेभा
 वेयेदुर्क दुग्धके ८३ ॥ यहवज्रकपाटसुग्रहाणभस्मसहसंगला ३५ परसेचीता सोदि पाणनो न वे लसें थव इनसवका

चूणेकरि उमजलसाय स्वाशतोसव ग्रहणी दूहो ६ ८० मदनकामदेवरस चांदी सोनातांवा चारोभस्म पाणगंधकलोहा
 एसातो कमसेवदतीभागले ८१ धीकवाकेरसमे योदिसी होमभरि कपरोदीकरि मादी पात्रमेनीचे ऊपर नो न द्रविची चमेसी सोधरिसे
 घुटकरि चूहेपरधरि ८२ मंदमंद ४ घां चवारि दिनभरि फिरनिकासि मदांके दूधं मेलवकरि ८३ ॥

श्लाघवी तजपन्नज वंशलोचन लोंग अगार केशर मोथा कल्लरी पोपरि सुगंधवाला कहर नका चूणे करि ६९ शाणभले औशाणभर
प्रयेत्तकंदर्पसुंदरस ओखोंड आवरा विदारीकंद ६२ इनसुवकोमिलाइ कर्षभघीराति कोखार निवयिपुरुषदूधपिये सोसरुषबड
तस्त्रीसंगभोगकौतौबीजिहानिहो ६३ क्षयीपरलोहरसायन शुधपारा भाग हुनोयोदिकजरि करितीनभागाशुषयो
लादकान्नसजलीसंगपहरभरघोटि ६४ फिर्योऊमारकोरसर्भे ३ बिनधाममेंवेडिघोटि तवआमओघोटनकीगरमीसेवहुतधुआ

एलातक्यत्रकंवांशीतवंगागुरुकोशं सुस्तं मृगामंदह्लाजालं चंद्रश्चमिश्रयेत् १ एतच्चूणे शाणभित्तं सेः कं
दर्पसुंदरः स्वारेक्काणमित्तं चोशिताथानीविदारिकः ६१ एतां सांकार्भे चूणेन सर्पिः कर्षेण सयुतं तस्योवद्विपलं क्षीरपिवे
सुखितमानसः स्मली समये बह्निहस्तिं काथिन गच्छति ६३ शुद्धं संद्रभागे कं विभागं शुद्धगंधकं क्षिपेत्कज्जलिकां कृत्वा त
त्रतीक्ष्णभवं जः क्षिमाकज्जलीकां तल्पं प्रहरं कं विमर्दयेत् ६४ तत्तत्कपाद्रवेयमे निदिनं परिमर्दयेत् ततः सजायते तस्य
सोस्त्रीधूमो जमो महात् ६५ अत्यंतं पिंडितं कृत्वा ताम्रपात्रे निधाय च मध्ये धान्यपट्टां लूला च त्रिदिनं धारयेत् ६६ उष्ट
मयतस्मात्सवले गुक्षि स्वाधर्मे निधाय च रसेः कृदार छिन्नायास्त्रिवेत्तपरिभावयेत् ६७ संशोषय मर्माथे अश्वभान
ये च्छिद्रं ये च विशः नासा मृतानि चित्रकानां रसेर्माव्य क्रमा त्रिशः ६८ लोहपात्रे ततः क्षिन्नाभावये द्विफला जलेः ॥

हेगा ६४ जवकशो गोलावां भिरुं डपन्न लपेटतां वेके पान्ना मेरुख मुहमुदियामें तिन दिन गाडिख ६६ कोने कारि बेध था ममें धरि
सवजको रस्मी न भावना दे ६७ जबस बिजार तब सोहि मिसव पीपरि तीनो के तीन का थकारि तीन जो न भावना दे फिरि त्सा गुस्व बीमाइ
भयक एक को रसे में तीन तीन न त्वनारि ६८ जल से निकालो ह्यात्र भेध रिनि फला भेधो दिभे कड़ी अनाइला छलका ॥ सीड भगर कटये रसा ६९

पलाशकेलाटसः स विजैसा रकाकाथ नीलमुडीरस बहुरफलीमा २०० एसवरसुवाकाथ मेतो नती नभावना रोफे एवारिया एशतावरि
गुधरुणरहट इमके रसमेतो नती नभावना देवा जोमि लावे १ प्रभात समय अवासे रस यत सहने मिलार तिसपर निफलाकाव पल्लभ
पियेय ह्मन्नोपानह २ तो नभा से सेवन करे खेतवा न होरे धोव चाकी रुरी परना डूर होरे मंदाग्नि स्वासुखासी पंडक फवा सुविकार रनके अर्थ

निगुंडी दडिमत्वग्निर्विसृंगकांडकैः ६६ पलाशकादलीशो वैर्दीजकस्य हने न च नीलिका लंबा शो वैवे
द्वलफालिकारसेः २०० भावयेन्निविनेलं चतनो नागवला रसेः शतावरी गोक्षुरमिः पाताल गरुडी रसेः त्रि
त्रिवलयया लाभं भावयेद्देमिसेषधेः १ ततः प्रभात तर्हि हे देव्यं मधुमा कोलमानकं पलमानं वरुणा यपि
बेदस्यानुपानकं २ मासत्रयशीलितं स्यादली पलिन नाशनं मंदाग्नि स्वासुकासाश्च पांडुता कफमारुनौ ३
विषप्लीमयु संयुक्तं हन्यादेतन्न संशयः वातास्विनू नक्षत्रं हृणीचादरतया ४ अडहृदि जयेदेतच्छिन्ना
सत्त्वमभ्युत्तं क्लृप्तवर्णं कंष्ट्रं भापुष्पं परमं स्मृतं ५ कृष्णं डिंगिलं ते स व मायान्नं राजिको तथा मधुमन्स
सुचैव त्वजेलोहस्य सेवकः ६ इति श्री शार्ङ्गधर मध्यम खंडे रससौधन भारुणं कादशे अध्यायः ॥ १२ ॥

त्रिफला युक्ता पाद ३ भीषरि सहत मेदे इतो वातरक्त भूत कषा अहृणी मलोदर ७ ओडु रम्बिन है एव को रसन ओ सहन युक्त देतो वलसु
नाभा अथ दधि १ खेतकाल गतिलेने लउड गइ मघ खवार २ एथ दधिलोह मग्नि वा लाजि ३०६ इति शार्ङ्गधर मध्यम खंडे कादशे अध्यायः २२

इति श्री शारंगधर द्वितीयकांड समाप्त

अथलमिय कां डशारंग धर खिरवमि

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथोपायः ॥ तत्राख्यते ॥ अथमलेहयानक्रिया ॥ स्नेहचारिणी ॥ तिकहिये घृत ॥ तेल ॥ त्रसाकहे ॥ मां समं मिलीचरवी ॥
३ ॥ त्राउको भीतरको मज्जा ये चोरे स्नेहबे घृ स्तयो द्यु ह्यो ते मनुष्यको पिणवे ॥ ते स्नेहरो प्रकाहे ॥ स्थावर ॥ अजंगम ॥ स्थावर कहि
येष्ववजा सांउपजीवहा ॥ थिरहे ॥ ऐसे स्नेह ॥ अनेक प्रकार के हैं ॥ तिनमें तिल का तेल ॥ अष्ट ॥ जंगम को हें चोरे ॥ अथासासहि तहे ॥ तिनसे उत्पत्ति घृतादि
अनेकानिमें घृतमेषु है ॥ अथ स्नेह ॥ मद्यो तिलमिलो विति ॥ सेयमकहे ॥ घी तेल वसा मज्जा ॥ सुगन्धो नो मज्जन कहें ॥ ३
अथ लेहयानक्रम ॥ घृतरोणीको तीन दिन पिळावै ॥ तेल चार दिन वसाया च दिन ॥ गज्जा ॥ हृदिन घृता स्नेह ॥ दिनसे अधिक ॥ से अधिक पान करने से स्वाहार

श्रीगणेशाय नमः ॥ स्नेहं च तव विधा प्रोक्तो घृतनेलं वसांतथा मज्जा च तत्पिबे मृत्योर्पि चिदसु दिने रवौ ॥ स्थावरो जं
गमश्चैव धियोनिः स्नेह एव यते ॥ तिल स्नेहं स्थावरेषु जंगमेषु घृतं वरं ॥ द्वाभ्यां निभिश्चतुर्भिरेयं मका स्निह्यते महा
न ॥ ३ ॥ पिवेच्च हं चतुर्हं पचाहं षडहं गृथा सप्त एवाभ्यं स्नेहः सात्प्रीयो भवति सेवित ॥ दोषाक्वाला भिवयसां वलं दृष्ट्वा
प्रयोजयेत् ॥ होना च मध्यमां ज्येष्ठां मात्रा स्नेहस्य वृद्धिमान् ॥ ४ ॥ अमात्रया तया काले मिथ्या ह्यारवि ह्यारतः स्नेहोति शोका
केतं स निरावि संज्ञताः ॥ ६ ॥ अकाले चाति मात्रां असात्पय च भोजनं विषमाशनं यजुक्तं मिथ्या ह्यारः सकथ्यते ॥ ७ ॥

॥ पिसह एण न ही कानाहे ॥ ४ ॥ अथ स्नेहमात्रा प्रकारात्तादिरोष ॥ अतकाल गठ एणि ॥ अत्र स्था ॥ औनिर्वलसवलसमवल ॥ विचारि ॥ अ
पयोचितेणी के घृत स्नेहकी मात्रा देना ॥ ५ ॥ अमात्रा अथाण ॥ औनिना बोध समरे विना स तजाने ॥ अताधिक मात्रा अत्र अलन ॥ विपरीत भोजन
अर्थ ॥ अथ घना निरा ॥ असावधानता ॥ एण ह्यो नैहे ॥ ६ ॥ विना समय घटवट निरा एवित देश काल कि
मकरना ॥ अजुसे विपरीत यथागासीमै ॥ अथ पाला ॥ अहो भेंकरुत जलाभ्यास विना वस ह्यदि मिथ्या निहार ॥

अथमात्रमात्र दीप्तानिवालेकोमात्राद्यतादिलेहपलभादेना मध्यमाग्नीमनुष्यकोतीनकर्षप्रमाणदेना नद्याग्निमनुष्यकोदोकर्षप्रमाण
मात्रादेना ८ औरअष्टपिघतादिपानकौसामान्यमात्राकहेनेहे तेभीतीनोहे ६ तोमात्राअठ्यहर्मेयचेसामहताहे दिनमरमेपंचेव
हमध्यमाहे दोपहरमेपंचेसोअलाहे इतीतोभाचानमेनोलकात्रमाणनहोतैसायचेओम्हतीमध्यमामेअल्पलुखगरहे १० प्र
यात्यमात्रागुण अल्पमात्रासेकर्षकीअग्निदीप्तकरेस्त्रीप्रसंगकीरुख्यकरे जोथोरैत्यातादिकाकुपित्तहोतिचे शान्तिकरे मध्यममात्राकष

देवादीभानयेमात्रास्नेहसुपलसंमिता मध्यमाय त्रिकर्षेसाज्जघत्यायद्विकार्षिकी ८ अथवास्नेहमात्राः सुस्निहोना
सर्वसंमताः ६ अहोरात्रेणमरुतोजीयेत्यन्हिनमथमा जीयन्त्यादिनर्षेनमाविशेयासुखावहा १० अल्पास्याधे
यनौटव्यास्वल्पदोषेषुप्रजिता मध्यमालेहनीशेयावृहणीत्रमहारिणी ११ ज्येष्ठाकुष्ठविषोन्मादयहोयस्मार
नाशिनी केवलंयेतिकेसर्पिर्दार्तिके लवणान्वितं पेयवहकफेवत्स्वोषधासमन्वितं १२ रश्मिक्षतवि
षातानांवातपित्तविकारिणां हीनमेयास्मृतीनांचसर्पिपानंघशस्यते १३ कुमौकोष्ठा निलाट्टधाः ३
दृक्कफमेदस्ः यिवेद्युलैलसाम्प्राये तैलेदीतार्थिनस्तकये १४ ॥

मीनकी शरीरुष्ट चातदृक् अमशान्तिकरे ज्येष्ठमात्रापलमरको कुष्ठरोगविषविकारउन्माद कृतत्रेनवाधा मिरगो एरोगद्वारकरी
हे १ दोषोचित्तानोयानपित्तकोपमेकेवलद्यत वायुकोपमेसेंयवसंयुक्तद्यत कफकोपमे सौमिर्चपीपरियवापारपीसिघ्नमे
युक्तकारिण्यावे १२ अपररोगोंपरद्यत दृषाईउत्तक्षत विषार्ति वातपित्तदोष हीनवृद्धि सुधिभूलना इनमेप्रवस्यध्यतपिला
वे १ तैलयोगयोगीक सिविकार वायुवधशरीरकफज्यौमेददृक् इनमनेलपिलवे जेतैलउसेसोभाविकअहिततहामातोअग्निभीदीप्तकरेगा १४

अथधारोस्तेहृद्यविधिः दोहनीकेभीतरमित्रीभीसिघृतमिच्छादलिप्तकारे निसेसेकिदुग्धदुह्यदत्तं एगगर्भेपियेताजुं एतगर्भेग
 भेपियेतेतुं एतातदप्यन्नदोह २२ स्नेहपियेयपरिष्क्रमकरने वाकाफक्ततपदार्थेषानिसेस्नेहमयचासोवामलारोधकियासीतो
 उरुमज्जलसेवमनकारेवेतोअजीर्णदोषमिष्टि २३ जोस्नेहअजीर्णीकीरंकाहोतोतनजलप्यावे जवउच्छिदकारअवि अन्नपरद्वयकार
 तवजानेअजीर्णशान्तिभया २४ स्नेहजन्यपित्तकोपयत्न पित्तप्रकृतीकीस्नेह्यानसेगर्भीहोतीहे प्यासविशेषलगतीहे उसेशी

शर्कराचूर्णसंलुष्टेदोहस्यस्थे घृतेतुगां दुग्धवाक्षीरं पिबेदुष्मासघः स्नेहनमुच्यते २२ मिथ्याबापिपुडुत्वाद्यसखे
 होनजीर्येति पिष्टभवापिजीर्येतवारिणोस्तेनवामयेत् २३ स्नेहस्याजीर्णशक्यापिबेदुष्मोदकंगरु ततोऊरोभवेच्छुभे
 भक्तप्रतिरुचिस्तथा २४ स्नेहेनपैतिकस्याग्निनिर्यतातीक्ष्णतरं कृतः तदासोदीरयेत्तस्मांविषमातस्पाययेत् शीतज
 लं वामयेच्चपिपासातेनशामति २५ अजीर्णीवर्जयेत्स्नेहमुदरीतरं एज्वरी दुर्वलोरोचकोस्थूलोमूर्ध्नामद
 योडितः २६ दन्तवत्तीविरक्तश्चवांतिदुष्माश्रमान्वितः अकालप्रश्रवानादीदृदिनेचविवर्जयेत् २७
 स्वेधसंशोधमद्यत्वीवायामासक्तमानसाः वृद्धवालकशोदृक्षाः क्षीणास्ताः क्षीणैरेतसः २८ ॥

तलजलपिलाबमनकरावैतोप्यासउष्माशान्तिहो २९ स्नेहनिषेधअजीर्णमिउदरोगेर्भे तरुणज्वरमें दुर्वलकोअरुचीको
 अतिस्थूलको मूर्ध्नामें मंदार्तिको ३० वस्तिकर्मभयेको विरेचनभयेको वमनीकोपरिअभीको गर्भगिरीस्त्रीको इनसर्वकोस्नेह
 प्यावे ३१ स्नेहयोग्य औषधिदेजिसेस्वेदनिकलाहो रेचनकरायाहो मधयीनिवालेको भेद्युनअभीको बालवृद्धको वृद्धशरीरको
 रक्त्यानुक्षीणको जातानीको तिमिरोगीको घृतादिस्नेहपित्तनायोग्यहे ३२ ॥

लेह्यस्य लक्षणं जोलेह्यस्य सिरा एभया होतो आरोगशरीरे मेवायुश्च वर्तते हो अग्निदीप्तमसृचिकना गाडासु फातनकोमल तेजसु
क्तचिकना कानिर्हितं लेहसेनीमशुष्य ऐसा हो जाना है उपद्रव विनाशरीर स्वका रंदिनिर्मल एतश्च एण्वधे स्नेहमये के है औचवे के
क्षण होतो लेह्यपानविपरीतमया समकना २६ स्नेहविशेष पीनेको उपद्रव अन्ननभावे मुलं मेषानी छुटे मलभागे ने जलन है ओमल यद्
तं प्रश्नतीगार शरीर पांडु एष्यति स्नेहलक्षणैह ३० अथ स्नेहदृश्य त्वेस्त्रिगधप्रतीकार दृक्षमनुष्मकोविना मप्यनिकारमवातिलका

चार्तोनासिभिर्गतीयेतेषां स्नेहमुत्तमं २८ वातासुलोमंदीप्ताग्निर्वर्चः स्निग्धमसंहतं मृदुस्निग्धांगनाग्लानि स्नेहद्वे
गोयत्ताघवं विमलेंद्रियतासम्यक् स्निग्धेरुक्षे विपर्यया २९ भुक्तदेवो मुलश्रावो गुदे दाहः प्रवाहका नंत्राति सारः पा
दुत्वं भृशं स्निग्धास्य लक्षणं ३० श्यामा कश्च एकाद्यैश्च तत्रापि एणाकसक्तभिः ३१ दीनानिः शुष्ककोष्ठश्च सुषुधा
तर्हं द्रियः निर्जरावलवणं घ्नं स्नेहसेवी भवेन्नरः ३२ स्नेहे व्यायामं शीतवेगाघानप्रजागरान् विवा
सप्रमभिष्यं दिदृक्षानं च विवर्जयेत् ३३ इति श्रीशार्ङ्गधरेण विरचितं स्नेहपानाध्यायः १ स्वेदश्चतुर्विधः
प्रोक्तस्तपोयमस्वेदसंज्ञको उपनाहोद्रवः स्वेदः स्रवैवातीति हारिणः २ ॥

कल्कयवकोसत् स्निग्धकारे स्निग्धको सामाके वा वलवना विखिला इन्द्रवाकरे ३१ स्नेहसेवनगुण अग्निदीप्त शुष्ककोण धातुष
ण् इंद्रीदृढजगरहितवलकां तियुक्तलक्षणं होति है ३२ स्नेहसेवीको वज्रिपराधं अभनकरे दंढपराधं नजे मलसूत्रन ऐके वलनन नागे
नरिनमे सौर्वै कफकृतपदार्थदृक्षान्नखाय ३३ इति स्नेहपानविधिप्रथमो ध्यायः १ अथ स्वेदनविधिः स्वेदक ४ भांति हेति स्ने
नाम तापक हे सेकना ऊभक्त हवफा ए उपनाहक हे मोटरी से सेकना इवक हे कादा रिक्त में वेकना ए चोरो वायु पीडा हरते है १

स्वेदविशेषकर्तव्यं तापस्वेदश्चोष्ण विधिसौक्यनाशकं हे उपनास्वेदविधिवायुनाशकं च चर्मकाहं हे वानकाफर्मस्वेद-
कोरे ओवायुर्मसस्म ओवायुर्मकाष्ठलदाणपिर्मकेर्मलेतोस्स्मस्वेदस्वेद इतकाणपितवायुर्महलकास्वेदनाकाला खलवानशरीकोवायुकाश-
वेगहेतोस्वेदअधिककानाउचितहे हलकोशरीर्महलकास्वेदउचितहे मध्यमरोगवालिकोमध्यमतस्वेदउचितहे ३ कफरोगर्महलकायदार्थेणकादिर्मस्वेदके-
काफवातरोगर्महलस्निग्धपदार्थेस्वेदकाफमेदवायुयुक्तमेउभस्थानर्मवेगयस्वेदकोरेवायामर्मवेगयर्कैरहलकासा ४ वामल्लसुधमार्गन्वलावे वाभारीय-

स्वेदेनापोष्मनाप्रायश्चेआधौसमुदीरितो उपनास्त्वुवानम्रपितसंगेद्रवोहितः २ महावलेमहाव्याधौशीतेस्वेदोमहा-
स्थतः सुर्वलेदुर्वलः स्वेदोमध्यमेमध्यतमोमतः ३ वलाशोदृक्षेणस्वेदोदृक्षेणस्निग्धफफानिले कफमेदोदृतावातो
कोधमरोहर्केः करण ४ निरुद्धमार्गगमनंशुं रुद्रावरणभ्रवं चिन्तावायामभांशेअसेवेतामयमुक्तये

१ तेभानस्यविधातव्यं वसिष्ठानिहिदेदिनां श्लोथनीयाश्चयेकोचित्स्वेदश्चेद्विधाश्चतेमता ६ ॥ पश्चा-
न्त्येधागतस्वल्पेमृदगार्भेगदेतथा स्वेधाः दुर्वेनयः स्त्रीहृभृगंदर्भेधोसांतथा श्मर्यश्वात्तुरेजंत-शमयेच्छ-
स्त्रकर्मण स्वनोन्त्येदन्निवातेचजीर्णाहारचकारयेत् ॥ ८ ॥

स्त्रउर्वावै वाचिताउपजास्कोवापरिश्रमकार्दवोऽग्रावाइरेसीयुक्तसे कफमेदयुक्तवायुरेगद्वहोनाहे ५ श्लोनामयोग्य वस्त्रीयोग्य स्वे-
नयोग्यकोत्रध्यमस्वेदनिकरयउपायकर् ६ जिसखीकोपेटकेनीतरगर्भकासालहोवाभूदगर्भहो स्तनरीकागर्भजववाहिरहोनाइतवस्वेदके-
जिसमजुषकीझीहा भगंदर अर्श ओषमरी स्तनचारोगांतीनकोत्रध्यमस्वेदनकरिशस्त्रउपायकरनाउचितहे ७ स्वेदकर्मकरनेका-
समयस्थान आहारप्रचनेकेअनंतर जिसस्थानर्मपौनकात्रवेशनहोशकै नसांवेदकेस्वेदकर्मकरे ८ ॥

वेदविषयस्य को वरिषान्नमेतत्तममविगवितीवातादिषाद्येष श्रीरसादिसमथासकेनिकाटमलकापतलाकरिउसकेसाय
यहअन्यत्रैयमत्रहं श्रीषाङ्गिपरमते स्वरोमजप्यकेपसीनानिकालतेहीसे रसादिसमथाजुमंस्थितवातादिषिकाटमलकीय
तलाकीरिनिकलजातेहं ६ स्वेवीकेचित्तास्वास्थ्यकरनेकायान्न जिसकास्वेदकरिपसीनानिकालनेसमत्वापतलाहोबित्तसावधा
भोकातीपरस्वदनलगानेसेसावधानहोगा जिसकाशरीरनेलभंभिनोभागाथाहै खोमलपतलागिराहेंउसकीधोखोपरस्वलीवाकेवडा

स्वेदाधातुस्थितादीषा स्वेदस्तिन्नस्पंदेहिनः इवांचंभाणकोष्टांतर्मेतायांतिविरेक्तां ६ स्वेदमानशरीरस्य हृदयंशी
तलैः स्थोत्स्वेदाभ्यक्तशरीरस्यशीतैराच्छाद्यचक्षुषी १० अजीर्णेणदुर्वलोमेदीक्षतक्षीणाः पिपासितः धनोशा
रीरक्तपितीयाशुरोगीतबोदरी ११ सदातीगभिणीचैन्ननसिस्वेद्याविज्ञानता एतानपिगृहदुर्वरेः स्वेदसांधान्न
पान्वरेत् १२ मृदुस्ववंद्रसुजीततया हृत्सुक्रदृष्टिषु १३ अतिस्वेदात्संधिपीडायाहृत्तसाक्षमो धमः पितास्तृक्पिंडि
काकोयस्तत्रशीतिरुपाचरेत् १४ तेष्टतायाभिदः स्वेदोः बालुकावस्त्रयाशिभिः कपालकंदुकांगारैर्यथायोग्य
प्रयुज्यते १५ उष्मस्वेदः प्रयोक्तव्यो लोहपिंडिद्विकाशमरी प्रतभैरग्लसिक्तैश्चकायेनक्तकवष्टिते १६

केजलमेवत्याभिजोर्देवदत्तेसे चित्तस्वास्थ्यदेगा १० स्वेदधयोग्य अजीर्णीदुर्वल प्रमेहीउहृदतपीडित प्यासाश्रधनीसासक्तएक
पित्तएणीपाशुरोगीउदरोगी ११ मर्षातीगभिणी ऐसेरोगीकेस्वेदनकरेजोअवश्यएकानाहोतोसुसुखेहोएकस्वलेह
अरष्ट्रनेत्ररु १२ रोगगमंभयोरस्वेदले १३ अतिस्वेदोपद्रुपू संधिपीरदाहहसा स्थानि भमररूपिणसंकुषी इसकेसमतायेरीपोचाकरे
तिहोद १४ अथगापस्वरनापकपश हाथ स्वपाकपशकांगरवनाकेबोअग्नि एक्कहभक्तिकेनापसेबलैनीसाजसुंवेपथो

सेकनेकोऊवाकें लोरेकागोला वारंठ पापायतपाइ उसपरयअपदाथेथोग छिउक ससोसभरालेकें कंवलउगइस्वेदनकरे ॥ ६ ॥
 इसरावातहारीकें हें दगरसलादिकाथ नासउमकारियेदेमेभरि ॥ ७ ॥ सुखलुखिगलछेदि धातुवाकाठवाबासकीरोहाथलनेतिलवना
 वेगोष्टछकीसूरति निसिमीनलंडकरे एकछत्रंणलवाक्कीकोदोसगानपतलीओरसे उमछल्लंणलकेडुकेडुकानेदासुवयरेकेछेदमेप्रवेधि
 उममगथपुवडउचाकल्लोरे फिलोरेएवड सीधालगाइ गजशुबीसाकारितीनोसंधिमंदि एतवरेगोकोधीवतिललगाइवालेपुकारि कंवलउमसून
 ओरसेटकनिःसंधिकरितवउसगजशुबीकासुलकावलकोभीतस्योलिखेइन्कोतोपसीनानिकसे ॥ ८ ॥ ततोप रेगीकेगरीरसेवीताभअधिकतत्वा

अथवावातनिर्नाशि इव्यकाथरसादिभिः उमैर्धेरंरूपयित्वापार्थेछिइंविधायच ॥ ९ ॥ विमृश्यास्यंनिखंडं च धातुचांकाष्टजातथा
 षडंशुलास्यांगोषध्वांनोपुंजादिरुत्तिका एमुखोपविष्टस्वभाक्ताग्ररुद्रावरणवृत्तं दस्तिभुंभेकयावाक्कास्वेदयेदानरेगिणं
 ॥ १० ॥ सुखायामभानावाभमिभुल्लिभेखादिरेः काष्टेरेधानथामुष्यशौराधान्यास्तवाग्भिः ॥ २० ॥ वातग्रपत्रेगध्वाघशयानवे
 दयेन्नर एवमाथादिभिः स्विन्नशयानंस्वेत्माचरेत् ॥ २१ ॥ तथेगमात्स्वेद्वक्रयोदातहरेषधैः प्रक्यरेहंवातांतेशीरमांसरसान्नि
 भिः अस्सपिष्टिसलवणैः सुखोलेस्नेहसयुतैः ॥ २२ ॥ औगगवाधेदिबाइशांशलगाहिरा

महाधिडिक ॥ २० ॥ वायुचारैः इयचविख्याइ रेगीकोसुलाइभारीवस्त्रउम्वैतोपसीनानिकरेचोथा भवेपकारागदातयाइ उच्छेदियानीलेछिइकि
 रउवपातादिशज्जाराचिधर्ववतखेइमकरे अथग्रंथान्तेवानहत्तवस्त्रइव्यधडेमेधग्लिलभरिसुखवंदिवारि ॥ २४ ॥
 उमतेल्लमेल खस्त्रोखाटयसुलाइकपडाउगारुनीचेयठधीर निर्तेवकीओरगुदमुखछोरवापदेखाफेदसीनायोछियाछलेइस
 उमसंज्ञकखेइने एसधिकसतोधाएकेवाताहिकारोष पसीनिकेसाधसवनिवासजानेहै ॥ २५ ॥ अथोपनात्तुकिगसांभुवादिवातहनइव्य ॥

[illegible]

अथ इव स्वेदविधिदशमूलादिवासुद्यत इवोकाकाथवनाश्रेणीकोकदण्डवाचोकोनकोटर सेनेवाचाक्षी तांवालोहावाक्
तीसअंशलउचावनाइवेबाइ वहकाढालेरीगीकोऊपरयतलीधारसेनावे तामिकेछत्तअंशलऊचेआवेतवस्यथकोह
इसीप्रकारएकवाद्योदिनराष्ट्राकरे इसीभांति तैलइधद्यतइवस्वेदनभीकरे फिग्योनकोवचावे ऐसेदोनीनक ॥ "

धनस्वातिलगास्करेसवनसिद्धरूपेभोकाभुखलिआताहिं जोभोगमनेशकालेपावैतीउनकेमुखसेस्नेहादिबार्धभवेवशकेवायुकोनि
कारदेतेहंशरीरकोतनप्रोवलवानकर्तीहैइत्यंगजेसेजलसेअंजुरकीजमेजलीचनेसेदृक्षवढेपुष्ट्येनेसेइत्तसंज्ञकत्वेदसेमनुष्यका
रोगनाशहोउमरवढेतेसेहीरसाक्षिसुनाधानुमेवांतदोषवढनेसेपेटवामलमार्गमेंभडभराहृदहीतीतेलखेदकरैइस्सेयेवाननाशकऔर
यत्ननहीअंजवतार्इखेदकरैकिवायुक्षरणेज्जकडनाभारीयनइत्त्येनअग्निदीप्तदेहकोमलहलकीहोतवजकरै॥खेदकोयेरातेल

एवंतैलेनदुग्धेनसर्पिषास्वदयेन्नरं एकोत्तरेश्वरं त्रैलोक्योक्तवणाक्षने शरीरेवल्लभायतेत्युक्तस्तत्रहोवगाहन
शिरामुखेरोमकूपेर्धर्मनाभिश्चतर्पयेत् जलसिक्तस्यवर्द्धितेयथामूलेंकरत्तरोः तथाधातुविष्टवस्तस्त्रैह
सिक्तस्यजायते नातः परतरः कश्चिदुपायोवातनाशनः २४ शीतशूलद्युपरमेत्तंभगोरखविग्रहः दीप्तिम्बो
माईवेजातेस्वेदनादिरतिर्मेता २५ सम्पक्खिवन्निर्वृदि तत्त्वानमुष्णं वभिः शनैः भोजयेच्चानभिष्यं निम्बाया
मंचनकारयेत् २६ इति श्री शाङ्गधरेस्वेदविधिर्द्वितीयाध्यायः २ शरत्काले वसंतौ च घ्राट्टकाले च देहिनां व
समं रेचनं चैव कारयेत्काशलोभिषक् २ वत्सवंतं कफव्याप्तं हृल्लासादिनिपीडितं तथा वमननुसाम्प्रचयी
रचितं च वा मयेत् २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥

सगरसुबोक्षजलसेन्तारकफकृतभोजनकरे २६ इतिद्वितीयोऽध्यायः २ शारद वसंत प्राविष्टकालेकोष्ठादि चत्वार्येद्यवमनविवेच
नकारावे क्योंकि अश्विनीकुमारसंहितादिसवर्ग्यकारेणसेहीकहतेअथेहे इस्मैमनुष्यकीब्रह्मतिशुद्धाहगीहैं स्वमनयोग्य
जिसेवमनकरनेकीसमर्थहो कफव्यामहो मुखसेबाह्रहताहो जिसवमनहितहो धीधृतिहोतिसेवमनकरावे २ ॥ "

विषरोगे सन्त्यरोग मंयन्ति पीलापद अत्रुद हृदोग कृष्ट विसर्प प्रमेह अजीर्णे भ्रम ३ विदारी उपची कास श्वास पीनस हृद चयसा
उन्माद ल्हातिसार ४ नासाश्चोषतालु नाकाकर्णे जीव विजिह्वक गलगण्ड अतीसार पित्तश्लेष्म मेद अरुचि इन रोगोर्भवे घवमननव
तावे ५ वमन अयोग्य तिमिरी गुल्मरोगी उदर रोगी कशं दुर्वल अतिद्विदा गर्भिणी मोवा उरुहती ६ मरुपोडिन वालक चक्षुस्ती भ्रवा
निद्रा एवली कियार् उदावर्ती उर्ध्वको धर्दि रोगी केवलवाजाती पांडुरोगी कर्मी बहुवाक्य भ्रम सेस्वर भंगी ऐसे रोगीयो को वमन करेवे ७

विषदोषे सत्यरोगे मंदे नोक्षीय देवुद हृदोग कृष्टवी सर्प मेहा जीर्णे घमे सुच ३ विदारिका पची कास श्वास
पीनस हृदिषु अयस्मा रज्वरो मा देत थार क्तानि सारिको ४ नासा तात्वोष्ट पाकेषु कर्ण आर्वा विजिह्व के गलगण्डा
मती सारे पित्त श्लेष्म गदेत थार मेदोग देरुचो चैव वमनं कारयेद्भिकक ५ नवामनी यस्ति मिरो न च गुल्मोदरी कश-
नति हृदो गर्भिणी च न स्थूलो न क्षतानुर ६ मदातो वालको वृक्षः क्षुधितश्च निद्रा दितः उदावन्धु रक्तो च दुःख
र्दिः को वलानिलो पांडुरोगी क्तिमिव्याप्तः पटनत्स्व र्याप्तकः ७ एतेष्वजीर्णेष्वपि तावा म्पाये विषयोडिताः कफवा
नाश्च भौते वाभ्यामधुकाय स्पपानसः सुकुमार कृशं वालं हृदभीरु न वामयेत् ८ पीत्वा यवा गूमा कं ठ्डीर
तक्तदधीनि च असाम्प्रेक्ष्य भौतैर्भोज्यैर्दधानुक्ति शयदेहिनः १० ॥

ओ अजीर्ण युक्त विषयोडित कफ व्याप्त इनमनुष्योको उरुदी महुआ कीछल काकाय पिता ई वमन करेवे ७ ओ सुकुमार दुवला
वालक हृदा भयभीत स्तको कभी वमन न करेवे ८ वमन के पूर्व उपचार जिसे वमन करण हो उसे यहिले येठ भर एवा गू इध मवाद
ही ओ अनभाव न परार्थ ओका फक्त तपदाथ स्तको खाने से रोष ऊप उभर आने ह तव वमन को ओषधि देस्ती वमन अच्छे ॥

कारहोताहै औरसेहृणनकियेकोअच्छेप्रकारहोताहै १० वमनयोगप्रदार्थे सर्वमनप्रयोगमेंसेधववासहतसक्तऔषधितकारकहोतीहै
 जोद्वितीयावातावायुतत्तदेतदेहै वहविभक्तसवमनहै जिसेविभक्तसवमनदियेपरचेचनदेनाहोतीधानत्वानेदेइ ११ वमनमेंऔषध्यादि
 काथकाप्रमाण काथकीइत्यकडवभरिहूटिकैआढकभजलमेंऔषाड आधाजलजाइतवउत्तारिलेइ फिरवमनकरनेबालेमन
 व्यक्तोपिलावे १२ वमनकाथयानकरनेकाप्रमाण वमनकियाकाकाथनम्वप्रस्थपिलावेसोलेष्टुमात्रहै छहप्रस्थपिलावेसोमध्यममात्र
 हैं तीनप्रस्थपिलावेसोछोटीमात्राहै १३ वमनकाथमेंकाल्कादिकऔषधिकाप्रमाण वमनमेंकल्क चूरण अवलेह तीनतीनपल
 स्त्रिगधखिन्नायवमनंदत्तं सस्यकावर्गते १० वमनेषुचसर्वेषुसंधवंमधुवाहितं विभक्तसवमनंदयंविपरंतुवि
 स्त्वनं ११ काथइत्यस्यकडवंधावधित्वाजलादके अर्धभागवशिष्टवमनेधवचारयेत् १२ काथयानेनवप्रस्था
 ज्येष्ठमात्राप्रकीर्तिताः मध्यमाषजिगात्रोक्तात्रिप्रस्थाचकनीयसी १३ कल्काष्ट्रणवलेहानां त्रिपलंष्ट्रमात्रयाः
 मध्यमांदिपलांविंघात्कनियापलसंमिता १४ वमनेचापिवेगासुरष्टोपितांतुत्तमाः षडेगामध्यमावेगाः
 अन्वारत्नवरामताः १५ वमनेचविरकेचतथाशोणितमोक्षणे सार्धत्रयं दशपलं प्रस्थमाहुर्मनीषिणः १६

देनासोवर्षमात्राहै दोदोपलकोमध्यममात्राहै एकारकापलकीलघुमात्राजानना १४ वमनकार्यउत्तममध्यम कनिष्ठवेग
 काप्रमाण जिसमगुल्मकोवमनकौऔषधिदेइउसके सातवारताइसवदोषगिरै आठवीवारपितागिरैतौउत्तमवेगहैयांचवार
 मेंसवदोषगिरिछटीवारपितागिरिवह्ममध्यमवेगहैतीनवारमेंसवदोषगिरचौथीवारपितागिरैवह्मकनिष्ठवेगहै १५ वमनादिकोमे
 प्रस्थप्रमाण वमनऔरेचन औरसिराक्तमोक्षण अर्थात्फललेनेमेंप्रस्थ साठेतेहूपलकाजानना १६ ॥

दोषविशेषमेवमनोपचारद्वय कहुतीक्षणस्यद्वयार्थसेवमनकारयेसे काफार्तिकाकाफनाशहोताहे मधुरशीतलापयार्थकारिवमनका
 रयेपिज्ञानाशहोताहे मधुरद्वयस्वदाईउत्सायशार्थसे काफयुक्तावातनाशहोताहे सोधिमिचैपीपरिलीक्षणहे मुनकाप्रनारादिमधु
 रहे १० काफेवमनविधिः काफप्रकृतीको पीपरिभैनफल संधवचूर्णकारि अमजसमेंपिलानेसेवारवारकाफगिरेगा
 को पंदोलनीमयवचूर्णकारि दंडेपानीमेंपिलानेसेवारवारपित्तगिरेगा १८ औकाफवातपीडितको भेनफालद्वयमेंपिलानेसे
 काफवातदूरहो औसैंयवरअमजसमेंपिलानेसेअजीर्णमिटे १६ वमनकारनेकोऐतिवमनऔषधिपीकेदोमौद्युतनेतोरिकी

काफकट्वकतीक्ष्णक्षेःपित्तखाइहिभैर्जेयेत् सस्वादुलवणाम्लोक्षेःसंसृष्टवायुनाकफं ११ कृष्णारटफलैःसिंधुक
 फेकोक्षजलेनपिवेत् पलोत्कसानिर्वेद्यविनेशीतजलं पिवेत् १८ सक्षेभवानपीशयांसक्षीरंमदनं पिवेत् अजीर्णको
 सपानीयंसिंधपीत्वावनेत्सुधी १६ वमनपाटयित्वावृज्जलमानासनेस्थितं कंठमेरुनालेन स्पृशं गं वामये निषक् २०
 ललाटवमनोपसंन्यान्धौ च प्रवोदयेत् त्रसेको हृत्कृष्णकटुश्छदिते भवेत् २१ अतिवाते भवेत् क्साहि
 को जारे विमं चाना त्रिभ्लानिः सफेरं चाक्षौ व्याधति हलु संहतिः २२ रक्तछर्दिः क्षीवनं च कंठे योऽप्यभयते २३
 औंरुद्रपत्रको उंडी शुक्ररिगरे मे भवेत् शक्रे नौ मे वमनक्षेगा औ वमनकारे वा लोकामस्तक औ दोनो आरौ पसुरा सहाता
 इसी ऐतिसे वैद्य लोग नमन कराने हे २० वमनको यल क्षाण जो वमन अच्छीतरहन होइ तो रोगी के मुख से कारव है हृदय से
 पीदा रहे कोठे मे लजुरी एउ पइव होइ २१ अति वमन द्यइव तस्मात् अधिक छूच की उकार अज्ञानता जी भानिक लसा ने चंचलता
 संभमचित्त बोधे जपाउगा २२ मुख से रुधिर गिला नावार धूकना कंठ पीछ एप्रति वमन लक्षण हे २३ ॥

अतिवातविक्रिस्ता ओषधसुनययोगात्तवमनकृप्रधिकहोनाउसेमृदुचनकरे २४ वमनेजिह्वारेठनपरचिकित्सा अतिउवकार अतिजीभारेठजातीहिउसे
 आयदायत्रकालागतोपिकानावात्तुदावास्तोनासोथयुक्तकोखनाउसकेमुखमेरुवावाधूयदीघन इनमेकोइमेसानिमुखमेरुवै ओउस्के
 मुख ओसुबुध्पचट्टकाल्यदिरविलाये तोउसेरेखनेसेवाभुमीकीजीभमेयानोछुटेनौजीभकोमतहोजानीहि ओप्रकृतिस्वस्थहोतीहि २५ अतिवा
 तसुजीभवाहरनिकलत्रावैउसुकायाम्नजोउवाकोतेउवाकोतेजीभनिकलत्रावैतोतिलओदाखपीसेजीभपुलेपकरिवेगयदेय ओजोओखेववलभरे
 होतोओखियरीलगाइयोरीसहरायदेर २६ वमनेह्नुलंभपचारजोवमनकेअंतमेबोढेजकइजायतोसेकनेओकफवातत्तरीइष्यं संयनेसेपुल
 वमनस्यातियोगेगुमृदुवृषाधिरेचनं २७ वदनांतःप्रविष्टायान्निह्वायांकवलग्रहः सिग्धास्तलवणैरुद्घेयतक्षीररसेहितः कलान्यला
 निस्वादयस्तस्यचात्यग्रतोतगः २८ निसृतांगुतिलादक्षाकल्कलिम्बाप्रवेशयेत्तवाटनेक्षिणयुताभक्तपोडयेच्चशनेः शनेः २९
 ह्नुभाक्षेस्मृतः खेदोत्पन्नपक्षभवातरुत् एकपित्तविधानेनरक्तक्षुदिसुपावयेत् ३० धात्रीरसांजनोशीरलाजाचंदनवारिभिः
 मथकृत्वापाययेच्चमृदुतक्षीरदुर्गं रशम्यन्यनेनकृत्वाधायायोडाण्डैस्समुन्नवाः ३१ दुर्गकंठशिरसांशुद्धिदीप्ताग्निर्त्वं चलाय
 वं ककपित्तविनाशश्चसम्भवातस्यचेष्टितं २६ ॥

जातीहि वमनकेअंतमेरुगिनेकायतजोवमनांतमेंरुधिराध्यानेलगेतोमध्य
 खंडमेंकहारकपितोपचारकरे २७ अतिवमनसेप्यासवदनेकायत जोहवावैतौ ओवरिकारस रसेन धानकीखिले लालचंदनरक्त

भारचारिपलवट्टेयानीमेंमधिकेधीसहनसंयुक्त मिसरीजारिकेपिलावैतोप्यासशानिहोरे (संजनकहै) सवतवनाने
 कीविधि चारुहरदीकायकरितिसकोसमानवकरेकाइधामिलाइ ओटिगाढाकरि सुवारलेउसेरसांजनकहतेहै ३८ वमनउतमहै

जोवमनसम्भवाहोतो हृदयकंठमत्सर्ककेकफादिकनेकादेखनैहि अग्निदीप्तहो अंगहलकाहो कफपित्तजनितविकारानाशहै ३९

वमनपरपथ मृगावासादीचाउरका मुसदेनावाहिरुमांस अभावे स्वसीमां सवायूसदे ३० सम्यक् वमन भये एवेगनही रहते न होत हे
 तशानिअसुखेमेदोग्युक्तजसं ग्रहणी विषयोष ३ वमन परस्यम भारी भोगिष्ठिपुचार्थे दंडजल पश्चिम मेथुन ते लमर्दन क्रोथ नि सदिन वमन करितो रन
 ३ इति शार्ङ्ग धरुजते तृतीयोऽथायः ३ वमनाते विरेचन प्रथम मज्जति हानादिकर्म करिखेद्वमरे फिर वमन कर्म करे सो रेचन ज्ञात मत्र काहि
 कर्म हीने रेचन कर्म फकी चेत्ता ३ अत एव कोहं पित्त युरग्रग्नि यग्राह लेताहे ३ स्त्री कारणसे अग्नि भिद दह भारी देखून कडना प्रवाहिका हे हारुपात्र
 तीसार एवो गत्यन्न होत हे जो कर्म हीने रेचन शीघ्र दिसाच होत तो नीचे गिने वाला स्वप्न अर्थात् वृत्तिसे सखे रेचकीज ३ आदि रेचन का एर पचाइ रेचन करे ओमठ

नतो पराह्ने दीप्ताग्निं सुप्रघटीकाशालिभिः दृद्यैश्च जांगलसैः क्षत्वा द्यूचं च भोजयेत् ३० तं प्राणिशस्य दोगंधं कंठस्थं ग्रहणी
 विषं मुवातस्य नपीशये भवतो ते काराचनः ३१ अजीर्णैशीतपानीयं व्यायामं मेथुनं तथा स्निग्धाभंगं प्रकोपं च दिने को वजयेत्सु
 धीः ३२ इति श्री शार्ङ्गधरे तृतीयोऽध्यायः ३ स्निग्धस्निन्नस्य वातस्य दद्यात्सम्यग् विरेचनं अवातस्य त्वथ स्वस्वो ग्रहणी छादये
 त्कफः मंदग्निं गोरवद्वामो ज्जनये दात्रवाहिकां अथ वा पाचयेत् नैरामं क्षेमायां च पाचयेत् ३ स्निग्धस्य स्निहने काये स्वेदे
 स्निन्नस्य रेचनं शरदृतौ वसंते च देहशुद्धये विरेचयेत् अन्यदा त्वयिके काले शोचनं शौलयेदुधः ३ णिते विरेचनं दद्यात्तमो

चेत्ते गदेन या

इत्तकामतय दहे किं थम वमन कार ३ छ दिन विता ३ नीने दिन लिह पान का ३ इफि लो न स्वेद साधित तीन वार सोर हो दिन ना गु
 ३ रेचन ३ रजो रुज इध करि स्निग्ध मज्ज पथ माय के गोला वारु करि खे दिन मज्ज नि से रेचन धी वमन दि ओक्ता रक्ता तिके न

३ रेचन ३ गती हे ओखे लो वैद्य रोगोक्ता रोग विचार तिन के निपा एणार्थ अज्जत का स्वमे भी विरेचन करे ३ विषये रेचन योग प्रभाणि
 आमवायु उरु रोगा अध्यानवास कोष्ट छ रन रोगोको विशेष यशु रुकार ३ एण रोगो धिक्क मसे जानना वस्तिकर्म रेचन कर्म वमन ॥

कर्मतेलघुतसहस्रत यथारोगायत्नकोरे ४ बोधनिवारणं उक्तवरेचनवातादिदोष लंघनपाचनकोरे दक्काते हे पंक्तयोरेकपथकियेउभ
 र्वातेहे बोधोरेचनकाख्यातादिदोषोसेसुक्ताकियेशरीरेवेगनहीउभते ५ रेचनकोत्रयोग्यबालकछत्र अतिलेहपानपउरुदातीदीणमनुष्य
 अभित्तदधिपित स्थूलशरीरभिणी नक्वरी ६ तुल्यउक्त्रजनितास्त्रीमंशुगि अतिमंदपीडित शल्यवेगितक्षतपुक्तदक्षक हेनिलेजेन
 जुष्य स्तकोरेचननहीदेना ७ रेचनयोग्य जीएज्वरी विषपीडित वातरक्त भगदरेगी अथरोगी पांडुरोगी उदरेगी अथरोगी हृदयेगी
 शरीरजनानां दोषाणां क्रमेण परमौषधं वस्तिविरेको वमनं नथाने लघुनं मधु ४ बोधानां दचित्त्वप्येति जिता लंघनपाच
 नेऽयेतुमशोधनैश्चुधानेतेषां पुनरुद्भवः ५ बालदृष्टावतिः स्निग्धः क्षतक्षीणे भयान्वितः आतस्तृप्तार्तः स्थूलश्लेष्माभिणीचन
 कज्वरी ६ नवव्रतस्तनारीचमंदगनिश्चमदात्यधी शल्यादिनदृक्षश्चन विरेच्या विज्ञानना ७ जीएज्वरी गारव्याभोवातरक्तो
 भगंदरी अर्शेऽपांडुरः ग्रंथी हृदोणारुचिपीडितः ८ यो निरोगः प्रमेहान्नाशुल्मलोद्भवादिताः निश्च्योश्चिदि विस्फोटवि
 श्रुतीकुष्ठसंयुताः ९ कर्णेनाशा शिरोवक्त्रगुदमेद्रा मयान्विताः स्त्रीहृशोफाक्षिरोगानां कृषिधीरा विनादिताः शूलिचोमृत्र
 घातार्तो विरेकाहो नरा मताः १० क्लृपितो मृदुप्रोक्तो बहुक्षोभाचमध्यमाः बहुवातः शूलकोष्ठो दुर्विरेचः सकथ्यते २३ ॥

यो निरोगः प्रमेहगुल्मस्त्रीहृशो व्रणी विक्षधि क्षर्दि विस्फोटक विस्वचीर्दकुष्ठकानरोग नाकरोग मस्तकरोग सुखरोग गुदरोग गारसी यक्षत
 नेत्ररोग कमिरोग सोमलादिरोग शूल मूत्रघात श्लेष्मणिकारिपीडित मज्जुष्यकोरेचनदीजे १० रेचनगोन प्रकार कोमल मध्यमक
 रालकोष्ठवेथक जिसमज्जुष्यकोरेवलयपित्तप्रकृतिहो उस्तकाकोदा मृदुहे जिसकेवल कफप्रकृतिहे उस्तकाकोदा मध्यमहे जिसकोकेन
 लवातप्रकृतिहो उस्तकाकोदा कदोहे सोकोकोदेवालोरेचन विषयमें सुखपाताहे उमेरेचनकारनेसे मलशवशीघ्रनहीहोता ११

मलकोटासमुक्तिदुरेचनचारवे मध्यमकोटावालेकोमध्यमगानविरेचनचारवे १२ मृदुसधमादिकाधीकोमृदुसधमादिप्रोपधिरको
मलकोटोकोदायदुधेशीकातेतसुक्तकारिरेचनदे मध्यमकोटोकोनिशोयकडकोप्रमलतास
कारेचनदे कुरकोटोकोसेहडकादुधकोकजभालगोवा रनकारिकोचनदे १३ रजममध्यमकनिष्ठरेचनग्रमाल मलगिते चतुर्मेकफगिरये सेतीनवेग्या
रजमगानाहे वगकाहेरल जिससेवीसवगतकर्त्तमेकफगि १४ तदमध्यमहे जिसमेंदसवेगनककफगिरेखदहीनस्वनमानादे १५ स्वेनेकाथवित्रमाण रे

मृदोमाना मृदोकोष्टमध्यकोष्टे चमध्यमा कुरतीक्षणा गताइवो मृदुमध्यमतीक्ष्णकोः १२ मृदुशोक्षापयश्चावनेलेर
पिविरच्यते मध्यमस्तदुतानि कारजद्वयैर्विस्थिते कुरलुकाय साहमेक्षोगेदंतिफलादिभिः १३ मात्रेतमाविरे
कस्यत्रिशवेगेः कफांतिक्त्र वगेविंशतिभिर्मध्याहीनोक्तादशयोगका १४ विपलंश्रेष्ठमाख्यातं मध्यमं च यत्नं भवेत्
यत्तार्थचकवायाणां कनोथुक्ताविरेचनं १५ कल्कमोदकचूर्णनां कर्षमध्वाज्यलेहकर्षद्वयं यत्नं वापि वयोरोगाद्य
पेक्षया १६ पितातरेत्तद्वर्णशिक्षाद्यादिभिर्येचेत् त्रिफलाकाथगोमूत्रैः पिवेद्योषं कफादितः १७
तद्वचुं गीर्सेधवानां चूर्णमभ्लैः पिवेत्तरः वातादितो विरेकाय जागलानां रसेन वा १८ ॥

नमेकाटाकीमात्रा शोपलउजम एकमध्यम आयपलवानिष्ठमानाहे १९ रेचनेकल्कादिकत्रमाण कल्कमोदकचूर्णेननोकाकर्षकषिमा
ओस दत घृत कृत्त रेचनदे २० त्रागेगिकारोग अवस्थावलदेविदेकर्षसेपलभतकयथोचितमात्रादेना २१ रेचनेमृगचकार पित्तमेवि
दायकाथमे द्रागुलकदशलावकलकेकाटेमेरेरकाफकोषमे सौहि मिचर्चेपीपरि चूर्णे त्रिफलाकाथमेषिआयेकफयेष इहोर २२
वातकोषमे निशेयशोहि सेषवचूर्णे नीष्टस् त्वा कानीवाजंगलीजनवरके गो लकाद्युसद्युक्तरेस्तोरेचनचच्छाहो वायुकोपशीतिहो ।

अपर्योषधिरेचनपर्योषधौरेवोत्तलं सङ्गान्निफलास्त्रायप्यावेवाङ्गनाइधसुक्ताप्यावेतोऽङ्गजलरहो १६ रेचने ऋतमेव निशेषश्च
यव पीपरिसौंदिदाषकोकाथभेसहजगरिवर्षमिप्यावे २० शरदभे निशेयजवासा मोथा सुगंधवाला मिश्रीस्वेतचंदनमुखी दावकाय
मेप्यावेतीरेवगहो २१ हेमंतभे निशेयवीता पादा जीर्ण देवदारु वच चोका इनकाचरणउल्लजलसायपियेतोरेचनहो २२ शिशिरव
संतभे पीपरि सौंदि संधव विधारा निशेय इनकाचरण सहसुक्तवाटोरेचनहो श्रीधमे निशेयकाचरण शकारसम

एङुतैलं निफलास्त्रायेन दिगुणेन वा युक्तं पीत्वा षयोभिर्वानचिरेण विरिच्यते १६ तृहताकौरजं वीजं पिप्पली
विश्वमेषजं समृद्धीकारसक्षौद्रं वर्षाकाले विरेचनं २० तृहदुर्गतभासुला शर्करा दिव्यचंदनम् शक्षाचनसम्
ष्याहृशीतलंच धनाद्यये २१ तृहत्याचित्रकंपादा मजाजीसलावचं हेमक्षीरीचहंते चूर्णे सुसाव
नापिबैत् २२ पिप्पलीनागरसिंधुस्थामाचतृहतासह लिह्नेक्षोद्रेण शिशिरवसंते च विरेचनं तृहता शर्करा
सुल्पाग्रीधमेकाले विरेचनं २३ अभयामरिचं शुंधी विडगा मलकानि च पिप्पली पिप्पली मूलं त्वक्चनमु
स्तमेव च २४ एतानि समभागानि दन्ती च त्रिगुणा भवेत् तृहदष्टगुणा श्रेया षड्गुणा चाग्रशर्करा २५ ॥
मधुना मोदकाल्वाकर्षभात्रयमाणतः एकैकं भक्षयेत्प्रातः शीतं चानपि वैज्जलम् २६ ॥

भागलुक्ता करिका केतौ रेचनहो २३ रेचनपरचभयादिकमोदक हडभिर्चे शौंदि विडंग आवण पीपरि पीपरामूल तज
पक्व मोथा २४ एसवसमभागले जमालगोदाकोजड त्रिगुण निशेय अठगुणा शकार छगुणे २५ सहतभे मलकर्षकर्ष
भर्को गोलीवाधि त्रभात एकस्वाइ शीतलजलपिये २६ ॥

अववेगमलकारिकावाहे तवतताजलपिथे ओत्पानपानविहायुतसेपहरेजराधे २७ तोविषमज्वरमंशगनि पांशुकासभांरुडनीम
कष्टगुल्म अशी गलांग्र भ्रम उदरोग २८ दाह स्त्रीह प्रमेह यक्ष्मा नेत्ररोग वातरोग पेटफूलना मूत्रकृच्छ्र पथरी पीठ यमुरीकानीजाय कटयेट
मिठे यहरसायनथेष्टहेरुस्विनअच्छेवकारहेनकायनिस्वेनोषधिपीके ठढेनलसेआ
पोष्टे सुगंधादिफलसुधे पानखायाकोरुसयोगिकोसेचित्तखास्यरुहगहे अस्थीतरुहवेगघातेहे ३० स्वनसमयसायनागेनमलमूत्रनेरेकिन

तावद्विचिपतेजंतर्थावदुक्षनसेवृते पाताहारविहारेषुमवेन्निर्येत्रिणः सरा २७ विषमज्वरमुंदाग्निपांशुकासभगाद
एतुडनीमकष्टगुल्माशोगलगउभ्रमादरान् २८ विदाहस्त्रीहमेदाश्चयक्ष्माणेनयनामभान् वातरोगनिद्यामानमूत्रकृच्छ्रा
णिचाशमरी अभयामोदकासिनेसायनवराः सरताः शृष्टिपाश्चोराजयनकट्यूदरुजाजयेत् सुतजशीलनारेखायलितता
निमणाशयेत् २९ पीत्वाविरचनंशीतजलेः संसिचचक्षुषी सुगंधिकिचिदाप्रायतोबुलशीलयेद्वरं ३० नवानस्थोनंवेगाश्च
धारेयन्तवपेतथा शीतांवनस्पृशेत्कापिकोसनीरं पिबेत्मुहुः ३१ वलासोषधिपित्तनिवायुर्वीतिथयाक्रजेत् रेकामलंतथा
पित्तंभेजचकाफोव्रजेत् ३२ दुर्वैक्तास्यनाभेनुलब्धरुनंकक्षिशूलता एरीषवातसंगश्चकट्टमुडलगोर्वाः विदाहोरुचि
गधानंभ्रमः छर्दिश्चजायते ३३ ॥

अधेदंढात्तलनछुवेज्जोज्जोवेगाहोरत्थोवारवारतापानीपिथे स्सेखलकौमलगिणिगा ३४
स्वनंने जेसेसमुक्त्वमनंमे कफओखायीदुइओषधिपित्तवायुसवदोषमुवसे गिरतेहे तेसेहीरासवमलमागसेगिरतेहे ३५
उपइव जिसमनुष्यकोरेचनदेनेसेवेगानघ्रावे वाअच्छीमरुतघ्रावे उस्कीनाभिकेनीचेकापन कोकोषभेअल
मलमी पंम्नदेत्तकरना दाह अरुति पेटफूलना भ्रम छर्दि एपइवउत्पलहोतेहे ३६ ॥

अशुचिचरत्त जिसेरचन अचरीनरहनरुचा उमरातको अरावधादिपाचनदे फिरत्नेहविधिसेघनपिताइ कोटचिकनाकारे
रचनेनेसेशुचरचनदेगा स्वउपइवशांतिक्षोणा भोजनरगिनिरीत्रहोदेहलकी ३४ अगिविकेउपइव मृच्छाकावन्निकुनयेदमेभ्रसकफप्रधिकगिला
मासकेथेवनसदृशगिनाचखीसीवापानीवारुधिरगिरे ३५ अतिविकेउपइयत्त ठकेनलसेगरीयेछेवागुलावकेवडाछिकेवस्वसेपोछेवाचाउका
धोननसहस्रुक्तपिबे ओशरदओषधिदेमहुवमनकारवे ३६ ससउपसमनहोताहे आमकीछालगोदधिसैवीरणयोसिकल्ककलितामिपरल

तपुनःपाचनेःस्नेहःपक्वा संस्वद्येचयेत् तेनास्थोपद्रव्यापंतिरीत्रोगेनेल्लेघुताभवेत् ३७ विरेकस्पतियोगेनमूर्च्छाभ्रंशो
गुदस्यच शूलकफतियोगःस्यान्मासधावनसंनिभं मेदोनिभंजलाभासंरुक्तापिविरच्यते ३८ तस्यशीतं वृभिः सिक्तं
शरीरंतंडलावृभिः मधुभिश्चेत्तथाशतैः कार्मेधमनंमृदुः सहकारत्त्वचः कस्कोदभासोवीरकेगुवा पिष्टोनाभिप्रले
पेनहंत्यतीसामुत्वणं अगाक्षीरंयिवेदापिविकिरंहरिणतथा शालिभिर्षष्टिकैः स्वल्पंमसूरेर्वोपिभोजयेत् शीते
संभ्राहभिर्द्वैः कुर्यात्संगृह्णंभिषक् ३९ लाघवंमानुससुष्टिभनलेभंगतेनिले पुविगित्तनंज्ञात्वापाचन
पाचयेदिति ३९ इंदियाणचलवुधेः प्रसादवन्दिरीयन धातुस्थैर्येवयस्थैर्यंभवेदेचनसेवनान् ३८ ॥

गवित्तोवागवंदहो सेवीसेंग्रामक्रेच्छालपीसनाभियरलगविसेवीस्कीक्रियामध्यस्वंडमेकहीहं लाडावंदकारेनेकोवकारीकदूधप्राकनीविहि
याकाभासवान्गमांसकादूतभातत्वाय वामसूरीधृतसादीचावरकाभातत्वाइ ओअनारसेवनकोरे ठंटेपदार्थकासेवनकोरेवोवंद
होइ ३६ स्वष्टविरिकलक्षणं शरीरल्लका प्रसन्नचित्त स्वस्थगमनवायु रसेलक्षणं दधिगति कोपाचनदेना वायान्नार्थं रुद्धलसैदि
धनियेकाकार्यदे ३७ स्वनसेवनसे इंदियांवलवानहो वधिप्रसन्नहै अग्निदीप्तिहो धातुउष्टि अवस्थावदस्थिरहोतीहे ३८

स्वनपखजितवगार् रंदाजस्त नेलपथी अजोर्णे अमभेधुन न्नसेवचै ३६ रेवनपरपथ्य चाउरसूरा कायवागू वाहरिएरिमांसका ३७
तवा लयावनेरणीत रमांसकायूसभातमेदे ४० इतिश्रीशार्ङ्गधरस्तथाकरेयतथ्यो ध्यायः अथवस्त्रिकर्मगदको भीन एवको मुकीजड
नार्इइव्यगसिपिचकादीनेनेकोवस्त्रोक्तहतेहे लोदधकाएकहे अनुवासन २ बिट्टहए २ जीसमेधीनेला विविकनीघसुभरिसेजेउसे अज
वासनवस्त्रीचहैं ओकाढाहूनेलमिधिनपिचकारीभरिपीडितकरेवहनिहूएवस्त्रीहे रसोअथमअनुवासनवस्त्रीहे पीछेनिहूह

प्रवानसेवाशीतांखस्त्रेलाभंगमजोर्णेतां व्यायामंभैशुनंवापिनसेवेतविरेचितः ३९ शलिषष्टीकामुधयेयथा
गुंभोजेभेत्तातां जांगलैविधिगाराणाचारसेः शाल्योदनंहितं ४० इतिश्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखंडेरेचनाध्यायः ४ वस्त्रिर्विधा
नुवासाल्मोनिहूहूयततअरं वस्त्रिभीदीयतेयस्मान्मावस्तिरितिस्मृतः यः स्नेहेदीयतेसस्यारनुवासननामकः कायायशो
नेसेयेतिहूहः स्तनिगद्योत २ एतानुवासनाखोहिवस्त्रिर्भेः सेनकथ्यते पूर्वमेवततोवस्तिनिहूहूखोभविष्यति निहूहूडम
नेवनस्त्रिषाडनएभिधः अजवासनभेदस्त्रमानावस्तिरुदीरतः पलद्वयंतस्यमात्रातस्मातपीपिवाभवेत् २ अनुवासस्यदह
स्यानीश्रुताग्निचोपलानिली २ नानुवाससुखधीत्याभेदीस्थूलसथोहरी आस्थापानानुवास्याः सुखीणोन्मादहूहूयताः

एहे रसीसेनिहूहूणकोउत्तरवस्त्रीभीकहनेहैं अनुवासनकीइयकाप्रमाण लेहूहूदोपच वाएकपलप्रमाणजनना ऐसेयिकारीको
भेदहैं २ अनुवासनयोग्य दहूत्रकृत्तिकोवालेहूयानरहितको वाअग्निदीनकारनेको केवलवातरीगीको एअवश्य अनुवासनयोग्य
हैं २ अद्यानुवातनअयोग्य निहूहूएयोग्यकडी वमेसी मोटाशरीर उदररेगी एअनुवासनयोग्यनही ओअजीर्णो ३३
हृपी शोकमूर्खो अरुचि भय व्यास कास क्षय इनसेपीडितकोनिहूहूएवस्त्री अयोग्यहैं ॥

पंचअनुवासनयोग्यहे ४ वलीकहेपिचकारीनिर्मानविधि नेत्रकहेपिचकारीकीनलतोपुराभंपवेशीआई सोसवणीदिधातुकीभास
नरकल गजदंत मृगसीराकी ओअअभा रायनावाविल्लोरकीवनवि ५ नलीयोग्यअवस्थाजोवर्षाकसेछहवर्षताइवालकवेवलीकीवनलीछ
हअंगुलवनवि ओछहवर्षसिवाहवर्षताइकी आठअंगुलकीवनवि ओएवाहवर्षसिऊपरवालेकीनलीबाहूअंगुलकीवनवि ६ नली
छिइअमाणा ओनिर्माणविधि छअंगुलकीनलीकाप्रवेशकालेवालामुखमूणसमानकौरेनेवकाछोयेअंगुरीसमान ओआठअंगुल

शेकसूखोहविभयुध्वासकासदायतुरा ४ नेत्रांकार्यसुवर्णदिधातुभिष्टवैवर्णभिः नलेदंतेविवाणात्रैर्मणिभिर्वा
विधीयते ५ एकवर्षानुषडूर्षपावमानषडुल ततोद्वादशकायावमानंसादष्टसंयुतं ततः परं वा दशभिर्गुलैर्नैत्रदीर्घता
६ सुश्रुच्छिंङ्कपालाभंछिइकोलास्थिसन्निभं यथासंख्यमवनेनंक्षक्षणागोष्टच्छसंनिभं आत्तरागुष्टमानेनमूलेस्थलेवि
धीयते कनिष्ठिकापरीणहमत्रैचगटिकासुहेतनमूलेकणिक्केदेवकार्यभागचतुर्थेकात्रयोजयेतत्रवर्णिवनयव्यविधा
नतः ७ मृगाजश्रुकरागंधीमहिषस्यापिवाभवेत् मूत्रकोससखलिअनदलाभेनचतुर्भुजः कषायगुरुः सुमृड
वस्तिः स्तिग्धोदढोहितः ८ ॥

वालीकामटरसा इसरासध्यअंगुरीसा वाहूअंगुलवालीका गरवरीकेवरसमान इसराअंगु
रासमानराये नलीबहुतचिकनीरहंगोष्टसुदृष्टाएकओपतलीइसरीओरमोदी मोदीओरकेचोथ्याइभागमेंदो छल्लेजडेहोतिसमें
धेहीहरीणबिकेभूतनेकीवडाइ इवोक्तछल्लाकामध्यधेधीसमेंनबहुतगुष्टकसेजिस्मिधेहीकीओबधिनओरएहसेनिसरेतवपि
बभारीडीकजानी ७ धेहीनिर्मितजाती हरणंछग वएह वैल भेसा इनकेसूत्रकीधेहीओसनलीमेंलगवेंजोएनभिलेनो इनकेतम
उकोकमलंपत्रसमकाटिदोनोओरधीससाफकरिधेहीसमानवताइनकीपरचढाये ८ ॥

ब्रह्मदिपिचकारी प्रमाणघावफोड़ना सूर्यदीकपिचकारी आठअंगुललंबी भूगर्भेठिने माफिकक्षेत्र है गिबकेपुष्पसदृशमोदी अति
 ६ वस्तीगुण वस्तीअच्छेप्रकारहोनोशरीरपुष्ट्याकातिवला आरोग्यप्रायदृष्टको १० वस्तीसेवनका
 वसंतुत्तरगुमेंसंध्यासेमेंलेहवस्तीकेहै अनुवासवस्तीकाना ग्रीष्मवर्षाशादमेरातकोकालाएगीको उष्मचिकनाभोजनरातकोखिलाए
 अनुवासनकारनेसे मरवामर्च्छेउत्पन्नहोताहै औषधेभोजनसेवलक्रांतिसानिहोय एइनोतरहवस्तीकर्मकरे एरेगहोतेहै ११

ब्राह्मसेक्तनेंस्यातस्सक्षणमष्टांगुलोन्मितं मुश्छिद्रगुं धयक्षनलिकापरिणादिच ६ शरीरोपचयं वंणवलमा
 रोगमायुषः कुरुतेपरित्विचवस्तीसम्यगुपासितः १० दिवसांतैवसंतैवलेहवस्तीः प्रदीयते ग्रीष्मवर्षाशरत्कालेएतेषां
 दद्यवासनं ११ नचातिलिग्यमशनंभोजयित्वा नवासयेत् मदंमृर्ध्नेचजनयेद्विधास्निहृपयोलितः दक्षभक्तवतोत्पन्नबलं वंणं
 चहीयते १२ हीनमात्रावभोवस्तीनातिकार्यकरेस्मृतौ अतिमात्रोतथानाह्लाभातोसारकारको १२ उजमस्यपलेषन्निभ
 मस्यापलेखिभिः पलाघर्षेनहीनस्ययुक्तामात्रानवासने १३ शताब्दासंधवाभ्यांचदेयंलेहेचदृष्टार्णकं तन्मात्रोतममभ्यासा
 षड्विंशतर्षमायुषके १४ विचरेनात्सन्नरेगतेजातवलायच भुक्तान्नायाजवास्यायवस्तिर्देयोनुवासनः १५ ॥

भेभेनूनाधिकमात्रादोष अनुवासनवानिद्वहर्नमेंहीनमात्रादिनेसेरेगनहीनाना अतिमात्रादिनेसेअनाहृलानि अतीसार एउ
 पजतेहै १२ वस्तीउतममात्रा उजममात्राछुलकीवस्तीकोअनुवासनदेना मध्यमवलकोतो नपलकी वलहीनको हीनमात्राउदय
 लदेना १३ लेहमेंऔरइव्यमात्रा शतावरिसंधवकादृष्टार्णकमासेकीउतममात्रा चारिमासेकीमध्यम दोमासेकीकनिष्ठजानना १४
 विचरेनपरवस्तीप्रकार विरेचनकियेको सातदिनवितायवत्प्रानेपरभोजनकराय अनुवासनवजीकरना १५ ॥

च
पिचकारीपीडनप्रकारं अनुवापुनकर्मके प्रथमतेललगाद् गारसपानीं सनह्वाद् यथातिविषितभाजनकसद् कुच्छटह्लाद् योनमलसूत्रं
कामिवरं वांस्कारट्यौदार् दहिनागोडसिकोडवायावगारि मलमार्गमिथीलगावे तवपिचकारीयेलीमें वया लिपितलेहमात्राभिविद्यवस्वसीध
वीधगस्त्रिमिकायादिधीरेभीरिमलमार्गमिंदोअंगुलप्रवेशेन वदहिनैवाथसेइवभरियेसीलेमंस्वयीडितकैर जिस्मेभीतरपिचकारीवेगकीबेटनलो
ऐसपिचकारीदेतेह उससमयउवासीछीकावासीनचावे ६ रोगीकोवसिप्रदसमय पिकादितीसमात्रातांस्वैके इतनीवेगमेंक्षेहाद्विक्रंस्वैशब्दो

अद्यानुवासस्वपक्तमुत्तांस्वेदिनंशनेः भोजयित्वापथाश्राविक्रंतं चक्रामणं ततः उत्सृष्टानिलविण्मूत्रेयोजयेत्स्नेहवस्ति
ना सुन्नसावामपाथ्येन वामगंधात्रसारिणः कुचितापजं यस्यनेत्रं सिग्धे गुदे त्यसेत् यथावस्ति मुखं तत्रैवामहलेनधार
येत् पीडयेद् दक्षिणेनैवमध्यवेगेनधीरथीः जंभाकासुक्ष्वादीश्च वसित्कालेन कारयेत् ६ त्रिंशद्वात्राभितः कालः प्रोक्तोवस्ते
सुपोइने ततः प्रणिहितः स्नेहश्चतानोवाकशतं भवेत् ९ जातुमंजुलमावेक्ष्य कुर्याच्छेदिकपायुतं एकामात्राभवेदेवा
सर्वत्रेषविनिश्चयः ९ त्रसारितैः सर्वगात्रैथयावीर्यैश्चसूर्येति नाडयेत्तलयोरेंचीन्वा एच्छशनेः शनैः फिजश्चैवं
ततः श्रोणीशय्याश्चैवोक्षिपेत्ततः जातेविधानेतुततः कुर्यात्त्रिंशद्यथासुषं ६ सानिलः सपुरीषश्चस्नेहः प्रत्येतियस्यतु ॥

३५
जाशगा फिसौमात्रानकसीयासुलावे ९ भवाप्रमाणं यमं उलकं ह्मकटिसेधुटनीपर्यंत तिस्रकेचारे श्रोत्रुष्कीवजानाह्यधूम्रअवेतीर
कामानाहोर्दं गह्रसर्वं यन्निश्चेत् ९ वस्तीकेपीछे कृत्यवस्तीपीडितकरिणैर्गोकेयोउहाथशरीरकेलाइलंवाकरेइस्सैसातोथातुअपनेअपने
स्थानमें फैलजातीहै तवहाथपायकेहनेरीतखाजायकदिनितवं मंधीरधीरिथपकीदेदेसहएइरेनवरीगीकोप्रज्जापासुस्यकण्ठिगेडाशनि
शकरावे ६ अथवस्तीसम्पन्नगुणमलाशेमेक्षेहादिप्लुचनेसे वायुओमल एस्वस्कककजिलरीवाहरनिकादेइ तोजानियेकोव स्तीने ॥

गुणक्रिया २९ वस्तिविकारनिवृत्तत्रयोगअनुवासनांतजवस्तेह्लादिश्रोधधिमलमार्गसेगिरलेपर अग्निदीप्तहोतौरातकोयथ्यमग्निग
लाश्र्वाणसदिद्रुसरेदिनतत्रजलपिलावेवाधनियसौदिकाकायदेयतेजोस्तेह्लादिअनुवासनवस्तीसिप्रवषाद्धासैउमकाविकारह्लाश्रोधोपुणेनिवाज
मातखिलावे २९वातादिदोषवस्तीप्रमाणपूर्वोक्तवतपिक्वकारेवनारसातथाआद्यानवेगमारदेनाअंगमेनिह्लाणपिचकारेदेना २२अन्योक्त
नीकाकागणप्रथमवस्तीवेगहोनेसेवेक्षाणकाराशरीरेमेविकनईआर्तोहेअर्थान्थाजुवदतीहेदूसरीसेमलकवायइजायतीसरीसेशरी

उपद्रवंविनाशीघ्रंससम्पागनुवासितः २९जोएणेनमथसामान्नेस्तेह्लप्रत्यागतेपुनःलध्वन्नंभोजयेद्यमंशोमोग्निमुनरे
यदिअनुवासितार्थदेयःस्यादितेह्लिसुखोदकंधान्यशुद्धीकपाथोवास्तेह्ल्वापतिनाशनः २९अनेनविधिनाषडासमवाष्टोनवापिपा
विधेयावस्तथोत्थामंतेचैवविह्लाणं २९दतल्लत्रयमोवस्तिस्त्रिदयेयस्तुवक्षणेसम्पुग्दतोद्वितीयसुमूर्द्धस्थमनिलंजयेत्
बलवानेवजनयेत्तनीयसुप्रयोगजितः २९चुर्थपंचमीदस्तोस्तेह्ल्येतांसासृजीषष्टोमांसंस्नेहयतिसप्तभोगेनेदएवचअ
ष्टमोसतमम्यापिमज्जानंचयथाक्रमं गंवृक्षगतान्दोषान्किण्णश्माधुसाधयेत्अथादशाष्टादशकान्वलोनंमोनि
षेवते सकंजरवनोप्यश्वजैत्रुल्लोभरः २३रुक्षायवहुवातायस्नेहवस्तिंदिनेदिने ॥ स्नेत्रल्लोनाहेचोथायांचगीसिस

२९छडींसातवीसेमावामेद्यविकनेचेतिहं आर्ध्वीनवकीसेसुक्रधातुस्त्रिधहोतेहेस्सत्रकासेनवकिणीमगरह्ल्वेगरेनेसेसुक्रथा
२९ओस्यापांछेतीसंविज्ञोतिसहाथीयोइमृश्वल्लोओदेवतासमानक्रांतिलोअन्यमतेजोदृक्षचातवरिअधिकपीडितहो
ज्वास्तनवस्तीजवप्रयोजनजानेतवतवेइओविकनेवामोद्यमज्वउचितजानेतवतवनिह्लनवस्तीदिशोरोगनाशहोताह
अंशप्रजयको स्नेहवस्तीप्रजयकोहलकीनितप्रतिदि २९ओस्त्रीगेगविस्त्रालकाहोरेतोमिह्लाणवस्तीहलकीनितप्रतिदि २९

स्नेहशीघ्रनिकलनेपर जवस्नेहाद्विशीघ्रनिकारपरनेवनिदृहणवस्तीकोरेइसीरीतिसेजितनेवेगदेइस्वकोअनर्माविहणतज्ञाय २५ स्नेह
जावनहोनेपरइयइव जोविस्वनमनकरिछुइवनकिया बस्तीकर्मकियातिस्नेहदिहकनेसे एउपइवहीनेहे शिथिलगान अमानपेउपर
नाश्रुलम्बास ओरुकिबोर इनउपइवकोइरकारेनेकोतीक्ष्णनिरुहणरेत्ता तीक्ष्णओवधियुक्तफलवतीजिसेबायुअथोमासीइइ मलउक्त
स्नेहकोगिरावे तिसतीक्ष्णस्वनतीक्ष्णनासदेनेसेशमनहोनेहे २६ जोस्नेहवस्तीरुकनेसेकोइउपइवनहोइ ओस्नेहादिभीतरइयेकोवाको

दद्यादेद्यस्तथान्ययामन्यावाधमवापहरेत् स्नेहोपमानोदृक्षाणांदीर्घकालमनम्पयः तथा निरुहः स्निग्धानामलामा
त्राप्रशस्यते २७ अथावयस्यनत्कालंस्नेहो नियोतितोकेवलः नस्यान्योन्यतरोरेद्योन ह्निस्निग्धस्यतिष्ठति २८ अशुद्धस्य
मलोन्मिम्भः स्नेहोनेतियदापुनः तथा शोथिल्यमाधानश्रुलम्बासम्भजायते पक्कासयेगुरुत्वचमवस्था निरुहणम्
तीक्ष्णतीक्ष्णोषधीयुक्ताफलवर्तिहिता तथा यथालुलोमनंवासुर्मलंस्नेहश्चजायते तथा विस्वनं दद्यातीक्ष्णं नल्पं च शस्यते २९ यस्म
नोयइवंकयोस्नेहवस्तिरनिरुनः सर्वो लो व्यावृत्तौ रोक्ष्यादयेक्ष्यः स विजानता ३० अनायाते तस्य एव स्नेहं संशोधयेनेहेत् स्नेह
वत्त्वावनायाते दाभ्यास्नेहो विधीयते ३१ गुडचरेणुद्रुतीकमारीष्टवकोहिंस्रं शतावरीसहचरं काकनासापलोन्मिजम् ॥

कारणसेउत्करहे ओश्रुलाद्विउपइवनकोरे नोउसेदीर्घकालतकरहनेदिइ ३२ अथवस्तीओषधीगिरनेकायन्त जोयिकारिकादि
यास्नेह्नगिरि नोउसरायकोफिरपिचकारीदेस्नेहगिरावे वास्नेहातभगवसरहेतोसर्वेरेचनदिगिरावे थोदेनोप्रकारकरिस्नेहगिरावे
३६ अनुवासनस्नेहगुर्वं एकीजडकांजकोछाल भांगीछाल इहा अगियावर शतावरी कटसरेयाकोओढोढी एउलपलभरउद
यव आसी वेरकीमीगी काली एदोरोपल एसवअधयीसि चारिद्रीणजलभेओवाइ इोणभरहे तवघानि आढकभरतिलक ॥ ॥

वातेलभित्तास्वैजीवनीगाणसस्सच्चर्णकरिउसेगरिकादाश्मेभरिओटिकाथजराएज्जतारिस्थनिलेस्सेअनुवासनकहतेहपिचकारेभेमतेह
२६ वसौकर्मउलवलेनेसेछिल्लनरागहोतेह तिल्लीचिकित्साशुश्रुजनेदेषिकरत्ता २० वस्तीवार्मभेपथ्यपानआहारविहारदिवावरन प्रवृत्तिले
सपानशदशदेनाइसमेभीचाहिये ३१ इतिपंचमोऽध्यायः ३२ अथनिद्रहवलीविधिः निद्रहएवस्तीवराणकहेरेगाजसाकरिकेअनेकभेदेह अह
करनाचाहियेतस्समनिश्चरेनेतेसहीनामथएहे यथाक्लेशनवस्ती दोषशमनवस्ती यरुनामधका ज्ञानना २ निद्रहका

यवनभाषातसीकोलकुलित्थान् प्रसृतोन्मितान् चतुर्दशेणंभसापाक्वाओणशेषेणतेनच पचेतेलाढकेपेथेजीवनीयः
पलोन्मितेः अनुवासनमेतद्विसर्ववातविकारह्यत २६ षट्सप्ततिव्यापदसुजायतेवस्तिवर्मेणः दयितात्समुदायेनजा
अकिन्त्याणुशुश्रुतान् ३० पानाहारविहारश्चपरिहारश्चकृत्तशः स्नेहपानसमाः कार्यानात्रकार्योविचारणः ३१
इतिश्रीशार्ङ्गधरेस्नेहवस्तिविधियपंचमोऽध्यायः ३२ निद्रहवस्तिर्विदुधाभिद्यतेकारणंनरेः तैरेवतत्सनामा
निकृता निमुनिपुंगवैः १ निद्रहस्यापंगनामप्रोक्तमास्थापनं बुधैः स्वस्थानस्थापनाद्येवधातृनांस्थापनं
मनं २ निद्रहस्यप्रमाणतपथ्यपादोतरंमनं मध्यमंषस्थमुद्विष्टंहीनस्पृहउवास्त्रयः ३ अतिस्निग्धोक्तिः
षट्दोषोक्षतोरस्कः कृशस्तथा आध्मानश्चविद्विहकार्शेः कासस्यासुप्रयोजितः ४ ५

दूसरानामस्थापनवस्तीकहतेह प्रसकारणुसेकिउत्पन्नहएथेषसंयुक्त एतद्विधयातुअपनेस्थानमेंप्राप्तह उन्वकेवानादिकदो
षकोइरिकरिउषधधातोकोस्थितकरीह २ निद्रहमंकाथप्रमाण निरुहमेंसवारत्रस्थकीउजममात्राह प्रथमस्कीम
काइवकीकनिष्ठमात्राह ३ निद्रहमेंअयोग्य अतिस्निग्धकोटेवाला ऊर्ध्वगतशेषवाला उत्तुखनीहोग्य आशानी हिक्की

दोहा धाधानी छर्दि हिकी अशी भासी कामानी एसे मनुष्य गुदा के निकट पीड़ित शोयी अतिसारी संतर्गमी कष्टी गर्भिणी मधु
प्रमेही जलोदरी स्नो गिनिको निद्रा ए देना योग्य न हो ४ निद्रा वस्ती योग्य वान उदावत वानरक्त विषम उचर दृष्टा तक्षा उदर अनाह भूल
कष्ट पथरी ए एना रक्त लाव न रागि प्रमेह रक्त अश्लेषित दृश्य रोग स्नो गे न युक्त को निद्रा देना योग्य है ५ निद्रा वस्ती विधान जिसे नि
द्रा व देनी है प्रतिसे मल मूत्र की शंका निवारण कर ए पीन छूटने की शंका मिटाइ कोष्ठ शुष्क दिहै हमने लसगाइ नमज लसे अंग घोटी

गुदशोफाति सारणी विषूची कृष्टसंयुतः गर्भाणी मधुमे हो च नास्याप्याश्वजलोदरीः कुवात व्याधौ दावर्ते वातासु
विषमञ्चरे दृष्टो तसो दाना ह नृचक्षुः शरीर च दृषास्त्वक्षुः मंदाग्निप्रमेहेष निदहृणं भृल्लेभ्यः पिने दृष्टे भोग्यो
जयेष्विधिवद्धः श्रुतसृष्टा तिलविषमूत्रं स्तिग्धं विन्ममभोजितं मध्याने गरु मध्ये च यथायायं निदहयेत् स्निह्वस्ति
विधाने नद्यः कर्पो निदहृणः जाते निदहृवततो भवेदुक्तका समः तिष्ठेत्सुहृत्तमात्रे च निदहृगभने च क्षया अनया
तंसुहृत्तच निदहृशो धने हृत्त द निदहृरेवमतिमाश्ले रसूत्रास्तशे धवे यस्पत्रमेण गच्छति विदधि न कफवायवः लाघवचोप
जायेत सुनिदहृना दिदहृत् यस्पस्यान सिरल्ल्यात्पवे गोही न भलानिलः मूत्रानि जाड्या रुचि स्युदु निरुद्ध न मादिशेत् ८

सेयीरीमेकि दोपहर प्रथमसेभोजनपाणि जिसेजेसदोषदेयै तिसेनेसीअोषधिपिचकारीमेंभरि पूर्वोक्तअनुवासनवस्त्रीविधान
सेनिदहनवस्त्रीकरे कच्छीषथिवाहरनिकासनेकेकारणसुहृन्कहेदोषडीकचोअकद्वैदावे इतनेमेंभीषगिरेतीअच्छाजोनगि
लोसोधनकरिगिरावैशोधनकरेचनईओभोनगिरैतो यवायार गोमूत्र खटुकारसंसैधवमिलाइफिरपिचकारिदेनेसेगिरैसी
अच्छीनिरहलक्षण निदहप्रच्छीहीतोक्रमसेमलमिगकफवायुगिरै ओथरीरहलकाहोतोनिदहसुष्ठुजानिये ८ "

अनुभवस्तीलक्षणा जिसेवास्तिकर्मसे विशेषजन्यविकाशो मलनशीलनिकरगयाउत्कर्मभगभेयोऽशरीरजउताञ्चरुविशेऽ १ निरुद्धले
वस्तिलक्षणा देहलक्षणी भनसंगोष स्वदेविकाना रोगनाश एञ्चकीवस्तीकेलक्षणाहे जोवत्तवस्तीकर्मजननेयालेवेद्ययोनिकहवस्तिकरेनेदे
वस्तिविरुद्धहोतीहे २० निरुद्धवस्तिसनपमाणां निरुद्धवस्तिएकवादेवातीनवावावाजो स्वाशेषदेयेनैमीदेवातरेगमेलेह्युक्तनिरुद्धवस्तिएकवादे
यित्तमेद्वधेवाकारकमेकपापकहृदस्थाद्विज्ञासुबोत्तकवित्तीनवादे विशेषमंद्बुधकथायभासरससुत्तकमसेचावादेनातिसुपीछेलेह

विविक्ततामनसुष्टिः सिग्धतावाधिनिग्रहः आस्थापनस्तेहवस्त्योऽस्मग्दनेतुलक्षणां अनेकविधिनायुड्या
विरुद्धवस्तिसिदानवित् २० द्वितीयवात्ततीयवाचतुर्थवायथोचितं सस्तेहएकः यवनेपित्तदोषयसासह कसायक
द्वदशाद्याः कफेकोलास्त्रयोमताः पित्तक्षेयाविलाविष्टक्षीरशृणरसेः कमान्ननिरुद्धोद्ययित्वाचनतस्तद्वत्वासये
त २१ सुकमा एषदृश्यवालस्यचमृदुर्हितः वस्तीस्तीक्ष्णाः पयुक्तस्तु सेषां हन्या द्रव्यासुयो २२ दद्याद्द्वहोरानंमूर्ध्व
मध्ये दोषहरणतः पश्चात्सशनतीपंचदद्याद्ग्लिंविचक्षणाः २३ एण्डवीजंमधुंरूपिप्यलीसंधवंचवा हृदयाफलकल्क
श्चवस्तिरुक्तेशनः स्मृतः २४ शताब्दमयुक्तं विल्वंकोट्जंफलमेवच सकंजिकासगोमूत्रोवस्तियोष हरः स्मृतः २५

देना २१ सुकमा एवात्तदवावालककोहलकीनिरुद्धेना सुकमारुहिकोस्तीक्ष्णवस्तीसेबलञ्चोऽप्रायुघटनीहे हृदयाञ्चोवरादिक
पाथहे विकटारिकट्टहे करुणीयवादिरुद्धहे २२ एष्यत्रादिमध्मतकमसेदेना पथमदोषउभरुन मध्यसेयषनाशन अंतमेद
करियमनकारकेना एदोषउभरुनस्व रेवीबीजं बहुआश्रयपीपरिसेंधववच द्वाजवेर इतकीपिचकारीसेवेवउभरुन २४
दोषनाशकस्य शतावारिसुखी वेच इत्यव काजीमे पौसिगोमूत्र युक्तपिचकारीरोगहारकेना २५ ॥

दोषशमनत्रौषधि निगोथत्रादिकशोधनद्रव्यकाकाथकारि तेलवासंधवशरिभधिकैरौषधशोधननमित्त इत्सकाअथवाओइव्यका क
 ल्कभीमधिकैरपिचकारीदेना १८ सकारमूल महुन्नामाल मोथारसौत एसवसमभागइधमेंपीसिदोषशमनार्थदेना १९ लेखनवल्ली त्रिफ
 लाकायभोगोमूत्र सहत यवापार एइव्य समभाग ऊषादिगण इव्यमिश्रितकरिलेखनवल्लीदेना लेखनकाहे गोमेदद्रविततिनरेण
 निकोदवसाकर २० दृंहणवल्ली मुशली गुडकेवाचबीज स्थादिदृंहण इव्यहे सोधातकोवदांतीहे इनकाकाथकारिमहुन्नामकी छाल
 बायअनाएदिमधुरद्रव्यकाकल्क ओद्यत मांसस एसव धूर्वोक्त काथभेगरियातुवदानेकोपिचकारीदेई २६ पिछिल्लीव
 शोधनद्रव्यनिःकायसत्ताल्कैः स्नेहसैंधवैः युक्तगोखनेनमथितावस्तयः शोधनाः स्मृताः २६ त्रियंगुर्मधुकोमु
 स्नातथैववसाजनं साक्षीरः शस्यतेवसिदोषाणां शमने स्मृतः त्रिफलाकाथगोमूत्रक्षौद्रक्षारसमायुतः ऊषकादित्रयीना
 येवैस्तथोलेखनास्मृताः दृंहणं काथनिःकाथकल्कैर्मधुरकैः युतः सर्पिमांससोयेता वलवो दृंहणमताः २६ वद
 र्थे रावतीशेलः शाल्मलीधन्वनागराः क्षीरसिद्धाक्षौद्रयुक्तानाम्नापिच्छलसंज्ञिताः अजोग्रन्थेण रुधिरैर्युक्ता देया वि
 चक्षणा भानापिच्छलवल्लीनां पलेर्वा दशभिर्मता २० दत्त्वा वै सैंधवस्यार्धं मधुना प्रसृत्य तिर्धयं विनिर्मथ्य ततो दद्यात् स्नेह
 स्पत्रस्यतिस्त्रियं २१

ल्ली वेरकीछाल स्तायची तसोडेकीछाल सेमर जवासा मोथा एसवसमभाग लेइधमेंपीसि २६ पिच
 कारीदेई २६ पिछिल्लीवल्ली सहत धागभेदाहरिण र्नकारुधिरमिश्रितकरि चणुवैद्य दोषपिचलानेकोपिच्छलवल्लीदेतेहे इत्सकी
 भानाअत्रमाणवारहपुजे २० निरुहणवल्लीप्रमाणविधि अक्षत्रौषधैकहीसंज्ञाहे सैंधवकर्षभर सहतचारभप्लमर्दनकरि छहप
 लयीदेएकनकरे स्समदोपलधूर्वोक्तकल्कद्रव्यमिलाने अथवाधूर्वोक्त कल्कद्रव्यकाकाथकहेकादाकरिलीजिये ॥

धाठपत्तप्रमाण कशलवैद्य श्कदीकाम धिनिह्वनलीदेय निह्वनलीकीसाधारणविधिनोविशेषविधानवातमे ४ पलमधु ४ पलसेह
 श्कवाकशिपिचकारीदेमापितमे ४ पलमधु ३ लिखेह श्कवाकशिपिचकारीदेह काफभेद पलमधु ४ पलसेह एकवर्हिना २१ मधुनेलवली
 १६ मूलकाथ ८ मूल सहतेलेवास्तिरिपल वडीसोफसेधवन्नाधायापल एसवएककारि क्षाणभरमयि यहमधुनेलवलीहे इमेदे
 नेसेमेदोगुल्मकमिडीह मलवाउदावर्ते एरोगानाशहोदरवलकांतिखीरब्ध धातुवृद्धिअग्निशेनहोद २२ दीपनवली सहतयीइयते

एकीभूतेततः स्नेहेकल्कस्यप्रसृतिक्षिपेत् समृद्धितकपायेतुचतः ३ सृत्तिसंमिगं क्षित्वाविमथ्यदद्याच्चनिह्वकु
 शलोभिषक्वातेचतः पलक्षौद्रदद्यात्स्नेहस्य अट्पलं पितेचतुः पलक्षौद्रनेहस्य चपलत्रयं कफोषट्पलिकंक्षौद्र
 स्नेहस्यैवचतुः पलं २ एहकाथगुल्यांशमधुनेलपलाष्टकं शतपुष्पापलाद्धनशोधवर्धनं संयुतं मधुनेलकसंज्ञा
 यंवस्तिखजविश्लोडितः मेदोगुल्मकमिडीहमलोदावर्तनाशनः बलवर्णकरश्चैवट्प्योवृंहणदीपनः २२
 दोर्द्रीज्यक्षीरगैलानां प्रसृतिप्रसृतिर्भवेत् हनुयाशंधकंक्षौशोवस्तिः स्यादीपनः परः २३ एहमूलनिका
 थोमधुनेलं सशोधवम् एषद्युक्तारयोवस्तिः स्वचापिप्यलीफलः पचमूलस्यनिःकाथस्नेलं मागधि
 कामधुः सशोधवः समधुकः सिद्धवस्तिरितिस्मृतः २४ ॥

लशोरेपल हाउवेरसेंधोकर्यकर्ष सूक्ष्मपीसि सत्वमिलाइपिचकारीदि एअग्निदीप्तहोद २५ कालयवली १६ मूलकाथसह
 तमेस्नमं संधव वचयीपरिसेनफल चारेसमभागद्वएकरिमिलाइपिचकारीदेइ यहउक्तारयवलीसर्वेणोपयोगानीहे २६ सिद्ध
 वली पंचमूलकानिल ओमहृषामुखीकाथमं पीपरिसेंधनमितारदेह यहसिद्धवलीसर्वेणगनपरदेतहे २७ ॥

वातोमं सिव निषेधपदार्थे वस्ती सेवका उल्लजल सेन हा इ दिनमें न सोवै अजी भी न होइ आले ह वस्ती वत सव प्राप्ता न साये रूद्र नि
शङ्कर सुधाकरे पणो धायः ६ अथ लखतौ विधान जगत् वली कहें मन्त्र मार्ग मे पिचकारी देने की विधि तिसे प्रमाण वा ह्यंगुलां की तिके मय मण्ड
रीच मे ली सुध सदाश अच मे ली पण्क्तो डी समान गोपी है १ माता प्रमाण मतप के २ ध्वज ता इ ले आना देव की दीर पची सवेळ परपल भर देना २ अथा
स्थापन व विधि स्थापन के उतार सेवक के लखलान भोजन कराय युग्मे ठिका इ वे वा वै वा युटने के देवि व शर है तव रूद्र शलाका चारै का २ अंगुल सु

लान गुह्योदकैः कार्यो दिवा सुभ्रम जीर्णतां वर्जयेत् परं सर्व माचरे स्नेह वलित्वत् २ इति श्री शङ्करे उतार खंडे निवृत्त
ए विधिः पणो धायः ६ अतः परं पक्ष्या मि वलि मुतार संक्षितं चार शंगुल कने वै मध्ये च हगन कर्णिकं मालती पुष्प ह
तामं छिद्रं सर्प निगमं १ पंच विंशति वर्षोणामधो मात्रा पिका र्बिकी तद्वध्वं पलमानं च स्नेह स्योक्ता विचक्षणेः २ अ
था स्थापन शुद्ध स्यत् ३ स्य स्थान भोजनैः स्थित स्य जालु मात्रा एयो र्बे त्विष्ट शलाकाया स्त्रिंशद्वयामेद्र भागे गत ताने त्रि
योजयेत् शनैः शनैः घृताभ्यक्त मेद्र मध्ये गुला निषट् ततो वयो डये वस्ति शनैः न च निहरेत् ततः धन्या गते स्नेह स्नेह
वस्ति क्रमाहृतः ३ स्त्रीणां कनिष्ठिका स्थूलनेत्र कर्पोद शंगुलं मुहुत्र वे शं योज्यं च योन्यत अंगु गुलं ध्यंगुल मूत्र
मार्गे च सस्मनेन त्रिनियोजयेत् ४

ह परसुरा ८ अंगुल सीधा सरसौ निका ज्ञाने माफिका छेद होता है उस मे घी वागे ललगाइ मू
त्र मार्गे में धीरे धीरे छत घा आठ अंगुल लज्ज वे श करे यत्त पूर्व क जिसे पीशन करे जव मूत्र ये लीत क पुरुचो खट खट वजे तौ जानी
इत्के पथ गे है इसी मलाका से वंद मूत्र भी खुल जाता है शलाका छिद्र से व हिजाता है ओखो पिचकारी देनी होतौ शलाका की पीदी पर
धे ली चटाइ ओषधि भरि सुर्व वत् पीडित करे रस्स मन्त्र कथा दिइ होतै है य ह्यत्त खली क्रम है ३

स्त्रीकृत्तारवृत्तिनिधनं स्त्रीकीयोनिसेदोच्छिद्रहोतिहे एकमूत्रमार्गद्वयसगरागर्भमार्गयोनिवहीहेउग्रकीशलाकाच्छुनिर्याकीमुवर्द्धशां
गुलकीभृगुनिकातेमाफ्रिकछेदराषिचरिअंगुलगोनिमेध्रवेशपिकारीदेओमूत्रमार्गमिंसूक्ष्मशलाकादोअंगुलत्रवेशधवालकवाएकअंगुल
मूत्राकाप्रवेशेचनुलेयअतिमहीतवालककोसायनसेइरपिचकारीपीरनेमेतथनकपै५स्त्रियोकीवृत्तिकीमात्रमाएयोनिमार्गेपिच
कारीदेवेकीमात्रादोपलओषधिदेना मूत्रमार्गकीमान्ना एकमात्रापलहेवालकवल्लीकीदोकार्षहे निपुनवेयस्त्रीकोउतानापोडाइपिचकारी

मूत्रछाच्छविकारखवालानात्वेकमंगुलं शनेर्निःकंपमादेयं सूक्ष्मनेत्रं विचक्षणैः ५ योनिमार्गेषु नारीणां स्निहमात्रा
द्वियात्तिकी मूत्रमार्गपलोत्मानावालीनां च दिकार्षिकी उत्तानायेस्त्रियेदेद्यादूर्ध्वजात्वेर्विचक्षणः अत्रत्यागच्छ
तिभिषगवलावतंसंज्ञिके ६ भूयोवृत्तिनिदध्माच्च संयुक्तैः शोधनेर्गणैः फलवृत्तिनिदध्मावायो निमार्गेदृढं भि
षक् त्वेवैर्विनिर्मितां स्तिग्धां शोधन इव्यसंयुता दधमाने तथा वल्लोदघावसि विचक्षणः क्षीरवृक्षकषायेन पयसा
शोतलेन च वसिष्ठचारुजः पुंसां स्त्रीणां मार्तवजारुजः हृत्यादुत्तरवृत्तिशुनोचितो मेदिना कचिद्व ७ समग्रदत्तस्य
लिंगा निव्यापदः कम एव च वस्ते तत्र संज्ञस्य शमनं त्वेह वसिनां ८ ॥ भीडितकर्तरे फिरकतु विठाइ दिवाइ आस्नेह
गावे ६ शोधन इव्यमूत्रकाच्छादिभे शोधन इव्य रेडोतेलादि इव्युभरिपिकारीदेइ अथवा फलवर्तीं रडवीजादि स्तुतवावृत्तिकी कडीवीवना
इं दुनेलादिमेतन्नकारिभिर्नो रुसप्राप्तेषीपिसिचपरियोनिमेष्वेजोवत्तिकियेनाभिसरेवत्तिस्थानअधिकउल्लसोइ तोवटल्लरीकीछालके
काथवीपिचकारीदेना वाटदृधनोइनसेवल्लीमुअहोतीहे ओमूत्रसंबंधीपीडा ओस्त्रीकेअर्तनवसंबंधीरोगपीरदुस्त्रेइ प्रभेदोकोत्तरवल्ली
कर्भीप्रयुक्तनहीं ७ उत्तमवल्लीलक्षण उत्तमवल्लीभिस्नेहवल्लीइइतवअन्नसंबंधीत्रभेहादिपीडाइरहोतीहे ७ समनेगलभाणहे ॥ ८ ॥

फलवस्तिमसुमारीविधान मलमार्गमिंदीलागाय मलगरिगानेकेकारण रेचन इव रंडकेजादिकशिवनीपरलेयगुदामेधरे रसफलवर्त
कहे ६ इति श्रीराफुं च सुधाकरेत्ताखंडे सप्तमोऽध्यायः ७ अथ वस्यकर्म गावकी राह ओषधि देनेको ना सक हते है इसको दोना महे नावन
१ नस्य २ नस्यरीति दोष विधि है एको रेचन दूसरी लिह न ओरेचनको कर्षण भी कहिये सो वातादि दोष निको कर्षण काले वाली है ओस्त्रे ह
न न स्यात्तको छुषवाली है स्त्रे छहण कहिये २ न स्यकर्म समय कफ दूषितको घात न स्य देना पित्त दूषितको मध्याह्न मेरेना वायु दूषि

घृताभ्यक्ते गुदे क्षेप्वात्स्रक्ष्णं स्त्र्यं गुष्टं निभा मलप्रवर्तिनीवर्तिः फलवर्तिश्च सा स्मृताः ६ इति श्री रामोदरस्तुतनाशा
ईंधरेण विवितायां संहितायां चिकित्सास्थाने उत्तरखंडे उजरखस्ती विधानं नाम सप्तमोऽध्यायः ७ न स्य तत्कथ्यते धी
रेनोसायाद्यं यदोषधं नावन न स्य कर्मतिगस्थनाम यमं न १ न स्य मेदोधिधात्रोक्तो रेचन स्त्रे ह न तथा रेचनं कर्षणं ओक्तं स्त्रे ह न
दं हणं मंतं २ कफपित्तानि लघ्वं स्रक्ष्णं मध्यापरान्ह के दिन स्य गृहने न स्य रात्रौ वाप्युत्कटे गदे ३ न स्यं न्यजेन्नो जनाते
दुर्दिने वापि तर्पणे तथा न वन्न न्यशायी गभीरोग रदूषितः अजीर्णी दंतवस्तीश्च पीतस्त्रे होदकासनः कुष्ठशोकाभि
भूतस्य तृषातौ छुषवालको वेगावरोधो ह्नातश्च स्वागु कामश्च वजेयेत् ४ ॥

तको संध्यो के भीतर देना ओर जो अति पीडित हो तो रात्रि के देना ३ अस्मन्नस्ये निषेधः नस्य कर्म ऐसो को वर्जित है भोजन करवुके पर
गुरत ही न दे दुर्दिन के च्छे ओधी वा अति पीन वामे धाक्ष्य दिहो ओलंघनीको पीन सके आंग्रभमें गर्भिणी को विकारी को अजीर्ण पर वली
कतको स्त्रे ह्यीतको पानी वा मद्य पीको तर्पण कतको कोय शोका तो टबीको कुष्ठ ओवाला कको मल स्रव बाध आरेधीको मुरित्तान
क्ति ये पर ताना कांक्षीको ऐसे मनुष्य न को जो रन कर्म न किसे पर न स्य कर्म न करे ॥ ४ ॥

रचनवाले हननासयोग्य उर्ध्वगत कहें भुज्जदी भलकपालदशप्रयत्नगरीग कफजन्य स्वरभंग अरोचका नाटके पक्कना मायेकी
पीडा पीनस स्तन मृगीकुष्ठ रनमे रचन उपचित है भवाकल खीउ वलवालक रत्ने लेह न उचित है ॥ अथ पीडन योग्य कंठरोग सन्निपा
न तत्र त्रिधमन्वर गने विकार हामि र्गभे अथ पीडितनासयोग्य है ॥ प्रथम न योग्य मृच्छात्रय स्मर संन्यासादि प्रचेतन रोग भेद प्रथम न योग्य
द्वर्णदिकारि नासदेना ॥ अथ रचन संशकनस्य गुडसोहि त्रिदिके वाग्रस्कार समुदयो विनास दे पीपरि संध्या औदिके दे लिस्सिकाननाकमा

ऊर्ध्वजन्तु गत रोग कफ जे स्वर संक्षये अरोचको प्र निश्याये शिरः शूल च पीन से शोफाय स्मारु छुस न संधे रचन न हित
भीरु लोकाशवा लाना तस्य लेहे न दीयते ॥ गल रोगे सन्निपाते निश्याये विषम ज्वर मनो विकार हामि छुस न संधे रचन न हित
आत्मनो कार दोषेषु विसंश्लेष दीयते दृष्टि प्रथम न योग्य रत्नाक्षिनी क्षात रत्न ॥ इतस्य स्म्या गुड शुंठो ग्रापिपली संधे वन च ज
त एष्टे न तेना शिकर्णेना सा शिरो गदा हृगभयाग लोचन शयंति भुज एष्टजाः ॥ मधुकसार कृष्णा भ्यां वचा मरिचि संधे वः न स
को भज लेष्ट दद्यात्संज्ञा प्रवोधनं अथ स्मारेत यो न्मादे सन्निपाते पतंत्रकेः ॥ संधे वं न्येत मरिचि सर्प पाकुष्ठ मे व च वल
मृत्रेण पिष्टानि न स्यंतं द्या निवारण ॥ हे रोगे न मत्स्य पित्त न भावित संधे व वचा मरिचि पिपली शुंठो कं कोल लशुनं पर ॥

धातोर्दो कं थगल चाद्य पायु की पी र्ध्वक्षी होय ॥ १४ ॥ पुनः प्रकार भद्र एकी छा लकागामा पीपरि वच मरिचि इत्थे पी सित क्षज ल से ना स दे
मृगी उन्माद सन्निपात अपतंत्र अशान एस्वरोग भिटे शरीर हलक हो वदिसावधान होनी जानना ॥ पुनः रत्नीय प्रकार संधे व
मरिचि सरसो हूट एस्व क्षात्र मृत्रे मे पी सिना स दे ने से तं शनेना लसु हूट हो ॥ १५ ॥ अथ प्रथम न स्य संधे व वचा पीपरि मरिचि कंकोल
॥ हसन र्गुल कफ र रनका हूर ए रोह मक्षुरी के पिता मे मुढे ॥ १६ ॥ एका नली के मुह मे धरि इस र सु लना क मे प्र वेधि औषधि की औ से मुढे

तनाशोतेरसत्सूराकायधमननामहे १७ अथ वृंहणं एतद्विधानं दृष्ट्वा कर्तव्यं तु कोषु सुकोषो वद्वै १८ अथ वृंहणं नाशकीमात्रां त्रं स्रण
 नयकोषो भवेत् एवमशो १९ इतरप्रतिमशो २० रादो नो वृंहणं २१ रनकोषो गप मशो भेजयेणी नस्पकीमात्रा अष्टशणकीमुल्यत्रपाणहे चारिणा नो
 मयमपात्रकात्रपाणहे २२ एकाश एही नभावाकात्रपाणहे २३ एही नभावा विषये मोषो नभावा विषये मोषो नभावा वलव निवारिके रोगी कोषे दायव लवय नाकमे
 नाशो देयसेवातीनवार एका दिनकात्रा रदेकै दे २४ वा दो दिनकात्रा रदेकै दे २५ चार्पो व दिनकात्रा रदेकै दे २६ वा सात दि

न

कादुफलं चेति तत्रूणीं देयं प्रथमं नैर्बुधैः २७ अथ वृंहणं स्पम्य कल्पना कथा ते धुना मशो अष्टप्रतिमशो अष्टभै भेदो स्ते हने
 मतो मशो सतयेणी मात्रा मुखाशाणः स्रताष्टभिः मथमाच चत्तः शाणे हीना शाणमिमा स्रताः एका वा से मनुमाने
 यं देयं नाशो पुटे बुधैः मशो स्याद्विनि नलो वा बोक्षो दोष वलावल एका मशो कातरवान् द्यं द्यादि च दशाः २८ अथ पंचा
 ह मथ वासुता सवाययं वितः २९ मशो शिरो विनेके त्रयमायदो विविधाः स्रताः दोषोक्तेशा द्वाया च विज्ञेया सायथा
 मं दोषो कर्ष निमित्तो युं जां कमनशोधनं अथ द्वाय निमित्तो सुयथा स्वं दृष्टं ममं ३० शिरोनासा शिरोरेखं सर्पावर्गोर्ध्वमेदकम्
 दं मशो गे वले हीने मनासा द्वाय मशो नृपशो यकारेण नृद्विवात पित्तगदितथा

न च गच्छत कर्त्तव्यमर्थं विनशा एव घृको १८ जो मशो संज्ञकना

ससेवोचन संज्ञकना ससेकोर्ध्व इव वदे उस्तकायल कर्त्तते ३१ मशो नासमे भाना अधिक सेनाय वारेचननासमे भाना अधिक सेनाय तो भेदादि
 धातुघटी गति हि नो धने कश्यप इव जप न होति हे इस्तका ए स जो उवकारे स्तोती हो अक्षया दिव्या धि हो तो छं लण कस्त्रिये जो धातु वदे वे
 भाक मे दे र्वा लिताने ३२ वृंहणं नस्पयोगप मस्तक रोग आण रोग न व रोग स्तपो वर्ग रोग स्त्र्य के च दते वटे ओ स्त्र्य के रत र घटे
 आथा सीसी रत रोग र्द्वे लता कटिपी ग्राहकं यथोग सुयशेष कर्णे नास्वात पित्तविकार अकाल के शयाक ओवालन कागिर जाना

रंद्रुन रनरेगर्भं घृतादिस्निग्धपदार्थं वाशर्कोरादिमधुरपदार्थनकारिके वृंहणानासदेना २० यक्षाघातादिपल्लास उदकिमाववो
 न अर्धितवाय मन्यास्तंभ अपवाहक स्तनेवातरेण समनहो २१ प्रतिमर्शनाशकीमात्रादो विंदुस्य ह घृतादिस्निग्धपदार्थं देवदं
 एक एक नयुना मेदे २२ प्रतिमर्शनाशकहतेह २२ विंदुसंज्ञा पिघलाधीवागेलभं शोदीर्घगुणीवोरिके उदाने सेजितमाउदरपकताहे
 अकालपलिते चैव के शश्मश्रुत्रपातने युज्यते वृंहणं नस्य स्नेहेयोमधुरद्वै २० माषात्मगुन्ना रास्त्राभिर्वत्सा
 ऋषुकोरोहिषैः कृतोऽश्वगंधायाक्काथोहिं गुसैधव संयुतः कोसोनस्पधयोगेन यक्षाघातं सकपकै जयेददिनवातं च
 मन्यास्तंभापवाहकौ २१ प्रतिमर्शस्य मात्रा तु द्वि विंदुमितामता प्रत्येकशेन सक्तयोः स्नेहेनेति विनिश्चितं २२
 स्नेहं धिक्पयं यावन्निमग्नो चोदतातमः तर्जनीयं पि वे विंदुं सामात्रा विंदुसंज्ञिता एवं विधे विंदुसंज्ञे रष्टभिः शण
 मुच्यते सदेयोमर्शनस्ये गुत्रातिमर्शो द्वि विंदुकः २३ समयाः प्रतिमर्शस्य वधैः प्रोक्ताश्चतुर्दशः प्रभाते दंत
 काष्ठते रगृहानिर्गमने तथा व्याधामाध्वव्यायांते नि एमृत्त्रांते जने कृते कनलोते भोजनाते दिवा सुप्नो
 त्थिते तथा वमनांते तथा सायं प्रतिमर्शः प्रयुज्यते २४ ॥

असे विंदुकहतेह औष्माद्विंदुकोश ए कहतेह सोऽश एमर्शनाशकोमात्राहे औप्रतिमर्शको। दो विंदुकोमात्राहे २३ प्र
 तिमर्शकाल सवरे दातृनकारके घसेनिकसते परिश्रमपर एहचलके मूलमंलप्यागवे अंजनकरवे भोजन किये पर
 त्वयेनिकारते वमवानंभं संध्यासमय ए प्रतिमर्शदेने के समयहे २४ ॥

अतिमर्शनस्येत्तमलक्षणात् आसदेनेसेच्छीकथोरीचाये ओत्तेह्यकमार्गहासुहृदगिपरेनो सुभशानिये अत्रनिमग्नयोग्यक्षी
त्यतिसुममप्रवनालकहृदालकोप्रउचिर्नहं ओत्तालेकेगर्द्धरंगभं शिथिलको तन्वाकोरुपलेपरपत्तिन स्वरंगमनकोप्रतिमरीनाशहृक्कर
रंदिनमेवलाहोह स्वरंगमलेकेप्रयाकपलासनीमसंमारीहर्लसोडा काकतंती स्नकेत्यजानकानिलमिना भिन्नकादिनासदेहनेवाक्काहो
द २२ नस्यविधिपोक्तोभोश्रुतिवर्जितस्थानमेभुषासहनकरिद्धकापीगतामसाकथुश्चकलियाभंभुवनानापोढे पिडेपिण्डुकानाकड

इयं चिदनास्ते होयदावक्त्रं प्रपद्यते न स्येति विनक्तं विद्यात्सु निमग्नं शेषं विनक्तुं वामा
गानं २० क्षीणं दृष्ट्वा स्य साधारणं नाले दृष्टे च युज्यते अतिमशेन शास्त्रं निरोधः नो ध्येन दुर्जाः नलीयलितनाशश्च वल
मिद्विजन्तमवेत् २६ विभीतनिवसं भाशे शिवाशेषु अथ काकिनी एकैकानि लनस्वनपलितं न प्रयति क्रान् २७ अथ मनस्य
विधिवद्येन सप्रहणं हतवे देशे वा तज्जो मुक्तकृतं दंतनिघर्षणं २८ विप्रुद्धं मयानेन गदित्वा भाल्या संतथा २९ उत्त
नप्रणयिनं किंचित्संलवणं सुनरं आसीर्णं हस्तपादं च वत्वा आदितं लोचनं समुत्तगितनासायं यथो न स्येन गोपयेत् कोष्ठा
मष्टिन्नाधारं च हेमना एदिष्टुक्तिभिः मुक्तावापययुक्तवासा नैवीनस्य वाचरेत् ३० न स्ये वासिच्यभा नेषु शिरेने वप्रकाययत् न
कुपेन प्रभायेन दोषिरे न्न हसेन था एतद्द्विविहितं सेने वातः सप्रपद्यते ततः काशश्च निश्वाय शिरे शिगादसंभवः ३१

कृपेन प्रभाषेन लोचिरेन हसनेन च । एतस्मिन् वाक्पात्रे न स्पन्देन वा पात्रे । सोने वा चूपे वा तत्रावे वासीसि काह्मिह
 रहे । हाथ पाँव फैलाइ कर पड़े से आँखें दक्किये घमहीन धार से एक एक आरना सदेई । न स्पन्देन वा पात्रे । सोने वा चूपे वा तत्रावे वासीसि काह्मिह
 वासीपीपत्र ग्रेण वाक्ये ईकी पदरे से ना सदेई । एना सलेनेवाला माथान का पाँव । अभन करे वोलेन ही मायीमच्छ । छटकी । एहि का दने
 दैसेम ही । ऐसे समय म विना न स्पष्ट्य प्रवेशन ही । हानी । खासी आ जानी । हेतो ख एव हो । मसुक में । आखि न में । कंठ में । पीडा । उपन । काही । हे । २६

नस्यधारणप्रकारः पाद नसत्वेनेति शृंगादकमेचोयधिवेगनाथे पाचवासानवारशमात्रातारनासथारणकोरेजवसहमेउत्तराथवैतवपर
पेस्त्वमेवावेयुवीरे समुत्तरिके धूकनेसिञ्चोयधियगिजानाते मृगाटकासेकाहनेहे जोगकवेदीनां श्रेष्ठभोहात्वा यदुचदोगलेकोन्
लेगाहे एकवहिनो एकवामी भूकदीकोनेचि होकापालकोचलेगाहे ३० नस्येवजित नासलेकोसंभापनकोरे धूरि कोधवेरना निशसो
मात्रातार इत्सेवचेउमानापरारहे धुवोनयवे धूकनलीते ३१ नस्यशुभ्रआदिमेव नास विषेतीनलक्षणयात्विशकहतेहे शुभ्रहीनश्च
शृंगादकममिजावाथापयेचगिलेइवं पंचसहदशेनसभाननस्यसथारणे उपविश्याथनिधौवेनासावक्रगातं इपं वांम
दक्षिणपार्श्वोभांनिधौवेशसुखेनहि ३० नस्येनीतेभनसापञ्चः कोधचसत्यजन्त शयीननिसुत्यत्का चज्जानोवाकशतनरः
तथावैरचनस्यातधुभोवाकवलोलितः ३१ नस्येवीरुपमदित्यानिलक्षणासिमासतः शुचहीनातियोगानिविशेषाच्छा
खवितकैः ३२ लायवभनसः शुद्धिः सोनसांवाधिसंक्षयः चित्तंदिभः प्रसादश्च शिरसः शुद्धिलक्षाणं ३३ कंडुपदेहो
गरुतास्रोतसांकाकसंस्त्ववः दुर्हिहोनिविशुद्धेपलक्षणापरिकीर्तितं ३४ मरुत्पुंगागमोवातवृद्धिरिंद्रियवि
भ्रमः शून्यताशिरसश्चापिभूधियाठविरचिते ३५ हीनगतिशुद्धेशिरसिकफवातझभाचरेत् सम्यग्विच्छादि
शिरसिसर्पिनस्मनिवेचमेत् ३६ ॥

तियोग सोमेसंक्षेपकाहनाहं ३६ तमशुभ्रयोगभयेसेहेहलकी भनशुभ्र सुखनाभकारधशुभ्र शिरोगरहितविन इशेषसनाशुभ्र
योगलक्षणाहे ३७ हीनयोग तद्युयोगभये देहमेवज्ञेयैराय सुखनाकसेकाकगिरे एहीनयोगलक्षणहि ३८ अनियोगलक्षणमलक
कीमज्जानाकसेगिरेयावृद्धिंश्चेसंभ्रमायावाणी मस्तीनद्विधयोगधन कर्मनयसुहृदकाइत्यकीभातिनासदेकिरघोवीनासदेह ३९ ॥

अतिनिगमनाभावात् नोनस्पकर्मसंस्तिग्धनाअधिकस्रोतौकफचधिकगिरिमायाभारींश्रीः अमः ऐसमनुष्यकोत्रधानाश्रदेना ३० ना
प्रनेय्य अमियमोसकहेदध्यादिभक्षणान्यागेः सुष्टुआचरणकोरसर्वोक्तः ३० यचकर्मसंस्वावमनविरिक्ता
निरुत्तवस्ती अचवासनवास्ती एयचकर्महे ३६ इतिश्रीशार्ङ्गधरसदाकरेअष्टमोऽध्यायः ८ अथाश्रमपानविधानधूमपानछः प्रकाश्वेह
नेवृष्टा विरेव कामरूपमानत्रणधूपन एछः प्रकाश्वानना १ श्रमनधूमपानकीपर्योगसंशामध्यमोत्रायोगिक वृहणपर्याय लेखन

कफप्रसेकः शिरसोऽगुरुतेद्रियविभ्रमः लक्षणंतदतिस्तिग्धेच्छंतत्रदाययेत् ३० भोजयेच्चान्नभिष्यंदिनस्या
चारिकमादिशेत् ३८ वमनंरचनंनस्यंनिरुहमनुवासनं ३८ एतानिपंचकर्मोणिकथितानिसुनीश्वरेः ३६ इतिश्री
शार्ङ्गधरेउत्तरखंडेनस्यविधिरष्टमोऽध्यायः ८ धूमस्तषद्विधः प्रोक्तः श्रमनोदृंहणोस्तथा रेचनः कसहाचैववा
मनोत्रणधूमनः १ श्रमनस्यगुपर्योगोमध्यवायोगिकस्तथा वृहणस्यापिपर्योगोलेखनोमदरेवचरेचनस्यापि
पर्योगोऽधननीक्षणएवच २ अधमाहश्चिखल्वेतेशानोभोरुश्चदुःखितः दंतवस्तिविरक्तश्चरवौजागरित
स्तथा पिपासितश्चदृशार्गतालुसोषीतथोदरे शिरोभ्रिस्तापीतिमिगैर्धूयोभमानवपौडितः क्षनोरस्कप्रमेहा
तैः पांडुरोगीचगर्भिणी चक्षः क्षीणोभावदन्तध्शीरक्षोद्रंघनासवः शुक्ताक्षदधिमत्सश्चवालोवृद्धः कशस्तथा ॥

श्लोमदरेचनपर्याय शोधनओतीक्ष्ण २ धूमिअयोग्यथकित भयभीतडखपीडित चस्तीकियारस्सत्रातिकोयतिजगेकोप्या
सेको डदुरोगीको शिरतयनेवालेको मिरीरोगीकोडवाकीरोगीको अध्मानरोगीको पेरफूलनेकोडरुक्षतीको पांडुरोगीको
गर्भिणीकोचक्षको क्षीणकोधूरक्षी सहतघन त्वरस मधमच्छरे रनकेभोजनकिरेको बालकवृद्ध रगकोधूमपानयोग्यनही ओत्थस

धूमपानादिचवतलेहातयइवकीचिकित्सा धूमपानसेभयेउपइवमेधीविलावेनासरेर अंजनकरेअर्थीत शरीरतुमिकरनेकोदाजका
असदे घुतउपास इधमिअधीयोनिधिलवे वारनकाससहृतयुक्तापिलावेवाओमधुरचक वाखडामिहपदार्थदेतो धूमउपइवरुतिह
४ धूमपानावस्थासमयेधूमसेवनवाहवसेअसीवयेयतकेमनुष्यकोकरवेजोधूमपानअच्छावनेतो श्वास कास नाक वहना गलिमा
र वातकफजन्यविकार एसवइरहो ५ धूमपानविषेउपयोगीकीप्रकृतिअच्छेधूमपानभयेचक्षुरादिइंशीओ अंतकराणवानी

अकालेवातिपीतश्चधूमः कुर्यादुपइवान् ३ तत्रेष्टं सर्पिषः पानं नावनां जनतयेणं सर्पिरिक्षरसंशक्षां पयोवाश
कं रां ववा मधुरास्तेरसोवापिशमनायप्रदाययेत् ४ धूमश्च दशार्दषोऽष्टसुनेशीतिकानच कासश्चासन्नतिप्रवाया
नन्याहनुशिरोरुजः वातश्चेष्मविकारश्च ह्याधूमः सुयोजितः ५ धूमोपयोगात्परुषश्च सन्नेदियवाअन्नः इदकेश
विजश्मसुः सुगंधवदनोभवेत् ६ धूमनाडीभवेतत्रत्रिखंडाचत्रिपर्विका कनिष्ठिकापरीणाहाराजमावागमांतरा धू
मनाडीभवेदीर्घाशमनेरोगिणंगुलैः चत्वारिंशन्मितास्तव द्वात्रिंशद्भिर्दोस्तना तीक्ष्णेचतुर्विंशतिभिः कामधेयोऽंशो
न्मितैः दशंगुलिर्वोमनीयेतथास्यात्र एनाडिका कपालं मंडलं स्थूलं कलित्वागमंयका ७

एवमसन्तहोतीह ओकेशदंतदोदीहो छगुनियासीमोदी मटरसाछेदहो शमनधूमपानकीनली ४० अंगुललंबीले ४
इसचककी ३२ अंगुललंबी तीक्ष्णसंज्ञकी २४ अंगुललंबी कासघ्नकी १६ अंगुललंबी वामनीसंज्ञकी १० दश
अंगुललंबी ओषणकहें घावमेंधनीदेनेकी १० अंगुललंबी परंतत्रणकीनली ध्वौक्तनलियासेमहीनहो ओषेदेक
लघी प्रवेश करनेमाफिकारहें तोत्रणयूपितहोयगा ॥ ७ ॥

धर्ममानस्यैव कविधानं दादरा अंगुल नोसी कछिल कोस मेन पद्व्य कर्कच बाई कोहं मे सुवा इसी कनि का स्व कल्ल कल्ल लि मर सिजा इर
कोछे मे द्या मो री म सी न वती प्रवेणि जला इदे दूत गच्छे र सु च मे ले दु बा भे च ओ गु हे से छु आ कोइ ओना क से पी गु ह से छे हे इ व धि मा न य नी वि धान थे र
खे ले ए क सं प ट को र ऊ प र छे ल हे ज सं छे दे से सं प ट म अ ग्नि य वि कल्ल सु ल गा ने त व दु ग दी न ली ले क सं प ट कि छि इ मे इ म से गु ह से ज ए प म धु वो दे इ क
धर्म म्या नि श्रम न धर्म यान मे ए ला दि रा ए का कल्ल क दे इ छे दु मे श्रु त वि स्वे इ ए ल भि ला इ कल्ल क रि दे इ ती क्षण मे स से म धु वा दि कल्ल क रि दे इ का स

अथे पिकां प्रलिपे च सस्त दशां दा दशां गुलां शुभ्र इवा स्य कल्ले च ले प्यु च्छा द्यां गुलः स्मृतः कल्ल कच धे मि तं लि त्वा च्छा मा सु
अं च का रये त इ धि का मं व नी पा द्य ले ज्ञा त्तां च नि सा द रा त् अं गारे दी पि तां का ता धृ त्वा ने न स रं ध के व द ले न पि वे धु मं व र ने
ने व सं तं जे त् ना सि वा म्पां त तः पी त्वा मु र्वे ने व व मु त् सु धीः श्रा वा वं स पु टे क्षि त्वा कल्ल मां गा र दी पि तं छि दे ने नं सु वे श्या य व रा
ते ने व धु य ये त् ए ला थि कल्ल श्र म ने लि ग धं स जं रं छे दे रे च्च ने कल्ल गी द्यां च का स मे क्षु श्रि वे ग ए वा म ने स्ता उ च मां घ द घा
धूम स्य पा न कं घणे नि वं च वा द्यं च धू म नूं रं च क्षे त्ते भू च्च ये मि धु रा गि से पु क र्ते वा रे ग श्रां तं ये म श्रु पि च्छं नि व स्य प त्रा णि व
हृ ती फ लं म रि चं हि गु मा सी त् वी जं का पा स स म व छ म रा म ति नि मों के वि द्य वें ग लि को त या ग ज द ग त्थ न च्छ ए किं चि
हृ त वि मि थि तं गे से पु धू प नं द त्स र्वां च्चा ल य न्ना ज ये त् पि श्रा च्चा द्या स सा नि ज्ञा स र्व ज र ह रं भ वे त् ९ म र्चि भ व्त्वे च्छा थि कल्ल क र्वा

दे इ व म ने त्त च मी थि का धु वो दि मा प्र ण मे नी व च्चा थि कल्ल क रि दे इ वा भ ह्ने ते ए ला दि रा ए उ भ य इ ला इ च्छी शि ला ई क्त्वा से रु मू ल म के
ज य मा सी ख स रे ह्दि य त् ए वा अ गि या व र क ध र्क च रे कि र्मा नी अ ज वा र न त ज न मा ल य त् न त ग र मो था च्च मे ली के स र सी यी ना य न
ए व दे व स रु क ग र के स र कि मा च मू ल गु य ल ए ल क ध र् चं या पु थ य ये ए ला दि रा ए हे ८ वा ल य ह्नि वा रा ण धु म

करे सुवयालगाहपि राचरासः सः य इव ओमन सर्वभी सर्व ज्वलाशहो १० धमेपरिहारधमपानसपरिहार रेवननस्य सदशकरलाह
 वीर्षीनेकीनलीधाराभय वावासवीमपिय ११ इति श्री योगेश्वर उगारखेन वमोधायाः ६ गडूष कवल जतिसारविधिगण्ड ४ प्रकाशे ले
 हिक रामन शोधन रोपण बोहो ४ प्रकारकवलमोले १ स्तोत्रिक गडूषमेवचिकनगरुपयार्थलेहिकैश्च श्रुचवतमरीक्षे १ व्यापवार्थशमन
 परिहार सुधुमेधुकायो रेवननस्यवत नेनागिधातजात्वाहुनेतव शाट्टिजान्यपि ११ इति श्री शाङ्ग धर्ममयानविधि
 नवमोधायाः ६ चतुर्विधः स्याद्गडूषः स्तोत्रिकः रामन तथा शोधनोरोपणार्थेन कवलश्चापितविधः १ स्निग्धोलेः स्ने
 हिकेवाते स्वादुशीतैः प्रसारनः पित्तकट्ट ४ मूलवणोद्वेगसंशोधनैः कफे कषायपित्तमधुरः कटुक्षोरोपणोन्न ए
 षणुः प्रकारो गडूषः कवलस्य अपिकीर्तितः १ अस्वचारी मुखे धूणे गडूषः कवलश्चरः तत्र रेवेण गडूषः कल्केन कवल
 स्मृतः १ दद्याद्बोषणं च गडूषे कोराना च कर्षः प्रमाणः कल्कश्चरीयोते कवलैर्बुधैः ४ धार्यते यं च माषार्धं
 गडूषकवलादयः गडूषान् स्थितः कुर्यात्स्विन्नभालमलादिकः मज्जयस्वीनाथार्थं च सप्तवा दोषनाशनात् ३ ॥
 सेपित्तविकारमे २ कटुवा खट्वा उस्म शोधनम् कफविकारमे ३ कषाय कटु मधुर तप्त करि रोपणमेदेना व्रणादिमे ऐसे ही कम
 लमेजानना २ गडूषकवलरीति जोगीलाकांटादि सुस्मेभरि रत्नगुलजलविउसे गडूषकट्टे जो कल्क करि सुमेधपरि करौ सो
 कवलै ३ उभयोस्व प्रमाण गडूषके कार्ये ये इव कोल कोल कवलमे कर्षक परेना ४ गडूष कवल योग्य अत्रस्था पांच
 वर्षके ऊपर सा चान करि रोग निवारणार्थ कथा ॥

लगलामुखकउसेकतीनचापांचवासातवाशेषनाशतकांगडूखकरे १ पुनःत्रमाणा जवमुखमेकफमरत्रावेवातीनीदोषशांतितकवानेन
नाकसेजालटपकानेतकांगडूखकरे २ वातरोगेस्नेहगंडूष तिलकल्कपानीदूधवातिलाहितिगंधयेदेना ७ पिनेशामुनगंडूष तिलनीलकप्त
खांडदूधसहतयुक्त कुल्लेकरेसे पित्तजदाह ४ डीओमुखसेदूहो ६ व्रणदिपरांगडूष सहतकेकुल्लेकरेसेमुखक्षतरसत्रक्षण चटकना
दाहप्यास एउपड्वइहोमुखशुद्धहो ८ विषादिपरांगडूष घृतवाडूधकेकुल्लेकरेसे विषविकार चूर्नेसेक फटा अग्निसेजरामुखअ

कफपट्टणीस्पतांयावच्छेदोदोषस्पवाभवेत् नेत्रघ्राणाश्रुतिर्यावतावज्जडूषधारणं ६ तिलकल्कोदकंधीरंस्नेहोवा ह्नेहि
केहितः ७ तिलानीलोत्पलंसर्पिःशर्कराक्षीरमेवच सस्योदोहनुवक्त स्यांगंडूषोदाहनाशनः ८ वैद्यजनयत्पाश्र्वेसंस्था
तिमुखान्नणान् दाहहृत्स्नाप्रशमनमधुगंडूषधारण ६ विषक्षारानिदधेचसर्पिधार्ययोद्यवा १० तैलसंधवगंडूषोरत
चालेप्रशस्यते ११ शोषंमुखस्यवैरस्यगंडूषः कानिकोजयेत् १२ सिंधुत्रिकटुराजीभिरास्केणकफेहिता १३ त्रिफलामधुकंडूषः
कफास्रुक्तिर्नाशनः १४ दावीगुडूचीत्रिफलाशक्षालायाश्चपल्लवाः जवासश्चेतितक्वथयघृष्टशःक्षौद्रसंयुताः शीतोमुखेयता
हृन्पामुखपार्कत्रिदोषजं ११ यत्सोषधस्यगंडूषलथैवप्रतिसारणं कवलश्चापितस्येवज्ञेयोऽत्र कशलेनरेः १६

आहो १० वातहलंकेपर तिलतैलसंधवयुक्तकुल्लेकरेसेदंतदुलनाइहो ११ सुषशेषपर मुखसुषणा ओफीकाहनाकांजीकेकुल्ले
१२ कफदोषपर अदरुषकेरसमेंसंधवत्रिकुटाराईपीसिमिलाइकुल्लेकरेसेकफदोषमिटे १३ कफरक्तपित्तपर
चूणेसहतमेंडारिकुल्लाकरेसे कफरक्तपित्तदोषमुखमेंनहै १४ मुखरोगापर दारुहदी गुर्चे त्रिफला दाष चमेली जवासा समानले
काथकारिघटयाभागसहतदेठडेकुल्ले किहेत्रिदोषमुखयाकमिटे १५ गंडूषकरनेवालीद्रव्यत्रतिसारण ओकवलमेभीदेना १६

प्रावलविधानं केसरविजोग्रहोऽसौ धवत्रिजगत् स्तनसवकाकोरजनसुखमेविलोचनेनोसुखमधिकोरोरताऽशक्यवातकीअरुचिद्वरहो
 १० प्रतिसारणप्रकारप्रतिसारणमेतीनप्रकारोपधिदेनेकहे कल्क अवलोसहृण जोसोयुखमेहो बदेयेनेसीओषधि अंगलीके
 अग्रभागसेमुखकेभीतरमले १८ प्रतिसारणचूर्ण हृदसारहृदी धवयुष्य पादा कदकी रदी नेजवल मोथा लोध स्नका चण्डिभि
 ओदातकीजस्मेवारवारमलरागिगवै तो स्तप्रतिसारसेदांगपीमारक्तगिरना भसडा स्तजन दाह एरोग इरलोह १८ गंडूयादिहीन
 केशंरमातुलगस्यसेधवंबोषसंसृतः हन्यात्कवलमोजाअमरुद्विकभावागजा १० कल्कोवलेहशृणंचेचित्रिविधं
 प्रतिसारण अंगलग्रहीतंचयथाखसुखरोगिणा १८ कष्टहरीसमंगचपाढातिक्ताचपीतिका तेजनीसुस्तो धंच
 शृणंस्याप्रतिसारण रक्तसुतिंदनपीगंधोयंरासचनारायण १८ हीनयोगात्कफेल्कोरसासानारुचीतया अनियोगान्मुवे
 पाकिः शोणित्साक्तमोभवेत् २० व्याधेयपचयसु हिवैश्रद्यचलोचनं रंजियाणां साद्व्यगंडूषेसुफलक्षणं २२ रतिश्री
 शार्ङ्गधरेउतरेगंडूषादिविधिर्देशमोध्यायः १० खालेयस्यचनानिचिन्नालेपश्चलेपुनं दोषमोविषहावर्णमुखले
 पस्त्रिधामजः त्रिधामाणश्चतुर्भागास्त्रिभागोर्षगुलीनतः आधेव्याधितरः ससाच्छुको हृषयतिष्ठवि २ ॥

दधभयेसेउपइवकेलक्षण होनभये कफअधिक औस्वादप्रदानताहोतीहे अजकसेधरुचि अनियोगसे सुखयकनापिक्कीहीनामुष
 शेषलानि एउपइवहोतीहे २० सम्यगण्डूषलक्षण मुखव्याधिनाश चित्तमलनसुखनिर्मलतुलका जीभकोस्वाद ऐसजानना २२ रति
 शार्ङ्गधरदशमोध्यायः १० अखलेपविधान लेपकेतीननामहे लिखलेपलेपन लेपदोषमहे वर्णयद्वै मुखलेपकहे मुखलेपकोती
 नचकाहे उस्काप्रमाणतीनभौतिहे जोअंगुलभरमेधलेपहोसेधियधहे दोनअंगुलमोवलेपचढावे ॥

सोविषमहै अर्थगुललेपवाणहै ऐसतीनप्रमाणहै ओदालेपगेगहतीहै स्वप्नकान्तिहतीहै दोषमलेप गरपुरेना देवदारु सैहि
सिर्स सहिजन तत्वा पांचोसमभागकांचीमेषीसिस्त्रजनपरलेपकरे नवीस्त्रजनदूहो २ वहेडेकीमीगीकेलेपसेदाह्योडाना
३ दशांगलेप सरसो मुंदी नगर सालचंदन इलायची मांसी हंदी दारुहंदी कूट नेत्रवाला एदशोसमभागचाएकरियंचमांस
धुनमिलाइ पानीमेषीसिलेपकरेसे विसर्पे विषयेष विस्फोटक स्त्रजनदुष्टफोडा एसवपराजयहो इशाकादशांगलेपनामहै ४

पुनर्नवांदाहउंदीसिंखार्थेसिमुमेवच पिस्वाचैवालालेपनप्रलेपःसर्वशोधहा २ विमीतफलमज्जाललेपोदाहर्ति
नाशनः ३ सिरेषमधुयथीचतगारक्तचंदनं एलामांसीनिशायुमकुष्ठवालुकमेवच इतिसंघर्षिलेपोयपंचमाच
द्युतलुतः जलेनक्रियतेसुरैर्दशांगरतिसजितः विसर्पान्विषविस्फोटाच्छोथदृष्टवणाजयेत् ४ अजादुग्धति
लेसेपोवाक्कमृत्तिकैः ५ लागल्थतिविषालावुगालिनीवीजभूलकैः लेयोधान्पावसंपिष्टः कीट विस्फोटनाश
नः ६ रक्तचंदनमंजिष्ठातोषकषप्रियगवः कटाकुण्ठमस्तृण्यवंगम्रीमुखकान्तिदा ७ मातलिगजदासर्पिः
शिलागेशकृतोरसः मुखकान्तिकरोलेपःपिटिकावंगकालजिम् ८ ॥

विषमलेपः चकरीकादूधतिलयीसिमाखनसुक्तलेपकरेवाकारेमाटीतिलकालेपकरे विषसंभवस्त्रजनभिलाचस्त्रजन
लोह १ पुनःलेप करियारि अतीस कटुदृधिया कटुतरर् मूरीतीनिकेवीज पांचोसमानकाजीमेंपोसिकेकोददशपरनिष्फाद्य
लगाएरोषमिटै ६ कान्तिकाकलेप रक्तचंदन मजीठ कूटमालकगनी ववकमस्तूर एसवसमानजलमेंपीसिलेपकाल्म
गमिते कान्तिवटै ७ पुनः वीजप्रकीजड घृत मंशित गोमयएसभिलाइलेयेकान्तिवटै मुहालावंगगेग एसवदूरलोह ८

नरुणपिटिकापरलेप जोतरुणमसुसकेसुहृपरच्छेदीच्छेदीपिरिक्तीउभरे वहतरुणपिटिकाहे लेप लोधधनियानीनोसमभा
पीसिलेपकरैतेसेगोरोचनमरिचपानीमेपीसिलगवे वासरसौवच लोध सेंधवसमभागजलोमपी सिलेपे एतीनत्रकारलेपलगये
सेसुहृपरकीतरुणीयनकीपिटिकाअच्छीहोई ६ व्यंगरिगपरलेप अर्जुनकीछाल वामजीठ वाम्वेतथोउकीनखकीभस्म नीनोमेकोई
इवसहतससुक्तलेपकरेवंगरोगमिटै १० मुखपरकीकाईपरलेप मदारकोइधहरदी घिसलगायेतो बहुतदिनकीभईमुखपर

लोधाधान्यनचालेपतारुणपिटिकापहः तदजोरोचनासुक्तंमरिचमुखलेपनात् सिध्यर्थकवचालोधासैंधवश्च
लेपनं ६ व्यंगेसुचारुनत्वग्वामंजिष्टावासमाक्षिकः लेपः सनवनीतोवाश्चेनाश्वखुजामपी १० अर्कक्षीरहरिद्राम्या
मर्दयित्वाविलेपनात् सुखकार्यंशमंयानिचिरकालोभ्रवंध्रव ११ वरस्पयांडपत्राणिमालतोक्तचंदनं कृष्टकालीय
कालोधाधमेभिलेपंप्रयोजयेत् १२ तारुणपिटिकावंगनीलिकादिविनाशनं १३ एरणमथपिण्याकंपुरीषं
कृष्टरस्पव मूत्रपिष्टः प्रलेपोयंशीघ्रहृन्यादृत्विकां १४ एवदिरिष्टजंघनात्वभिवाभूत्रसंयुतैः कटरजत्वकैः
धवंवालेपोहृन्यादृत्विका १५ प्रपालकीजंमधुककष्टमाथैः ससैंधवैः कार्थोदारुणकेमूत्रिप्रलेपोमथुसंयुतः १६

कीगार्दनिश्चैद्रहोई ११ तारुणपिटिकापरलेप वटकापीलायत्रचमेतीरक्तचंदन कूट दारुहरदी लोध सवएकमेपीसि
लेयेतोतरुणपिटिकावंगंरागंईद्रहोई १२ द्रवीपरलेप पुरनेतिल वाडखोलकादी कृष्टवीट दोनोगोमूत्रंयेपीसिलेपक
रेद्वीद्रहोई १३ पुनः प्रकारः खिलीवजामुननीनोछालोगामूत्रमेपीसिलेपकरेद्वीनासहोई दारुणरोग परलेप विरेजी
मुदी कूट माष सेंधव एयांचो समभागपीसि सहनसुक्तलेपकरेदारुणरोगमिटै १३ ॥

खसखसपीसद्वधमंलेयकरे वाआमवविजुरी धेधेचुद्वधमंपीसिलेपेतीदारुणैरणानागहोदं १५ इलुभय र्लेधकरुण
नकीपतीकास्तीनदिनलेपकरेतीवाद्योराद्वहो १७ यनभटकेटैयासहनलेपकोस्नाद्युधचीकोपत्रवाफलकास्सस्त्र
कोबाभिलावापरस्ससहत्तलेपकोरेसिवाच्योराद्वहो १८ कोशवर्धनलेयगुखरुतिलप्रधसमानद्वर्णकोरेसमानधृतसहस्रमेफिल्ल
गौनेनीयास्वति १९ दिवारुमपरहाद्योदातकीजरादेस्सोतनेवकारीकाद्वधमंपीसिलेयकोरेलहस्वानलेयथास्वधेरेगौवाजगेतोधोस्वगमे

दुग्धेनखास्वीजंनलेयादारुणंजयेत्तुआम्वीजस्यसूएतश्चिनाह्णीसमंदयंलुधपिष्टत्रलेपोयंदारुणंहंतिदारुणं
रसतिक्तपयलस्यपत्राणांनदिलेपवान् इलुभयश्रमयातिनिभिगेवदिनकच २० इलुनायहलेपोमधमाहृहतीरसःशजासूत
फलंवापिभल्लान्तकसोपिवा २१ गोखुवस्तिप्रधमाशितुलेयमधुसपिषी शिरत्रलेपनंनेकेशंसवर्धनंपर २२ हसितिदंतमयी
धत्वाद्यानिद्वयंरसाजनं यमात्यनेनजायतेलेयात्पाणितलेयपि २३ यंहीदीवरहृधोकागैलाजपक्षीरलेपनेः इलुमाशमभाति
केराःस्वःसुपनाद्वहः २४ चतुःध्यश्रमांतवयोभजनस्त्रुणास्थिभसिभिर्नैलेनसहलेपोयंरोमंरजजनपरः २५ इववरुणिकावी
जौलेनभंगमाचंनेत्प्रतपहतेनकलागिसन्निभात्रकालाचल २६ अयोमजोसूगारजस्थिकलाकलरुनिका स्थितभिधुरसेमा

संलेपनात्पलितंजयेत् २७ कोतजामेगे रसोतविधिविद्वत् एवलीमेकहंसे २८ इलुभय र्लेप सुखीकमत्तदाधतीनोद्यत तिलने
लगज्जकेद्वधमंपीसिलेपकोरेवाद्योराद्वहो २९ यनः चतुषाद्वधमं रोम नखंसोरा हाइ इमकीभस्मतिचतेलनेदिनेपकरैलेनएवाज
रेकेवाकसकलनद्वधनकेवैजकानलयातालयनसेनिकारिसुपेद्वारलगावैतोकालेसोत्राय ३० यनः लोहचूनाभगरादिफ
कालीमार्ये पृथ्वेवासमानद्वर्णैकसिस्वस्संमंसानि भासभरएषिकथल्लैलेयकोरेलोत्रकालकेधनवालवालकोलेहोदे ३१

तृतीयः आचरणीन इदं सो वहेर एक आंग के विजुरि पाच लोह च न ग क क र्के रा स व कारा ही भं जति स्वर म धो दे उ पी के दि ल श नि र ह च रे
फालेय को तो स्व न का का ल हो २५ च त र्थः त्रि फला निल पत्र लोह च न भग रा घ स म भा ग ले छ ग र्के मू र्व मे पो सि प के वार प र ल गा मे कार
नाम २६ पंच म ले य त्रि फला लोह च न अना र्क को द्या ल का म ल वा ल रा य चो ज्यो य धि पा च प ल ओ भं ग रे कार स क त्र स्य नि चो रि ए वौ क्त ड
वा एक र वारि लो चे की वा दा र्मे स्वर म कारि यो हें एका मा स भ र्णो धे नि स पी छे नि कारि व वारी के द्वय मे धि स स्वे त वा ल न प स ले प कारे भी से र

धानी फल न रं य प्र स्ये धे त थै कं वि भी त कं पंचा न्न भज्जालो ह स्य क र्थै कं च त्र दी य ते पि द्या लो ह म ये भं डे स्था प ये द धि तं नि
शि ले यो यं हं ति न चि रा द्काल प लित म ह र् २७ त्रि फला नी लिका प त्र लो हं भृ ग र्जः समं अजा मू र्त्रे रा सं पि छ ले या न्द्र
सी कार स्मे तं २६ त्रि फला लोह च न र्ण च रा डि भ च्च नि व स न द्या इत्ये क पंच पु लिक च्च र्णै क र्था दि च क्षा णः भृ ग र्ज स स्था
पि त्र स्थ भ कं त्र दा यु ये त् मा र्मे नै कं ग न २८ अ य छि ग्री र धे न ले प नं दु र्चै शि र सि रा चो च सं वे धे रं ड भ न्कैः स्व ये त्वा
ग ल न्नः क र्था त्त्वा नं ते न च जा य ते प लित स्य वि ना श म्भ नि भि ले ये न सं शयः २९ शं ख च्च र्णै स्य भा गो वो ह रि ता
ले च भा गि कं मनः शि ला चा र्धे भा ग्ना स र्जि क र्थे क भा गि वा ले यो यं वार पि छ सु के रा म त्पा द्य दी य ते अ न वा ले
प यु क्त्वा च स न वे ल त्र डु ज्य या निर्मूल के रा स्थानं स्था न्द्र प ण स्य शि रा य द्या २८ ॥

उपनावाधे गति भव धे र्हे प्रभात त्वा क ले स म य धो य ड रे यो ह्यो ती न दिन ले य क ले से स ये द्वा र को र हो य २७ अथ लो म रा त न त्र कार
वा गि रा ने काले य शं ख च्च र्णो दो भा ग ह रि ता ल एक भा ग मे न शि ल अ र्धे भा ग स ल्जी एक भा ग ए स व द्वा र्ध पी नि मे पी सि ज हं के वार गि
र नि हो त्वा ले य को र या की चार नि को क प रे से व के रा वै ले य के य हि ले वा ड् र कारि के न व प स वै र मे ॥

यत्तलेपसातवास्करेसववारगिरैफिरनहोईजेसेवारवनवायेपरयहरेमसातनअतिउगमहै३७ पुनःहरतावशंखद्वारेपलाश
आखीरोशाणकेलेकेइकाकापानीमेंवाआकायत्रकेरसमेंपीसिसातवारलेपकरेसिवारगिरिजारेवारगिरिनेकोयहलेयउगमहै३
सयेककुष्ठमलेपपीरोचमेलीगजपीपरिकशीसविडंगा मशिलगोरोचनसंधवछयोसमुभागोमूत्रमेंपीसिलेपकरेलेगकछदूरहोई
३७ पुनःकाकंदोहीकूटपीपरिसवसमानवसीमूत्रमेंपीसिलेपकरेखेनकछदूरहोई३८ तीसरावक्कवीअमलवेतसलाषकाकग्वरी

तातकंशाणयुगंसात्यट्शाणंशंखद्वारेकंक्षिणिकंपलाशस्यक्षारंदत्वाप्रमर्दयेत् कदलीदंडतोयेनरविपत्रसे
नवाअस्याभिसृजभित्तेपेलीकांशातनमुत्तम३९ सुवर्णपुष्पकाशीसंविडंगानिमनःशिलाशेचनासंधवंचेवलेयनाच्छिद्र
नाशनं३९ वायस्येडगनाकछरुक्षाभिर्गुटिकाकृतावस्तमूत्रेणसंपिष्टापुलेयाच्छिन्ननाशिनीरसांजनमयश्चरेति
तिलाकृक्षास्तदेकातःदूर्णयिवागवांपितैःपिष्ट्वाचगुडिव्यक्ताःअस्माप्रलेपाच्छिन्नाणिप्रणश्यत्यतिवेगतः३९ धात्रीस
जैरसश्चेवयवक्षारश्चद्वारेणैःसेवीरेणप्रलेपोयंप्रयोज्यःसिध्मनाशने३९ वावौमूलकबीजानिनालकंसरदा
रुचतांष्टलयत्रसर्वाणिकार्षिकेणैःपिष्ट्वाकट्यक्शंखद्वारेणभात्रंसर्वोएकत्रचूर्णेयेत् लेपोये
वारिणःपिष्टःसिध्मानंनानाशनःपरः३९ ॥

परिसैनालोहद्वारेकारेतिलआठोसमभागगोफिनमेंपीसिलेपकरेखेनकछदूरहोई३९ सेलुआप्रलेपआंवराएलयवाखारएली
जेसेवीरवाकाजीमेंपीसिलेपकरेसेलुआदूरहोईसेवीरखेकांजीविधानरेचनाआयसेजानना३९ पुनःशुरुहरदीमुरीकेबीज
तातदेवसरुपानएसवककषकभरशंखद्वारेणभात्रंसर्वोएकत्रचूर्णेयेत् लेपोये३९

नेत्रलेप हृदं संधव गेरू सौत चारौ समानपानीमें पोसि पलक पर लेप करे सर्वनेत्ररोग दूर हो ३३ पुनः सौत सों छि मिर्च पीपरि च
रो समानपानीमें पोसि गोलिवनाइ पलक पर लेप करे इमंजननामिकाले पसे नेत्रको रनिकी खजुरी ओगु हांजन जो पलक की कोर पर
कोरी छोरी पीकी होगी हे सो दूर हो ३४ खजुरी पर लेप चकोड विद्यावक्त्री सरसोतिष्ठ कूट हररी दारु हरदी मोघा एत्रादौ समभाग मिट्टे
में पोसि लेप करे खजुरी दाद विचर्विक्र पाय कृष्णा एरोग न रहे ३५ ह्रस्वी खान पर लेप चौक विडंगा सिंगरफा गंधक चकोड विद्या

हरितकी संधव चरौ रिकं चरौ सानं विडालको जले पिष्टः सर्वनेत्रामभाय ह ३६ रसांजनं बोधयुतं संपिष्टपदकी कृतं कंठ
पाकान्वितां हतिलेयां हंजननामिकां ३७ प्रपन्नाटस्य बीजानि वाक्ची शर्षपसिलिताः कृष्णनिशा कपयंस्तं पिष्ट्वा गन्धेण पेल
नं त्रलेपादस्मनश्च तिकं डूडू विचर्विकाः ३८ हेमक्षीरी विडंगा निदरदं गंधकं लथा रुद्रमृच्छसिंदूरं सवोणकं त्रमर्दये
त् धातुर्निवतां ह्रस्वीपत्राणां स्वसेऽथ क्त्रास्पत्रलेपनात्रेण यामा रुद्रविचर्विकाः कंठकाश्चरकसंश्लेषप्रशमं योति
वेगतः ३९ दुर्वाभया संधव च चक्रमर्दः कंठरस्कः एभितक्रयुनो लेपः कंठच दंडु विनाशनः रूचं दनोशीरब्रष्टा
ह्रवलाया घनोत्थोत्पलेः क्षीरपिष्टः पलेपस्याद्रक्तपिनाशिरोरुचिः ४० सिद्धार्थ रजनी कष्टप्रुक्ता टतिलैः सह ॥

कूट सेंदुर एसातौ समानले नीमपत्र पानतो नो रसनि कारि दे जेदे धूर्वी कट्वरसमें पोसि लेप करे ह्रस्वी खान दाद विचर्विका पदकृष्णा
खान रसक कष्ट एसवनाश हो ३९ पुनः दूव छोरी हृदं संधव चकवट कीया कटसंख्या पांचो मिट्टीमें पोसि लेप करे खजुरी दाद दूर हो ३८
रक्तपित्त पर लेप लालचंदन स्वस मुखेरी धरिया रा व्याघ्रनल कामल एछलो समभाग दुग्धमें पोसि लेप करे तौ रक्त संबंधी शिरको रोग मिट्टे
४० उदर रोग पर लेप सरसौ हररी कूट चकोड विद्यातिल एसव समान कंठ येने लमें पी हिले पकरे शीत पीत संबंधी उदर रोग दूर होय ४१

वातविसर्पेपर एसवनीलकमल देवदारु रक्तचंदनशुद्धीवरियाए एसमभागद्वयमेपीसिद्यममिताह्लेयकिहे वातविसर्पेद्रुहोइ ४२
 पित्तविसर्पेपर कमलनाल रक्तचंदन लोधवसु कमल कोकावेली सरिवन आवरणजीहूइ एसवसमभागयानीमेपीसिलेयकिहेपित्त
 विसर्पेहानिहोइ ४३ कफविसर्पेपर त्रिफला पत्राक खस धवसय्य नरमूल जवासा एसवसमानलेजलेमेपीसिलेयकिहे कफविसर्पे
 हो ४४ पित्तवातरक्तपर मरेरफली नीलकमल पत्राक सरसोफूल इनकाष्टरुन सोवाद्योथाद्यतमेफिलेयकिहेपित्तवातरक्तहानह

कहुतैलेनसंमिश्रमुदंक्षविस्पर्पनं ४१ राह्मानीलोत्पलं दारुचंदनं मधुकं वला द्यतक्षीस्युतोलेयोवानवीसर्पेनाश
 नः ४२ मृणालचंदनं लोभुशीरं कमलोत्पलं सार्वामलकीयध्यालेपः पिविस्पर्पेत् ४३ विफलायमको
 शीरं समंगाकरवीरं नलभूलामनं नाचलेयक्षेष्ठाविसर्पेहा ४४ मृवीनीलोत्पलं पत्राशरीरषक्रसुमेः सह त्रिलेपः
 पित्तवातास्त्रेशतधोतद्यतनुनः ४५ आमलद्यतभृष्टतपिष्टकांजीवावारिभिः जवेन्मृक्षित्रिलेयेन रक्तं नासिकया
 सुतं ४६ कष्टमेरुतैलेन लेपात्कांजिकपेपिनं शिरोनिवातजां हन्त्यासुष्यवासुचक्रजं ४७ देवदारुनं मंक्रुष्टं
 नलदंविश्वभयजम् सकांजिकः त्रिहृद्युक्तालेयोवातरशिरोनैलुम् ४८ ॥

य ४४ नाकरक्तान्नावपर आवरण धीमेभृजिकांजीमेपीसिलेयकिहे नाकसेरुधिरगिरिनाबंधकरे ४५ द्वातजशिरोपीडापर कृत्वा
 क्रुष्टुष्य कांजीमेपीसिंदनेलद्युक्तमस्तकपलेयकिहे वातजन्यं शिरोधीरमिहे ४७ घनलैपः देवदारुनगर कूट सुगंधवाला पा
 चोसमानकांजीमेपीसिंदनेलमिताद्भाथेपलेयकिहे वामस्त्रेभशिरोपीरनाशकरे ४८ पित्तसमवशिरोरेणयलेप आव
 एकसेरु सुगंधवाला कमल पत्राय रक्तचंदन दुवजइ खस नरकटजइ एनवास्त्रसमलेपानीमे ॥

पीसिमाधेपलेयकिहे पित्तसंवंधी ओर रक्तपित्तसंवंधी मलकपीडा दूर हो ४८ कफसंभव शिरोपीर परमेव ड्विज तगरवाल छडनी
था इलायची अगर देवदारु जयमांसी एसनरंमूल एदशा इव्यपानीमें पीसि गरम करि माधेपलेयमौकफसंवंधी पीडा दूर हो ५० पुनः सौ दिव
द चकचडबीज देवदारु रोहिष विना अगिया खर एयोचो इव्यसमानगो मूत्रमें पीसि सुष्मा समाधेपलेयसे कफजन्य पीर दूर हो ५१ ह
योवर्त आधाशीसीपरसरविनकूटसेठीपीपरिनीलकमलाकांजीमें पीसि रंजने लभुन लेय किहे त्रयोवर्त आधाशीसी दूर हो ५२ शंख

दूवीशीरनलानांचमूलेः कर्वात्मलेपनं शिरोर्निपितजां हत्या इत्केपित्त रुजं तथा ४६ हरेणनरोलेयमुत्तेलागरुदा
रुभिः मासीरात्नां नटवकैश्चकोसोलेपः कफातिनुत् ५० छठीकष्टप्रपन्नाटदेवकाष्ठैः मूत्रपिष्टैः सर्वाक्षेः श्ल
पः स्वेष्मशिरोर्तिनुत् ५१ सारिवाकष्टमधुकं च कृष्णोत्पलैस्तथा लेपस्सकांतिकः स्नेहः सूर्यावर्तार्द्धभेदयोः ५२ वरीनीलो
त्पलंदूर्वातिलाच्छाः पुनर्नवा शंखकं नंतवातचलेपः सर्वाशिरोर्तिजित् ५३ अथलेपविधिश्चान्यः चोचते सुशंसमतः कोत
सकथितो भेदोऽप्येव पात्यं च देहको ५४ चर्मोद्भाषिकं यक्ष्मोत्पानं तं समितिस्तयोः शीततनुनिर्विधीनं प्रलेपः परिकीर्तितः आश
धनस्योऽसः स्यात्प्रदेहश्चेभवातहा ५५ रोमाभिमुखमादित्योऽपलेपात्यं च देहको वीर्यसम्पक्विशत्याश्रमकूपैः शिरोमुखैः

अनंत सर्वशिरोरोगपर छतराणीनीलकमल दूव कारेतिल गदापुरेना पांचोसमानपानीमें पीसिलेय किहे शंखक अनंतवात
सवसिरमिट ५६ पुनर्विधान ज्ञानी वैद्यकी संमतसे लेपकाइ सरा विधान कहता हूं एकत्र लेपात्यं २ च देहक ५४ इनकी उचाई
काजमाण एदोनोले ५ में सेगीलेचमडेकी सुवर्ण है सो एरादायकी सीतवीर्य सह्यमत्रवेशवाधारहित है ओदायनाप्रलेप जानो उक्ष
प्रदेहक कफवातहती है ५७ एदोनेलेप एमदूर होने से रोग मुख लवण के अक्षीतरहले पशुण प्रवेश कर्जो है ५८ ॥

लेखेनिषेधरातकोलेपनकरै औवास्कोलेपसूधेनयावे क्योकिमुखनसेरोमचरेतोदेहमेअधिकपीडाकोर ५७ रात्रलेपनिषेधकारण
रात्रिकोतमवेगसेशरीकोउसताउफाई रोममुखपरआइरहतीहै विनालेपनिकरिजातीहै नसकारण रात्रिकोलेपकरै ५८ रातकेलेपकी
विधिः रात्रिकोलेपचतुरवेद्यनिअेकरै जहात्रणपकतानहै चिरकालतक आंगभोरशेयहो वारत्तवाफारभवहो ५९ ब्रह्मणयचारसप्तप्र
कारलेपक्रम प्रथमलेपसूजनइकरनेको दूसराजनेमें रुधिरकोयथास्थानमेंपिलयाकैफलानेको तीसरात्रणपरकीवालकोभूड

नरात्रोलेपनं कयोच्छुक्रमाणं न धारयेत् शुक्रमाणमुपेक्षेत् प्रदेहपीडिर्न व्रति ५७ तमसापिहितो ह्युष्माणो मकुपमुखे
स्थितः विचालेपेत्तनिर्योतिरात्रो नालेपयेत्ततः ५८ रात्रावपि प्रलेपादिविधिका यो विवक्षणेः अपाकिशेधे गभोरत्ता
क्षेष्मसमुद्भवेत् ५९ आदेशे शोथद्वरे लेयो विनीयो रक्तसेचनः तृतीयचोपनाहः स्याच्चतुर्थः पादनः क्रमः पंचमा
शोधनो भृत्यान्पथ्ये रोपण इष्यते सप्तमा वर्षीका णोत्राणस्त्वेनेकमा मनाः ६० वीजद्वरजवाहिंसा देवदारुमहौषधं राला
ग्निमंथलेपोयं वातशोथविनाशनः ६१ सधुकं चंदनं मूर्चानलमूलं च पंपकं च शीखालका पप्रपित्तशोथे प्रलेपन
६२ कलासुराणपि एकां शिशुत्वं किं सकता शिवा मूर्त्तपिष्ठः सुखोऽसौ यं प्रदेहः क्षेष्मशोथ इत् ६३ ॥

चौधात्रणकोरकेवलानेको पांचशुक्रकरनेको जो पीवनवाकीराधै छटाघाखुपरनेको सानवांथावकेचर्मको
जो पीवनः ६० ब्रह्मेवातशोथ निवारणलेप विजोरामूलभासी देवदारु सोहि रासन अस्तीमूल सचसमानप
नीमें पीसिलेपकरे वातशोथ शांतिहो ६१ पित्तशोथ परसुरेवी रक्तचंदन सुरे नरकटज ड पप्पाक खस नैत्रवाला आठ
समानपानीमें पीसिलेपकरै पित्तशोथ इहो ६२ ॥

कफशेयपलेय पीपर पीना संहिजनछालवाल्वाखाड हर एपाचो गोमूत्रमं पीसि गुनगुनालेयकरै वत्तत्रेदहसंज्ञकलेयकफशेय
 डकतोहे ६३ आगतकचोर कशेयथ पलेय हरदी शरुहरी क्तस्वेतचंदन हड इव गदापुरेना स्वसुपचाब लोथगेरुसौत एसवसम
 भागयानीमं पीसि आगगुक्कओरुत्तशेयथ पलेयकरै सेइरुहो ६४ ब्रणपकाने पलेय सनकीजड मूरोसहिजने कावीज तिलसरसोयवलोह
 कीट अरसी एआबोसमानलेयानीमं पीसि त्रदेहसंज्ञकलेयसे ब्रणपकेश ६५ ब्रणफोलेय लट्जीएकीजड चीतेकोजडाछालसेहुड
 मसकाइथ गुडभिलावा कसोस संधव एओथधिइनोइथमं पीसि ब्रणपलेयकरै सेफूटे ६६ पुनः कंजमिगोभिलावा रत्नमूलकी
 केनिशेचंदनेचशिवाड्वायननेवा उशोरंयमकलोडगैरिकं चण्डाजनं आगंगुजे रक्तजचशोथेकार्यात्त्रलेयनं
 ६७ शणमूलकशिग्रुणफलानितिलसर्षपाः सक्तवः क्वावमनसीत्रदहः पाचनस्मृतः ६८ दंतिचित्रकमूलत्वक्सुधा
 केपयसीगुडः भल्लातकश्चकाशीशं संधवंदारुणे स्मृतः ६९ चिरिविल्वो गनिकोदती चित्रकोदयमारकः कपोतकं
 कण्टभाणं मललेयनदारुणं स्वर्जिकायावत्सुकाद्याः क्षाणलेयनदारुणं ६९ स्वर्जिकायावत्सुकाद्याः क्षाणलेयनसारु
 णः ह्मदीयोस्तथा लेपोव्रणपरमदारुणः ६८ तिलसंधवथहाब्धपत्रनिशायुग्मतट्टघृतयुतैः पिष्टैः प्रलेपोव्रणशोधनः ६९
 छाल चीला कनेर एपाचो कटुतरकीबीट वाखंडाबीट त्रागिक्कीट मेसमान तिलाइलेपकरै फोडाफूटे ६९ तीसएलेय सज्जी यवाबार
 दोनोलेपकरै वाचो ककीजड कीछाललेपकरै फोडाफूटे मे प्रवलहे ६८ ब्रणशोधनलेय तिल संधव सुरेवी नीमयत्र हरदी सर
 भाजलिजा रतवउतारिघी एबिछोइ टिकिया केफिरेर एदोनोत्रकारत्रणशुधवारै ६९ ॥

अरे शोधनरेपनपलेप नोमपुत्रघृतमधु दाहहृदी मुरेदी तिल एसवपी सलेप किहे ब्रणशुद्धकोप्रश्नाने ७० कृमिनिवारणलेपकर
जनीमवकारुन नौमोपीसि कर्मिके स्थानमेभरेतो कृमिमखाइ वालहशुन वाहीगपीसिभरे वाहीगनीमपत्रभरेतो कृमिनोशे ७१ ब्रणशोधन
रेपणपलेप नोसपुत्रतिलदहनिकोजःसंधव एसवसमानपीसि सहतसुक्तलेप किहे ब्रणशुद्धकोप्रश्नाने ७२ येदपी एरुनाभिले
मेनफल कटकी कांजीमेपीसि कछगरसकरिनाभियलेप किचेसेयेच्छलमिटि ७३ वाजविश्वधीपर सहिजनथाल वकायनपुत्र ७४

निवपुत्रघृतंक्षौद्रदोवीमथुकसंयुतः तिलैश्चसहसंयुक्तोलेपः शोधनरेपणः ७० कंजारिपुनिगुंटीलेपोहृत्पात्राण
कमात् लशुनस्याघवालेपोहिगुनिवभवोथवा ७१ निवपुत्रतिलादतितृष्टसेंधवमाक्षिकः दुषत्राणप्रशमनोलेपः शो
धनरेपणः ७२ मदनस्यफलतिक्तापिस्वाकांजिकवारिण कोसंकर्यान्नाभिलेपंश्चलशंतिभवेततः ७३ शिशुशोफालिकं
इयवगाधमेगुनकेः सुखोलोवत्तलोलेपः ब्रधुज्योवातविश्वधी ७४ पैत्रिकसर्पिषालाजामधुकेः यकणचित्तोः त्रलेपक्षीरपिष्ट
दोषयस्योशोस्वदने ७५ इष्टिकासिकातालोहकीरुगोशकृतासह सुखोदधश्चपदेहोयंमूत्रैः स्याद्विषविश्वधी ७६ रक्तचदनमजि
घानिशामधुवगारिकैः क्षीरेणविदधोलेपोरक्तागुनिभिर्गजे ७७ निचलुः शिशुबीजा निदशमूलमथ्यापिवा ॥

मूलंयवगेहं मृग एसमपीसिसुखोदधलेपकरेसेवातविश्वधीदूरहो ७८ पित्तविश्वधीपर लावागुरेदीशकरधीवमेलेपकरेसेवात्र
संगेध खसरक्तचदनदूधंमपीसिलेपकरेसेपित्तविश्वधीदूरहो ७९ कफविश्वधीपर इरुवाल् लोहकीट गोवर चारेणोमृत्
मपीसिलेपकरे इस्सपदेहलेपसेकफविश्वधीदूरहो ७६ आगतकविश्वधीपर रक्तचदन मजीठ हरदी मुरेगी एसवसमानदू
धंमपीसि चोट वा रुधिरविकारपरलेपकरेच्छयाहो ७७ वागगलगडपर वेतसह्निजनवीज समानले जलमे ॥ ॥

पीसिशीलगरमत्र देहसंज्ञकलेपकरे तेसेही रशमूलपीसिलेपकरे ७८ कफगलकंडपर देवदारु इंधयन नीनीपीसिचंदेहकलेपकफगंडमाला
इंकरे ७९ अपचीपर सरसो नीमयत्र भिलावा नीनीसमभागराधिकारि मेरुके मूत्रलेपकरे अपची इहो ८० गंडमाला अर्धहल गंडपर लेय सरसो
औसहिजने के बीज सनरेका बीज औअसीयन मूली के बीज एसवचौषधि समान भागले खदये भगमट्ट मेपीसिके लेप करे तो गंडमाला अर्ध
गंडमाल गल गंड इहो ८१ अपवाहक परलेप केवल वात पीडित को ई अंग अपयने सोभा विकर्म मे पीग करे तत्कां के रेम डू एक रिधुं सुचीपी

अर्धे हो वात गंडे सुलोमः संप्रदीयते ७८ देवदारु निशाला च कफ गंडे प्रदेहकः ७९ सर्वपरिष्टयनाणि दग्ध्वा भल्लान्तकेः सह
घशगमूत्रेण संपिष्टमपविघ्नं प्रलेपनं ८० सर्वपांशुशुबीजानि शणवीजानि सीयवाः मूलकस्य च बीजानि तक्रेणा स्नेन पे
षयेत् गंडमाला वंदं गंडलेपेनानेन शास्यति ८१ प्रक्षयित्वा क्षौरे वंगकवलानलपीडितं तत्र अर्धे देहं दद्याच्च पिष्टुं गजाफलेः
कृतं तेनापवाहकजापीरा विन्धाची गंधसीतया अन्यापित्वा जापीरा अशमं याति वेगतः ८२ धतूरे रंड निरुं गी वर्याभ
शिशुसर्षपैः प्रलेपः श्लोपदं हंति चिरोत्थमपि दारुणं ८३ अजाजी ह्युधाकष्ट मे रंड वदरा न्वितं कांजिकेन तु
संपिष्टं कंठं च प्रलेपनं ८४ कर्त्तवीरस्य मूलेन परिपिष्टेन वारिणा असाव्यपिजरया शुलिंगोत्थारु कालेयनात् ८५

सिसुलोमलेपकरेसे अपवाहकवासु विन्धाची हाथकी गंधसी जंधाकी वासु संभव पीडा इहो ८२ पीलयां वयलेप धत्तरा रंड
मेखरी तीनोयनी गदासरेना सहिजन घाल सरसो एछलो पीसि अति काल के भये पीलया उपलेप किहे अच्छा होरे ८३ कंठ रोग पर
कालाजीरा हाऊवेर कट रंडमूल वेर घाल एपाचौ समान कानी में पीसि अंकोश परलेप किहे अच्छा होरे ८४ उपंश्य कहें गसीय
रलेप कनेर की लइ पानी में पीसि रंशी परलेप जीउपंश संबंधी असाध्य पीडा इहो ८५ ॥

पुनः त्रिफलाऋतारमेजरारणविकारिसहस्रमेकैरिलेपकैरगामीकीचीवशीघ्रप्रश्रयानेह ८६ पुनः रसो हृत्तौलोसमान्नी
सहस्रमेधपि उग्रशंसवधीएद्वद्वितेव्रणपरलेपकैः त्रिदशपरलेपकैः ८७ अग्निदग्धपरलेपकैः ८८ पुनः यवकोणप्रतिलकितिलमेधपिलणा
एवाचीयोसिधीमिलजरेपरलगावै वाधीचोराईकाथमंसिलास्लेपकैः जैकीविद्याशांतिहोई ८८ पुनः यवकोणप्रतिलकितिलमेधपिलणा
सवव्रणप्रश्रिवावै ८८ द्योतिसंकोणलेपः पसलासफल गूलफल तिलकेतिलमेधपितिसहस्रमिलार्थोनिमेलेपकरेदृष्टसंक्रितहोई

दहेत्कटाहेत्रिफलांसामधीमधुसंयुताः उपदंशप्रलेपोयं सधारेणपयतेव्रणं ८९ रसाजनंशिरोषेणपथ्याचसमन्वितं
सक्षोइलेपनयोज्यमुपदशगरापह ८७ अग्निदग्धतुगोक्षीरोसक्षचदनगरिकैः सामृतेः सर्पिषालिग्धेरालेपकारये
स्त्रिषक् तंडलीयकपायैवोद्यतमिश्रेः प्रलेपयेत् ८८ यवान्दग्धमधीकायातेलेनयुनयातया रद्यात्सर्वोनिदग्धे
षप्रलेपोव्रणरोपणः ८९ पलाशोदंवरफलेस्त्रिलैलेसमन्वितैः मधुनायोनिमालिंपैजादीकारणसुगमं ९०
माकरफलसंयुक्तं मधुकर्पूरलेपनात् गतेपियोवनेस्त्रीणां योनिर्गोदातिजायते ९१ मरिचं संधवं हृत्प्रात
गारुदस्तीफलं त्र्यपाभागैस्त्रिलोः कृष्टववामावाश्च सर्षपाः अश्रुगधाचतच्छर्णं मधुना सह योजयेत् ॥
अस्य संततलेपेन मर्दनाच्च प्रजायते लिंगस्तनोत्सधः संहतिर्भुजकरणयोः ९२ ॥

पुनः माज्जकप्रपीसि सहस्रमेकैरिलेपकैः गिरीदृश्योनिनित्रावै ९३ पुरुषर्षडीकडोकरनेकासेप मस्त्रि संधव पीपरि
नटकैट्याकेफल सहजीरकवियाकालेतिष्ठ कूटयवउद अस्मगंध एस्वसमानयोसि सहस्रमिश्रितकारिनिर्दंशपसलाकरेनो
ईस्त्रिकैस्तनपरलगायै तौकडोरपलाइ ओरुषकेभुजदुपर औकानपरमर्दनकानाभला ९३ ॥

पुनलपः स्वतः फलका असंगंध संधव दोनोस्तद्वर्गसि चोपनाद्यत द्यतकाचोपनाभेदिकाद्वय एककारिश्चपद्वयजराश्यास्थानि र्द्वी
 गये र्द्वीमोदीद्योय ६३ योनिस्त्वलेय र्द्वनपत्रकारसलेपाए एककोनेके सोटेसेयो दिवाक्वा सुवरसुगरिशरिजवकजरीयोदी समन
 तव र्द्वीपरलेपित्वीधसगकोनोस्त्रीसुखयोवैषीयपातकरै ६४ दत्तदुर्गधनिवारणलेपु यान कूट दृड यामीमपीसिलेपकरिदुर्गधद्वय ६५
 पुनः कार्यी र्द्विजि कूटजवर्गसी सेद्वंबनकावरादां जुनेचने र्गसर्वकोपीसिकपरछाणिकारिधूपकरितोदुर्गधदेहसहितदूरलोवशीकारण
 सिताश्चर्गधा सिधूत्यथागच्छीरैर्यतपंचेत् नल्लेयान्मदेनाल्लिंगेष्टुकिः संजायतेयरा ६३ इद्वारुणि कायत्ररमेः स्रुतं
 विमदेयेत् रक्तस्यकारवोरस्यकाष्टेनचसुद्धसैहः नल्लिप्तलिंगसंयोगाद्योनिश्रवोभिजायते ६४ नाद्वलपत्रचूर्णेतुद्वय
 कष्टशिवाभव वारिणालेपनकथ्याजानंदोर्गधनाशन ६२ कलित्यशक्तवः कष्टमांसीचंदनजः रजः शक्तवश्चरागवस्येवत्व
 कंचैवैकानकारयेत् स्वदेर्गधनाशश्चजायते स्यावधलनात् ६६ वचासेववैलकष्टरग्न्यामरिचानिचः एतल्लेयत्र
 भावनवशीकरणमुत्तमं ६७ अभंगः परिषेकश्चपिचवस्तिरितिक्रमात् दूधेनैलं चतुर्धो स्यावलवचचयधोत
 र ६८ त्रयोभ्यगादयः पूर्वत्रसिद्धाः सर्वतः स्मृताः शिरोवस्तिविधिश्चात्रवाच्यतेसुदासंमतः ६८ ॥

लेपः क्व कालालीन कूटहृदी दोरुहृदी मित्च एतवसमानपानीमयीसिद्धमेलोकवशात्तेनेके नमिसलगायेतोअच्छाहे ६७
 मस्तकमेतिलगानेको विधि अभंगकहे तैलमदेन परिसेककहेतेलखपरनापिचकहे हर्दिकेपदलकोनेलमेवोरिमोद्ये
 बाधे वलीकहे माथेमेंचोकेरत्नमवां धितेलभरे एचारिषकारहे सोत्रामसे उत्तरेणरवलवानहे ६८ शिरोवस्तीविधान अभंग
 परिसेकपिच एतोतो सर्वत्रत्रसिद्धहे औशिरोवस्तीविधि आमामात्रा इहोनेहोकीही सोअंगेहोकीमेकहे ६८ ॥ ॥

शिरसेयासुप्रकाशः सत्तावापर्योयधिकाभरणं कारणेणियेवक्षित्यसर्गं दे० वास्तुअं गुलचोमीसाथभरलंभी शिरसेयसमानं गणनाकार
रिपानमकीपीलेपक्षोभीओरबलीटीलनलोसोभाथेपरचदाक्षीतस्योपेओरद्वयीपीतीयेनिसंथिअंकेफिलोचनेनदेभाएमयेकोयंगुलभर
पीडीमेयारोओमनिसंधिअंकेरुदलोसुनेलभरे १०० थिगेवक्षिअभाणचनकनाकसुननेनक्षेगलनयेदेआमसकअथानभिरैवारेयोमात्रा
तकयतीस्थितरहे० गात्राअभाणअजवासनरत्नीमेंकक्षिआणैदे० थिरेवक्षिकालभोतनकेअथसंपाववामातद्विनशिरैवसिचरे० थिगेवक्षीपथा

शिरैवक्षिअंभेणः स्याद्विमलोकादृशांगुलः शिरधमांगंतवध्यामसकेभाषपिषुके संथिरेयंविधागावोनेहेचोक्षेः अष्टरथेन
१०० तावअर्थसुगावस्यान्नासानेनमुसयुतिः वेदनायशवोवापिभाजाणावासासुसर्क १ विनाभोजनमेवानशिरैवक्षिअंयशस्य
ते अयोज्यक्तशिरैवक्षिः पंचसत्राहमेववा २ विभोअथशिरसेवक्षिपरत्नीयाअसमंततः ऊर्ध्वंकायेततः कोलनीरः स्नानं स
माचरेत् ३ अनेननुर्गेयारेगावातजायातिसंक्षयशिरत्कंपादयतेनसर्वकालेपुसुज्यते ४ स्वरयेवाणैदशांतुकिंचित्तुः पाश्च
आयिनः मूत्रैः स्निहैः सेः कोक्षेसतः कणैपष्टरयेन १ कणैतद्वरितं रक्षिच्छतंयंचशतानिचा सस्त्वंयापिभाजाणांअत्रकांच
शिरैगदेरे स्वेजनागुनकरवर्तेवार्पान्छेदिकयायुत एवामानाभवेदकासर्वेनैयेषनिश्चयः एगंधैः दूरणं कणैभोजनान्नसि

कतापलीप्रमाणपूर्यककश्चिदेवतारिसुखोसजलसेमाथाधोचनद्वार्दे ३ शिरैवलीगुणयातजन्यथिरैकंपादिरोगदुर्गेयद्रिहोमासे
वेधससारसरोगामेंथिरैवक्षिकणवे ४ कणैपचारमसुयंकोकृच्छसेद्वकसिगुंरंगोमृत्वातेल वासससुखोसकानमेंधरे कणैपुष्पभाणा
प्रमाणकानकर शिरैयोकेनिसारसगयेथेगात्रायांचशे वाहनासामातकराखे ५ गात्राअभाणमुयजोपरसुकेधजानेबाणधूम ॥ १०॥
सोमात्राअभाणैदे० कणैपचारसमय कानमेंधोषधिभोतनके यथगरशादकधरे अतेलादिसंध्यासमय ॥

करेव्यथापरस्त्रीबधि अर्द्धद्वयभोजोपतोपीलेयस्त्रायते निन्देभोजिलेनबन्धुगलमावे तवद्योरो आगिभुसेकोले जवगरमलेन मव
 निचोरिकानमेषोडेनोखर्वकर्णभूलहरवोर्द ८८ ननः छगुभुनमेसैधवधरिडाप्रभावाकिलामणिइरेभोकाचनभेगीगरकीपिटिकाभूर
 होर १० तृतीय अदरकाकारस मरेवी सतन सैधव चोयरा तिलयणीद्वभमेहोनीअयेगुभूरुकेवी लयसुरतिपतीसमेन फलीतिलसदश
 वीतीहं वहनिलयणीहं सरसोकानेस सुबाला चीट्टकारस एलवयीसिकानमंडारेनोकाजकीर्षीभारुतोरे ११ चोधीओ केयफलकारस
 तैलाद्यैः पूरणं कर्णे भ्राकरेत्तमुपागते १०८ पीनाकर्षुनभाज्येनलिसुभमेनोपतापयेत् तदसः अवणोक्षिभः कर्णेभू
 लहरः परः ८ कर्णभूलातेकोसंवलमूत्रं ससंघश्च निक्षिपेतेनशाभ्यतिभूतपाकाखिरुजः १० मृगवेरचमयुक
 मथसंथवमामलं तिलयणीससैलं टकणं निवकधुवं कटुलकार्णयोदेयमेतवावेदनापहं ११ कपित्थंमातुलि
 गाम्लमृगवेरसेऽशुभैः सुखोक्षैः पूरयेत्कर्णे कर्णे भूलोपशानये १२ अर्कोकरनम्लपिस्थानेलाकाकान्लवण
 न्वितान् सनिदद्याः सुहीकांडे कोरितेन क्षवाहुते पटपाककमकावारसंस्तचभपूरयेत् सुखोक्षेलेनशाभ्यति
 कर्णेपीडाः सुरारुणाः १३ महगः पंचमूलस्यकांडानां गुलानित क्षोमेणावेधिसंसिचतेलेनारिपयेतनः
 यत्तेलं यवतेतभ्यः सुखोक्षं तेन पूरयेत् ॥

विजौरास अमलवेसकेरसविना नूकरस अदरकारस एचारेसुखोक्षका
 नमंगेनेसेकर्णभूलनाशहोय १० पंचमञ्चो मकारकाकोमलविगुसा नीद्वरसमंयीसि तिलकातेल सैधोनोनमिलरगोलावाधिसे
 हुडकेभोवैल्वंमंयोलाकरिगोलाधरे अच्छीभांतिरविउसीकेपत्रलयेटिकपरेयीमावीचखारंमंद्यात्रमंपकास्पृश्याकसदृशपक्ता
 य तवनिकारि मावीकापडाउतारि कूटिकैरसनिचोरिलेइर किसउसरसकोस्तलोक्षकारिकानमंडारेनोकाजकीरारुणभूलशान्तिहोय १३

कणेश्वरपदीपिकातेन सहस्रपंचमूलकोजः आठअंशल रुन्नावल्लपेठ दीपमेवारिचमेदीसेय करिक्कोरिमिटपकावे चदीगुनगुनेतेव
कानमेगरेसिकानकोमपकद्रवो ६ महतपंचमूल वेला ६ देदी शिवनी पायल रुक्कोजरीकसूनेहे १४ धनः दुलुतेलदेकुमूलपानीमपीसिक
त्यकवरिओएनेतिषतेलमेलासमजलेपचा ६ जतारिसुत्ता सलुताकानमेअरनेसेनिशेषजपकाणश्रुलमिरे १४ कणेवायपलेला सुखीमाष
वसंगाथयनिगा रुन्चारेकाकाथेयाकला रुक्कोचीचलीमपचा रुचलीपह्लिजा रुतवअनमेअरलेकाएनारुगेनिकोर १४ कणेनादयस्थेछोल सज्जीस

दयंतदीपिकानिलंसयोगृह्णेतिवेदनां एवंस्याथीपिकातेलं कृष्टदेवमंगलमथा १४ तेलं प्रेषेनाक मूलेन मंदग्नौ परियाचिनं
दृष्ट्वा अत्रिदोषोत्थं कर्णे शूलं प्रहरणात् १५ कल्कप्रथेन ब्रह्माब्जं कोलीमाषधान्यकैः शृङ्गारयुक्ता पक्काक
एना दार्तिक्षारिणोः १६ स्वर्जिका मूलं शुक्लं तिगुलकसा समन्वितं शतसुप्या च तेलं पक्कं शृङ्गं चतुर्गुणम् १७ ॥
द्राणव शूलवाधिर्ये आवाकणे स्यना शयेत् अपामार्गं शार्जलेत शार्कल्पितं शिपेत् तेन पक्कं जपेते लंवाधि
ये कर्णे नादकः शंखकास्युनां शेन पचेनेतं तु सार्धं पं न स्पृष्ट्वा मात्रेण कर्णेना गीत्राण्यति १८ शूलैरेपंच
कषायाणां कपित्थरसमेव च कर्णे आवेन शंसंति शृणुमधुनासह २० ॥

वीमरीक्षो गौपीपरिलोक एवं नोत्समभागचोष्टनेतिलमेस्मानमथ एतंगे कसूक्तं न पंचविजयके मलते लपावेति नाना भंडवानं तो कर्णेना
द शूलं वाधिरास्य कानवल्लभ २१ एगर्न कोन सचि २२ वाधिरत्व पण्यपामार्गं भारेण ल सज्जीरेकी एव ओष्टनेयानीं मयोखियं भोलनिशिगएरा
जातनिर्मलजललेचोया रौलेद पचा रपानिना एरुक्तन मेअरते वाधिप्लुमिरे सुचेलेगे रुद्रकणी मणसंजकमेला ओयेकापां सचोष्टनेतेलं मंलात करि
पचास्तेयस्तेला कानमेअरते त्रिणष्टकोर १८ कर्णे आवपण्यो यधि पंचकयायका शृणुकेय एसुओमधु भिलास्कान मेअरते तीकान वेदिरा पं रसोय २२

पंचकाषायवृक्षोद्दहदु लोधं मजीठ श्रावरा हंडां वराफल वाकीकी कल २१ कापीसावपरपुनः सज्जीविजोराभर्मैचोरिकानमजरे कानव
हिनावंदहोर् २२ पुनः श्रावजामुनमडुआवरागद चारीकीकोयलकीलुगदौचैपुगेनिलतेलमेजराद् तेलकानमेडारनं सेपीववहिनोवंद
होर् २३ कार्णेकीटपतेल हरितालपी सिगोमूत्रवाकाडुतेलमे मिलारकानमेदेरतो कार्णेजनुद्दहोर् २४ पुनः सहिजनमूलकारस
सूर्यमखीकारस शोहिनिचैपीपरिपीसि बनकिमाचकीजडकारस एसवमिलारफेदिकानमेछोर्दुनौकार्णेकीटमौ १२५ इतिस्त्रीश्रद्धेभर

निंदुकान्पथ्यालोघः समंगान्नामलक्वपि ज्ञेयाः पंचकाषायास्ताकर्मण्यस्मिन्निषगवैः २१ खर्जिकाचूर्णे संयुक्तो वीजपू
रसंक्षिपेत् कार्णेसावदजोदाहाः प्रणश्यंति न संशयः २२ श्रावजं तु प्रवाला निमद्युक्तस्य वटस्य च राभिसंसाधितं ते
लं पत्निकारोपशंतिरिति २३ पूरिणं हरितालनागं वा मूत्रयुतेन च अथवा सापिपं नैलं कार्णेकीटहं परं २४ स्वरसंशि
यमूलस्य सूर्योवर्त रसं तथा अर्षणचूर्णि तं चैव कपिकच्छा रसं तथा कलैकत्रक्षिपेत् कार्णे कार्णेकीटहं परं १२५ इति
श्रीशार्ङ्गधरलेपादिकारोपणविधिरेकादशे अध्यायः ११ शोणिनं त्वावेयेज्जंतो रागयं प्रसर्मीदपच प्रस्थं प्रस्थाद्विकवा
पि प्रस्थाद्विर्धमभ्येपिवा १ शाल्कालिखमावेन कुर्याद्भुत्तां तु निनरः ॥ ॥

त्वग्दोषग्रंथि शोथाद्यानसंस्तुतां स्नानैर्यतः २ ॥

एकादशे अध्यायः ११ अथ रुधिरमोक्षलपयान मनुष्यके शरीरे रक्तजनन विष्कारसेषु धातुको रोगजनित विरुनि कारवाने वा प्रभावा
कहते हे प्रस्यमरवात्रर्धमस्थवा चोथार्प्रथमं हं कुडवमर १ रुधिरमोक्षलपयात् देहमे रुधिरनिवासने सेत्त्वचापको रोगो गफोडा पुस्त
शोथादिकारो गदुहोते हे रसकारण शरदकालमे मनुष्यको रुधिरनिवा सानाउचित हे २ ॥

रुधिरगुण रुधिरमधुर है औ रक्तमरमयस्य गरुआ चिकना विसायधगंभी पित्तसमानुषल पलोहूकाद्वयगण है ३ औ रक्तपंचतत्त्व
मय है विसायधीगयछ्छीरुण गीलापनजलगुण उष्ण धर्मेअग्निगुण चलनावास्तुगुण लीनाहोना औ श्यामतालानाआकाशगुण
है ४ ६ रुधिररुद्धहेनेकेलक्षण रुधिररुद्धमयेवहू मेपीडा व्रण दाह रक्तमंडल खान शोध देहपाकसादर ५ रक्तवदनेकालक्षण रुधिर
बढेनोदेहऔनेत्रऔलालर है औनसेरक्तप्रतिहोफूलजानीहै नोदविशेष मरदाह वेउप इवहेनेहै ६ क्षीणरक्तलक्षण रुधिर

मधुरं वर्णो रक्तमशीतोऽलं तथागुरुं शोणितं स्निग्धं विसृज्य विदाहश्च स्य पित्तवत् ३ विखतास्वता रोगश्च लनं
विलयेत् तथा भ्रूत्यादिपंचभूतानां मिते रक्तगुणः स्मृताः ४ रक्तदुष्टे वेदना स्यात्पाको देहश्च जायते रक्तमंडलता
कंडुशोथश्चापि टिको रुमः ५ रुधेरक्तगनेत्रत्वशि रणोऽप्रसांतया मात्राणां गोर्वनिशमं रोदाहश्च जायते ६
क्षीणेऽभ्रमधुपुंकाक्षीमृष्टौ च त्वविच्छता शैथिल्यच शिरोगा स्यादा नाड्यमागगामिताः ७ अरुणफे
निलं त्वक्षं परुषं तनुशोऽग्रं अस्केदिसृजितिसोदं रक्तं स्यादा तद्विषितं ८ पितेन पीतहरितं नीलवच्च वि
त्वं अस्कंदुष्टं मक्षिकाणां पियूषीनाम निष्ठकं ८ ॥

वर्धेती देह औनेत्रलालर है औ रनसेरक्तप्रतिहोफूलजाती है देवगरुक्तजी है नोदविशेष मरदाह
जिसके रुधिरशरीर अमाणसे घटजाता है तिसकी रुचि खट्टे औमी वेपर अधिकारहनी है औ तृष्णी गुणारुषी
वायु ऊर्ध्वगामी ऐसे जानो ७ वायु वरिष्ठ रक्त मलक्षण वायु कपित्त रुधिरलाल रंग फेन स है तस्ये त्रया कर्कस कष्टक
पतला देह मंसु रसमानकोचे ८ पित्तकरिष्ठ रुधिरलक्षण पित्तकपित्त रुधिरह्रीत् हरित नीला वाक्कास पक्षे आमकींभी

कथाकारिषु छकैरिधिलक्षण कर्मकापित्त रक्तवात्पशंठहा चिकना गोल्लांण मांसकटकी मिश्रित गाढा अस्थिरहोनाहे १० दुग्धा नीन
पित्त रुधिरलक्षण विरोधकरिद्विषितलोहमेवोदोषकेलक्षण पायेजानेहे ११ विरोधद्विषितमेपी पुमंगधमेहोगीहे १२ असुषल
क्षण विरोधकेपायेजानेहे १३ ओकंजीसदृशदृष्टलोमाहे १४ अनिदुष्ट रक्तलक्षण कलिरंग रक्तज्वर चटिकाककी राह पित्तहे आम
कीसीवासयेनीहे १५ कातीसदृशसवधातुनिकोवहुतधुष्टकरताहे १६ शुद्ध रक्तलक्षण शुद्ध रक्तवीरवहूदीकेरंग ओपतालाहोताहे १७ पशमेउक्षणी

दी

६७

शीतं च वहुलं स्निग्धं गौरिकोदकं संनिभं मांसपेशी प्रभं कंदि मंदं गंध फट्टुषितं १० विरोधद्विषितं ११ विरोधद्विषितं १२ विरोधद्विषितं १३
कंसुषलक्षण संयुक्तं कलिकां भवजायते १४ विप्रदुष्टं भवेच्छावनां सिको नागगतया विस्वकाजिक सकाशसुवदुष्ट
करवहु १५ इह माप प्रभमेय प्रकृति स्थिरमसहृत १६ शोथेदाहं गपाके च रक्तवर्णे स्त्रजः स्त्रतोः वातरुते तथा स्त्राप्तेसपी
इदुर्जये धनिले पाणिगे स्त्रीपदे च विषदुष्टे च शोणिते १७ यथावदायची खुद्रोग रक्ताधि मथिषु विदारासन राग गुणा
त्राणां गादगो रवे रक्तभिषादिनं दयां प्रतिधाणा सुदलवा यक्ष्मसी हविस्पर्षे सुविद्ध्यो पिटिको रुमे कारणे छत्राणवक्त्रा
णां पाके स्वशिशो रूढि उपदेश रक्तपित्त रक्तः स्त्रावः प्रणस्यते १८ एतरेण शुभ्रं र्गैर्वर्जलोकालावकैरपि अथवा पिशिरागोक्षे
कुर्यात् रक्तवृत्ति नरः १९ ॥

अचारी १३ रक्तमोक्षणेण शोथमे दोहमे अंगयाकमे रक्तकर्णे अंगमे नाकसेवदिनेमे नाग रक्तकृष्टक
हृत्ताथपीशवातसंयुक्तमे हाथेगमे पीलपांउवा विषकरिगिर रक्तमे अंधि अर्बेदांगउमाला खुद्रोग अयची रक्ताधिमंथ विराण
कुचरेण देहजकउ रक्तनिषाद तंशदुर्गयकत सीह विसर्प विद्ध्यो गिपीटकीगात्र ओदगाकमुत्तकानपकनेमे माथेपीशउपद
रक्तपित्त र्नरेगनमे रुधिरनिकरानाउचिनहे १४ रक्तमोक्षणे प्रकासीगीजीकतोवा फस्त र्नवा रिकरि कैरे रक्तनिकरवे २५

विषये हेतुवाच्ययोगयदुर्ध्वं विषयीनसंस्तुत भूत गतिगो गोतृपक्षपक्षाली पक्षीवगनादिपंचकर्मसती खेधिरिद्विस्वर्मस्ततिचशरीरोगी संयोगउदरस्य
सगतासज्जवाकीचमीसारं अनिलिखीत्योद्देधेभीतरसतयेत्कापल्लवस्थानालेको अयासातानावसेत्तागिरेणो ऐसेमनुष्यमध्योष्यं यत्वाभितर कोडा
चाकुन्ती शोभेजोकात्मजाने ऐसेरोगिरेयोकोविचास्ते किंविपादिरक्तं योग्यं सैरक्त अनिदुष्टहेनो शिरागो सारण चौर १५ देपादिकं गत्वा मिथाननि
भान यायदृषितत्कर्मिणी सेलेरु एतन्पितृजोन्तसेलेरु कातृपितृतोभी सेलेरु कैयानीनक्षत्रपितृदुष्टरुधिरशरीरायश्च सनकारिलेख १० सिंगी आदिरेतदधि

नवर्चनीतशिरागोस्त्रंशशस्यातिवयायिनः क्षीनस्वर्गोरोगर्गिएयाः सन्निगापांरुरोगिणं पंचकर्मविशुद्धस्यपीतक्षुद्रस्यना
योसां सर्वोगपोथयुक्तानांमुदरिश्वासकासिनां चूर्ध्वगीसाह्यक्तानगमितिस्थिचनननोएपिजनपोउशवर्षस्यगतसप्तमिका
सच अचातल्लतासास्यशिरागोदोशनशसते एषांचात्पयिकेयोगेचलोकामिलुनिहेरु नथापिबिषयुक्तानांशि
रामोक्षोपिशसते १६ गोशृंगेणजलौकाभिरलावुमिरपित्रिधा ॥ चातपितृकपेहेरुशरीराणिनंखावयषधः विदे
वाभ्यांनसंखड्वनिक्षेपेरपिदृषिर्नशेषि नंखावयेचुक्त्वाशिरागोक्षेः प्रदेशस्था १० गृह्णातिशोणिमंशुगंदशांयलमि
मंचरात् जलौकाहलगात्रं चतुर्वी चचादृशांशुलं पदमंगलमात्रेणशिरासर्वोगशोचिनी १८ शीतनिरन्नेमूर्ध्वं चंतद्रा

भीतिमद्वयमेः ॥

एषिचनेनपाचमाणा सिंगीजिसंक्षोएसो निसृक्केपातेगोएदशशंपालतारंकात्तलेचनीहे नोक्तान्धमरादरंतीचीचाए चंगुलनारं सस्मशिरांधप
भरता शोभोदीशिराजो सधनसोकेतारुदेई पक्षसवशरीरेकेतधिरकोथचचालीहे १८ रुधिरयोसपक्षयोग्य शीतलमंउपासमंतद्राभंमरमे
भयमानतो पल्लवममे मलमूत्रनिशेषमे ऐसेमनुष्यकेशरीरेस्तदधिरनरीनिकासता १६॥

शिरात्तमदेनकायनलो न सधिद्वैकं सधिभलीभांतिनद्वैतो कटचीतासंधवसमयी सिउदपरगारनेसे धच्छप्रकारकृतेदगीः २० एकमेव
एकालनजागहोनगामी हो नस्वदक्षियेको नश्चतिउस्मशरीरीकोजोत्तनिकोतो प्रथमजवागदेतुभिकारलोह निकारवै २१ अतिरुधिरत्वावति
सेस्वदक्षिये वाउष्मासेस्थलनसेरत्त अधिकाअवेवदन हो तिस्वेहित यत्नअनेवालेस्त्रोकोमकहतेहै २२ रुधिरनर्थभनेपरजोसिरागोत्तरोत्त
नवंदहो तौलोधरालसोत तीर्नेकाचणी वा यवेगहूकाचन वाधवजवासागेहूकाचणी वासर्पकोकेचुवारेसमीलताकोमस स्नर्मेकार फलकोशुब
सुतानांनस्ववेदज्ञां तथा विगमत्रसंगिनां १६ अप्रवर्तिनरत्तोचकष्टचित्रकसंधैवः मर्दयेद्वणवक्रंचतेनसम्यक्ववर्तते २०१
नस्मान्नीतीनात्पुस्मानध्विन्नोतिनापिते पीवायवांगंत्तुप्तस्यशोणितत्वावयेयुधः २१ अतिस्विन्नसोष्णकालेनथैवान्ति
शिरावधात् अतिप्रवर्तिनरत्तेनचकुर्यन्तित्रियां २२ अतिप्रवृत्तरत्तोचलोघसर्जरसांजनेः यवगोधमचर्णेर्वोधवधः
न्ननैरिकैः सर्पनिर्भोकाचूणेर्वोभस्मनात्तोभवंक्षुयाः संवृणस्यबध्वाचशीतैश्चापचरेष्वण विध्येदध्वंशिरांतांवा
दत्तेत्सारणवाग्निना प्रण कोषायसंधनेत्तोत्कांदयतेहिमं वृणास्यपाचयेत्सारोदाहः संकोचयेच्छिरां २३-वाग्मा
उशयेदस्तस्यकार्ण्यागुष्टमूलजां दहेच्छिरांमपयेत्तुवाग्मागुष्टशिरांदहत ॥

पखलकारिहवदेउसेपंचंदनादिशीतोयचारकोरे शीतललेपकोरे नो इस्तेनवंदहोयतोउसकेकुषुअपरवटिकोफलदेवा अग्नि समवाउसेवा
सुहृपारलगावै वाअग्निसे दगदेतोवंदहोणा इस्तेक्योंबंदहोसोकाहतेहैं लोधादिसेषावमुखअमलानाह ॥ शीतललेपसेरत्तयंभताहै ता
रादिसेत्तनपचतोहै जलानेसेनसकाअपखिकुराताहै २२ दग्धशतेरोगशान्ति जिसकादहिनाअंशुकोशफलेउसकोवाभेहाथकेअंगुठकी
अइदागे ॥

जो वाग्वन्दकी शफूलै तो रहिते हाथ के अंगरखकी मूलसंगे जो धुव अंश ले करै लो अवश्य अच्चा होम ओति से सीत र सहो उसके गो
 डके तले विअन्यंत से के तो र सवाहिनी ओकाफ बाहिनी के जु खसिक रजति है अगिदी नहोती है २४ डहरता अशेष नहोने पर डहर
 धिरकाढे ने मेक छवाकी हजाय तो रोग भी कोपन कोणा ओअशेष होने बला हा निकसने मे उप डव गपति होने है अभाता आधे पक
 वाटुछा तिमिरमाये मे पीर पक्षायात वायधास कास रुचकी जल पाइ एरोग होने है ओस वरु धिर निकस जाने से मने का भी आध्वन

शिरदाह प्रभावेन सुकाशोधः प्रशाम्यति विभूच्या गादहाहेन जायते अत्रे प्रदीपनं संकुचनियतलेन रमक्षे भवहाः
 शिसः यदा वृद्धिर्यस्तु न्दोः शिशोः संजायते रजः न दातुं स्थान दाहेन सक्चि त्यरजः २४ रजो डंष्ट्र वशिष्टे पि
 बाधि नैव प्रकृप्यति अतः स्वायं सावशेषं रक्तैर्गति क्रमो हिनः आभमाक्षेयकं लक्ष्मि निमिं शिरसो रज २५
 पक्षायातं श्वासकासो हि घादाहं च पाइतां कुरुते विहृतं रक्तं मरणं वा करोति च २५ देहस्योत्पत्ति रस्य नादेहस्येने
 वधार्यते विना तेन व्रजे ज्जीवोरक्षे दत्तमनो बधः २६ श्रीतो मचारे कपिते एत रक्तस्य मां रुते कोमोन सर्पि बा
 शेषं सव्ययं परिखेचयेत् २७ क्षीणसौणशशो रश्म हरिण छगमांस्तजः सः समुचितः पाने क्षीरं वा पाष्टिकाहिना २८

नंदी २५ ओरक्तसे शरीर की उत्पत्ति है ओदेह की आधा है क्तरहने से जीव त्व है इसी कारण बुद्धिमान वे घरक्षारुचि रकी करते हैं
 २६ रुधि रसोक्षण पर दोष को प रुधिर नि करे पर धाव पर येन को मदी से नौ श्रीत ल चंदन दिले पकरे वायु को यरे से सी वाधा वपर
 त्तजन हो रयी डाकरे नी सुखो समधी लगवे २७ रुधि रसोक्षण पर पथ जो स्तनिकासन पर निर्बल भया हो तो रुणि ल रगे से के मे उक
 क्षमरुग धाग इनका मांस पिलावे वा साठी के चावरगे धूम मे भी एक रिलि लावे माग रुग्णा दूध भात खिल वि मे पथ दित का रुक दे २८

सम्यगरक्तमोक्षनलक्षण पीडाविगतशरीरहलका उभरोगद्वयै प्रसन्नमनसैलक्षणाहेतो रक्तमोक्षगुणव्यभया रूहे रक्तमोक्ष
वरनिषेधपरिग्रहमभैयुनकोधठ्टे पानी सेन्धाना वारुजाना दोधारभोजन दिनभेनिद्रा यवाखारीदियारखवाइ काडुकात्पगो शोका वकना
झनीगोशोरजिसमेंजोपरतादेवैसोनको ३० इतिशार्ङ्गधवादेशध्यायः १२ अथनेत्रोपचास्त्रकारनेत्ररोगपरसातप्रकारऔषधिकहतेहे
सैक आश्रयाननपिंशी विशलतपीणा पुटयाक अंजनरति १ सैक विधानदधरस आदिक रोगीकी आखेसुदवाइ चारंगुलजपलुखरगहनधा

भोगशान्तिलघुनंचव्याधेरुतेद्रका संनयः मनः स्वस्थामेवचिह्नं सम्पग्विस्त्रावितं अस्त्रजि रूहे व्यायाममैथुनकोधशीनस्त्रात
प्रवातकान् एकाशानंदिवानिद्रां क्षाराम्लकटुभोजनं शोकं वादभजीर्णैश्च ताजेदावतदर्शनात् ३० इतिश्रीशार्ङ्गधरुत्तर
खंडरक्तमोक्षणविधिर्नोमवादेशोऽध्यायः १२ सैक आश्रयाननपिंशी विशलतपीणातथापुटपाकोजनंचेभिः कल्केन।
त्रैसुप्राचरेत् १ सैकलासस्मधारमिः सर्वस्मिन्नयेनेद्वितः मालिताभस्यमर्पस्पर्शदेयश्चतुंगुलान् २ सगापिल
हगानातेरक्तपित्तवरायणः लेखनश्चकोपकार्येत्तस्यमाचाधुनोच्यते ३ घट्टवाकशतैः लेहनेपुचेतुभिश्चैवरोप
णे वाकशतैश्च त्रिभुः कार्यः सैकलेखणकार्मभिः ४ कार्येत्तदिवसे सैकोरात्रौ चात्पयिकेगदे ५ ॥

देओषदिगिगवैरसेसैकाकहतेहैं २ सैकभेद वातइषितेनत्ररोगं भलेहूनसेकोदेइ रक्तपित्तपरोयणसेकफपलेखनेसेक दूधधता
विस्त्रेहनद्रव्यहै लोचमुंशीविफलादियेपणद्रव्यहै रूहेदूधभेपातिले सौदिमिचैपीपरिलेखनद्रव्यहै आगरनकीमात्राकहतेहै ३ लेह
नसेककीमात्राअः सै रोयणसेककीचारिसै लेखनतीनसैमात्राताइराषै ४ सैकादिकाल लेकन दिनमें कोरे रात्रिकोमेजगदगेकोरे

वाताभिष्यंदपरसेक इकोपन्न धालमूलकाय वकरीकादृध सुखोष्णकरिसेकेतोवातअभिष्यंदनेअसेइहो ह्यनःछगरीकादृधसैध
वडासिलोष्णकरिसेकेया हरीदेववारु संधवगरि छागरीपथनेसेकेतोअभिष्यंदवानवियर्ग्यअक्षाक्षिपाकरोगइहोइ ७ पिनरक्तपश्चोअ
भिधातपरसेक लोधसुरेही दोनो समान धनमेभूजिदूधमेंमिलाइतप्रकरिसेककरे तोपित रक्तविकारअभिधानजनिनबोधइहोइ
८ रक्ताभिष्यंदपरसेक त्रिफला लोधसुरेही शकरभोया एसवसमानपीसिठंढयानीमेंसेककिहेरक्तअभिष्यंदइहोइ ८ रक्ताभि

परंइत्वकषत्रमूलैः सृजमाजं पयोहितं सुखोष्णं सेचनं नेत्रे वाताभिष्यंदनाशनं ६ परिषेकोहितं नेत्रे पयःको
क्षससंधवं रजनीदारुसिंधवासंधवेनं समन्वितं वाताभिष्यंदशभनंहितं भारुतययये शुष्काक्षिपाकेच
हितामेदं सेचनकंतया ७ सारं समधुकंतल्यं घृतं भृष्टं सट्टणितं छागक्षीरे घृतं सेकात्पिनरक्ताभिधानजि
त ८ त्रिफला लोधमधुभीः शर्कराभद्रमुस्तकैः पिष्टे शीतां वनासेको रक्ताभिष्यंदनाशनः ८ लाक्षाभधक
मज्जिष्ठा लोधकालाजुसारिवा एउरीकयुतः सेको रक्ताभिष्यंदनाशनः ९ श्वेतलोध्र घृतं भृष्टं ट्टणितं पटवि
सुतं उष्णं वृणां विमृदितं सेकाच्छूलघ्नमवकै ९ अथ आच्छेदनं कार्ये निशायां न कथं वन उन्मीलिते
क्षिणं ह्रगमध्ये विंदुभिर्द्व्यं गुलाफितं १० ॥

व्यदपरह्यनः सायगुही मजीठ लोध कृष्णसमा सेतकमल एसवपीसियानीमेंसेककरे
नौनेत्रनसेरक्ताभिष्यंदइहो १० मेचच्छूलपर सुपेवलोध घृतं मेभूजिदूधकरियोदरीमेंवांधि उष्ण जलमेंवोरिओखिकीयलक
नपरफेनेचच्छूलइहोइ ११ अश्वीनविधानं चाश्वीननकहें विंदुववाउना ओखिलो लि दूधकाथ स्वसादिइवपदार्थइइ
अंगुलीसेचीरिओखि मेवकायदेय रसकोआश्वीनकहतेहें सोनिशासमयकभीनकरे १२

लोखनादिश्रोतनभेदिगुणैकाग्रजागलित्वनकर्मभेदावविदुनेत्रभेदेदे त्वेहनभेदशरोपणभेवारत्न शीतकालभेदसुखोत्सु-
 स्तकालभेदशीतलयहनिश्चयहे १३ वातादिभेदोत्तनयोग्य वातरोगभेदित्तश्चोत्तिगुणश्चोत्तनकोर पित्तरोगभेदमधुरशीतलकोर
 काफरोगभेदकटुउष्णतृष्णकोर ऐसेत्रश्चोत्तनहितकारहे १४ अश्चोत्तनमन्नाप्रमाणमनुष्यश्चोत्तिविवेककोर वायुटकीकञ्जवैवागुणश्चोत्तन
 उच्चोरेस्तनेकालकोवाङ्मात्राकहेनहे सो सर्वत्र अश्चोत्तनभेदितप्रदहे १५ नेत्रवाताभिष्यं दयराश्चोत्तनविल्वादिपंचमृत्स भटकैटया

विदंश्चोत्तलेखनेषु त्वेहनदशविदवः रोपणेषादशप्रोक्तासेशीतकोत्सहृदिगणेऽहमेवशीततृपाः स्युः सर्वत्रैव
 षनिश्चयः १३ वातेतिक्तमथास्निग्धपित्तमधुरशीतल तिक्तोत्तनद्वचकफेकमोदाश्चोत्तनद्विज १४ आश्चोत्तना
 नांसर्वेषांमन्नास्यावाकशानं वित्तं निमेषोन्मेषणं पंसांमंगुल्योच्छोदिकातथा १५ गुर्वोक्षरोच्चारणवावाज्भात्रेयस्म
 तावधौः १५ विल्वादपिपचमृत्लेनहृत्तयंरुद्विशुभिः काथश्चाश्वोत्तनेकोक्षोवामाभिष्यं दनाशनः १६ अत्रविष्ट
 निवर्पनेस्त्वचलोभ्रस्यलेपयेत् प्रजाप्यवन्तिनापिष्वातइसोनेत्रपूरणमवातोत्तयस्तपितोत्तमभिष्यंरविनमृशयेत्
 त्रिफलाश्चोत्तननेत्रेस्वाभिष्यदनाशनं १७ स्त्रीलक्ष्म्याश्चोत्तननेत्रेष्वापित्तानिलातिजित् क्षारस्यपिद्यतवापिवातलक्ष्मजयेत्

रक्षीमसृजिन रक्तकीजडकेकाथलेनेत्रनिर्ममृद्वचवावनेसेत्रभिष्यंरुद्वहोई १६ वातश्चोत्तपित्तपर्णीमकीपतीपानीमपीसि लोथकीछा
 लपरलेपकरि आगिभेसेकपीसिलेईउस्केरसकोद्वंदनेत्रभेदुर्वावेतोवातसेरक्तपित्तसेउत्तपत्रभिष्यंरुद्वहो १७ सर्वाभिष्यंरुद्व
 आश्चोत्तन त्रिफलाकाथसुखोक्षनेत्रमंचुवावेतोसर्वत्रभिष्यंरुद्वहोई १८ रक्तपित्ताभिष्यंरुद्वहो १९ वातस्त्रीकाद्वधनेत्रमंचुवावेतो
 वातरक्तपित्त जल्पनेत्रपीरुद्वहो २० धधग मितारैवात्रकैलाधमनेत्रमंचुवावेतोवातरक्तजनिननेत्रपीरुद्वहोई २१

1. The first part of the paper is devoted to a review of the literature on the topic. It starts with a general overview of the field, followed by a more detailed discussion of the specific issues at hand. The author then presents his own findings, which are based on a series of experiments. These experiments were designed to test the hypotheses derived from the literature review. The results of these experiments are presented in a series of tables and figures. Finally, the author discusses the implications of these findings for the field as a whole.

विंशत्यनित्यमाकाशश्च त्रयमिष्यं दृष्ट्वा जगत्तत्पुत्रोपनिबध्नते २० अभिव्यक्त्यभिप्रायः २१
 भवेत्सिद्धिर्भावेन भगवत्प्रिया रक्षा रक्षति रक्षितः २२ भाग्यं विष्णुसंज्ञकं २३ विंशतिमन्त्रं २४
 अर्जुनस्य कर्णस्य २५ भाग्यमिष्यं दृष्ट्वा त्रयमिष्यं जगत्तत्पुत्रोपनिबध्नते २६ भाग्यं विष्णुसंज्ञकं २७
 विष्णुमिष्यं दृष्ट्वा जगत्तत्पुत्रोपनिबध्नते २८ भवति नित्यं विष्णुसंज्ञकं २९ विष्णुसंज्ञकं ३०
 अभिव्यक्त्यभिप्रायः ३१ विंशत्यनित्यमाकाशश्च त्रयमिष्यं दृष्ट्वा जगत्तत्पुत्रोपनिबध्नते ३२

[illegible]

नेत्रशोथञ्चोत्ताजपरः शोष्ठिनीमपत्रेयाससंधौमिलार्शेनिगुनीपिडोवधैनेत्रसज्जनस्वजरीदहोई २६ विडालविधानं ज्ञात्विमंदिनते
ऊपरकोपलकोपलेपकोरुवनीवरइदं इतविडालकहे इतकोमानांमुलेपसमानजानौ ३० त्वान्तिरागपरविडालमुरेडोनेत्रमे
धोदारुददी स्वपरिया एपोचोसमानं पानीमेंपासिलेपकोरुनोसर्वनेत्राभिव्यदजाइ ३१ पुनः रसौमजलमपोसिलेपकोरु बाह
उसोठिरक्तकामलपत्रवाबच हरद्वौ शोष्ठिका चीकासोतावाञ्जनारपत्रत्वां बचहरद्वौ शोष्ठिवा सौष्ठिगेत् एभिन्नभिन्नेपानीमपासिले

शुभीनिवदलैः पिंडीसुत्वास्मात्सुपसंधवाः धार्यचतुष्विसंयोगांश्छयंकदुषयापह्वा २६ विडालकोवहिलेपोनेत्रपक्षविवर्जितः नस्यमा
चापरिजेयासखलेपविधानवत् ३० यथोगैरिकसिंधूत्यदीर्घाक्षैर्पसमाश्रुतैः जलपिष्टैर्वहिलेपः सर्वनेत्राभयापहः ३१ रसाज
नेनवालपः पृष्ठाविम्बदलेरपिक्कगारिकाग्निरपत्रैर्वीदाउमीपल्लवैरपि वचाहरिद्राविथ्वीतथातागैरिकैः ३२ दग्धा
नोमसंधवंगांघ्रमथब्धिष्यनधुते पिष्टमंजनलेपाभ्यांसद्यनेत्ररुजापह ३३ लाहस्पपत्रेसंधुषारोतानिडफलोद्भवः किंचि
द्वनावहिलेपनेत्रवाधांघ्रपाहति ३४ संचरणेगरिकेक्षणजस्वसमर्देनार लेपनादर्भणानाशकोरुत्पवः प्रयोगरद ३५ वि
न्नाभिन्नाविनिषीदुग्मिन्नामंजननामिकां शिलैतानतसिंधूत्यैः सत्तौद्वैः प्रतिताहरेत् ३६

पक्वियेसवनेत्ररगदहोई ३२ पुनः सांचवलोधमनि मोमचोमेरगरंजनकालिपभीकोरु नोवगहीनेत्ररगसच्छहोई ३३ पुनः
नीवूसलाहपात्रमेरगरादाभयेलेपक्रियेनेत्रवाधाहोई ३४ अर्मेलेपः भंगैकोरुसमेमरिचकोरुगल्लिपकोरुजोसवज्ञमरगनाश
कोरु यहराजप्रयोगहै ३५ प्रतिसारणं जननामिकोपिक्कीपर ग्रहचोञ्चांविनकोकोरुपाहोमीहै रसपिरिकीपरवफारादेफोरंअगु
रोसेद्विविति सपरं मंशिलश्लायचीतागरसंधवपोसि सवनेत्रमेरगनाशकोरु ३५

नेत्रपरतर्पण नेत्रसंतप्तकरनेकोतर्पणवाहे तर्पणयोग्य जोनेत्रदृष्टे स्तुते कबीरताउरुतायुक्तहो करितवचनी शिस्तअपातशब्द
स्मीजनकहे जलदीपलकेलगेतिनि अजुन पुल्लोअभिर्षद अधिमंथ अक्राक्षिपाक सृजनवातसुंनधीओरविद्या एरेगतसयोगहे ३०
तर्पणवर्जितदुर्दिनेमेअतिउष्णकालमे अतिकालशीतमे चिनातंयश्चिमयुक्तको ओनेत्रदृष्टद्वरागनिनहो एतर्पण स्नायकनही ३८
तर्पणविधान जिसस्थानमेवयाशिगामी धरि नजाइ इनकेवचाउकीकीर एगीदतानापोहे तक्उसकेनेत्रकोचारे ओरजोहइहेतिसपर

अथतर्पणकंवन्मिनेत्रतृप्तिकारंपरं यद्रक्षंपरिअधं चनेत्रं कटिलमाविलं शीर्णोपक्ष्माशिरोत्पातकच्छ्रोत्मी
लनसंसृतं तिमिरगुणं अक्राधेरभिर्षं दधिमंथकैः अक्राक्षिपाकशोयाभ्यां युक्तं नातविप्रययेन तन्नेत्रंतर्पणे
येजंपनेत्रकर्मविशारदेः ३१ इदिनात्युष्णशीतेअन्वितायासंभ्रमेभुच अशंतोमृद्वेचाक्षिगतर्पणं न प्रशस्य
ते ३८ वातातपरजोहीनैव शेषीतानशायिनः आधाराभाष चूर्णेन किन्नेनपरिमंडलो समोददवसंवाधोव
र्तव्योनेत्रकोशयोः परयेद्धनमडेन विलीनेन सुखोदकैः अथवाशतधोतेन सर्पिपाक्षीरजेनवा निभगनाप
क्षिपक्ष्माणि यावत्सु स्नावदेव हि प्रयेन्मीलितेनेत्रे तत उत्मीलयेच्छनेः ३६ धारयेदन्मरेमेभुवाज्जा
त्राणं शतंवधः स्वच्छेकफेसंधिरेगोमात्रापंचशतं हितं ४० ॥

उरुकोपीभीले मेउवांधैजेसेकदोरेदिवलीवोतीहे नवअंधिसुंदवाई असमंदिघलाधो वाज्जोषधिनकामंडकारिवामुखे ७६
स्मजलवा सोवाग्वाधोयाघृत वादूधकाकेन वान्नीनीज एनमेसेकोशभरे कुध्वेरेमंधीरेपलकमिलमिलवेजिसमे सुक्ष्मसी
ओवधीभित ३१ जाइ ३६ तर्पणमात्रा जोपलकवायोदेकैरेगपग्रय एहोयो सोवाइ मानानाश्चोप्रधिरंगधेजोक्काहिन्यन

चमंकोईया धिलेनोपौनसेमानापर्यंतऔषधिल्याहै सफेदीको रोगमेंछस्सेताई कालेइलेको रोगमें सातसेनाईरहएतरीरोगमेंआठहोनाई स
धिमथ वावातरोगमेंहजारमात्रताई औषधिमरीहै ४० तर्पेलेकाफाधिकेउपाय जोलिग्धनर्पेणिसकउत्पन्न होतौ मचपी सिध्दपापानक्षय
अनफशो धनकोर ४१ नर्पेणो दिनप्रमाण तर्पेणएकादिनवातीदेनवापौच दिनकोर ४२ सम्यकतर्पेणलक्षण तर्पेणअच्छ होनिगुस्वसे
सावैमागो नेत्रनिर्मल होकातिवहै दृष्टियदि होरोगनाश पलकोहलकी एच्छतर्पेणकोहै ४१ अतिनर्पेणलक्षण अतिनर्पेणसेने

शुक्लचषट्शतं द्वाह्मा रोगे सप्तशतं मृतं द्वाष्टि रोगे अष्टशतं सचि मंगे सहस्रकं सहस्रवात रोगे सुधार्ये मेवं हितं पण ४०
स्त्रिंशद्वयवपिष्टेन संहृद्दीयेति ततः यथा बंधमपानेन कफाग्नस्य विशेषयेत् ४१ एकाहवात्र हं वापि पंचाहं चेष्टयेत् पूर्ण ४२
नर्पणे तु तिलिगा निनेत्रस्येमानि भावयत् सुखस्त्रावबोधत्वं वैशद्यं वर्णपादनं निवृत्तिव्याधिप्रातिश्रद्धा क्रियालाचवर्धने
वच ४२ अथ स्याद्युगल्लिगंधनेत्रं स्यादनेत्रं स्यादनेत्रं स्याच्चो न नर्पिणं ४३ नक्षमन्ता विलं गणनेत्रं स्याच्चो न नर्पिणं ४४ नक्षमन्ता विलं गणनेत्रं स्याच्चो न नर्पिणं ४५ नक्षमन्ता विलं गणनेत्रं स्याच्चो न नर्पिणं ४६
सेतयोः स्यान्न निर्क्रियाः ४६ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि पुटपाटकास्य साधनं चो विल्वमात्रो मांसस्य पिंडो लिग्धो सुपेषितो द्रव्याणां वि
स्वभावात् पुटपाटकाणां कुंडलो मृतः तदेकास्यं समा लो ज्य पत्रैः सुपीलेष्टि तं पुटपत्तेन तत्पक्वा एस्तु यात इ संख दौः तर्पणेन च विधानेन
यथा वक्ष्य प्रचारयेत् ४७॥

त्रेपानीवह्यत्रै भासीरहे त्रिपचिपाद ४४ हीनतर्पणलक्षण नेत्रनिर्मेज लालगाशेयुक्ता वरोगष्पशंति ४२ नेत्रप्रक्षालिष्वयत्तजेनेत्रं त्रि
कोनेहोतोनस्त्रउपायकौत्रयैहोतौ विगपउपादकौ ४६ एतपावकौ रीतिं कहेते हरेण दिमांस २ पलमहीनकारे एवामलधृतादिलि
क्त्वा २ एकमस्यो दोषधिदध्वाद्रवपदाथैत्तउवगर एवमलितारगोलावांघि यथाकार्येपत्रसेवेष्टितकारिका परोदीमादीचवर्गरे एत
॥ पावकात्लेर तर्कगोलानिकारिरेसन्निवोरिनेत्रपरमेलाकांघिरसमरे ४७ ॥

विधानप्रदपाकारसुवास्त्रेवल्लेखगवाएपण भद्वकारणानप्रकारहे. रोगीकोउतानाजलाग्नेत्रलो.
भीतरडारे ४८ स्वेहादिभेदप्रदपाकक्रिया द्रव्येनप्रवृत्तिनाचिकनेगन्तुवाप्रदपाकक्रिया सबलदृष्टिपरोपणप्रदपाकयोग्यहे.
त्रमेरुछेरोगवाक्क्रपित्तप्रणवानुपयइवहोगौ. घनिवालेस्लोकिभेकालीइवकावेगवेगप्रदपाकको ४९ स्वेहनप्रदपाक घर्जनमेह
भोसवसामज्जाभेवा ओस्वादोयधिकाकोल्पादिगणकादृष्टे सएवाएककरिपीसिगोलीवांधिप्रदपाकारिसुलेनेत्रमेरुयदोसेमानातकर

दष्टिमधोनिषेवः स्यान्नित्यमुत्पानशायिनः स्वेहनोलेखनश्चेवरोपणश्चेतिसन्निधा ४८ हितस्त्रिधोतिवृक्षस्यस्त्रिधे
स्यापिहिलेखनः दृष्टेर्वलायमितरः पितामहवज्रणवातगुत् ४९ सर्पिमासवसामज्जाभेदः स्वादोयधेः कृतः स्वेहनप्रदपाक
सुधायोधिवाकशर्तदृष्टः ५० नागलानायकन्मामेलेखनप्रवस्यतेः कक्षलोहजस्ताम्रशखविद्रुमसिंधुजेः समुद्रो
नकाशोसद्योतोजदधिभस्तुभिः लेखनोवाकशर्तधायस्तस्यतावद्विधारणं ५१ लवजगलमध्वाज्यनित्ताकद्रव्यपि
तः लेखनात्रिगुणोधायेनप्रदपाकजुरोपणः विनरेतयेणोक्तानुक्रियांव्यापयतिदर्शने ५२ अथसंपक्वदेवस्यप्राप्त
मंजनमाचरेत् हेमतेशिशिरैवैवमध्वाह्जजनमिष्यते पूर्वोन्हेचापराहेचत्री ओशरदिवेष्यति ॥ ॥

रसेप्रदपाककोहे ५० लेखनप्रदपाकयथोचितकोरणीमांसलोहद्रवनावांसत्वमूणां सैधवसमुद्रकेन कसीससुग्मावकरीकिरुहीकायानी
प्रवोक्तरीतप्रदपाकसनेत्रसोमाचातारोषै यस्त्रेलेखनप्रदपाकहे ५१ रोपणसु. स्त्रीकद्रव्य मृगमांसमधुघृतकटकी एसवमिलाइप्रदपाकत
रिसलेओस्त्रिमेरुयपहरीयाएप्रदपानहे तोनसेगजातकरयेजोउटपाकन्यूनाधिकस्त्रेयतोनेत्रभागीस्त्रे ओनिस्त्रेजकादेवउत्पन्नवेइत
सदृशतयेणक्रियाकोरौगोहर्ववतवेइ ५२ सपक्वसेवध्वंजन तिसकीओस्त्रिमेरुघमलीभांतिप्रवउक्तसोतीप्रसकेनेत्रमे ॥

अंजनलगानाफिरपुचयेदिनलगावे ओसाधारणमे हेमंतशिशिरकृतमेमध्यान्तमेनगावे श्रीमशारदमेयहरदिनचंटे
गरहैलगावे वर्षामेवरसतानहोपदरीनत्येपश्चाधधिकनहोतवृषाणवैवसंतसवसमयअंजनलगातादितहे ३३ अंजनमेद
नतीनपकाहे लेखनरोपणलेह तोतीक्ष्णअन्लबोरसलेखनअंजनजानना कषायकादुलेहयुक्तदोरसरोपणजानी
कत्रसादनकहे लेखनजानी ४४ अंजननकारणेलीअंजन रसअंजन चूर्णेअंजनत्रेष्ट एणकसेएक

वर्षासुनाभेनासुलेवसुतेचसदैवहि ३३ लेखनंरोपणं चैवतथाणात्लेहनांजनं लेखनंश्चारतीक्ष्णश्चरसेरंज
नमिष्यते कषायतीक्ष्णरसयुक्तसत्तेहरोपणमतं मधुरस्तेहसपत्नभजनंचत्रसादनं ३४ गुटिकारसचूर्णे
नित्रिविधान्यंजनानिच कर्पोच्छलाकयांशुत्पादोना निचयथोत्तरं ३५ आतेअनुदितेभीनेपीतमधेनवत्त
रे अजीर्णेवैगधातेचनांजनंसंप्रक्षयते ३६ हरेणमात्राकुर्वीतवर्तितोक्ष्णांजनेभिषक् प्रमाणमथ्यमे-
धायैक्षिणं तमृदोभवेत् ३७ रसक्रियात्तमः स्यान्निविडंगमिताहिता मध्यमाधिविडंगस्याधोना
त्वेकविडंगिका वैस्वनिकचूर्णैस्तृप्तिशलाकं स्याच्चतस्रः स्नेहोकोजनं ३८ ॥

इतमहै सोसलार्इवाअंगुलीसेलगावे ३९ अंजनअयोग्य थकित रोनेवाला भयभीत मधयियेनवीनज्वरी अजीर्णी भूत्राधिरोधी इहे
अंजनअयोग्य ४० तीक्ष्णांजनकीवर्तीभेवडीबीजसमभोदीवनावै मध्यममेडेढवीजमम मृदुमेदीबीजसम ४१
चिडंगसम अतमहैदेविडंगसममध्यमहै एकविडंगसमानछोदीभात्राहे ४२ सुक्ष्मवैस्वानंजनप्रमाण वैस्वनअंजनसराइसेनेत्र
देह मृदुअंजनका चूर्णेनीनवारफेरै घृजदिखुक्त चूर्णैचारवादेइ वैस्वनकहेजिसकेलगानेसेनेत्रतिसेपानीगिरे ४६ ॥

कार्तिवा शलाकाप्रमाण पत्यवाधासुक्तीसत्कारे स्यात्संगुलकीमृदंगाकार स्यादेवेनोतिलसमानमहीन अनिचिकोने लेखनशलाकाप्रमाण
लेखनसत्ताई नोवेवालोहेकीवनावे खलञ्जनकीसोनेवाचौदीकीवनावे सैपणमुदतासे अंगुरीवोरिनेत्रमेंअंजे ६१ अंजनसमय अं
जनसंध्यावाप्रभातकालकौरे सहजसमयनकौरे नअतिशीतनउष्मकालेर्म नअतिबायुमेनवदरीमेंअंजनकौरे औनेत्रमेंकालेभाग
कोतरेकौरे ६२ चंद्रोदयावर्ती प्राखपेंदी वहेरेकीमांगी हउमेनशिल पीपरि मिर्चकूटवच राश्यासमभागलेवकरी कोदूधमेंवहुतयो
सएयो कुंठितास्रक्षणाशलाकाछांगुलोन्मिता अस्मजाचातुजावास्यात्कलायापरिमंडला ६० नाचलोहाशासंजानाश
लाकालेखनेमना सुवर्णोजोतोद्गताशलाकाखेहेनेमना अंगुलीचमृदुलेनकाथितारोपणेवचैः ६१ सायंप्रातर्वीजने ।
स्थानतसदानेवकारयेत् नातिशीतोष्मवाताम्नवेलायांसंमशस्यते ह्यस्मभागादधः कुर्योदपांगंयावदंजनं ६२ शं
खनामिर्विभीतस्य मज्जापत्थ्यामनशिला पिप्पलीमरिचकुष्ठवचाचेतिसमांशकं प्लागीष्टोरणंसंपिषावर्तिकुर्योद्यवो
न्मिता हरणुमात्रांसंघृष्यजलेः कुर्योदथांजनं मित्रिंणंसबृष्टिचकाष्टपटलमर्बुदं रात्रंधवायिकंपुष्पवर्तिचंद्रोदया
जयेत् ६३ पलाशपुष्पस्त्रसैर्बद्धशः पीरभाविता कांजवीजवर्तिसुसुक्तादीब्धखवल्लिखेत् ६४ ॥

दियवभरिमेववीजसमवनीवनार पानीमंगारिनेत्रमेंअंजे नोतिभिरमांसवृष्टि कंचिविंदुः पटलयोग अर्बुदरत्नोचीवयेगरकीपु-
ल्ली एसवदलोई ६३ सुक्तादिकापलेखनवर्ती वकाकोपूलकारस कांजकीमीगीकर्चारचोटिचोटियवस्त्रपर्वतीवनार् पानी
मंगारिनेत्रमेंअंजे नोफल्लीमांसवृष्टि खनकोदवालीहे जेसशससेसुख होजातीहे ६४ ॥

पुनः समुद्रपेनसंधव शंखसर्गो के अडे का धिलुका संहिजनवीज एणचौ समानवहीन कारिजलमेपीसि गोलीकां सुषार्यानो मेधि सि संजनवारे
नौ शस्त्रादिका कुक्षकामनहो रहता ६५ लेखनी दंतवर्ती हापी पोषण वरावर हवेलकागसर रनसो नौ योग शंखमो तो ससुद्रफेन रनसबकाच
एकारिजलमेपी सिगेलीवांचि सुषार्णानी मेधि सि संजन करे सण ल्लिगि जिगार ६६ तं दानि वारण खेखनीबती नीलवामलसंहिजनवीज
नेसरएणीनी सम अति महीनपानी मेपी सिगेली का खिषारणी मेधि सि संजनो तं दारहो ६७ सपणैकुमुमवर्ती निलपुष्प असी पीपरिदाना

तसुद्रफेन सिंधत्यंश एव्हां उवल्काजैः शिशुनी जखने वर्तिः शुक्रादीन शाखवल्लिखेत् ६५ दंतैर्देति वराहोष्टिर्गो रुद्राजल
रोमैवैः शंखसक्तो बोधि फेनयुतैः सर्वैर्विब्रूणीतैः दंतवर्ति दानास्सत्ताशुक्राणं नाशनीपरा ६६ नीलोत्पलं शिशुबीजं
नागकोशरवं तथा एतत्कालैः कृतावर्तोरिति तं दानि विनाशयेत् ६७ निलपुष्पा एयणातिः सुः षष्टि संख्या कारा कालाः
जानी कुसुमं पंचाशन्मूर्ति च भिचपाउश ६८ मत्स्यं पिशाजं लवर्तिः कृताकुसुमिका मिधा निमिरञ्जिनशुक्राणं ना
शनीमांसवृद्धहत् ६९ एतथां अंजने माघाप्रोक्ता सा च दहरेण क्वा ६९ रसांजनं हरिदेव मालती निवपल्लवाः गोस
सुद्रसंस्तुक्तावर्तिने क्ताध्यनाशिनी ६६ धात्रं क्षपण्यार्वीजानि एकचित्रिणानि च पिष्मावर्तिजैलेः कुर्यो दंजनं चि
हरेण कर्कने च सावं हरत्यो शुचात्तर क्तांजनया ७० तत्पुमात्तिक सिंधत्यसिमा शंखमनः शिला ॥

मरीनपीसि उदमेव डी वीज पुस्य वीवनाये रसेकुसुमिकावर्ती कहे रसेअंनै निमिर अर्जुनपल्ली मासट्टय ससुद्रहो ६८ रत्नो धीयरवर्तीर
लोतस्सो युरह्दी चमेली पच नामपन एयोचो समान गोवरकेपानी मगिनीवनाई अंजने स रत्नो धीनाग्रहोई ६९ निवत्ता च परलेह वर्ती अंवय
मिनी २ भाग हउ मिगी ३ भाग अलमे महीनपी सिंदो मेव डी वीज ममंगो ली करिपानी मेधि सि अंजने सपानी वहिना अंवाता रक्तज्वपीडा बिटे ७०

हिचमेलीषुष ५० मिचे १६ इहे

सक्रिया तन्मिया सोनामायी संधव मिथी शंखमैनदिवगेरू समुद्रकैनु मिरच एनवसमभागसुहृन्गोसिसहृत्तमिलायगोलीत्वाधि
अंजनकोसेपलकोरा तिमिर अर्मकाचविंदुफुल्लो एरेगदूरहोय ७१ सुत्रपुरसक्रियावदुग्ध शुभकरयीसिअंजन किदे दोमास
कीपरीफुल्लीदूरहो ७२ तंदायलेखरीसक्रिया सहृत्तयोधोउकीलारसमसिकेअंजनकिले तंदाहो ७३ पुनरंजन चमेलीपुष्प
मूंगा मरिच कटकीवच संधव एसवसमानलेछागमूत्रमेपोलीवाधिलगावेतोतंअनिवारहो ७४ सन्निपातपरलेखनरसक्रिया सिर

भोरिकोदधिफेनचमरिचंचेतिचूणयेत् संयोज्यमधुनाकुर्यादंजनार्थेसक्रियां बलरेणाभेतिमिरकचअुत्र
हरंपुरं ७१ वदक्षीरेणसंयुक्तोमुखाः कर्पूरजकाणः क्षिप्रमंजनतोहंति कुसमं चपिमासकं ७२ क्षोद्राश्वला
त्वासंघृष्टैर्मरिचैर्नैत्रमजयेत् अतिनिद्राशमयति तमः स्वेयीदयादितः ७३ यातोपुष्पं प्रवालं चमरिचं
कटकीवचा संधवं वस्तु मूत्रेण पिष्टुं तद्वाभ्रमंजनम् ७४ शिरीषवीजगोमूत्रं कृष्णमरिचं संधवै
अंजनं स्यात्प्रबोधाय सरसो न शिलावचैः ७५ बावीपवेलं मधुकं सनिर्वप्य कोत्पलम् त्रयोदशै
कचेतानि पचेतोये चतुर्णे विषाधपादशेषं गुस्तनीत्वा पुनः पचेत् शीते तस्मिन्मधुसिता
दद्यात्पादांशकानरः रसक्रिये पादाहाशुक्लरगरुजाहरी ७६ ॥

सविषा पीपरि मरिच संधव लहसुन भेनशिलवच सातो समानलेगो मूत्रं मेथी सिध्वां जितो सन्निपातशंति हो सवधान
हो ७५ नेत्ररसपरक्रिया दाहुरदरे परवलमुष्टी नीच प्रप्ताखकमल स्वितकमल सातो समभाग कटकी चोणनियानमिकायकरि
चोष्णा र्हेहं जगिस्थानि पिन्धो वगदाहो सिरई मधुमिथी मिचार्दं अंजन करेतीनेत्रजलना वस्वा एव विकारनेत्रके रोग इहो ७६

वरुनीरोगपरसक्रिया रसोत एल चमेलीण ए मेनसिल समुद्रफेन सैधव गेहू मित्व आगेसमभागदेकै अंजनकरेतो पकरोग
वर्म चिपचिपाहटओ खज एसवइहो ओपलकरतानकरे फिरजमे ७७ तिमिरोगपरपनीरसाक्रिया सुखका रनका
रसदोषभर मधुसैधवमासेमासेभरसवसहसपीसिअंजनकरेती पिल्लामैतिमिर काचबिदुखजरी लिंगनाश सधेस्वाकसडेलेकसवरोगइहो
७८ अंजनानेअनोपानजोअंजनकोषाजलोतो गदाइहमेयसिलगावेतीखजरीभिदे सतुगमेखगायेजलवहनाइहो धनयुक्तसेफल्लीइहो

रसांजनं सज्जरसोजातीपुष्पं मनःशिला समुद्रफेनोलवणं गौरिकां मरिचानि च एतत्समांशं मधुना पिष्ट्वा प्रक्षिप्तं नव
र्मेनि अंजनं लोक्वाइं ग्रंथश्मणं च त्रैलोक्यं ७९ गृह्णीत सः कर्षः शोऽस्यान्नाभकोन्मिति सैधवं शोऽस्तुल्यं स्यात्सर्वमेकत्र मर्दये
त काचं गण्डलिंगनां शुक्लाक्षसगौदानं ८० दुग्धेन कंठौघे एनेन तस्मादवसर्पिषा पुण्यालेन नतिमिरकांजिकेन निशंध्यतां पु
नर्वाजयेदोषभास्कारं स्तिमिरं यथा ८१ वधूलदलनिष्काद्योलेहीभूतस्तदंजनान्नेन तस्मादंजयेत्येवमधुयुक्तो न संशयः ८२
हिज्जलस्य फलं दस्वायानीधेनित्यमंजनं चक्षुसावो यथां त्पुंथं कथं भोगं नमोऽपि ८३ कतकास्य फलं दस्वामधुनानेन मज
येत् रंघत्कर्धूरसहितं स्मृतं नेन प्रसादनं ८४ सर्पिश्चोऽंजजनं स्याच्छिरोत्पातस्य शतये ८५ ॥

कांजीमेलगायेसेरुगोधोइहोजेसेसखीदवसेअंधकारइहो तेसिगदापरेनासेअनोपानसहायसेसवनेचरेगइहोतेहेअंनेनसाव
परपनीरसक्रिया वहरयनकाकाय अतिमाढाभरसहसमिलाअंजितो निश्चिनेनसेपानीजागांवहो ८० पुनर्नेनस्नायपर निर्मलीफल
यानीभंगारिलगावेतोनेनसेपानीवहनावंदहोय ८१ नेनशुभलेनकेअर्थस्नेहनीरसक्रिया निर्मलीसहसमेयसिकंचितकधर
सिलार् अंजितोनेनअरोगचोई ८२ गिरिस्पातपरसक्रिया धनओसहसमिलार् अंजनकरेती शिरोत्पातरेगइहोय ८३

वार्तिका धंधपरसत्रिया संपन्कीचशीशखनिर्मेली एतत् खलेकीरिअजैतौअधियागदिषाईदेनादूहोई सोपदित्वाइयेइ ८४ लेखनचणैअंजन
सुगेकेअंउकाधिलकासेपदवाच शंखचंदन संधव एछुचोसमान अंजनव्तरिअंजनेसेफुल्लीभासोमादिनाग्रहो ८५ रौचोपचणै षागेके
कोजेपीपरिधिरिपकार पीपरिलेउसोमासकेरसभगरिअंजने रौचोनाइ ८६ कंडअदिपरमरिचअर्धशाणपपरिसमुद्रफेनदेदोशाणपुर
मानवशाण एतत्तद्व्यचिचानसत्रमेलेमहानसुरभावनारनेअंभअंजनेसे ओरिचस्वजुवाना कांचविंदुकाफजन्यपीड मलइनमेवेकोउच

कृष्णसर्पवसाशंखः कातकाफलमंजनं रसंकीयेयमचिरालंछानांहर्शनप्रिया ८७ दत्तांशचकशिलाकाचैः शंखचै
दनगैरिकैः द्रव्यंरंजनयोगेयंपुष्पागोदिविलखनेः ८८ काताआगयुक्तन्येयत्नातद्रसयेषिणा अचिरार्धेनिनत्तांयं
तद्रसद्वौद्रमृषणं ८९ शाणार्धेमरिचौचपिपलाणीवफेनयोः शाणार्धेसंधवशाणानवसोवारकांजनात् पिष्टसुर
त्सवित्रायांचणैजनिमिदंशुभ कंडकाचकाफातोनांमलानांवविशोचन ९० शिलायारसकांपिष्ठासम्पगालाव्यवारिणा
गृह्णीयात्तच्चतुलं सर्वमपजचर्णमधोगेतंशुष्कांचतज्जलं सर्वपपेदीसन्निभंभवेत् विचणेभावयेत्सम्भक् त्रिवेलेविफ
लारसैः कपूरस्यखसत्रदशमीशोननिक्षिपेत् अंजयेन्नयनेन सर्वदोषहरिहमत सर्वरोगहरचर्णैचक्षुषेसुर
कारिच ९१ अग्निनप्तंचसौवीरंनिषिंचेनिफलारसैः ॥

८४

को ९० सर्वनेत्ररोगपरमृदुचणैजनि स्वपरियालेअतिमहीनखलका

वासनमेपानीभरिषोलिचंदोइलेपनीनिनारओपात्रंमं मरिअचमेजरारुको मारविलेइ सोत्तरलमेडारिचिफलाकाथकीनीनभावना
तत्त्वउसकादशयांअंशकपूरमिलाइपरिचोरेसोनेत्रंमंअंजिसेसचगेगदूहो नेत्रसुखपवि ९२ सर्वोक्षिरोगपरसौवीर अंजनसुरमासात
वारसालकारिकरित्याइचिफलाकाथमेवभारवैसर्हो सात ॥

वा. वारही के दूध में खगाइ अतीमहीन पिसाइ नेवांजन वारी से सर्वेनेत्रो गद्गद् होइ यहनेम निको निको निसदे हहित कारक है ८६ सीलशला
का विधान त्रिफलाक्वाथ भंगारस शोष्ठिकाथ इनकी पटारिया सीसागलाशुलाश्चौ गौमूत्र मत्ततुष्परी धेई सुवनिवर्मे सात सातवार
बुलाइ शलाई वनाइ नेत्र में फाले सब हेरोगद्गद् होइ अतः मरिचा अंजन आदि भीरु से लगाना भला है ८७ प्रपंजन विधि जब सीसशलाका फोने
से दोष दूर होवे नेत्र से रोग सूरिते है तिसको पीछे शीतल वेउपात्र में मरिचि रवीरिउसपानी में आंख को लिदे धे फिरे नेत्र भी धोइ प्रपंजन लगाने से अंजने

सप्तवेले तत्रास्तन्येः स्त्रीणां सिक्तां विचरितं अनेय नयेनेन पताहं चक्षुषो हितं सूचीनत्ति विकारासु हन्यादेतन्न संश
यः ८८ गत दोष मयेतासुं संपश्यन्सम्पगं त्रिफलामृगशुदीनां रसं तद्वच्च सपिषा गोमूत्रमध्वजाक्षीरैः सिक्तानागः
प्रतापिनः तच्छलाका भवत्पवसर्वोन्नेत्र भवानादान् ८९ गत दोष मयेतासुं संपश्यन्सम्पगं भसि प्रक्षाल्याक्षियथा
दोषं कार्ये प्रपंजनं ततः नवानिर्गत दोष क्षिण धावनं संप्रयोजयेत् प्रपंजनं तीक्ष्ण तन्नेत्र चरणैः प्रसादनः ९० शु
ष्णगोदुनेतुल्यं शुषं सत्त्रं विनिक्षिपत् तस्मांजनं तयोस्तुल्य सर्वेभेकत्र चणयेत् दशमांसेन कर्पूरं तस्मिंश्चणैर्मदाप
येत् एतत्प्रपंजनं नेत्रगदजिन्नयनामृतं जायपालस्य मज्जानं भावयेन्नितुकाद्रवैः एकविंशति बेले तज्जोवति प्रकस्य
येत् मनुष्यलालयाद्युस्मात्तनेत्रं तयांजयेत् सपेदष्ट बिषं जिन्वा संचौ वयतिमानव ९१ मुक्तापाणि तलं द्युष्माच्चक्षुषो येदिदि

काहेगी ९२ सदाषनेत्रपणविषयजि सनेत्र मे दोष की है तो नेत्र चबौवै क्यौकी तीक्ष्ण अंजन करिने संत भले तिस प्रपंजन वा प्रसादन करै सो कहते
हैं ९३ प्रपंजन चणै सुषसी सागलाई सम भाग सुषपादे तब दो भाग लुगमा देउ तारिलेइ सब खल करि दशया अंश कारदे फिर चोटे इसे प्रपंजन
वाहे इसे सम्पूर्ण नेत्र गनाश होत है और बहू आंख को अमृत है ९४ सूर्य विष निवारण अंजन भीतर का अंश दूर किया जमाल गे रा नी बरस मे
२१ पुट देचे दिगोली वनाइ सपिउस की आंख में आजावे तो विष शो नि हो मनुष्य जियै ९५ ॥

शीतलजलप्रकार ६५ जोमनुष्यनित्ततितीनवेलाशीतलजलसेकुल्लेकियाकरे ओमुल्लधोपाकरे ओनेत्रनिकोसीचाकरे
छोटदेकैवापात्रमेंभरितेउन्मीलिनकियाकरेउसमनुष्यकोनेत्रवाधाकधीनहोय ६६ अथअथत्रशशा आयुर्वेदस
विषेभद्वार्थपीमणिसंचितहे/तिनकोअश्विनीकुमारअग्निवेशादिसुनिननेसम्यक्प्रकारस्वसंहिताअधिकारिणधीविनमे

जातरेगाविनश्यंतिनिमिराणितथेवच ६७ शीतांबभूरितमुखःप्रतिवासंख्यःकासत्रयेणनयनंधितयं
जलेन आसिंचतिश्रवमसोनकदाचिदक्षिरेगवथाविधुतरंभजेतेमनुष्यः ६८ आयुर्वेदसमुद्रस्यद्व
दार्थमणिसंचयं ज्ञात्वाकैश्चिदुधैस्तेल्लक्षणाविविधसंहिताः ६९ किंचिदर्थेततोमीत्वाहतेयंसंहिताम
या कृपाकदाक्षविशेषमस्यांकुर्वतसाधवः ६८ विविधगदार्तिदग्निनाशिनीयाहरिमणीवकरेतियोग
रत्नैः विलसितुशार्द्धधरस्यसंहितासाकविद्वयेषुसरेजनिर्मलेषु ६८ अल्पायुषामल्पधियामिदानीक
तःसमस्तःश्रुतिपाठशक्तिः तदत्रयुक्तप्रतिबीजमात्रमभ्यस्यजामात्महितंप्रयत्नात् ६९ ॥

सेसारंगश्लेशार्द्धधरमेंसंचयकरी इहेसाधुजनकृपाकरिदेषे ६९ अथपाठफल जिनवेद्यकाविनकोनिर्मलस्वयंकमलमेंमेष
द्वियोगरत्नविलासकरेतेशार्द्धधरसंहितालक्ष्मीस्वधाणकहेकैसीलक्ष्मीहेविरेगत्रसितदरिरीनकोरुड्कोताशकालीहे ६८ इसक
नेमनुष्यकोअथघोडादिकेअत्यकस्त्रीस्सकारणआयुर्वेदपठनेकीशक्तिनहींइसेआत्मक्षणाथरसआयुर्वेदवीजमात्रमेंअभ्यासकरे ६९

इति श्री गार्ङ्गधरसंभाकरे विरचिते जयपाल विप्रशोधनं समाप्तम् अथ गार्ङ्गधरसंभाकरे विप्रशोधनं समाप्तम्

इति श्री दामोदरस्तुना गार्ङ्गधरेण विरचितायां संहितायां मुत्तरखण्डे
चिकित्सास्थाने तन्नामयविधाने त्रयोदशोऽध्यायः १३ शार्ङ्गधरग्रन्थसमाप्त

यादृशा मुत्तर्कद्वया

दिव्यो नदीयते २ लिखितं स्वामीवलदेव सं. १८३२ आ. ब. ३० शनि

इति श्रोतृणां चरितं नृणां सत्तां प्रमत्तं प्रजापतिं प्रकाशं मेरुं श्रद्धावान्

सेनालान्त्युभयसेनां चरितं गथाः मिति श्रावणावदि

सप्तमी रविवारं कौशभमसंवर

१६।३३

